भूदान गंगोत्री

दामोदरदास मूँदड़ा

अ. भा. सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

भूदान-गंगोत्री

दामोदरदास मूँदड़ा

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
रा ज घा ट, का शी

प्रकाशक :
अ० वा० सहस्रबुद्धे,
मंत्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ,
वर्धा (बम्बई-राज्य)

पहली बार : ५,०००
फरवरी, १९५७
मूल्य : दो रुपया आठ आना

मुद्रक :
विश्वनाथ भार्गव,
मनोहर, प्रेस,
जतनबर, बनारस ।

समर्पण

पोचमपल्ली-निवासी भूमिपुत्रों को

तथा

प्रथम-दाता श्री रामचन्द्र रेड्डी को,

जिनके कारण ही

युग-पुरुष विनोबा

आज के इस संतप्त संसार को

शांतिमय क्रांति का यह अभूतपूर्व

और

अद्भुत दर्शन करा सके।

दो शब्द

भूदान-गंगोत्री का जन्म पोचमपल्ली में १८ अप्रैल १९५१ को हुआ। माँ धरती को उसकी प्रसव की वेदनाएँ तो शिवरामपल्ली-सम्मेलन में ही होने लगी थीं। आर्थिक समता और भूमि-वितरण के संबंध में कार्यकर्ताओं के साथ वहाँ जो प्रश्नोत्तर हुए, उन्हींसे यह अन्दाज हो जाता है कि इस अहिंसक क्रांति के अवतरण की तैयारियाँ कैसे शुरू हो गयी थीं। वैसे तो ये तैयारियाँ बहुत पहले से ही प्रारम्भ हो गयी थीं, जिनकी झाँकी इस भगीरथ के जीवन की अनेक घटनाओं से मिलती है। इस गंगोत्री की तरह वह सरस्वती भी कभी प्रकाश में आये, तो उसका दर्शन जनता को होगा !

तो, इस तरह अब करीब साढ़े पाँच वर्ष हो गये, जब कि गंगोत्री ने बढ़ते बढ़ते 'ग्रामराज्य' की गंगा का विशाल रूप धारण किया और वह 'शासन-मुक्त, शोषण-रहित अहिंसक समाज-रचना' के महासागर में अपने को विलीन करने जा रही है। 'निधि-मुक्ति' और 'तंत्र-मुक्ति' का ऐतिहासिक निर्णय उसके इस दिशा में बढ़ते हुए प्रथम चरण का संकेत ही है।

इस बीच श्रमदान, संपत्तिदान, जीवन-दान और समर्पण आदि उसकी अनेक धाराएँ भी प्रकट हुई हैं, जिनके कारण इस गंगा का क्षेत्र देश तक ही सीमित न रहकर विश्वव्यापी और सर्वस्पर्शी बन गया है।

उस समय तेलंगाना में काम करनेवाली प्रमुख संस्थाएँ दो ही थीं, कांग्रेस और कम्युनिस्ट-पार्टी। न कोई रचनात्मक संस्था थी और न कोई अन्य उल्लेखनीय राजनैतिक पक्ष ही। समाजवादी पक्ष का कुछ काम करीमनगर जिले में दिखाई दिया, परन्तु नलगुंडा और वरंगल में तो इन्हीं दोनों का मुकाबला था। कांग्रेस ने भी करीब-करीब इस क्षेत्र से

संन्यास ले लिया था, कम्युनिस्ट पार्टी भी यहाँ गैर-कानूनी करार दी गयी थी और उसके कार्यकर्ता भी जेल में थे। यहाँ जो थोड़ी-बहुत जन-सेवा की अपेक्षा की जाती थी, वह कांग्रेस से ही। यही वजह है कि विनोबाजी ने एक से अधिक बार कांग्रेस का जिक्र किया है। सेवा तथा साधन-शुद्धि, दोनों के संबंध में कार्यकर्ताओं की उदासीनता देखकर एक बार तो उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि 'बहुत संभव है, मुझे कांग्रेस की शुद्धि के लिए अपने प्राणों की बाजी लगानी पड़े।' लेकिन ईश्वर की इच्छा शायद उनके द्वारा किसी एकाध राजनैतिक पक्ष की शुद्धि कराने के बजाय अखिल मानव-समाज को ही इस महान् आरोहण के पथ पर अग्रसर कराकर उसे चित्त-शुद्धि की दीक्षा देने की थी।

कुछ लोगों का कहना है कि शुरू में तो विनोबाजी ने केवल भूदान की ही बात कही थी। फिर धीरे-धीरे षष्ठांश की बात शुरू की। यहाँ तक तो ठीक था। परंतु आजकल तो वे स्वामित्व-निरसन की बात करते हैं, जो हमारे संविधान के भी खिलाफ पड़ती है। उन्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए।

यह सही है कि संविधान ने भूमि तथा अन्य व्यक्तिगत संपत्ति के स्वामित्व पर मुहर लगा रखी है। लेकिन संविधान तो कोई ऐसी ईश्वरदत्त वस्तु है नहीं, जिसमें कोई परिवर्तन न हो सके। संविधान में परिवर्तन हुए हैं और होते भी रहेंगे। लेकिन भूदान द्वारा इस देश में आज जो शासन-मुक्ति की प्रक्रिया शुरू हुई है, उसके कारण समूचे संविधान में आमूलाग्र परिवर्तन की आवश्यकता महसूस हो रही है। सर्वोदय के संकल्प में यह परिणाम निहित ही है, क्योंकि सर्वोदय में जो शासन-मात्र का क्षय अपेक्षित है, उसके बिना वह जीवन में उतर ही नहीं सकता।

जाहिर है कि शासन के क्षय के साथ शासन की आधार-शिला आज के संविधान का क्षय नहीं, तो परिवर्तन अनिवार्य ही है।

रही स्वामित्व-निरसन की बात। विनोबा ने चाहे दान की बात कही

हो या षष्ठांश की या समर्पण की, वे सारे शब्द समानार्थक ही हैं। क्योंकि 'दान' शब्द उन्होंने उसके मूल याने 'समविभाजन' के अर्थ में ही प्रयुक्त किया है और समविभाजन स्वामित्व कायम रखकर नहीं हुआ करता। षष्ठांश में भी शेष पंचमांश के स्वामित्व का विधान नहीं, धरोहर की ही धारणा है। लेकिन विनोबाजी ने तो आरम्भ से ही भूमि को हवा, पानी और सूरज की रोशनी की तरह भगवान् की देन कहा है। इतना ही नहीं, गत साढ़े पाँच वर्षों में सतत किसी एक मंत्र का जप उन्होंने किया हो, तो वह इसीका किया है। क्या किसीका स्वामित्व स्वीकार करके भी यह धरा हवा, पानी, प्रकाश या नीलाकाश की पंक्ति में बैठ सकती है ?

और, माना कि विनोबाजी ने शुरू में केवल दान की ही माँग की थी और वह भी उसके रूढ़-प्रचलित 'भिक्षा' के अर्थ में। तो, क्या भूदान के विचार ने अपने विकास के बारे में कोई निषेधात्मक संकल्प किया था ? जो विचार नित्य-नूतन अर्थ-बोध कराता जाता है, वही क्रांति का वाहन बन सकता और वही विश्व को प्रेरणा दे सकता है।

फिर भी गंगोत्री की इस कहानी में स्वामित्व-निरसन के पक्ष में विनोबाजी ने समय-समय पर बहुत स्पष्ट शब्दों में अपने विचार प्रकट किये हैं। एक जगह वे कहते हैं :

"मेरे सामने जमीन एक से माँगकर दूसरे को देने का सवाल ही नहीं है। सब मिलकर सारी जमीन जोतें, यही हमें करना है। यही प्रयोग हमें सिद्ध करना है। सारा गोपाल-कलेवा हमें करना है।"

ग्राम-दान के जरिये इस गोपाल-कलेवे का मेवा ही विनोबा आज हमें चखा रहे हैं। यह पुस्तक किसी साहित्यिक की कलाकृति नहीं है। शांति-सेना के सेनानी के एक चाकर द्वारा आँखों देखी घटनाओं का उल्लेख मात्र है। लेखा उस इलाके का है, जहाँ विनोबाजी के जाने से पहले

समता और सेवा के नाम पर हजारों हत्याएँ हो चुकी थीं, जीवन खतरे से खाली नहीं था, लोग भयभीत थे। जख्में हरी थीं, कोई पोंछनेवाला नहीं था। मिलिटरी और पुलिस से भी लोग तंग आ चुके थे। खुद मिलिटरी भी घुटने टेक चुकी थी। यह लेखा उस समय का है, जब कोई भूदान-समितियाँ नहीं थीं, न कार्यकर्ताओं का ठीक साथ था, न कार्य की कोई व्यूह-रचना थी, न ठहरने का ठिकाना होता था और न कार्यक्रम ही पहले से ठीक तय हो पाता था। घर-घर जाकर मजलूमों से मिलना पड़ता था, दिलों के घावों पर सहानुभूति और सांत्वना का मरहम लगाना पड़ता था, ढाढ़स बँधाना पड़ता था और कभी-कभी प्रेमभरी डाँट भी सुनानी पड़ती थी। एक-एक डिसमल जमीन के लिए भी व्यक्ति-व्यक्ति से मिलकर भूदान का विचार समझाना पड़ता था। यह सब विनोबा ने किया—भाषा की सुविधा न रहते हुए किया; अपनी सारी बुद्धि-शक्ति, योजना-शक्ति, चिन्तन-शक्ति तथा प्रतिभा और साधना की बाजी लगाकर किया। अहिंसक हल की खोज में जब वे जीवन की ही बाजी लगा चुके थे, तो फिर संकोच क्या और कैसे रह सकता था? किसी व्यास की निगाहों से यह सब गुजरता, तो निश्चय ही पुनः एक और महाभारत की देन संसार को प्राप्त होती! संभव है, यह विनम्र लेखक ही भविष्य में किसी दिव्य चक्षुष्मान् की प्रतिभा को जाग्रत कर दे! अगर ऐसा हुआ, तो यह लेखक तो धन्य होगा ही, लेखपाल भी धन्य होगा। परंतु लेखपाल ने स्वयं एक छोटे सेवक की तरह बिलकुल अपरिचित गाँवों में एक ही भूदान का विचार समझाने से लेकर भूमि की प्राप्ति और वितरण तक की सभी प्रक्रियाओं में आनेवाली इन कठिनाइयों का अनुभव किया है। उन सब अवसरों पर गंगोत्री की इस कहानी ने सदा बड़ी प्रेरणा प्रदान की है। आज भी सैकड़ों कार्यकर्ता अनेकविध असुविधाओं को सहकर भू-क्रांति का संदेश गाँव-गाँव और डगर-डगर पहुँचा रहे हैं। यदि गंगोत्री का यह लेखा चंद साथियों को भी प्रेरणा प्रदान कर सका, यदि कुछ लोगों के भी दिलों

में शांति-सेना के सेनानी की तरह 'करेंगे या मरेंगे' की भावना पैदा कर सका, तब भी लेखा और लेखपाल, दोनों अपने को धन्य मानेंगे।

मेरे लिए इस करुणा की प्रसादी प्राप्त करा देने का बहुत सारा श्रेय बहन मदालसा को है। अगर उनका सतत तकाजा मेरे पीछे न लगा रहा होता, तो शायद आज भी मुझ कम्बख्त से यह काम पूरा न हो पाता। बिना निराश हुए वे मुझे बराबर याद दिलाती रहीं, टोकती रहीं और डाँट भी सुनाती रहीं। उनकी यह गुप्त देन ही मिली है, भूदान की इस कहानी को।

मेरी पुत्री चि० मृदुला की डायरी से मुझे इस पुस्तक को तैयार करने में महत्त्वपूर्ण सहायता मिली है।

इसमें जो चित्र दिये गये हैं, वे हैदराबाद सूचना-विभाग के श्री विनोदरावजी से तथा हैदराबाद भूदान-समिति के श्री केशवरावजी से प्राप्त हुए हैं।

ब्लॉक बना देने में मद्रास के साप्ताहिक 'कल्कि' परिवार ने अत्यन्त आत्मीयतापूर्वक निरपेक्ष सहायता की है।

कमबम् (मदुरा) — हरिभाऊ उपाध्याय

अनुक्रम

भूदान-गंगोत्तरी

रामनवमी का प्रसाद : १ :

"आज रामनवमी का यह मंगल-दिन आप लोगों के साथ बिताने का अवसर मिला है। मुझे इस बात का बहुत आनन्द है कि ऐसे मंगल अवसर पर हैदराबादवासियों के हृदय के साथ मेरा संपर्क हो रहा है। आप और हम यहाँ बैठे हैं। हमारे बीच में भगवान् साक्षी है। मैं तो आप सब लोगों को भगवान् की मूर्तियाँ ही देख रहा हूँ। आपके हृदय से मेरे हृदय का आज अनुबंध हो रहा है, इसकी अनुभूति मैं अपने में पा रहा हूँ।"

नीचे सुरम्य हरित भूमि, ऊपर नीलगगन, पश्चिम में क्षितिज पर लालिमा की अद्‌भुत रेखाएँ थीं और था दाहिनी ओर मूसा के प्रवाह में उसका सुन्दर प्रतिबिम्ब; चारों ओर सुन्दर उपवन। ऐसे उस अत्यन्त प्रसन्न वातावरण में विनोबाजी रामनवमी की महिमा का वर्णन कर रहे थे।

विनोबाजी के यह राम कैसे हैं? कौन हैं? कहाँ रहते हैं?

खालिक-खलक

"रामचन्द्र भगवान् अंतर्यामी हैं, सबके हृदय में मौजूद हैं, सदा सर्वदा हाजिर और नाजिर हैं। उनका न जन्म है, न मृत्यु। उन्हें कोई विकार लागू नहीं है, बल्कि वे सब विचार-विकार से परे हैं। यह सारी कुदरत उनकी है। जिसे सीतादेवी कहते हैं, वह उनकी कुदरती शक्ति है। उस आत्मीय कुदरती शक्ति के साथ वे हमेशा रहते हैं। भगवान् को उनकी शक्ति से हम अलग नहीं कर सकते। सूर्यनारायण को रोशनी से अलग नहीं कर सकते। नदी को पानी से अलग नहीं कर सकते। नमक को उसके स्वाद से अलग नहीं कर सकते। किसी भी चीज को उसकी शकल से

अलग नहीं कर सकते। किसी भी पदार्थ को जैसे उसके गुणों से अलग नहीं कर सकते, वैसे भगवान् को भी उसकी शक्ति से अलग नहीं कर सकते। इस वास्ते हम 'सीताराम' नाम लेते हैं। राम के साथ सीता आती है। प्रभु के साथ माया आती है। खालिक के साथ यह सारी सृष्टि, जो उसकी पैदाइश है, आ ही जाती है।

परमेश्वर की रंगभूमि

"जैसा मैंने कहा, उसका कोई जन्म तो नहीं है। फिर भी हमने आज उसके जन्म का एक नाटक किया। सारे हिन्दुस्तान के लोग यह समझते हैं कि भगवान् रामचन्द्र का कोई जन्म नहीं है; बल्कि वह हमारे हृदय में जनमता रहा है। अगर यह अनुभव हमको आ जाय, तो जिस क्षण यह अनुभव आयेगा, उसी क्षण भगवान् का जन्म हुआ होगा। हमारे जीवन में जो-जो काम हम करते हैं, वे सारे काम अपने अहंकार से करते हैं। लेकिन अगर ऐसा कोई काम हमसे बना हो कि जिसमें हमारा अभिमान नहीं था, हमारा अहंकार नहीं था, हमारी कोई कामना नहीं थी और जिसमें हम खुद नहीं थे, तो उस काम में और उस क्षण में भगवान् का जन्म हुआ, यह समझो। तो, आज हम एक नाटक करते हैं भगवान् के जन्म का। हर रोज यह नाटक हमको करना चाहिए—हरएक क्षण करना चाहिए। हमारे हृदय में भगवान् नित्य-निरंतर जनमा करें, नित्य-निरंतर वहीं पैदा हुआ करें, उन्हींका खेल हमारे हृदय में चलता रहे, हमारे सारे विकार मिट जायँ और हमारा हृदय खास परमेश्वर के नाटक के लिए ही एक रंगभूमि बन जाय, ऐसी कोशिश हमें हर रोज करनी चाहिए। लेकिन सारे समाज के लिए ऐसी कोशिश करने का एक खास अवसर, एक दिन बनाया गया। कोई उसको रामनवमी कहते हैं, कोई कृष्णाष्टमी कहते हैं। कोई-न-कोई दिन हम ढूँढ़ लेते हैं और उस दिन हम अपने को भूल जाने की कोशिश करते हैं।"

इसके बाद संसार में और खासकर हिंदुस्तान में दिखाई देनेवाले अनेकविध दुःखों का दर्दभरा जिक्र किया। बेकारी, गरीबी, भुखमरी, जातिभेद, वर्ग-द्वेष, शस्त्र-सम्भार, खूनखराबियाँ और इन सबकी पार्श्व-भूमि में पिछले दिनों तेलंगाना में हुआ हत्याकांड, इन सबका विवरण स्वयं विनोबाजी के मुख से सुनते समय शरीर रोमांचित हो उठा।

किन्तु विनोबा ऐसे चित्रकार नहीं, जो केवल अन्धेरे को तो उपस्थित कर दें और उसके बाद के अरुणोदय की झाँकी न करायें। परिस्थिति-चित्रण और पथ-प्रदर्शन की दोहरी भूमिका के कारण वे निराशा में आशा की किरण दिखाकर माता की तरह हमारी प्यारभरी रहनुमाई भी करते हैं। फिर आज तो भगवान् राम के पावन स्मरण में उनकी स्फूर्ति-गङ्गा लहरा उठी थी। जीवन की मूलभूत दृष्टि समझाते हुए उन्होंने कहा : "मैंने कुरान में एक जगह पढ़ा कि जिसके बारे में तुम्हारे दिल में अदावत है, उसको प्रेम की निगाह से देखो, तो फौरन अनुभव आयेगा कि जो अदावत थी, वह मिट गयी और जो दुश्मन थे, वे मित्र में परिवर्तित हो गये, दोस्त बन गये। यह जो कुरान में लिखा है, वही बुद्ध भगवान् ने कई वचनों में कहा है। उन्होंने कहा है कि बैर से बैर शांत नहीं होता। अगर बैर छोड़ोगे, जरा हिम्मत करोगे—बैरियों पर भी प्रेम करने के लिए हिम्मत चाहिए, वह हिम्मत अगर करोगे—तो अनुभव आयेगा कि जिसको आप बैरी समझते थे, वह फौरन मित्र बनता है। यही बात हमको उपनिषदों ने समझायी। यही बात शंकराचार्य ने समझायी। यही बात कृष्ण भगवान् ने समझायी। अब और किनके नाम लूँ? क्योंकि सारी दुनिया पर परमेश्वर ने असंख्य सत्पुरुषों की वर्षा की और जब-जब कहीं जरूरत महसूस हुई, तब-तब उसने हमको हिदायत देनेवाले निरन्तर भेज ही दिये। किसी भी देश के इतिहास में ऐसा कोई समय नहीं दीख पड़ता कि जब लोगों को हिदायत देनेवाले भगवान् की तरफ से नहीं आये। उन्होंने यही बात हमको समझायी कि जरा अन्दर देखने की कोशिश करो, आत्मा को पह-

चानो। हम जो भी कोशिश करते हैं, सारी बाहर-बाहर की विद्या संपादन करने में करते हैं। वह भी ठीक है। बाहर भी परमेश्वर का रूप है। इसलिए वह विद्या हम हासिल करते हैं, तो कोई गलती नहीं करते। लेकिन भगवान् जैसे बाहर विद्यमान है, वैसे उसका मूलरूप अन्दर भी विद्यमान है। अन्दर भगवान् है, उसकी छबि बाहर होती है। तो जरा अन्दर देखने की कोशिश कीजिये और इस तरह अन्दर देखने की कोशिश करने के लिए जो रामनवमी-जैसे दिन आते हैं, उन दिनों में यह प्रयत्न खास तौर से कीजिये।"

सारे भगवान् के ही रूप हैं

दाशरथी राम को ही लोग विनोबा का राम न समझ लें, इसलिए पुनः दोहराया : "मैं राम की महिमा क्या वर्णन करूँ ? राम कोई मनुष्य नहीं था। एक मनुष्य राम नाम का हो गया। उसकी कीर्ति भी हिन्दुस्तान में फैली है। लेकिन वह तो परमेश्वर का एक अंशमात्र था और जो परमेश्वर सबके हृदय में है, वह उसके हृदय में भी था। और हम जो रामनाम लेते हैं, वह उस परमेश्वर का नाम लेते हैं, जिसकी एक विभूति, जिसका एक आविर्भाव, जिसका एक रूप वह दाशरथी राम भी था; जिसका एक रूप मैं खुद हूँ और जिसका एक रूप आप सब हैं। अगर आप यह समझते हों कि भगवान् का एक रूप हो गया—दाशरथी राम और वही एक रूप हुआ, और अन्य कोई रूप नहीं हुए, और आज कोई और रूप है—तो भगवान् के लिए आपका बिलकुल गलत खयाल है। हमको यह समझना चाहिए कि हम सारे भगवान् के ही रूप हैं और उसका अनुभव प्राप्त करने के लिए, वह तजुर्बा लेने के लिए ही हमें यह मानव-देह मिली है।"

रामनवमी का प्रसाद

गंगा बहती ही जा रही थी और उस प्रवाह में वक्ता और श्रोता, दोनों ही अपने को मानो भूल गये थे। मूर्तिमन्त शांति के रूप में दिखाई

देनेवाला सहस्रों श्रोताओं का वह दर्शन स्वयं परम पावन था। ऐसा प्रतीत होता था कि हरएक के हृदय पर आज के इस पुण्य-दिवस की स्मृति अटल रहनेवाली है। स्वयं विनोबाजी को भी ऐसी ही प्रतीति हो रही थी।

"मुझे तो आज के इस परम पवित्र दिवस की याद बहुत दिन रहनेवाली है।" और उन्होंने कारण भी बताया :

"क्योंकि हमारे कुछ भाई, जो कि देश की सेवा करना चाहते हैं, लेकिन जिन्होंने एक दूसरा ढंग अख्तियार किया है, और जो कम्युनिस्टों के नाम से दुनिया में पुकारे जाते हैं, तथा आज जेलों में हैं—उनसे आज मुझे मुलाकात करने का मौका मिला और मुझे इस बात की खुशी हुई है कि उन लोगों के साथ दो घंटे दिल खोलकर बात हुई। मैं मानता हूँ कि यह रामनवमी का प्रसाद मुझे सेवन करने को मिला है।"

सच्ची दृष्टि

जिनको दुनिया दुश्मन समझती है, जो वास्तव में कितने ही खून और हत्याओं के लिए जिम्मेवार माने जाते हैं, उनके लिए भी सर्वोदय-समाज के इस सेवक के हृदय में कितना प्यार भरा है! उनके उस भाषण में ही उसकी कारण-मीमांसा भी हम पाते हैं :

"सर्वोदय में सबकी चिंता आती है, तो कम्युनिस्ट भाई भी मेरी चिंता के विषय हैं और मैं जरूर चाहूँगा कि उनको समझा सकूँ, उनको जीत सकूँ। और अगर भगवान् ने चाहा, तो वे भी सर्वोदय-विचार के प्रेमी हो सकते हैं। जो उसकी इच्छा होगी, वही होगा। इस संबंध में हम अपने पास कोई अहंकार नहीं रख सकते। लेकिन हमारा कोई फर्ज है। मैं तो अपना फर्ज समझता हूँ कि हरएक के साथ दिली परिचय कर लूँ। हरएक के साथ एकरूप होने की कोशिश करूँ। हरएक की तरफ उस निगाह से देखूँ, जिस निगाह से वह खुद अपनी तरफ देखता है। अपनी निगाह से दूसरों को देखना, न देखने के समान है। उन-उन मनुष्यों

की अपने लिए जो दृष्टि है, उस दृष्टि को पहचानकर, उसके साथ एकरूप बनकर उन मनुष्यों के बारे में सोचना ही सच्ची दृष्टि है। और उससे, किसी भी सवाल के जो अनेक पहलू होते हैं, उन सबका पता चलता है और पूरी रोशनी मिलती है। नहीं तो मनुष्य का दर्शन आधा, एकांगी हो जाता है।"

वेद-माता की गोद में जिसका लालन-पालन हुआ, उपनिषदों के दूध से जिसके मन और बुद्धि को पोषण मिला है, 'अद्वैत' के तत्त्वज्ञान ने जिसका हृदय केवल विशुद्ध सहानुभूति से ओतप्रोत कर दिया है, परिणाम-स्वरूप सबके हृदय की आर्तता का और दुःख का प्रतिबिंब जिसके हृदय में प्रतिबिंबित हो उठता है, सारा विश्व जिसका शरीर बन जाता है, और फिर जिसके लिए दुनिया में क्षुद्र या कुटिल कुछ रहता ही नहीं—जो कुछ होता है, जो कुछ है ऋजु ही ऋजु है—जहाँ ऐसी ब्रह्ममयता है, वहाँ यदि कम्युनिस्टों के प्रति ऐसे सहानुभूति-भरे भावों का दर्शन होता हो, तो क्या आश्चर्य?

आइये, रामनवमी का जो प्रसाद विनोबाजी ने उस जेल की चहार-दीवारी में पाया, उसका कुछ अंश हम भी पाने की कोशिश करें। उसके लिए अपने दिलों को भी सहानुभूति के भावों से भरने की कोशिश करें।

प्रातःकाल दस बजे का समय होगा। मालमंत्री श्री बी० रामकृष्ण-रावजी के साथ विनोबाजी कारागार पहुँचे। सलामी आदि की रस्म-अदाई हुई। और विनोबाजी ने बिना किसी सरकारी अधिकारी को साथ लिये जेल के आँगन में प्रवेश किया। जेल के आँगन में ही नहीं—उन कम्यु-निस्ट भाइयों के हृदयरूपी गर्भागार में ही।

पहले से खबर करा दी गयी थी, इसलिए कम्युनिस्ट नेता विनोबाजी का इन्तजार ही कर रहे थे। यहाँ कुल डेढ़ सौ से ऊपर ये लोग थे, लेकिन विनोबाजी से मिलने के लिए करीब २५ लोग ही जमा हुए थे। उनमें से बहुत-से तो उसी रोज पहली बार एक-दूसरे से मिल रहे

थे। कुछ को पहले रोज ही मिलाया गया था। विनोबाजी को अपने बीच पाकर वे निःसंदेह प्रसन्न दिखाई दिये। उन्होंने बताया कि उनसे किस तरह कोई पहले मिला भी नहीं था, किसीने मिलने की ख्वाहिश भी नहीं की थी।

करीब दो घंटे विनोबाजी वहाँ रुके। शुरू में जेल-व्यवस्था-संबंधी उनकी शिकायतें सुनीं और उनको यथासंभव दूर करने की कोशिश करने का आश्वासन भी दिया। एक बात अपनी ओर से भी सुझायी कि काम माँग लो, क्योंकि बिना काम के संपूर्ण मनःस्वास्थ्य संभव नहीं होता। धूलिया जेल का अपना अनुभव भी बताया।

अहिंसा की नीति

अध्ययन तथा चिंतन-मनन की अनुकूलता के कारण जेल-जीवन आत्मविकास का साधन कैसे बन सकता है, इस संबंध में अपनी अनुभवपूर्ण सूचनाएँ भी दीं। अब मुद्दे की बात आयी। विनोबाजी ने सीधे पूछा : "क्या आज की बदली हुई परिस्थिति में भी आप लोग अपने हिंसक कार्यक्रम को ठीक समझते हैं या उसमें परिवर्तन करना उचित समझते हैं ? पहले निजाम की हुकूमत थी, रजाकारों का जमाना था। संभव है, हिंसक मार्ग के अतिरिक्त कोई रास्ता न सूझा हो। परन्तु अब बदले हुए जमाने में, जब कि हरएक को मताधिकार मिल चुका है और अपनी इच्छा की सरकार बनाने की सुविधा प्राप्त हो चुकी है, लोकमत तैयार करके अपना बहुमत बनाने के बजाय हिंसक तरीकों का सहारा लेने की क्या आवश्यकता रह जाती है ? हिंसा-अहिंसा के बारे में नैतिक श्रद्धा की बात थोड़ी देर के लिए छोड़ दी जाय, तो भी नीति माने पॉलिसी के तौर पर आज अहिंसा के सिवा और कौन-सा तरीका कारगर हो सकता है ?"

जिनसे बातें हो रही थीं, वे सब जिम्मेदार कार्यकर्ता थे। एकाध को छोड़कर, केवल दुराग्रहवश बात करनेवाला कोई दिखाई नहीं दिया।

लेकिन हिंसा की विफलता के कायल होते हुए भी पार्टी और पार्टी का अनुशासन उन्हें अपनी सही राय जाहिर करने से रोक रहा था।

सोच रहे हैं

बातचीत लम्बी हुई। कम्युनिस्टों के बारे में यह कहा जाता है कि उनके दिलो-दिमाग के दरवाजे दूसरी विचारधारा के लिए बंद-से रहते हैं। परन्तु यहाँ दूसरी विचारधारा स्वीकार करने का सवाल नहीं था। अपनी विचारधारा लोगों को समझाने का जो मौका मिला है, उससे लाभ उठाने की समय-सूचकता का सवाल था। अगर वे लोग कहते हैं कि आज बदली हुई परिस्थिति में हिंसक तरीकों की हम आवश्यकता नहीं समझते, लिहाजा हमने हिंसक-मार्ग छोड़ना तय किया है, तो विनोबाजी भी उनकी भूमिका सरकार को समझा सकते थे। उनकी रिहाई की कोशिश कर सकते थे। लेकिन जेल में बंद वे कम्युनिस्ट नेता इस प्रकार कुछ भी कह सकने की परिस्थिति में अपने को नहीं पा रहे थे। तब विनोबा ने पूछा : "क्या मैं यह असर लेकर जाऊँ कि आप लोग अपनी हिंसक नीति, जो पिछले दिनों आप बरतते रहे हैं, छोड़ना नहीं चाहते?" विनोबाजी इस तरह का असर लेकर जायँ, यह भी वे भाई नहीं चाहते थे। आखिर उन्होंने कहा कि "हम लोग अभी विचार कर रहे हैं। हमने न तो पुरानी नीति को छोड़ना तय किया है, न उसको जारी रखना ही। सोच रहे हैं, इतना ही कह सकते हैं।"

उनकी असमर्थता

बातें और भी हुईं। यह सही है कि पार्टी के सब लोग नहीं मिल सकते थे। यह संभव भी नहीं था और उसकी जिम्मेवारी इन्हीं लोगों पर थी। और जगहों पर कम्युनिस्ट पार्टी कानूनी रहते हुए भी यहाँ वह गैर-कानूनी करार दी गयी थी, इसलिए यदि ये लोग व्यक्तिगत रूप से हिंसा

के परित्याग की बात विनोबाजी से कहते, तो भी विनोबाज़ी के हाथ कम्युनिस्ट भाइयों के हक में मजबूत हो सकते थे। बङ्गाल के टेररिस्ट भाइयों ने टेररिस्ट पार्टी के सदस्य होते हुए भी व्यक्तिगत रूप से हिंसा-त्याग का निर्णय किया था और बापू की मध्यस्थता से लाभ उठाकर जेल से मुक्त हुए थे और देश के वातावरण को सुधारने में योग दिया था। लेकिन इन भाइयों पर पार्टी के अनुशासन की ऐसी तलवार लटक रही थी कि वे किसी निर्णय पर पहुँचने में अपने को असमर्थ पा रहे थे। उनकी बातचीत से जाहिर था कि उनमें दो विचारधाराएँ काम कर रही हैं। एक दल हिंसक कार्यक्रम छोड़ने के पक्ष में है, दूसरा नहीं है। उन्हें सोचने के लिए अधिक अवकाश की जरूरत हो, तो यद्यपि विनोबाजी का आगे का सारा कार्यक्रम तय हो चुका था, उसे स्थगित करके भी विनोबाजी को एक-दो रोज के लिए रोका जा सकता था। परन्तु उन्होंने ऐसा करना उचित नहीं समझा। हाँ, आवश्यकता पड़ने पर विनोबाजी के पास संदेश भिजवा सकने की सुविधा उन्हें अधिकारी दें, यह बात तय हुई। सम्भव हुआ तो उनके नेता श्री रावी नारायण रेड्डी से उनकी मुलाकात का प्रबन्ध हो, ऐसी भी उन लोगों ने ख्वाहिश जाहिर की। सबने अत्यन्त आदर और प्रेम से विनोबाजी को बिदा किया।

ठीक बारह बजे थे। बाहर सर्वत्र राम का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था। जेल में भी एक मंदिर था और वहाँ भी घण्टानाद और आरती सुनाई दे रही थी। लेकिन विनोबाजी तो मानव-मन्दिर में विराजनेवाले राम को ही जगाने आये थे और शायद जगाकर ही जा रहे थे। उनके लिए यही सच्चा राम-जन्मोत्सव था।

विनोबाजी जब जेल के लिए रवाना हुए, तो किसीने कहा : "कौरवों को समझाने के लिए पांडवों का प्रतिनिधि जा रहा है", दूसरे किसीने कहा : "राम की पराक्रमशीलता का चमत्कार दिखानेवाला उनका एक सेवक रावण से मिलने जा रहा है।" क्या हो रहा था, क्या नहीं हो रहा

था या क्या होने जा रहा था, यह तो भविष्य की कोख में छिपा था, परन्तु इतना तो स्पष्ट था कि विनोबा में मुद्दालय, मुद्दई और मध्यस्थ, तीनों भूमिकाएँ एकत्र साकार हुई थीं। 'अग्ने नय सुपथा राये' की भावना से वे अपने ही भाइयों से मिलने गये थे कि संभव हुआ तो उन्हें समझाया जाय; जिससे गलत मार्ग से हटकर परमानन्द की ओर ले जानेवाले सरल मार्ग पर वे आ सकें।

हृदय-प्रवेश

परन्तु यह नहीं हो सका। कितना अच्छा होता कि विनोबाजी के रूप में अपने एक सच्चे मित्र को पाकर हैदराबाद के कम्युनिस्ट भाई व्यक्तिगत रूप से ही क्यों न हो, जैसा कि विनोबाजी ने सुझाया था, बदली हुई परिस्थिति में हिंसा की आवश्यकता और निरर्थकता के बारे में अपनी राय जाहिर करते और हैदराबाद के लोक-जीवन में एक नया अध्याय प्रारम्भ करने के यश के भागी बनते। यद्यपि जाहिरा तौर से ऐसा कुछ होता दिखाई नहीं दिया, फिर भी विनोबा उनके हृदयों में सर्वोदय का विचार-बीज बो आये थे। इस आशा से कि कभी-न-कभी तो वह अंकुरायेगा ही।

जेल से बाहर आकर देखते हैं, तो सैकड़ों लोगों की भीड़ लगी हुई थी। निवास पर लौटते-लौटते एक बड़ा जुलूस ही बन गया। स्नान आदि से निवृत्त होकर थोड़ा विश्राम भी नहीं कर पाये कि कताई का समय हो गया। २ से २-३० कताई और फिर मिलनेवालों की भीड़। कार्यकर्ता आये, अधिकारी आये और कुछ कम्युनिस्ट मित्र भी आये, जिनसे आज जेल में मुलाकात हुई थी और जो अभी-अभी रिहा किये गये थे। उन्होंने विनोबाजी से और भी बहुत-सी बातों का जिक्र किया, जिसका सार यही था कि सरकार की ओर से बहुत जुल्म हो रहा है। उतने में मुख्य मंत्री श्री वेलोदी और उनके साथ शिक्षामंत्री श्री बी० रामकिशनरावजी भी आये। उनको विनोबाजी ने कम्युनिस्ट मित्रों के साथ की बातचीत से वाकिफ किया। जेल में कम्युनिस्ट भाइयों को जो सुविधाएँ चाहिए थीं,

उनका यथासंभव प्रबन्ध करने की बात भी इन लोगों से विनोबा ने की, जो उन्होंने स्वीकार कर ली; किन्तु जो आक्षेप इन रिहाशुदा मित्रों ने लगाये थे, उनके बारे में बताया गया कि "वे निराधार हैं तथा जिन्होंने आक्षेप किये थे, उनके ही हाथ खून से रँगे हुए हैं।" इससे सहज ही अंदाज हो सकता था कि आगे का काम कितना कठिन है।

दोपहर में सबसे अधिक हृदयस्पर्शी कार्यक्रम रहा आन्ध्र-युवती-संघ का। रामनवमी के निमित्त आन्ध्र-बहनों ने पोतना महाकवि के काव्य में से कुछ प्रसंग गाकर सुनाये। इस कार्यक्रम में श्री रामकृष्णराव की पुत्री ने महत्त्वपूर्ण भाग लिया। अपनी कंठ-माधुरी और भक्ति-भावना के कारण उन्होंने प्रह्लाद-चरित्र का प्रसंग अत्यन्त भावमयता से गाया। वातावरण में सर्वत्र शांति छा गयी। विनोबाजी की आँखों से भक्ति-गङ्गा बह निकली। सत्याग्रही प्रह्लाद के जीवन से किसको स्फूर्ति नहीं मिलनेवाली थी? फिर अब जिस नये आवाहन पर विनोबाजी निकल पड़े थे, उसमें तो प्रह्लाद की-सी ही कसौटी होनेवाली थी। यह भक्तगाथा उस पथ के लिए एक प्रेरक पाथेय ही था। ● ● ●

रात के राजाओं की पहली झाँकी : २ :

हयातनगर

१६-४'-५१

दंडकारण्य-प्रवेश

रामनवमी के निमित्त भगवान् रामचन्द्र के जन्म का अर्थात् आत्म-ज्ञान के उदय का अपने-अपने हृदय में अनुभव करने की प्रेरणा देकर तथा अंतर को केवल राममय रखने का संदेश सुनाकर विनोबाजी ने अब तेलंगाना के गाँवों में प्रवेश किया। तेलंगाना को दंडकारण्य भी कहते हैं। हजारों बरस पहले इसी भूमि ने भगवान् रामचन्द्र के चरणों का परस पाया था, जिनके पुण्य-प्रताप से वह असुरों की पीड़ा से मुक्त हो सकी थी। अनेक संतों ने भी, यहाँ की भूमि को हरी-भरी करनेवाली गोदा और कृष्णा के किनारों पर, तपस्या करके इस भूमि को पावन किया था तथा एकाग्र साधना, उत्कट चिन्तन और अखंड मनन द्वारा लोक-जीवन को आत्मनिष्ठ और श्रेयार्थी बनने की प्रेरणा दी थी। पर आज उसी भूमि पर दुःख और क्लेश सर्वत्र छाया-सा दिखाई दे रहा था। इसलिए उस प्रदेश में, उन सब संतों की विरासत साथ लिये, राम का एक अत्यन्त प्यारा भक्त पदार्पण कर रहा था। मूसा के किनारे आज सबेरे उस ऋषि को सैकड़ों भाई-बहनों ने आदर और श्रद्धा-सहित बिदा किया। कितने ही सीमा तक पहुँचाने आये। इस पर भी जी नहीं माना, तो अगले मुकाम तक साथ हो लिये।

एक सामाजिक समस्या

रास्ते में जगह-जगह स्वागत-समारोह हुए। बीच में एक अनाथालय भी पड़ता था, पर वहाँ विनोबाजी नहीं जा सके। एक मील तक अपने बैंड और पताकाओं सहित अनाथालयवाले हमारे साथ-साथ चले। इधर

हयातनगरवालों ने विविध सुंदर द्वारों, तोरणों और पताकाओं से अपने गाँव को सजा रखा था। ग्रामवासियों ने उत्साह के साथ स्वागत किया। दोपहर को अनाथालय के लोग पुनः आये। लड़कियाँ, लड़के, संचालक आदि। अनेक बालकों को छुटपन से, आठ-आठ, चार-चार रोज तक के शिशुओं को संचालकों ने पाला-पोसा था। उन सबके माता-पिता कहलाने का सुख संचालकों की मुद्रा पर सहज प्रकट हो रहा था। अभी-अभी उनके यहाँ दाखिल किया हुआ एक सुंदर बालक वे अपने साथ ले आये थे। विनोबाजी की गोद में वह चाँद का टुकड़ा और भी प्यारा दिखाई दे रहा था। इसमें शक नहीं कि संचालक लोग अच्छी सेवा कर रहे थे। पर समाज में ऐसी सेवाओं के क्षेत्र की गुंजाइश ही क्यों होनी चाहिए? विनोबाजी का यह बुनियादी सवाल था।

दोपहर को गाँव के सम्बन्ध में चर्चा हुई। चार हजार की बस्ती, पाँच हजार एकड़ जमीन, जिसमें से एक हजार शिकार के लिए सुरक्षित। खेती का ही एकमात्र धन्धा। करीब दो सौ बंडी जोड़ी हैं, जो हैदराबाद जाने-आने का किराया करती हैं—पाँच रुपया पाती हैं। दस चूने की भट्टियाँ हैं। बंडियाँ चूना ढोने का काम करती हैं। चार घर बुनकरों के हैं। फी घर हर माह आधी पेटी सूत का कोटा मिलता है। दो धोतियाँ बनती हैं। केवल एक हफ्तेभर का काम रहता है, तीन हफ्ते की बेकारी। पर अपना सूत कातेंगे नहीं, हाथ-सूत का कपड़ा बुनेंगे नहीं!

सेंदी की ज्वालाएँ

बढ़ई, लुहार, कुंभार, दरजी, चमार के भी दो-दो चार-चार घर हैं, जो गाँव के लिए पर्याप्त समझे जाते हैं। कपड़ा, शक्कर, गुड़, मिट्टी का तेल—सभी चीजें बाहर से आती हैं। इनके लिए जो पैसा बाहर जाता है, वह तो जाता ही है; पर सेंदी के कारण भी अत्यधिक पैसा बरबाद हो रहा है, और वह भी अनेक बरसों से।

सेंदी, शराब आदि द्वारा गाँव की हर साल कितनी संपत्ति बाहर चली जाती है, इसका मोटा हिसाब इस प्रकार है :

	प्रतिदिन		मासिक		सालाना
	रु०		रु०		रु०
सेंदी बिक्री	३५०	× ३०	१०,५००	× १२	१,२६,०००
शराब	१६		४८०		५,७६०
(१ गैलन रोज)					
टैक्स					३,६००
कुल					१,३५,३६०
बस्ती—४०००			फी आदमी करीब		३४
			कम से कम		३०
उपरान्त कपड़ा			”		२०
			कुल		५०

यानी सेंदी, शराब और कपड़े के रूप में फी आदमी सालाना कम-से-कम ५० रुपये गाँव से बाहर जाते हैं। सालभर का दो लाख रुपया हो जाता है। ९८ फी सदी से ज्यादा लोग सेंदी-शराब पीते हैं। हरिजनों के तो बच्चे भी पीते हैं। अनाज पर्याप्त नहीं मिलता, अतः सबेरे खाना और शाम को सेंदी चलती है। इस सेंदी में कलाल को कितना और सरकार को कितना मिलता है, यह जानने लायक है :

सेंदी की कुल कीमत	रु० १,२६,०००
इसमें एक्साइज	३६,०००
दरख्तों पर टैक्स	४४,०००
सरकार की आमदनी	८०,०००

कलाल के लिए शेष	४६,०००
इसमें कलाल का खर्च	२३,०००
,, मुनाफा	२३,०००

सरकार को जमीन से जहाँ सिर्फ पाँच हजार का लगान मिलता है, वहाँ सेंदी से सोलह गुना ज्यादा मिलता है। ऐसी सोने की चिड़िया सरकार कैसे छोड़ सकती है? तीस में से तेरह करोड़ की इस आमदनी को कब पूरी तरह बंद किया जा सकेगा? लोगों में जो सज्जन हैं, वे अपने-अपने गाँवों में शराब बंद क्यों नहीं करते? 'सरकार गिरफ्तार कर लेगी, हमें कम्युनिस्ट कहकर पकड़ लेगी', ऐसी दलील लोग करते हैं।

'रात के राजाओं' ने भी साथ छोड़ा

लोगों ने बताया कि पहले एक बार रात के राजाओं ने लोगों को शराब पीने से रोका था। यहाँ हमें मालूम हुआ कि कम्युनिस्टों को रात के राजा कहते हैं। उस समय गाँववाले सभी बड़े सुखी थे। पर कहते हैं कि यह कार्यक्रम शराब से मुक्ति दिलाने के इरादे से नहीं, बल्कि सरकार के खिलाफ एक कार्यक्रम के रूप में स्वीकार किया गया था। जब तक सेंदी से लोग मुक्त रहे, तब तक वे सुखी रहे। परंतु कांट्रेक्टर के दबाव से इन रात के राजाओं ने भी अपना वह कार्यक्रम छोड़ दिया, ऐसा गाँववालों का कहना है।

राक्षस भी तो जीते थे

विनोबा के मुँह से सहसा निकला : "यह सब बड़ा भयंकर मालूम होता है। फिर भी ये सब लोग जी तो रहे हैं!" गाँववालों में से एक भाई ने कहा : "महाराज! राम के जमाने में राक्षस भी तो जीते थे! सेंदी बंद नहीं होगी, तो हालत खराब होगी।"

उसने यह भी कहा : "सेंदी फौरन बंद होनी चाहिए, टेनन्सी एक्ट पर अमल होना चाहिए, लेवी-वसूली के तरीके में सुधार होना चाहिए।"

इस व्यसनाधीनता में ऐसी जाग्रति का क्वचित् दर्शन भी बड़ा आशाप्रद था।

पहला आघात

दंडकारण्य की यात्रा का यह पहला गाँव, और उसकी यह हालत! कम्युनिस्ट भाइयों के तरीकों की कुछ झाँकी यहाँ मिली। यद्यपि उनके बारे में बहुत-कुछ सुन रखा था। विनोबा के मन में उनके लिए अब तक कोई पूर्वग्रह नहीं था—कल जेल के मित्रों को इसकी प्रतीति भी हो गयी थी! परंतु अब गाँववालों से उनकी नीति और हरकतों का पता चलने लगा। वे पैसे के दबाव में आते हैं, यह सुनकर विनोबा को एक बार तो धक्का ही लगा।

गाँव की दशा दयनीय थी। आमदनी कुछ नहीं। फी आदमी एक एकड़ जमीन भी नहीं। उद्योग-धंधे कुछ नहीं। रोटी के बदले सेंदी की ही खूराक! पिछले सौ साल से ऐसा ही चल रहा है, ऐसा कहनेवाले लोग गाँव में मौजूद हैं। फिर भी लोगों को लगता है कि देश के सामने कोई कार्यक्रम नहीं!

सेवा या सत्ता ?

इस संबंध में विनोबाजी एक कार्यकर्ता से बात कर रहे थे। "समाज-सुधार के काम में कांग्रेसवालों को रुचि नहीं। उन्हें राजकारण चाहिए। उसके बिना सत्ता नहीं मिल सकती। वे कहते हैं: 'अगर सत्ता हम लोग नहीं लेंगे, तो दूसरे जो गुंडे हैं, उनके हाथ में वह चली जायगी।' परंतु उन गुंडों के हाथ में सत्ता न जाय, इसलिए इन भले मानुसों को उन्हींके तरीकों का प्रयोग करना पड़ता है। और उन तरीकों का प्रयोग गुंडों की अपेक्षा भी अधिक सफलतापूर्वक किये बिना कामयाबी कैसे होगी? इस तरह जो चीज ये नहीं चाहते, उसका अमल खुद ही करते हैं। जिन्हें ये नहीं चाहते, वे ये खुद बन जाते हैं!"

शाम की प्रार्थना में हजारों स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। दूर-दूर के देहातों से



विनोबाजी नाश्ता करते हुए—साथ में कोदण्डराम रेड्डी तथा अन्य कार्यकर्ता



चट्टानों और पहाड़ों के बीच

लोग आये थे। एक ओर उनके दर्शनों का सुख, दूसरी ओर उनकी बिगड़ी दशा का दुःख।

हम सब एक परिवार के हैं

विनोबा ने लोगों को समझाया कि "उनके गाँव का कल्याण दिल्ली में आये हुए स्वराज्य से नहीं हो सकता, उनके गाँव में लगी आग हैदराबाद के लोग आकर नहीं बुझा सकते और यह असंभव ही है कि कोई एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का समूह एक जगह बैठकर इतने बड़े देश की व्यवस्था देख सके।" इसलिए विनोबा ने उन्हें अपने गाँव की सेवा के लिए एक मंडली बनाने की प्रेरणा दी : "यह मंडली गाँव की जरूरतों को देखे, बने जहाँ तक गाँव में ही उनकी पूर्ति करे। हैदराबाद से बहुत कम चीजें मँगाये। शराब-बंदी से लोगों को बचाये और कोशिश करे कि गाँव के बाहर के झगड़े, फिर वह कांग्रेसवालों के हों या समाजवादियों के, गाँव में आने ही न दे। जब चुनाव का मौका आये, तब आप अपना मत योग्य आदमी को दे सकते हैं। परंतु झगड़ों का सवाल आये, तो साफ कह दीजिये कि 'हमें आपके झगड़ों से कोई मतलब नहीं। हम न तो कांग्रेसी हैं, न सोशलिस्ट हैं, और न हिंदू-सभावादी। हम तो हयातनगरवासी हैं।' इस तरह आप सबको हाथ जोड़कर कहिये। कोई बाहर से आकर आप लोगों को एक-दूसरे के खिलाफ भड़काये, तो कहिये—'हमारा गाँव एक है। हम एक परिवार के हैं। देश के लोग जैसे देश के बारे में सोचते हैं, हम भी अपने गाँव के बारे में सोचना चाहते हैं।' इस तरह आप दृढ़तापूर्वक बाहर की बुराइयों को रोकेंगे, तो आपके यहाँ की बुराइयाँ भी धीरे-धीरे कम हो जायँगी।" ● ● ●

श्रीमानों के लिए खतरा : ३ :

बाटासिंगारम्
१७-४-'५१

तीसरा मुकाम

आज का रास्ता बारह मील का था, सड़क कुछ पक्की, कुछ कच्ची, किनारे के तथा थोड़ी दूर के गाँवों के लोग स्वागत के लिए सड़क पर आये थे। रेवनपल्ली, भीवनपल्ली, गोसकोंडा, कनकमूला, राउलपल्ली, कपरावल्ली आदि अनेक छोटे-छोटे गाँवों के लोग थे। इर्द-गिर्द की छोटी-छोटी पहाड़ियों में से भी लोग आये थे। अपने पास जो कुछ था—पत्रं, पुष्पं, फलम् से थालियाँ सजाकर लाये थे। जगह-जगह तोरण-पताकाएँ भी थीं। एक जगह तो सहयात्रियों ने स्त्री-पुरुषों को और बच्चों को दूर से देखा, जो पहाड़ी से उतरकर दौड़े-दौड़े सड़क की ओर आ रहे थे। उनको देखकर हम लोगों ने विनोबाजी को रोक लिया। उतने ही में लोग पहुँच गये। बाँस से बँधी आम के पत्तों की घनी लंबी माला लिये दो युवक रास्ते के दोनों ओर खड़े हो गये और बात की बात में एक द्वार भी खड़ा हो गया। विनोबा ने फल-फूल स्वीकार किये, उसी वक्त वे तकसीम भी कर दिये गये और आगे बढ़े। ८-३० बजे बाटासिंगारम् पहुँचे। लोग भजन-कीर्तन करते हुए अगवानी करने आये। गाँव में आनन्द-उत्सव की भावना दिखाई दे रही थी। निवास पर पहुँचने पर लोगों से कहा गया कि दो बजे सामुदायिक कताई के वक्त आयें, बाद में मिलने का वक्त रखा गया है। भीड़ कुछ कम हुई, पर गाँवों से लोग तो आते ही रहे और दो बजे तक काफी भीड़ जम गयी।

पहले लोहा तो बन लें

विनोबाजी तो भोजन के लिए कहीं बाहर जाते नहीं, अपने निवास पर ही मट्ठा लेते हैं। परन्तु हम लोगों को भोजन के लिए दूसरी जगह

जाना था। रास्ते में जगह-जगह गाँववालों ने हम लोगों को आदरपूर्वक और आग्रहपूर्वक अपने घर बुलाया। वे लोग समझते थे कि संत के साथ के लोगों के आने से भी घर पावन होता है। हम लोग उनकी भावना को देखकर अपने मन को पावन कर रहे थे। जिस पुण्य-पुरुष के पावन सहवास से लोग हममें भी श्रद्धा रखने लगे हैं, उसकी विश्वात्म भावना का परस हमें भी हो, तो हमारा सोना हो जाय। परन्तु ऐसा सोना बनने के लिए भी पहले लोहे की योग्यता तो प्राप्त करनी ही पड़ती है!

गाँव का पहरा

दोपहर कताई के बाद मिलनेवालों की भीड़ लगने लगी। गाँववालों से गाँव की जानकारी मिली। कुछ माह पूर्व कम्युनिस्ट आये थे। तब तो कुछ सामान खरीदकर ले गये थे। पर बीच-बीच में आते रहते हैं और चीज-वस्तु, रुपया आदि जो भी मिलता है, लूट-खसोटकर ले जाते हैं। लोग डरे हुए हैं। कुछ लोगों की उनके साथ सहानुभूति भी नजर आयी। डरे हुए लोग कुछ बढ़ा-चढ़ाकर बात करते नजर आये, तो सहानुभूति रखनेवाले कुछ छिपाते हुए। दो सिक्ख भाई भी मिले। यहाँ उनकी डेअरी थी। पहले यहीं रहते थे, पर कम्युनिस्टों की हिरासत भुगत चुकने के कारण व अपने पास का काफी सामान व पैसा उनकी भेंट चढ़ा चुकने के कारण अब दिन में आते हैं और शाम होते ही हैदराबाद लौट जाते हैं।

रात में गाँववाले बारी-बारी से पहरा देते हैं। बीस-बीस की टोलियाँ रहती हैं। गाँव के चारों ओर ऐसी चार टोलियाँ काम करती हैं। गाँववाले चाहते थे कि अब उन्हें इस काम से मुक्ति मिले। "आपके गाँव की रक्षा दूसरा कौन करेगा?" विनोबा ने उनसे पूछा। गाँववालों का खयाल था कि पुलिस यह काम करती रहे। विनोबा ने कहा : "फिर उनके खर्च का बोझा भी आपको ही नित सहन करना पड़ेगा।"

लेकिन इसके लिए गाँववाले तैयार नहीं थे, न वे यही चाहते थे कि पुलिस चली जाय।

पुलिस का यह हाल कि एक घर में एक कम्युनिस्ट नेता को भोजन और बातचीत में लगाकर पुलिस को बुलाया गया, तो जल्दबाजी में कम्युनिस्ट को गिरफ्तार करने के बजाय उस पर गोली चला दी; किंतु गफलत में कम्युनिस्ट के बजाय घरवाले को ही गोली का शिकार बना दिया। उसकी बेवा और १३-१४ बरस का बच्चा विनोबा के पास शिकायत लेकर आये थे कि अब तक न कोई तहकीकात हुई है, न कोई सहायता ही मिली है।

हैदराबाद से बीस मील पर यह चित्र था—कम्युनिस्टों और पुलिस, दोनों का। अभी भीतर—इंटेरिअर में जाना तो बाकी ही था। नलगुंडा जिला, जो दुनिया में कम्युनिस्टों के कारण मशहूर हो गया है, अभी शुरू होना था ! यह तो हैदराबाद के इर्दगिर्द और हैदराबाद जिले की ही हालत हम देख रहे थे। शाम को प्रार्थना में हमेशा की तरह हजारों की तादाद में स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। अनुवाद श्री लक्ष्मीबहन कर रही थीं। लक्ष्मीबहन संगम और कोदंडराम रेड्डी, दोनों हैदराबाद से हमारे साथ हो गये थे—प्रांतिक कांग्रेस की ओर से। लक्ष्मीबहन बड़ी कलाकार हैं। शिक्षण-विभाग में ऊँची जगह पर थीं, परन्तु रजाकारों के जमाने में निषेध प्रकट करने के लिए नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। तब से लोगों की सेवा में जुटी हुई हैं। कोदंड रेड्डी नवयुवक हैं, सेवाभावी, बुद्धिमान और नम्र।

विनोबा ने प्रार्थना-प्रवचन में लोगों को समझाया :

"आप लोगों को वही कहना चाहिए, जो आपने देखा हो। सच और झूठ में चार अंगुल का अन्तर है। दो आने बात को पौने दो आने कहकर बताओ, पर सवा दो आने नहीं। अगर आप सही-सही हालत बतायेंगे, तब तो हम आपकी हालत समझ सकेंगे। हम आये ही इसलिए हैं कि आपके दुःखों को देखें-सुनें-समझें। सही हालत का पता चलेगा, तभी तो हम इलाज बता सकेंगे।"

डरनेवालों का भगवान् भी साथी नहीं

फिर विनोबाजी ने उन लोगों को एक-दो हिदायतें भी दीं। "हरगिज

डरो नहीं। कोई बात पूछी जाय, तो वह सच-सच बताओ। जो डरता है, उसकी रक्षा भगवान् भी नहीं कर सकता। आपको न तो कम्युनिस्टों से डरना चाहिए, न पुलिसवालों से। अपने गाँव की रक्षा करना गाँव-वालों का ही काम है। अगर आप लोगों में एकता होगी, तो आपके गाँव का बचाव आप कर लेंगे। जानवर भी, जो दुर्बल होते हैं, अपना एक संघ बनाकर अपनी रक्षा कर लेते हैं। आप एक होकर रहने के बजाय अगर अलग-अलग रहेंगे और एक-दूसरे के साथ लड़ते रहेंगे, तो आपको कौन बचा सकता है ?

"आपने देखा होगा कि डरनेवाले को जानवर भी पहचान लेता है। हमारे सामने कई जानवर आते हैं। वे हमारी आँख की ओर देखकर ही जान लेते हैं कि हम डर गये हैं या नहीं। अगर हमें वे भयभीत पाते हैं तो हमला करते हैं, निर्भय पाते हैं तो चुपचाप बाजू से निकल जाते हैं। इसी तरह अगर यहाँ पुलिस-मिलिटरी आये, तो निर्भयता से आप अपनी बात बताइये। लोग मुझे पूछते हैं कि 'हम पर कम्युनिस्ट भी जुल्म करते हैं, पुलिसवाले भी करते हैं, तो हमारी रक्षा कौन करेगा ?' मुझे यह सुनकर आश्चर्य होता है। मिलिटरी और पुलिसवालों का भय तो बिलकुल नहीं होना चाहिए, क्योंकि वे तो रक्षा के लिए ही यहाँ भेजे गये हैं। और कम्युनिस्टों से इसलिए डरने का कारण नहीं है कि वे तो दो-चार ही आयेंगे और आप तो हजारों हैं। अगर उनसे भी डरेंगे, तो फिर आपसे क्या कहा जाय ? आपको अपने गाँव में स्वयंसेवक-दल बनाना चाहिए। स्वयंसेवक-दल का काम होगा कि गाँव की रक्षा करे। दल को उस तरह की तालीम दी जानी चाहिए। अगर हम डर छोड़ देंगे, तो कम्युनिस्ट भी नहीं डरायेंगे। आखिर वे भी कोई राक्षस तो हैं नहीं। वे तुम्हारी-हमारी तरह मनुष्य ही हैं। एक बार उन्हें पता चल जायगा कि लोग निर्भय हैं, तो फिर वे कुछ नहीं करेंगे।"

बाद में गाँव की आर्थिक स्थिति के बारे में ध्यान दिलाते हुए कहा :

"आपके गाँव में कुछ लोग गरीब हैं और कुछ श्रीमान् हैं और कुछ मध्यम श्रेणी के हैं। जो श्रीमान् और मध्यम श्रेणी के हैं, उनका काम है कि गरीबों के साथ हिल-मिल जायँ। अगर कुछ लोगों के पास धन आ गया है, तो भगवान् ने उन्हें वह गरीब लोगों की सेवा के लिए ही दिया है। भगवान् तो कसौटी करता है, उसकी भी, जिसे वह धन देता है, और उसकी भी, जिसे वह गरीब बनाता है। जिसको धन देता है, उसकी परीक्षा लेता है कि वह दयाभाव रखता है या नहीं। अगर रखता है, तो वह भगवान् की कसौटी में पास होता है। उसी तरह जो गरीब है, उसकी परीक्षा यही कि वह हिम्मत रखता है या नहीं ?. अगर वह हिम्मत रखता है, हारता नहीं, डरता नहीं, दीन नहीं बनता, तो भगवान् की परीक्षा में वह भी पास है। और अगर वह दीन बनता है, डरता है, तो भगवान् की परीक्षा में वह पास नहीं।

"इस तरह इस गाँव में गरीब और श्रीमान्, दोनों एक-दूसरे की मदद करेंगे, तो न यहाँ कम्युनिस्ट कुछ तकलीफ दे सकेंगे और न पुलिस ही। यहाँ स्वराज्य होगा।"

श्रीमानों के लिए खतरा !

और अन्त में श्रीमानों के बारे में अपनी भावना प्रकट करते हुए कहा : "तो मैं भगवान् से प्रार्थना करूँगा कि आपके गाँववालों को वह ऐसी सद्-बुद्धि दे कि सब लोग एक-दूसरे को प्यार करें, एक-दूसरे की मदद करें। अगर श्रीमान् गरीबों के लिए अपना धन, अपनी बुद्धि, अपनी ताकत खर्च करेंगे, तो वे जी सकेंगे; नहीं तो श्रीमानों के लिए खतरा है। अगर वे अपने गाँववालों से प्रेम का बर्ताव करेंगे, तो हिन्दुस्तान में उनके लिए कोई खतरा नहीं है।"

● ● ●

गंगोत्तरी का आविष्कार : ४ :

पोचमपल्ली
१८-४-'५१

कम्युनिस्ट-कारनामों के लिए हैदराबाद राज्य के जो दो जिले प्रसिद्ध हैं, नलगुंडा और वरंगल, उनमें से नलगुंडा जिले में आज विनोबा प्रवेश कर रहे थे। पिछले दोनों मुकाम यद्यपि तेलंगाना के ही हैं और वहाँ भी कम्युनिस्ट कार्रवाइयों का कुछ दर्शन हुआ है, फिर भी वे कम्युनिस्ट कथाओं की प्रस्तावनाभर हैं, पुस्तक का प्रारम्भ तो अब होगा। सच्चा दंडकारण्य भी यहीं से शुरू होता है। हयातनगर और बाटासिंगारम्, ये दोनों उसके द्वार समझिये। सारा रास्ता दुतर्फा पहाड़ी से होकर गुजरता है। पहाड़ियाँ, जो पहले घने दरख्तों से लदी हुई थीं, अब बिलकुल मुक्त हैं, क्योंकि उनकी आड़ में कम्युनिस्ट छिप जाया करते थे कि राहगीरों पर ठीक दाव साध सकें। सारा जङ्गल इसलिए अब छँट गया है। फिर भी रास्ते के दोनों तरफ दिखाई देनेवाले ये पर्वत-मंडल, माँ धरती की वत्सलता के ही साक्षी हैं, और एक के बाद दूसरी पर्वत-पंक्तियाँ ऐसी प्रकट होती जाती हैं, मानो कमल-दल की एक-एक पँखुड़ी धीरे-धीरे खिल रही हो। सबेरे की शेष चाँदनी में दस मील का रास्ता सहज ही तय हुआ। रास्ते में स्थान-स्थान पर स्वागत-समारोह का स्वीकार करते हुए विनोबा ७ या ७-३० बजे के करीब पोचमपल्ली पहुँचे। लोग दो कतारों में राम-धुन गाते खड़े थे। विनोबाजी उन सबका प्रणाम स्वीकारते हुए उन लोगों के बीच से गुजरे। सारा वातावरण आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक भावों से भरा नजर आया।

अब तेलंगाना की विशेषता का दर्शन होने लगा। पूरा गाँव साफ-सुथरा, कहीं पानी का छिड़काव, कहीं गोबर से लिपा-पुता। जगह-जगह

अल्पनाएँ। निवास पर पहुँचते ही दो पंडितों ने श्रीफल भेंट किया और पुरुष-सूक्त सुनाया, जिसमें विनोबाजी सहज ही तन्मय हो गये।

गाँव की हालत

पोचमपल्ली सात सौ घरों का एक छोटा-सा गाँव है। तीन हजार जन-संख्या है, जो पवनार की याद दिलाती है। विनोबाजी के निवास के सामने ही पवनारवाली धाम नदी की तरह एक बड़ा तालाब भी है। वर्धा-नागपुर रास्ते की तरह सामने से एक रास्ता भी गुजर रहा है।

इस छोटे-से गाँव में बुनकरों की संख्या ६४३ है, हरिजन २१६। तीन हजार लोगों में से दो हजार को जमीन बिलकुल नहीं है। सेंदी पीनेवालों की संख्या भी दो हजार है। रोज डेढ़ सौ रुपयों की सेंदी बिकती है। शिक्षक गायब है, इसलिए एक हरिजन-प्रेमी भाई ने हरिजन बच्चों का मदरसा अलग चला रखा है।

कम्युनिस्टों के कामों का परिचय भी मिला। यह गाँव उनका केंद्र माना जाता है। पिछले गाँवों में जो कुछ देखा-सुना, उससे यहाँ अधिक ही सुनने-देखने मिला। यहाँ चार हत्याएँ हुईं, यहीं से नजदीक येरूरी गाँव में तीन; इर्द-गिर्द की मिलाकर दो बरस में कुल बीस। जो कोई उनके बारे में कुछ जरा-सी जानकारी किसीको, याने पुलिस या कांग्रेसवालों को देगा, तो गोली का शिकार होना पड़ेगा। और इस केन्द्र में कुल कम्युनिस्ट दस या बारह हैं। उनकी खोज के लिए हथियारबंद पुलिस का डेरा यहाँ पड़ा है।

"हम कहाँ ठहरे हैं ?" विनोबा ने गाँववालों से पूछा।

"मदरसे की इमारत में।"

"कितने बच्चे पढ़ते हैं ?"

"सात।"

"मास्टर ?"

"एक।"

तीन हजार की बस्ती के भावी नागरिकों की शिक्षा का यह हाल; मास्टर भी रोज हाजिर नहीं रहते। कभी-कभी अपनी सुविधा से आकर पढ़ा जाते हैं।

बालक भगवान् हैं

सवा नौ बजे होंगे। ग्राम-प्रदक्षिणा के लिए विनोबाजी निकले। पहले हरिजन-बस्ती में ही गये। कई मकानों के भीतर जा-जाकर देखा। बाहर-भीतर एक समान! बिलकुल स्वच्छ। हरि के जन अंदर एक, बाहर एक हो भी कैसे सकते थे? एक घर के भीतर देखा कि चार दिन की नवप्रसूता जमीन पर बैठी है। बालक चटाई पर ही लिटा है। बच्चे को विनोबा ने गोद में उठा लिया, उसकी माँ के पास बैठ गये। उस बालक की आँखों में उनकी आँखें मानो गड़ गयीं। "बालक भगवान् हैं", माँ के मुँह से सहसा शब्द निकल पड़े। इस बीच उसके हाथ विनोबा के चरण छू चुके थे—जिसका शायद न हाथों को पता था, न उसको, न विनोबा को।

बाहर आये तो देखा कि पूरी हरिजन-बस्ती के लोग इकट्ठा हो चुके थे।

उन्हें अपने बच्चों के लिए अलग मदरसा चाहिए था। तय हुआ कि बच्चे अलग मदरसे में नहीं पढ़ेंगे, सबके साथ उसी सरकारी मदरसे में पढ़ेंगे। कोशिश की जायगी कि पढ़ाई का अच्छा प्रबंध हो।

मकानों के लिए जगह चाहिए थी। इसमें कानून भी हरिजनों की सहायता करता है। तय हुआ कि उन्हें जगह दिलवाने के लिए तहसीलदार से कहा जाय।

जमीन की माँग

लेकिन यह सब सवाल तो गौण थे। मुख्य सवाल था—जमीन का। 'हम लोगों को खेती के लिए जमीन चाहिए', हरिजन भाइयों ने माँग की।

रास्ते से बातचीत करते-करते सब लोग इस बीच डेरे पर आ पहुँचे। हरिजन भाइयों ने बताया कि आज खेती के अभाव में उन्हें कभी-कभी भूखों भी रहना पड़ता है, क्योंकि मजदूरी का कोई भरोसा नहीं। अगर जमीन मिले, तो इज्जत की जिन्दगी बसर कर सकेंगे।

गाँव में कुल २५०० एकड़ जमीन है। तीन हजार की बस्ती, यानी फी आदमी ¾ एकड़ से कुछ अधिक। आज ये सारे हरिजन, जमीनवालों के यहाँ मजदूरी से काश्त करते हैं, सालभर में उपज का २०वाँ हिस्सा पाते हैं, एक कम्बल, और एक जोड़ी जूता, बस।

"जमीन कितनी चाहिए ?" विनोबा ने पूछा। थोड़ी देर आपस में विचार करने पर मुखिया ने खड़े होकर जवाब दिया : "८० एकड़ बस होगी, खुश्की ४०, तरी ४०।"

"इतने से काम निभ जायगा ?"

"जी, हम लोग और भी कुछ काम कर लेते हैं।"

"यदि हम आप लोगों को जमीन दिलवा दें, तो आप सब मिलकर सामुदायिक काश्त कीजियेगा या जुदा-जुदा ?"

"सब मिलकर।" थोड़ी देर विचार करके मुखिया ने जवाब दिया।

"तो हमें एक अर्जी लिख दो, हम आपके लिए कोशिश करेंगे।"

भूदान की गंगोत्तरी

इतना कहा तो—किंतु क्षण-भर के लिए कुछ अंतर्मुख हो गये। विनोबा का विचार पहले तो सरकार को लिखकर इन लोगों को जमीन दिलवाने का प्रयत्न करने का था। फिर सोचा, उसमें देर बहुत लग जाने की संभावना है। उस विचार को पूरी तरह रद्द न करते हुए सामने जो गाँववाले बैठे थे, उनसे भी पूछने की प्रेरणा उन्हें हुई! इसलिए फिर गाँववालों को लक्ष्य कर उन्होंने कहा :

"यदि सरकार की ओर से जमीन न मिल सके या देरी लगे, तो उस हालत में गाँववालों की ओर से कुछ किया जा सकता है ?"

विनोबाजी ने अपना विचार रखा ही था कि एक भाई, श्री रामचंद्र रेड्डी सहसा खड़े हो गये और नम्रभाव से कहा : "मेरे स्वर्गीय पिताजी की इच्छा थी कि कुछ जमीन इन भाइयों को दी जाय। लिहाजा, मैं अपनी और अपने पाँच भाइयों की ओर से सौ एकड़—जिसमें पचास खुश्की और पचास तरी है—आपके द्वारा इन लोगों को भेट करता हूँ।"

उन भूमिहीन हरिजन भाइयों की ओर से विनोबा ने माँग की और भूमिवानों में से श्री रामचन्द्र रेड्डी के हृदयस्थ भगवान् जाग गये। उन्हें दान की प्रेरणा हुई। भूदान की गंगोत्तरी प्रकट हुई !

रामचन्द्र रेड्डी की घोषणा ने सारे वातावरण को बदल दिया। सब लोग बैठे थे, रामचन्द्र रेड्डी खड़े थे। घोषणा के बाद भी वे वैसे खड़े ही रहे। उन सबके बीच शुभ्र-वस्त्रधारी कृशकाय विनोबा के मुख पर उस समय सहसा एक अद्भुत तेजोवलय छा गया। दिखाई ऐसे दिये कि चारों ओर मानस का प्रशान्त शीतल नीर और बीच में हंस। दधीचि और वामन, दोनों का व्यक्तित्व एकत्र साकार हो उठा। उनकी विस्मित और गम्भीर मुद्रा ने कुछ क्षण रामचन्द्र रेड्डी को निहारा, फिर उन हरिजन भाइयों की ओर देखा। इस बाह्य प्रक्रिया के भीतर कोई विशेष आन्दोलन-सा हो रहा था। विनोबा की मुद्रा पर गम्भीर चिन्तन प्रकट हो रहा था। क्या सोच रहे थे ? ईश्वर के इस चमत्कार के बारे में या उसकी व्यवस्था की पूर्णता के बारे में ? भूख के साथ भोजन देने की उसकी योजना के बारे में।

दान की घोषणा ऐसे तो स्पष्ट थी। फिर भी दाता को, हरिजनों को और सबको ही बात ठीक और स्पष्ट समझ में आ सके, इसलिए श्री रामचन्द्र रेड्डी को एक कागज दिया गया कि वे अपना संकल्प उस कागज पर लिख दें। रामचन्द्र रेड्डी ने फौरन अपने भावों को अपने हाथ से कलम-बन्द कर दिया। विनोबाजी ने वह कागज देखा, जो अब कागज नहीं था, एक दस्तावेज, एक ऐतिहासिक संकल्प-पत्र बन गया था। सब लोगों के सामने वह फिर पढ़ा गया। जाब्ते की दृष्टि से दाता की

अपनी इच्छानुसार उस पर दो गवाहों के हस्ताक्षर भी हो गये। रामचन्द्र रेड्डी के मुख पर एक विशेष संतोष की भावना झलकने लगी। एक तरह का उत्साह भी उनकी मुद्रा पर नजर आ रहा था। दानपत्र पुनः पढ़ा गया।

Shrim!

102
18/4/51

I hereby declare on behalf [in behalf] of my brothers (the sons of Shri Vedre Narasimha Reddy of Pochampalli Bhongir Taluk, Nalgonda Dist.,) and also on my own behalf that according to the wish of my dear deceased father out of the landed property belonging to our family (Vedre family) at Pochampalli and Julur, fifty acres of land (including wet and dry sirs) at Pochampalli and fifty acres of land (as above) at Julur are hereby declared to be dedicated for the upliftment of the local Harijans of Pochampalli and Julur and now very solemnly I hereby request Shri Vinoba Bhaveji (who is now proceeding on his peace tour in our Andhra Desa) to bring to the notice of these Harijans and explain the purpose and use of these dedicated lands so that the soul of my dear deceased Pithaji (called "Bapuji" in my family) may be in peace and the souls of these deserving brethren may be satisfied at such a unique and appropriate occasion.

Details of the dedication —

I 50 (fifty) acres of land at Julur village
II 50 (fifty) acres of land at Pochampalli.
Total 100 (One hundred acres only,

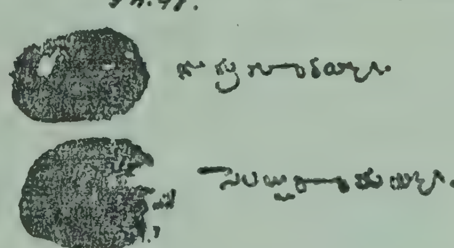
The possession of these lands shall be given to these brethren in the beginning of the coming raining season in the respective villages. I request Shri Vinobaji to form a trust (of course according to

his established Sarvodaya principles and direct the local institution concerned to take appropriate interest in this matter. But according to the wishes of my dear deceased father one member of our Reddi family should be taken in the said trust and naturally some of the local Harijan members also should be included in the Trust and the management and utilization of these lands should be left to the local Harijans by gradual development every year. With these hints and requests I conclude this document and entrust this matter to Shri Vinobaji to decide and take necessary action in this regard.

Ram Chandra Reddy
("eldest brother");
18/4/51.

[illegible]

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible]



Ram Chandra Reddy

भीड़ बढ़ रही थी और मसले एक-एक करके सामने आ रहे थे। गाँव में सेंदी शराब खूब चलती थी। बुनकर सूत के अभाव में बिना

काम के और बिना भोजन के जिन्दगी बसर करते थे। धोबी भी दुखी थे, एक के बाद एक अपनी समस्या सुनाते रहे और सान्त्वना पाते रहे। किसीने सुझाया कि जिन्हें भूमि दी जाय, वे सेंदी शराब से मुक्त होने का संकल्प करें। विनोबाजी ने ऐसी किसी शर्त के साथ जमीन देने की बात स्वीकार नहीं की। आज दबाव के कारण कोई प्रतिज्ञा करे, यह उन्हें उचित प्रतीत नहीं हुआ। उनकी सद्भावना पर उन्होंने यह विषय छोड़ दिया।

इधर भीतर मुलाकातें चल रही थीं। बाहर जनता खूब जमा हो चुकी थी।

मुखिया ने अपने साथियों से बातचीत शुरू की। वातावरण उत्सुकता और गंभीरता के भावों से भरा लगने लगा। दो मिनट भी नहीं बीते और मुखिया खड़ा हुआ। सारी आँखें उसकी ओर मुड़ीं। उसने कहा :

"महाराज, हम आज से ही निश्चय करते हैं, हम आइन्दा सेंदी नहीं पीयेंगे।" किसीने सुझाया कि प्रतिज्ञा लिखवा ली जाय। विनोबा ने मना किया : "आज तुम लोगों के प्रति इन भाइयों के दिलों में एहसान की भावना है। उसके दबाव में वे तो फौरन प्रतिज्ञा कर लेंगे, पर ऐसा न करना चाहिए। बरसों की आदत है, छूटते-छूटते छूटेगी। अगर अपने वचन पर वे कायम रहें, तो काफी है।"

बिना हाथ-सूत के चारा नहीं

तीसरी समस्या पेश हुई। बुनकर आये। "सूत का कोटा पर्याप्त नहीं मिलता। आधी पेटी ही मिलती है, जिससे एक हफ्ते से ज्यादह काम नहीं रहता। करीब तीन हफ्ते बेकार रहना पड़ता है, सूत दिलवाइये।"

"सब जगह यही हाल है।" विनोबा ने उनके साथ पूरी सहानुभूति अनुभव करते हुए कहा।

"फिर क्या किया जाय ?" बुनकरों ने पूछा।

"आप लोग ही बताइये"—विनोबा ने उन्हींसे सवाल किया एवं फिर अपने तरीके से उनको समझाना शुरू किया :

"अरे भाई, जब अपने देश में पहले मिलें नहीं थीं, तब क्या बुनकर नहीं थे ? या बेकार बैठे रहते थे ? या लोग नंगे रहते थे ? और तुम लोग खुद बुनते हो, फिर भी तुम्हारे बदन पर यह मिल का कपड़ा है ! जब तक तुम अपने सूत का कपड़ा नहीं पहनोगे, मसला हल नहीं होगा। क्या किसान अनाज पैदा करके रोटी खरीदता है ? तुम लोग खुद ही अपने काम को काटते हो ! होना यह चाहिए कि हमें अपने लिए सूत कात लेना चाहिए।" अपनी धोती, दुपट्टे और बिस्तरे के कपड़े बताते हुए कहा : "यह देखो, यह कपड़ा कितना अच्छा है ? सब-का-सब हाथ का है। कातने का निश्चय करो, तो जिंदा रह सकोगे।"

बुनकरों ने फिर और सवाल किया : "यहाँ कपास नहीं होती।"

"ठीक है, पर पहले भी कपास नहीं होती थी, ऐसी तो बात नहीं है ? गाँववालों ने अगर अब कपास बोना छोड़ दिया है, तो उन्हें फिर से वह शुरू करना चाहिए। यह केवल पोचमपल्ली का सवाल नहीं है—सभी गाँवों का सवाल है। और यहाँ तो मैंने सुना है कि कपास बोनेवाले को लगान भी माफ हो जाती है। जब तक कपास पैदा नहीं होती, तब तक वह खरीदी जा सकती है। कपड़ा खरीदने से बेहतर है कि कपास खरीदी जाय।"

हमारे निवास के सामने, तालाब के किनारे आम और नीम के बड़े-बड़े दरख्त थे— उनकी छाया में करीब पाँच हजार स्त्री-पुरुष विनोबा का इंतजार कर रहे थे। इर्द-गिर्द के गाँवों से लोग आये थे। गाँवों में रेवनपल्ली, भीवनपल्ली, गोसकोंडा, कन मुकला, राउलपल्ली, कपरास-पल्ली आदि सभी गाँव के लोग थे। ये गाँव कम्युनिस्ट भाइयों के कार्य-क्षेत्र माने जाते हैं। विनोबा सभा में आये, तो इधर लोगों ने महात्मा गांधी की जय का उत्साह-भरा नारा लगाया—विनोबा मंच पर बैठे, तो ऊपर

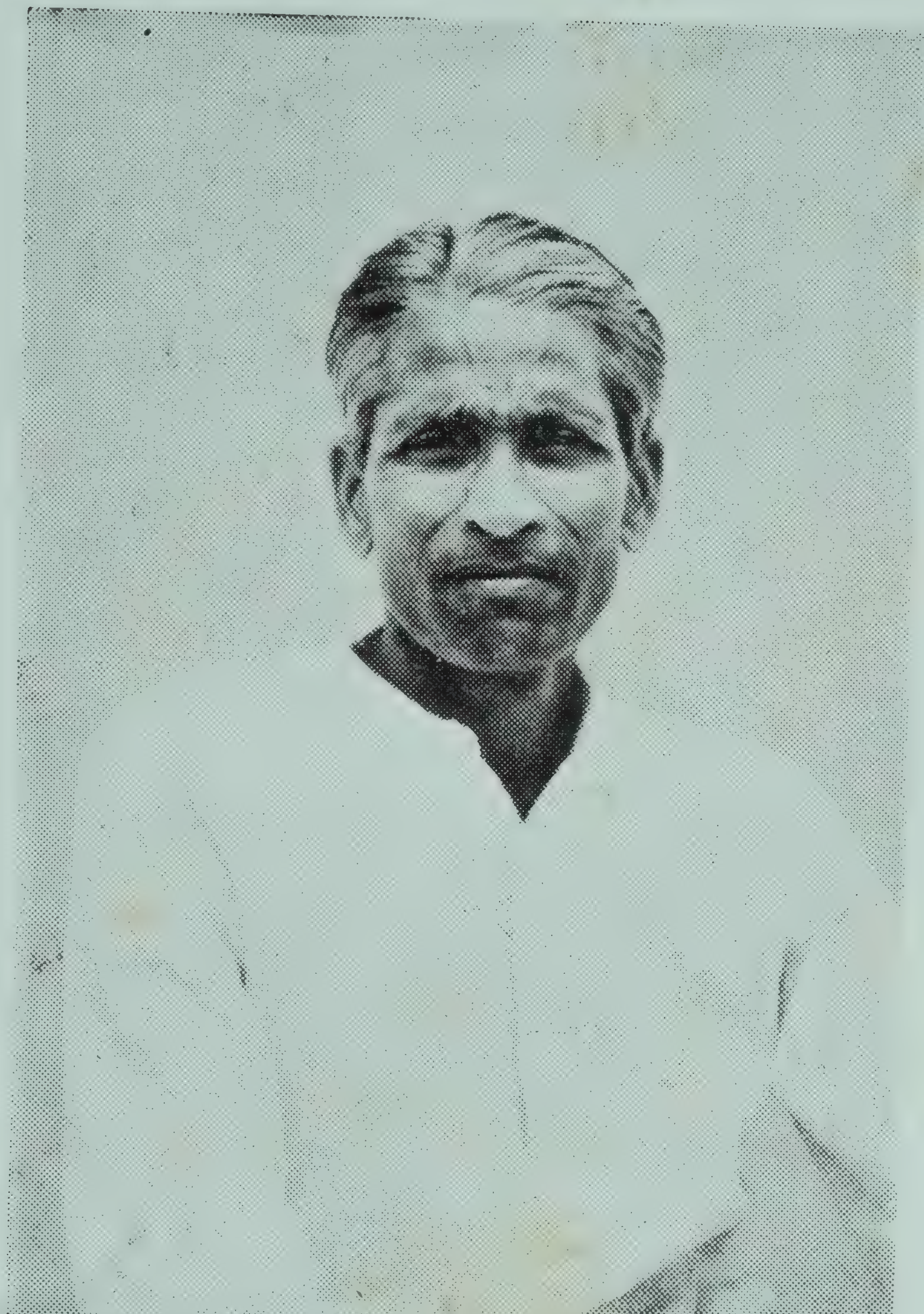
कोयल ने भी मधुर कंठ से उनका अभिवादन किया। सबको सुनाई दे, इस खयाल से जनता के बीचोबीच खड़े होकर, विनोबा ने तेलुगु गीता से स्थितप्रज्ञ के श्लोक पढ़े। उनके मुख से तेलुगु सुनते ही शांत जन-समुदाय मुग्ध होकर चित्रवत् श्रवण-भक्ति में लीन होता-सा दिखाई दिया। उन्हें मानो यकीन हो गया कि फकीर उन्हींका आदमी ।

प्रवचन के प्रारंभ में विनोबाजी ने तेलंगाना की दुःखद परिस्थिति, कम्युनिस्टों का आन्दोलन, जेल में उनसे की गयी मुलाकात आदि का जिक्र किया और फिर बोले : "हम लोगों ने देखा, वे भी तुम्हारे-हमारे जैसे सादे मनुष्य हैं, उन लोगों ने यहाँ पर बहुत भय पैदा कर दिया, ऐसा सब लोग बोलते हैं। लेकिन इस गाँव के लोग, गरीब और श्रीमान्, दोनों अगर मिल करके रहेंगे, तो आपके गाँव को कोई दुःख नहीं होगा। हम इस गाँव के सब लोगों को सुनाना चाहते हैं कि आप सारे गाँववाले एक हो जाइये। गाँव में कुछ लोग दुःखी हैं, तो कुछ लोग सुखी भी हैं। जो लोग सुख में हैं, उनसे हम प्रार्थना करते हैं कि अपने गाँव के दुःखी लोगों की चिन्ता जरा आप कीजियेगा। हम लोगों को गांधीजी ने एक बड़ा रास्ता बताया है। उन्होंने बताया कि हम किसीको तकलीफ नहीं देंगे। जो दुःखी हैं, उनको जरा सब्र रखना चाहिए। अगर हम सहन नहीं करेंगे, तो हमारा काम नहीं होगा। जो हमारे दुःख हैं, जो हमारी तकलीफें हैं, उन्हें सज्जन लोगों के सामने रख देना, बोलने में जरा भी डर नहीं रखना, असत्य कभी नहीं बोलना, अतिशयोक्ति कभी नहीं करना, जैसा है वैसा ही बताना, इस तरह अगर गरीब-दुःखी लोग हिम्मत रखेंगे और सुखी लोग दयाभाव रखेंगे, तो आपके गाँव में कम्युनिस्टों का कोई उपद्रव नहीं हो सकता।"

भूमिदान का संकल्प

फिर सबेरेवाली भूमिदान की घटना का जिक्र करते हुए कहा :

"आज इस गाँव के हरिजन लोग हमसे मिलने के लिए आये थे। उन



भूदान-आन्दोलन के प्रथम दाता श्री रामचन्द्र रेड्डी



रामनवमी के मंगल मुहूर्त पर शांति-सेना के सिपाही ने शांति की खोज में तेलंगाना के लिए कूच किया !

लोगों ने कहा कि हमको अगर कुछ जमीन मिलती है, तो हम मेहनत करेंगे और मेहनत का खाना खायेंगे। हमने कहा कि अगर हम आपको जमीन दिलायेंगे, तो आप सब लोगों को मिलकर काम करना होगा, अलग-अलग जमीन नहीं देंगे। फिर उन्होंने कबूल किया कि हम सारे एक होंगे और जमीन पर मेहनत करेंगे। हमने कहा कि इस तरह हमको लिख दो, आपकी अर्जी हम सरकार में पेश करेंगे। इस बीच हमने, जो लोग जमा थे, उनसे भी पूछा, तो उनको १०० एकड़ अपनी जमीन देने के लिए वहीं के एक भाई तैयार हो गये और उन्होंने हमारे सामने हरिजनों को वचन दे दिया कि आपको इतनी जमीन हम दान देंगे।"

विनोबाजी ने फिर दाता को खड़े रहने का इशारा करते हुए कहा : "वह भाई जरा खड़े हो जायँ।"

रामचन्द्र रेड्डी तत्क्षण दोनों हाथ जोड़कर विनम्र भाव से खड़े हो गये। विनोबा बोलते रहे। तब तक रेड्डीजी मौनपूर्वक वैसे ही खड़े-खड़े श्रवण-भक्ति करते रहे। विनोबाजी का प्रवाह जारी था। उन्होंने कहा : "ये वे भाई हैं, जिन्होंने वचन दे दिया है कि हम अपनी १०० एकड़ जमीन दे देंगे। तो यह भला आदमी आपके सामने है। अगर वह जमीन नहीं देता है, तो ईश्वर का गुनहगार बनेगा। आप उसको याद रखिये। लेकिन वह जमीन देगा, तो हरिजनों पर यह जिम्मेदारी आ जायगी कि सारे-के-सारे प्रेम-भाव से एक होकर इस जमीन को जोतें।" एक क्षण के लिए विनोबाजी रुके, दाता और हरिजन भाइयों की ओर तथा जनता की ओर गौर से देखा, इतने में रामचन्द्र रेड्डी की भावनाएँ जाग उठीं। उनसे नहीं रहा गया। उन्होंने पुनः अपने दान को दोहराया और सबके सामने अपने वचन को पालन करने की प्रतिज्ञा की।

करतल-ध्वनि से आसमान गूँज उठा। एक अद्भुत दर्शन था वह! एक ओर एक फकीर उस विशाल वृक्ष के नीचे मंच पर खड़ा अधिकार-वाणी से कुछ बोल रहा था। दान में भूमि मिली थी, पर उसकी वाणी में

दीनता नहीं थी, सद्भाव था, श्रद्धा थी, दीन-दुखियों के प्रति हुए अन्याय के अंशतः परिमार्जन का संतोष था। और दूसरी ओर विशाल जन-समुदाय के बीच रामचन्द्र रेड्डी खड़े थे, जमीन का दान किया था, परन्तु मुद्रा पर अहंकार नहीं था। प्रायश्चित्त की भावना थी। समाधान था। और उधर हजारों-हजार आँखें कभी फकीर को निहारती थीं—कभी दाता को। विस्मित थीं। मन-ही-मन फकीर को वन्दना करती थीं। दाता को धन्यवाद देती थीं। क्या विशेष घटना हुई थी? जमीन तो उन्हें इसके पहले कम्युनिस्टों ने भी तकसीम कर दी थी। परन्तु क्या नतीजा निकला था? यही कि जमीनें छिन गयी थीं और जमीनों के साथ प्रतिष्ठा भी। और आज क्या हुआ था? जमीन तो मिली ही थी। जमीन के साथ-साथ प्रतिष्ठा भी मिली थी और दोनों को मिली थी, देनेवाले को भी और पानेवाले को भी। "इट ब्लेसेथ हिम दैट गिव्ज् एंड हिम दैट टेक्स" ऐसी यह घटना थी।

निराशा में आशा छा गयी।

मानो किसी जादूगर ने कोई चमत्कार प्रकट किया।

या किसी वैज्ञानिक ने कोई सुप्त और गुप्त शक्ति प्रकाशित की।

चंद क्षण इस सामूहिक अनुभूति में बीते होंगे और फिर उस "भूदान" वाली घटना में कितनी क्षमता छिपी हुई है, यह बताते हुए गंभीर वाणी से विनोबा ने घोषणा की :

"अगर ऐसे सज्जन लोग हर गाँव में मिलते हैं, तो कम्युनिस्टों का मसला हल हो गया, ऐसा समझो। आप यह जरूर समझ लो कि श्रीमान् लोग हिन्दुस्तान में अपने हाथ में ज्यादा जमीन रख सकनेवाले नहीं हैं। कोई भी श्रीमान् गरीबों की मदद के सिवा अपनी भूमि अपने हाथ में रख नहीं सकता।"

जमीन के साथ गृहोद्योग भी

मिले हुए दान से संतुष्ट होकर विनोबाजी खामोश नहीं रहे। भूमि

के साथ-साथ जब तक ग्रामोद्योग नहीं जुड़ेंगे, हिन्दुस्तान के देहातों की गरीबी दूर नहीं होगी। इसलिए उन्होंने गाँववालों को समझाया :

"लेकिन आप लोगों को मैं एक बात और कह देना चाहता हूँ कि अगर सब लोगों को जमीन दे भी दें, तो भी हम सब लोगों का जीवन अच्छा और सुखी नहीं बनेगा। आपके गाँव में कुल ३००० लोग रहते हैं और आपके गाँव में पूरी जमीन कुल मिलाकर ३००० एकड़ ही है। उसमें अच्छी जमीन भी आयी, खराब जमीन भी आयी और पत्थर भी आये। मतलब यह हुआ कि हरएक आदमी को इस गाँव में एक एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं है। तो आप देखिये कि एक एकड़ जमीन की काश्त करने से एक साल का खाना, कपड़ा, ये सब चीजें मिल जायेंगी? इसलिए जरूरत इस बात की है कि जमीन की काश्त के साथ-साथ दूसरे धंधे भी गाँव में चलने चाहिए।"

खादी के व्यवसाय की आवश्यकता और अहमियत के बारे में विस्तार से समझाते हुए सभा में से ही एक बालक की टोपी दिखाकर कहा : "अब देखो, यह लड़का। इसके सिर पर टोपी है। (हाथ में टोपी लेकर) यह देखो उसकी टोपी। इसमें खिड़की है! खिड़की नहीं, दरवाजा। अब अगर हम लोग सूत कातते, तो ऐसी टोपी कौन पहनता? तो हमारी यह दरिद्र दशा हुई है। हमको दिन-ब-दिन कपड़ा कम मिलनेवाला है, तो हम कहते हैं कि पहले के जमाने में हर गाँव में कपास होती थी, हर गाँव में सूत कातते थे और अपना कपड़ा पहनते थे। गांधीजी ने यह समझाया कि हिन्दुस्तान के किसान जैसे अपना अन्न पैदा करते हैं, वैसे अपना कपड़ा पैदा करने लगें, तभी सुखी होंगे, नहीं तो नहीं होंगे। इस तरह अगर उद्योग करेंगे, तो आपके गाँव के बुनकरों को काम मिलेगा। वे बुनकर हमारे पास आये थे, तो कहते थे कि हम आठ थान बुन सकते हैं महीने में, लेकिन हमको दो थान सूत मिलता है, तब क्या करें? अब उन बुनकरों को मैं कहाँ से सूत दे सकता हूँ? आप परमेश्वर से प्रार्थना

कीजिये कि हे भगवन्, बारिश में सूत की बारिश कर, तो फिर इन बुनकरों को बारिश में से सूत मिलेगा ! मानो मृग नक्षत्र में सूत की बारिश होनी चाहिए ! तो मैं यह कहता था कि अगर आप सब लोग गाँव में कपास बोयेंगे और सूत कातेंगे, तो आपके गाँव के बुनकर जिंदा रहेंगे, नहीं तो ये लोग मरनेवाले हैं। अरे, मिलवालों के पास सूत है कहाँ ? मिलवाले लड़ाई के पहले हर मनुष्य के लिए १७ गज बुनते थे, अब १२ गज कपड़ा दे रहे हैं। आप लोग यह मत समझिये कि मिल-वाले कहीं से ज्यादा सूत लायेंगे। आपको अगर वे विलायत से सूत ला दें, तो क्या आप पसंद करेंगे, विलायत का सूत ? आपको बाहर से अन्न भी ला दें, बाहर से सूत भी ला दें, तो इस देश में रहते काहेको हैं ? बाहर ही क्यों नहीं चले जाते ? अगर आपको इस जगह रहना है, तो हर गाँव में अन्न की पैदाइश होनी चाहिए, हर गाँव में कपड़ा पैदा होना ही चाहिए। और सूत कातना इतना आसान काम है कि पाँच साल का लड़का भी अपना सूत कात सकता है। इसी तरह से गाँव के दूसरे भी उद्योग हैं। वे सारे उद्योग गाँव में चलने चाहिए। इस तरह सारा गाँव एक हो करके उद्योगों में लग जाय। एक-दूसरे पर प्रेम करें, तो वे जो कम्युनिस्ट लोग हैं—वे भी संतुष्ट हो जायेंगे। इसलिए अब भय छोड़ दीजिये और काम में लग जाइये।"

विनोबाजी ने सेंदी-शराब की बुराइयों की ओर भी ध्यान दिलाकर कहा कि सभी धर्मों ने उसका निषेध किया है और आशा प्रकट की कि पोचमपल्लीवाले अब सेंदी-शराब छोड़ देंगे।

अंत में कुछ देर भजन-कीर्तन हुआ और फिर गाँव के लोग अपने-अपने गाँव लौट गये। रोज ही लौटते हैं, लेकिन आज हर आदमी जाते समय बार-बार इस भगवान् के बेटे को निहारता था, जिसने पोचमपल्ली के निमित्त संसार को एक नया रास्ता दिखाया था। पोचमपल्ली की हद तक भूमि का प्रश्न हल हुआ। विनोबा ने यह भी समझा दिया कि

बिना ग्रामोद्योगों के केवल भूमि का मसला हल नहीं होगा। व्यसन-निवारण की भी प्रेरणा दी। लेकिन पोचमपल्लीवाले मानो ग्राम की समग्र रचना के बारे में ही समझ लेना चाहते थे। या उनके निमित्त गाँवों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का पूरा विवरण ही प्रकट होना था। शायद इसीलिए शाम को कुछ चिंतनशील व्यक्ति विनोबाजी से मिलने आये और वर्ण तथा आश्रम, दोनों के बारे में जानना चाहा कि आजकल दुनिया इनके विषय में उदासीन ही नहीं, विरुद्ध भी है, तो आपकी क्या राय है ?

विनोबा के मन का विषय था। प्रसन्न होकर बोले : "वर्ण और आश्रम सबके लिए, सब काल में रक्षणीय और पालनीय है। हमारे गाँव के बुनकर का कपड़ा ही हमें लेना चाहिए, गाँव के तेली से ही तेल खरीदना चाहिए, गाँव के चमार से ही जूते बनवाने चाहिए। इस तरह स्वदेशी का खयाल रखने से वर्णधर्म टिक सकेगा। यही बात आश्रम की है। आजकल लोग अंत तक गृहस्थ बने रहते हैं। यह वांछनीय नहीं है। वानप्रस्थ होना ही चाहिए।"

जहाँ भोजन की एक ही पंक्ति में मांसाहार, शराब या ताड़ी चलती हो, वहाँ भोजन करने-न करने के औचित्य के बारे में पूछे गये प्रश्न का जवाब देते हुए कहा : "यदि पंक्ति में ही मांसाहार या शराब-दारू चल रही हो, तो उनके साथ उस पंक्ति में बैठकर भोजन नहीं करना चाहिए। लेकिन आहार-साम्य हो, तो सब मिलकर एक साथ खाना खायें, यह अच्छा है। घरों में मांसाहार करनेवालों के साथ भी पंक्ति में निरामिष भोजन एक साथ करने में कोई हर्ज नहीं। हमें भोजन में शबरी और राम का उदाहरण सामने रखना चाहिए। बिल्ली चूहे का आहार करती है, फिर भी हम उसे अपने पास बैठाकर दही, भात खिलाते ही हैं न ?"

अंत में एक प्रश्न 'मुक्ति' के संबंध में पूछा, तो विनोबा ने कहा :

"आसक्ति, क्रोध, काम, मोह, अज्ञान आदि विकारों से मुक्ति पाना ही मोक्ष है। अगर विकार-क्षय हो जाता है तो मोक्ष मिल गया। परमेश्वर की उपासना भी करनी है, तो किसलिए? विकारों से मुक्ति पाने के लिए ही।"

रात को सोने से पहले पुनः सबको बुलाया—साथ में जो जिम्मेवार कार्यकर्ता हैदराबाद से आये थे, उन्हें भी तथा गाँववालों में से भी कुछ लोगों को। जो भूमि मिली थी, उसका उचित प्रबन्ध होना जरूरी था। बँटवारा होना था, फिर सहकारी तौर से जुताई होनी थी और सरकारी कानून का भी जमीन को संरक्षण मिलना था। उसके हस्तांतरण का प्रबंध होना था। दाता पर उसके खर्च का भार न पड़े, ऐसी सबकी भावना थी। इस सब काम के लिए विनोबा ने एक ट्रस्ट मुकर्रर किया, जिसमें दाता के अतिरिक्त, उसकी सलाह और अनुमति से हरिजन भाइयों के दो प्रतिनिधि रखे तथा एक श्री व्यंकट रंगा रेड्डी का नाम रखा, जो उस समय आन्ध्र प्रदेश कांग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष थे। एक नाम गाँव के पटेल का रखा। जो ट्रस्ट-कमेटी बनी थी, उससे हरिजन भाइयों को भी पूरा संतोष हुआ, दाता को भी संतोष हुआ और काम के बारे में भी निश्चितता का अनुभव सबने किया। ● ● ●

भीम-जरासंध, राम-लक्ष्मण बने : ५ :

तंगलपल्ली
१९-४-'५१

रोज की तरह सबेरे प्रार्थना हुई। प्रार्थना के बाद विनोबा किसीसे कुछ बोलते नहीं हैं। अपने कार्यक्रम में व्यस्त रहते हैं। स्वाध्याय चलता है। कुछ शहद, पानी या दही-दूध का जलपान लेते हैं और कूच होता है। परंतु आज जैसे ही प्रार्थना समाप्त हुई, उन्होंने ट्रस्टियों से बात करने की इच्छा प्रकट की। लोग प्रार्थना के लिए आये ही थे—विनोबा ने गंभीरता से चंद बातें समझायीं। उनकी जिम्मेवारी का उन्हें भान कराया। "मेरा ध्यान इधर रहेगा। यहाँ के काम का असर सारे देश पर होगा।" लगता था, बहुत कुछ मन में भरा है। पर कहना नहीं चाहते। थोड़े शब्दों में सारी भावना और प्रेरणा का खजाना पोचमपल्लीवालों को सौंपकर मौन रहे। चेहरे पर चिंता नहीं थी। चिंतनोत्तर समाधान था। यह भी प्रतीत होता था कि रात को नींद ठीक नहीं आयी है। परन्तु सबेरे की सारी बातचीत वैशिष्ट्यपूर्ण थी, मानो कोई साक्षात्कार ही हुआ हो रात को। पोचमपल्ली से कूच किया, तो गाँववालों ने **"रमारमण गोविंदो हर"** का उद्‌घोष किया। विनोबा ने पुनः इस उद्‌घोष को दोहराया। काफिला निकल पड़ा। गाँववाले भी—हरिजन-गैरहरिजन—सभी साथ निकल पड़े। फिर कब आयेंगे, कौन जानता था? कल की घटना से सारा गाँव मंत्र-मुग्ध था। संत को रोक नहीं सकते, तो जितना हो सके—साथ तो हो लें। भजनानंद में लोग एक मील तक निकल आये।

आखिर विनोबाजी ने उन्हें रोका। उनकी तरफ मुड़कर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर तेलुगु में कहा : "अंदरिकी नमस्कारम्!" यानी 'सबको

नमस्कार।' लोगों ने भी भक्तिभावपूर्वक प्रणाम किया। क्षणभर सब रुक गये। सबको जाने का इशारा करके विनोबा आगे बढ़े। पोचमपल्लीवालों के कदम बड़ी मुश्किल से गाँव की ओर मुड़े।

भीमनपल्ली, धोतीगुड़ा, धर्माजीगुड़ा होते हुए आठ बजे तंगलपल्ली पहुँचे। पहले रोज पोचमपल्ली में इर्द-गिर्द के देहातों से काफी लोग आये थे। भूदान की बात चारों ओर फैल चुकी थी। विनोबाजी तंगलपल्ली जा रहे हैं, यह भी लोगों को मालूम हो चुका था। इसलिए सिर्फ बीच में आनेवाले गाँव में ही नहीं, बल्कि खेतों में, जंगलों में और बीच में पड़नेवाले एक ताड़-वन में भी, जगह-जगह कहीं पचास, कहीं पचीस, कहीं सौ और कहीं दो सौ किसान कंधे पर कंबल धारण किये घुटने तक की धोती और हाथ में लकड़ी लिये हुए विनोबाजी का स्वागत करने और उन्हें दिल भरकर देखने के लिए खड़े थे। विनोबाजी दुखियों से मिलने के लिए आनेवाले हैं, ऐसी खबर तो गाँववालों को पहले से ही थी। पर कोई भगवान् का भक्त, गांधी का बेटा जमीन दिलाने आया है, यह बात कल की घटना से चिनगारी की तरह फैल गयी थी; और यही वजह थी कि लोग भूमि दिलानेवाले इस फकीर को देखने के लिए जगह-जगह बड़ी संख्या में जमा हुए थे।

राज्य-रहित जमाना

रास्ते में बहुत बड़ा ताड़-वन लगा था। उसके सम्बन्ध में लोगों ने बताया कि पुलिस-एक्शन के पहले यह वन इतना घना था कि रास्ता भी नहीं सूझता था। उसकी तुलना में आज वन आधा भी नहीं रहा था। पुलिस-एक्शन के बाद कुछ दिनों तक जो राज्यरहित जमाना बीता, उस अवधि में जिस-जिससे बन पड़ा, सबने ताड़-वृक्ष काट लिये, किसीने मकानों के लिए, तो किसीने बेचकर पैसा कमाने के लिए।

तंगलपल्ली पहुँचने पर मालूम हुआ कि गाँव में दो पक्ष हैं। दो सगे भाई आपस में लड़ रहे हैं—कोर्ट-कचहरियों में हजारों रुपये बर्बाद

कर चुके हैं। इन्हीं दोनों के कारण गाँव में भी दो पक्ष पड़े हुए हैं। विनोबा ने दोनों को अपने पास बुलाया। एक—व्यंकट रेड्डी—के यहाँ तो हम ठहरे ही थे, दूसरे नरसिंह रेड्डी। व्यंकट रेड्डी कम्युनिस्टों के भय से अक्सर हैदराबाद रहते। हमारे आने की खबर पाकर एक रोज पहले ही घर आये थे। उनकी पत्नी तो हमारे पहुँचने के बाद घर पहुँची थी। दूसरा भाई पड़ोस में ही रहता था। झगड़ा आपसी था, फिर भी एक भाई कम्युनिस्टों का मददगार समझा जाता था, तो दूसरा भाई कांग्रेस और सरकार का।

भीम-जरासंध

गाँववालों ने विनोबाजी से साफ कहा : "ये दोनों भाई लड़ते हैं, गाँव तबाह हो रहा है। दोनों की लड़ाई में गाँववाले पिसे जा रहे हैं।"

विनोबा ने अपने तरीके से दोनों से बात की, सबके सामने। पूछा : "तुम दोनों कितने बरस और जीनेवाले हो ?"

"हमारा एक पाँव श्मशान में है और एक यहाँ"—एक ने जवाब दिया। दूसरे ने भी अपनी अनुमति इसी वक्तव्य के पक्ष में प्रकट की।

"फिर यह लड़ाई और यह तबाही किसलिए ?"

"आप जैसी आज्ञा दें।"

"पंच जो फैसला दें, उसे मंजूर कर लेंगे न ?"

"जरूर कर लेंगे।"

लोगों के दिलों से मानो एक बड़ा भारी बोझ उतर गया।

लेकिन विनोबा का काम इतने से पूरा नहीं होता था। शाम को प्रार्थना-प्रवचन में दोनों को मंच पर बुलाया। जनता से कहा कि "ये दोनों भाई अब तक भीम-जरासंध थे। अब आज से इनके झगड़े मिट गये हैं।" दोनों ने विनोबाजी को प्रणाम किया। दोनों मंच पर एक-दूसरे से गले मिले। नब्बे एकड़ जमीन का दान घोषित किया और आगे चलकर गाँव की सेवा करने का अभिवचन दिया। जो भाई गाँव छोड़कर

हैदराबाद रहते थे, उन्हें कहा कि "तुम्हें अब हैदराबाद रहने की जरूरत नहीं है।" और गाँववालों को भी समझाया कि "आपके गाँव का कोई मनुष्य आपके डर से बाहर गाँव चला जाता है, यह आपके लिए असह्य होना चाहिए। **हम सब जीयेंगे तो एक साथ, मरेंगे भी एक साथ,** ऐसी गाँववालों की भूमिका होनी चाहिए।"

धन में धन प्रेमधन

दोपहर को गाँववालों से जो चर्चा हुई थी, उसका जिक्र करते हुए बोले :

"एक भाई कहने लगे कि गाँव में कुछ लोग तो बहुत गरीब हैं और कुछ लोग श्रीमान् हैं। पर ऐसा तो हरएक गाँव में होता है। कुछ लोग श्रीमान् होते हैं और बहुत-से गरीब होते हैं। उनके बीच में, श्रीमान् और गरीबों के बीच में, जो झगड़े हैं, उनको मिटाने का रास्ता मेरे पास है। वह रास्ता क्या है? यही है कि अपने पास जो है, वह दान देते जाओ। भगवान् ने हमें ये जो दो हाथ दिये हैं, वे इस वास्ते दिये हैं कि हम दूसरों को दान दें। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में यही रास्ता बताया है। उन्होंने कहा है कि हरएक मनुष्य को चाहिए कि अपने पास जो कुछ है, वह दूसरों को दान दे। अगर हम दान देते हैं, तो वह दस-गुना पैदा होकर दुनिया सुखी होती है। और अगर हम दान नहीं देते हैं एवं सारा अपने पास रख लेते हैं, तो सारा देश दुःखी हो जाता है। फिर अपने पास धन रखनेवाला मनुष्य मर जाता है, तो लोग कहते हैं, 'बहुत अच्छा हुआ—रावण मर गया।' लेकिन जब दुनिया छोड़कर जाते हैं, तब सबका प्रेम-सम्पादन करके ही हमको जाना चाहिए। कुछ लेकर नहीं जायेंगे। राम गया, तो वह कुछ ले नहीं गया और रावण गया, वह भी कुछ ले नहीं गया। लेकिन राम गया, तो उसका अच्छा नाम रहा और रावण गया, तो उसका बुरा नाम रहा। रामचंद्र गये, तो सारी दुनिया का प्रेम संपादन करके गये और रावण गया, तो सबका तिरस्कार संपादन करके गया। इसलिए इस दुनिया में संपादन करने लायक और

कोई धन है, तो वह प्रेम ही है। जिसने प्रेम-संपादन नहीं किया और लाखों रुपये कमाये हैं, उसने सब कुछ गँवाया। लोग कहते हैं कि इस गाँव में कम्युनिस्टों का डर है। हम पूछते हैं कि कम्युनिस्ट कोई जंगली प्राणी होता है? शेर होता है या शेर-बच्चा होता है? कौन होता है? तो कहते हैं कि वे मनुष्य ही होते हैं। फिर मनुष्यों का डर आप क्यों रखते हैं? अगर हम प्रेम से रहते हैं, एक-दूसरे को मदद देते हैं, तो यह सारा गाँव अयोध्या नगरी बन जायगा, लेकिन यहाँ तो झगड़े ही चलते हैं। एक-दूसरे को प्रेम नहीं देते हैं, तो बाहर से यहाँ पुलिस आकर पीटती है, कम्युनिस्ट आकर पीटते हैं, और भी कोई आकर पीटेंगे।"

अन्त में हिंसक कार्रवाइयों से बाज आने की प्रेरणा देते हुए कहा: "भाइयो, एक ही बात कहकर खतम करता हूँ। जब तक आपका भरोसा बंदूक या पिस्तौल पर रहेगा, तब तक आपकी कोई प्रगति होनेवाली नहीं है। इसलिए चाहे कम्युनिस्ट हो, चाहे सोशलिस्ट हो, चाहे कांग्रेसी हो, सबको समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान की उन्नति के लिए सिवा अहिंसा के दूसरा कोई रास्ता नहीं है।"

जमीन दिलाकर जा रहा है

लौटते हुए लोग नब्बे एकड़ जमीन की ही बातें करते गये। गाँव में भी यही एक चर्चा जारी रही। "नब्बे लोगों की रोटी का इन्तजाम हो गया न? कोई मामूली बात है?" हर कोई एक-दूसरे से कहने लगा। "कम्युनिस्टों ने तो सिर्फ वादे ही किये थे, किन्तु देखो, गांधी बाबा का बेटा आया, तो जमीन दिलवाकर जा रहा है।"

सहभोजन

शाम की सभा में जो मांगल्य प्रकट हुआ, उसमें रात को और भी अभिवृद्धि हुई। मानो दिनभर के प्रयत्नों पर कलश चढ़ गया। दोनों भाई और दोनों के दो भतीजे (तीसरे भाई के पुत्र) अनेक बरसों बाद, शायद पचीस बरस के बाद हम सबके साथ एकत्र भोजन के लिए

बैठे। बड़े भाई की पत्नी ने सबको परोसा। नरसिंह रेड्डी तो इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विनोबा का सारा साहित्य खरीद लिया और दूसरे रोज उन्होंने हमारे साथ चलने की इजाजत भी माँगी। विनोबा ने खुशी से चलने की अनुमति दे दी।

हकीम ने मर्ज चीन्हा

भीम-जरासंध के रूप में तेलंगाना के प्रश्न का आज एक और पहलू प्रकट हुआ और वह भी बहुत अहम पहलू। अब हकीम ने मर्ज को ठीक-ठीक चीन्हा था। इलाज भी, जो परिस्थिति में से ही सूझा था, लागू होता नजर आ रहा था। आज गाँव में भय और हिंसा के स्थान पर कौटुम्बिक भावना और पारस्परिक प्रेम का बीज बोया गया। गाँव की हवा बदल गयी। भूदान की गंगोत्तरी वेग से आगे बढ़ने लगी। ● ● ●

साम्ययोग के सप्त सोपान　　: ६ :

सरवेल

२०-४-'५१

गत वर्ष बुद्ध-जयंती के अवसर पर यहाँ श्री नारायण रेड्डी ने सर्वोदय-केंद्र शुरू किया है। पहले से यहाँ बीमारों की सेवा का काम चलता था। अब उसके साथ कताई, बुनियादी-शाला, ताड़गुड़-केंद्र आदि काम भी शुरू हुए हैं। कस्तूरबा-केंद्र भी चलता है।

विनोबाजी करीब ७-३० बजे यहाँ पहुँचे। गाँव के लोगों ने अनेक प्रकार के वाद्यों और गीतों से स्वागत किया। मुख्य द्वार के भीतर आने पर देखा कि दो तरफ 'व्ही' के आकार में दो पंक्तियाँ मकानों की हैं, बीच में एक छोटा मंडप और पीछे नारायण रेड्डी का सेवा-केंद्र। निवास पर पहुँचते ही चंदन, माला, दीप आदि होने पर विनयाश्रम के स्वामी सीतारामजी ने वेदपाठ किया। फिर लक्ष्मीबाई संगम तथा श्री वैद्यनाथन्जी आदि ने यात्रा का उद्देश्य समझाकर लोगों को शाम की प्रार्थना में उपस्थित होने के लिए कहा।

९ बजे गाँव-प्रदक्षिणा के लिए विनोबा निकले। पहले कस्तूरबा-केंद्र देखने गये। रंगावली आदि से केंद्र खूब सजाया गया था। दो बहनें इस केन्द्र में कार्य करती हैं। पूर्व-बुनियादी और बुनियादी, दोनों उम्र के बालक आते हैं। प्रौढ़-शिक्षा का भी काम चलता है। बच्चों का काम देखकर और उनके मुख से कुछ गीत-कहानी वगैरह सुनकर विनोबा गाँव के अन्य भाग देखने गये।

गाँव दिखाने के लिए अक्सर कार्यकर्ता ही मार्गदर्शन करते हैं और योजनापूर्वक सारा गाँव दिखाते हैं। आज विनोबा अपनी इच्छा से गाँव

देखना चाहते थे, इसलिए जिधर उनकी इच्छा होती, उस तरफ वे मुड़ते और सारी भीड़ उनके पीछे हो लेती।

कहीं धूप, कहीं छाँह

हरिजनों के मुहल्ले में गये, बुनकरों के मुहल्ले में गये, और भी मकानों में हो आये। हर घर लिपा-पुता, लाल, सफेद और पीली मिट्टी की विविध अल्पनाओं से चौक पूरे हुए। द्वार पर आम के तोरण। सारा कितना स्वच्छ और सुन्दर! बुनकरों के घरों में गये, तो करघों के इर्दगिर्द सारी भूमि अल्पनाओं से सजायी हुई। पाँव रखते संकोच होता था।

बुनकरों में दो प्रकार दिखे। संतुष्ट और चिंतित। चिंतित वे, जो केवल मिल के कोटे पर आधार रखते थे, महीने में एक हत्ता बुनते, तीन हत्ता बेकार! संतुष्ट वे थे, जो हाथ-कता बुनते थे। उनका करघा कभी खाली नहीं रहता। यह चित्र और वह चित्र! दोनों के घरों में अल्पनाएँ थीं, पर एक घर में छाया थी उदासीनता की, दूसरे में प्रभा थी समाधान की। एक घरवाला अपनी दुखभरी गाथा सुना रहा था कि सूत नहीं, काम नहीं, दाम नहीं और इसलिए पेटभर रोटी का सामान नहीं। दूसरा भी बातें करता था, पूछे हुए प्रश्नों का जवाब देता, परन्तु करघे पर बैठे-बैठे और हाथ से काम करते-करते। गर्दन ऊपर उठाने की फुरसत नहीं। मिलों के हिमायती, खादी के विरोधी, बाहर से लाँग-स्टेपल कपास मँगाने की सिफारिश करनेवाले अर्थशास्त्री एक बार हिन्दुस्तान के देहातों में घूमकर यह धूप-छाँह का दृश्य देखने का कष्ट करें, तो देश का कितना उपकार हो!

समस्या का हल

तेलंगाना-यात्रा के अब तक के इस पचास मील के प्रवास में जगह-जगह लोग कम्युनिस्टों से कम-बेशी प्रमाण में त्रस्त पाये गये थे। जगह-जगह उनके द्वारा पहुँची पीड़ा का हाल सुना और देखा था, लेकिन इस गाँव के लोगों ने बताया कि यद्यपि इर्दगिर्द के लोग कम्युनिस्टों की वजह

से कुछ परेशान हैं, यहाँ अमन है, कोई तकलीफ नहीं है। विनोबा को इस अमन का कारण खोजते देर नहीं लगी। श्री नारायण रेड्डी यहाँ कई दिनों से सेवा-कार्य में जुटे हुए थे। उनके पास जो जमीन थी, उसमें से उन्होंने दो सौ से अधिक एकड़ जमीन गरीब किसानों में बाँट दी थी। इसलिए, यद्यपि इर्दगिर्द के लोग कम्युनिस्टों के कारण कुछ त्रस्त थे—यहाँ उनका प्रवेश भी नहीं हो सका था। कम्युनिस्ट-सवाल को पैदा ही न होने देने का यह एक राज-मार्ग था, जिसकी ओर ध्यान दिलाते हुए संध्या-प्रवचन में विनोबा ने समझाया कि "जहाँ कुछ-न-कुछ सेवा चलती है, वहाँ कम्युनिस्टों के लिए कोई क्षेत्र नहीं रहता।"

अब तक कम्युनिस्टों के काम का जो अनुभव हुआ था, उसके आधार पर उनके काम करने के तरीके के बारे में कुछ साफगोही की आवश्यकता थी।

विनोबा ने कहा : "वे लोग गरीबों में घूमते हैं, कष्ट उठाते हैं, इसका मुझे आनन्द है, लेकिन उन्होंने काम करने का जो तरीका अख्तियार किया है, वह गलत है। उन लोगों ने हिंसा का तरीका अख्तियार किया है। लेकिन वे हिन्दुस्तान की सभ्यता को जानते नहीं। यह देश इतना विशाल और पुराना है कि यहाँ की सभ्यता का खयाल रखे बिना जो यहाँ काम करना चाहेगा, वह कामयाब नहीं होगा। बाहर के राष्ट्रों में बहुत हिंसा चलती है और वे लोग युद्ध के बाद युद्ध करते रहते हैं। यदि हिन्दुस्तान में वह तरीका चला, तो हिन्दुस्तान बरबाद हो जायगा।"

कम्युनिस्टों के काम के बारे में भी कहा :

"निजाम के और रजाकारों के जुल्मों से जब सारे लोग भयभीत हो गये थे, दब गये थे, तब संभव है, कम्युनिस्टों ने लोगों को जगाया हो, उनको ढाढ़स बँधाया हो, लेकिन जब हिन्दुस्तान में लोकसत्ता आ गयी है, तब हिंसा का आश्रय लेना गलत है।"

विनोबा ने यह आशा प्रकट की कि यद्यपि कम्युनिस्टों के कुछ साथी

इस बारे में सोचने से भी इनकार करते हों—उनमें जो जिम्मेदार हैं, वे ऐसा नहीं कर सकते। सोचने से इनकार करने को भी विनोबा ने जड़ता ही कहा : "लेकिन कम्युनिस्टों को सही रास्ते पर लाने का तरीका यही है कि दूसरे लोग सेवा में लग जायँ। मुझे खुशी है कि यहाँ कुछ लोगों ने वह मार्ग अख्तियार किया है।"

'तीन पेपर्स'

फिर विनोबा ने यहाँ के सेवकों को काम की तीन कसौटियाँ बतायीं। एक तो यह कि ताड़-गुड़ बनाने का जो काम यहाँ चल रहा है, उसकी परिणति संपूर्ण नशाबन्दी में होनी चाहिए। इन अमृत-वृक्षों को आज जो जहर का वृक्ष बना दिया गया है, वह रुक जाना चाहिए। दूसरी कसौटी बतायी—सब गाँवों को खादीमय बनाने की। तीसरी कसौटी बतायी—गाँव में न कोई बिना काम का रहे, न बिना अन्न का। "ये तीन पेपर्स मैंने आपके लिए दिये हैं, इनमें आपको पास होना है।"

सेवक-सेना

लेकिन अन्त में एक बहुत महत्त्व की बात समझायी—सेवकों की सेना तैयार करने की! "यह नहीं समझना चाहिए कि सेवा करने का कुछ ही लोगों का धंधा है और बाकी सब लोग स्वामी हैं। यहाँ आश्रम में जो सेवक इकट्ठे हुए हैं, उनके समान पाँच-पचास लोग गाँव में तैयार हो जाने चाहिए।"

इस संबंध में वानप्रस्थ-आश्रम की योजना को समझाते हुए कहा :

"पहले हिन्दुओं में ऐसी व्यवस्था थी कि हर मनुष्य वानप्रस्थ बनकर सबकी सेवा में लग जाता था, परन्तु अब वानप्रस्थ तो खतम ही हो गया। विवाह करके लोग आमरण संसार में फँसे रहते हैं। होना यह चाहिए कि थोड़े दिन लड़के-बच्चों की सेवा करके समाज की सेवा में लग जाना चाहिए। चार आश्रमों में से एक वानप्रस्थ-आश्रम होता है;



मूसा नदी पार करते हुए । लेखक के सिर पर विनोबा की थाती ।



विनोबा का न्यायालय। वहाँ सरकारी कानून नहीं—भगवान् का कानून चलता है। वहाँ हरएक को अपनी भूल स्वीकारनी होती है।



गाँव का निरीक्षण करने निकलते हैं, तो गाँववाले साथ हो जाते हैं। घर-घर में जाकर विनोबाजी उनका सुख-दुख पूछते हैं।

याने चार लोगों में एक समाज की सेवा के लिए तैयार ही होता है। याने आपकी इस बारह सौ की जनसंख्या में से तीन सौ सेवक मिलने चाहिए। इसलिए मैं चाहूँगा कि आप लोगों में जो चालीस-पैंतालीस बरस की आयु के लोग हैं, स्त्री हो या पुरुष, मन में विचार करें कि अब विषय-वासना से मुक्त होना है और गाँव की सेवा में लग जाना है। स्वयंसेवकों की कितनी बड़ी सेना हिंदू-धर्म ने तैयार की है! लेकिन हम आज धर्म का केवल नाम लेते हैं, धर्म तो भूल ही गये हैं।.........ऐसे सेवा-केन्द्र के लिए इन लोगों को बाहर से सेवक लाने की चिन्ता करनी पड़ती है, लेकिन मुझे तो इस गाँव के मनुष्य सेवक ही दिखाई देते हैं। वे सेवा में क्यों नहीं लग जाते ?" और फिर अन्त में कहा : "मनुष्य-जन्म बहुत पुण्य से प्राप्त होता है। इसलिए आपको अगर यह विचार जँच जाय, तो विषय-वासना से आप मुक्त होने का प्रयत्न कीजिये और सेवा में लग जाइये।"

सप्त सोपान

यहाँ विनोबाजी के हाथों आश्रम की नींव भी डाली गयी थी, इसलिए सेवकों को अपनी जिम्मेवारी का भान कराते हुए विनोबा ने कहा : "अब आश्रम जैसी संस्थाओं में काम करनेवाले कार्यकर्ता अगर अपने जीवन की आवश्यकताओं के लिए कांचनाश्रित रहेंगे, तो क्रांति नहीं कर सकेंगे। उन्हें परिश्रम द्वारा अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। अन्न, वस्त्र, तरकारी, फल, दूध तथा शिक्षण और स्वास्थ्य, ये ऐसी बातें हैं, जो आश्रम में ही पूरी हो सकती हैं।" स्वास्थ्य के लिए औषधियों का विशेष सहारा लिये बिना कुदरती इलाज का निष्ठापूर्वक प्रयोग करने की सलाह दी। स्वावलम्बी साम्ययोग की यह सप्तपदी बताकर विनोबा ने आश्रम की मजबूत नींव डाली। ● ● ●

वामन के तीन कदम : ७ :

वाविळापल्ली
२१-४-'५१

सरवेल से वाविळापल्ली का सीधा रास्ता सात मील ही था, परन्तु बीच में नारायणपुर के लोगों ने चाहा कि विनोबाजी उनके गाँव से होकर जायँ। छह मील का फर्क पड़ता था, परन्तु विनोबा प्रेम-भरे आग्रह को न टाल सके।

बड़े सवेरे ठीक पाँच बजे सरवेल से रवाना हुए। दिन निकला ही था कि नारायणपुर पहुँचे। हवा खूब जोरों से चलती थी और वह भी सामने से, लेकिन उसकी शीतलता उत्साहप्रद थी। गाँव पुरानी राजधानी का—इसलिए कोट, किला, दरवाजे, सड़कें, सभी कुछ था, परन्तु इतने सवेरे भी सब बिलकुल साफ-सुथरा, कई जगह आम के तोरण और द्वार। रात-ही-रात इतना सब खड़ा कर दिया था!

दवा और फीस, दोनों एक

गाँव में बस्ती मुसलमानों की अधिक थी। भूदान में चौवन एकड़ अड़तीस गुंठा जमीन मिली, जो एक मुसलमान भाई ने दी।

दान स्वीकारते हुए विनोबा ने चन्द शब्द कहे :

"आपके गाँव में आना नहीं था, जाना दूसरी तरफ से था, लेकिन छह मील का चक्कर स्वीकार करके भी मैं इधर से आ गया, क्योंकि आपके गाँववालों की बहुत इच्छा थी। मैंने भी अपने गरीब भूमि-हीन भाइयों के लिए कुछ सौदा कर लिया और आना कबूल कर लिया!"

फिर एक हकीम की तरह तेलंगाना की हालत की चिकित्सा करते हुए कहा :

"हमारे गाँवों को एक बड़ा भारी रोग हो गया है। श्रीमान् गरीबों को चूसते हैं। हमने सोचा कि इस बीमारी की दवा होनी चाहिए। श्रीमान् अगर जमीनों का दान करते हैं, तो रोग की दवा भी होती है और हमारी फीस भी वसूल होती है। याने दवा और फीस, दोनों एक ही हैं।

"हमें खुशी है कि आप लोगों ने यहाँ के हरिजनों के लिए दान देना स्वीकार किया! इसी तरह सब लोगों को चाहिए कि अपने गाँवों की फिक्र करें। पाँच अँगुलियों की तरह हम समाज में पाँच भाई हैं और यह पाँच अँगुलियाँ समान तो नहीं होतीं? छोटी-बड़ी होती हैं; लेकिन सब मिलकर काम करती हैं। उसी तरह गाँव में कुछ छोटे, कुछ बड़े लोग रहते हैं। सब मिलकर काम करें, तो सब सुखी होंगे।

"मैं आशा करता हूँ कि आज जो काम हुआ है, वह एक प्रारम्भ है; यह आगे बढ़ेगा। यहीं खतम नहीं होगा।"

पोतना महाकवि के भू-भाग में

अभी हमने ऊपर कहा है कि नारायणपुर पुरानी राजधानी का गाँव है, जिसके अवशेष अब भी नजर आते हैं। नारायणपुर की राजकोंडा पहाड़ी में ही तेलुगु के प्रसिद्ध कवि पोतना को राजा ने गिरफ्तार कर रखा था और चाहा था कि पोतना अपना महान् ग्रन्थ राजा को समर्पित करे। पोतना एक किसान थे, किन्तु जितने महान् विद्वान्, उतने ही परम भक्त। उन्होंने तो जो कुछ लिखा था, वित्तैषणा या लोकैषणा की भावना से नहीं, उपासना की उत्कटता से। और सबके लिए लिखा था, किसी राजा के लिए नहीं। राजा के बहनोई जब पुनः पोतना को समझाने आये, तो पोतना अत्यधिक विह्वल हो उठे। उनका निश्चय अटल था। उनसे सहा नहीं गया। एक सरस्वती की प्रतिमा थी, जिसे वे अपनी आराध्य देवी मानते थे, जो उनकी स्फूर्ति का स्रोत थी। उसके सामने वे चले गये कि उससे कुछ मार्गदर्शन मिले। जाकर खड़े रहे तो देखा कि उस प्रतिमा की आँखों से अश्रु निखर रहे हैं। सहसा हाथ जोड़कर पोतना कहने लगे:

"अयि मातृदेवि, यह क्या कर रही हो—क्या तुम समझती हो कि मैं वह भागवत, वह कलाकृति, वह तुम्हारी स्फूर्ति—उस राजा को बेचने का पातक करूँगा ? क्या मैं सरस्वती की प्रसादी को वेश्या के बाजार में ले जा रखूँगा ? हर हर ! मुझसे ऐसा पातक नहीं होगा । तुम शांत हो । अयि मातृदेवि ! तुम शांत हो ।"

और फिर सरस्वती की आँखों से अश्रु निकलना बंद हुआ ।

हमारे सहयात्री श्री केशवरावजी को आज विशेष स्फूर्ति मालूम हुई और कितनी ही देर वे पोतना की भागवत का कितना ही अच्छा-अच्छा अंश सुनाते रहे । विनोबा ने कहा कि "जिस भाषा में पोतना जैसे महान् लोगों ने अमर काव्य लिख रखा है, उस भाषा के लोग कभी न कभी ऊपर उठे बिना नहीं रहेंगे । विनोबा को पोतना के लिए ज्ञानदेव और तुलसीदास के समान ही आदर है ।"

वाविळापल्ली में निवास-स्थान पर एक छोटा-सा मंडप लगाया गया था । अनेक फल-फूलों से भरी थालियों से स्वागत किया गया । बालगोपाल मंडली स्वागत में रहती ही हैं । विनोबा ने सारी पुष्प-मालाएँ और फल सब बालकों को बाँट दिये । बालकृष्ण का विधिवत् पूजन ही मानो हो गया । इतने में घर की मालकिन आरती से सजी थाली लेकर आयी । उस बहन से कुंकुम-तिलक लगवाने के बजाय विनोबा ने अपने हाथ में थाली ले ली और वहाँ जितनी बहनें थीं, सबको तिलक कर दिया । हमारे साथ जो बहनें थीं, उनका भी नम्बर उसमें आ गया । इस बहती गंगा में हाथ धोने से वे क्यों चूकतीं ?

ऐसे अनेक सुखद प्रसंग और भाव नित्यानुभूति के विषय बन गये हैं । खुद विनोबा ने कहा : "इस पैदल यात्रा में जो आध्यात्मिक और गहरे अनुभव मुझे मिल रहे हैं, उसका अंश भी रेल की यात्रा में मिलना संभव नहीं था । पहले, ट्रेन का प्रवास कुछ कम नहीं किया था, लेकिन ऐसे अनुभवों का दर्शन उसमें नहीं हो सका था ।"

भीतर जिस बरामदे में विनोबा की चारपाई रखी गयी थी, वहाँ दीवार पर हनुमान की एक तसवीर लग रही थी—प्रेम और भक्ति-भाव से परिपूर्ण विशाल मुद्रा थी, कीर्तन-रंग में रमी हुई चैतन्य महाप्रभु की याद दिलानेवाली। बहुत देर तक विनोबा इस तसवीर को निहारते रहे। उनकी खुद की मुद्रा पर भी इन दिनों उनकी भीतरी सकल कल्याणकारी भावना पूरी तेजस्विता के साथ प्रतिबिंबित हो रही थी। तसवीर देखने में विनोबा ध्यान-मग्न हो गये।

इस प्रदेश से एकरूप होने की उनकी अनेकविध प्रक्रियाएँ देखकर अचंभा होता है। नित्य तेलुगु गीता और पोतना-भागवत का स्वाध्याय तो उच्च स्वर से चलता ही है, मानो सारी शुभ भावनाओं का प्रकट आवाहन होता रहता है। बातचीत में यद्यपि स्वयं तेलुगु ज्यादह बोल नहीं पाते, बोलनेवाले से तेलुगु में बोलने के लिए कहते हैं। गाँव में पहुँचने पर अक्सर घर-घर हो आते हैं। रसोई देखते हैं। पूजा देखते हैं। झूला देखते हैं। गाय-बैल और सारा जीवन ही निहार लेते हैं। प्रयोगशाला में वैज्ञानिक किसी नतीजे की खोज में प्रयोग-मग्न रहता है, उस एकाग्रता से इस लोकान्त में भी वे एकान्त का अनुभव कर लेते हैं।

इधर लंबाड़ों की बस्ती ज्यादह है। वे लोग मिलने भी आये थे। राजस्थान से ये लोग गिरोह बनाकर व्यापार आदि के लिए चले हुए हैं। बरसों से इधर बसे हैं, परन्तु रहन-सहन सब अभी तक सुरक्षित रखा है। हममें से जो लोग राजस्थानी बोल लेते थे, उन्होंने उनसे उनकी बोली में ही बातचीत की। थोड़ी देर बाद करीब तीस-चालीस लंबाड़ी बहनें आयीं। घागरा, ओढ़नी, और अपने रीति-रिवाज के अनुसार उत्तम-से-उत्तम शृंगार किये, सब मानो एक वरदी में सजी हुईं। आँगन काफी बड़ा था। ऊँचे स्वर में उनका गान शुरू हुआ और मुक्त मन से उनका नृत्य!

आज हम जिनके यहाँ ठहरे थे, उन्हें रजाकारों से बहुत तकलीफ हुई थी। फिर कम्युनिस्टों ने भी उन्हें कुछ दिन के लिए हिरासत में रखा

था। नजदीक की पहाड़ियों में उनका डेरा है—वहीं इन्हें पकड़कर रखा था। फिर छोड़ दिया।

हम लोग आ रहे थे तब मालूम हुआ कि बहुत पास से कम्युनिस्ट गुजरे हैं और पहाड़ी में चले गये हैं। उन लोगों के पास अपना रेडियो है। बाहर के जगत् से उनका सम्पर्क रहता है। उनके संघटन की कई खूबियाँ यहाँ मकान-मालिक से मालूम हुईं। वह स्वयं अब भी भयभीत नजर आये कि कहीं कोई उन्हें इस तरह बातें करते देख न ले, जिससे पुनः कम्युनिस्टों की हिरासत में रहना पड़े।

जब गाँववाले मिलने आये, तो विनोबा ने भूदान की भूमिका समझायी और जमीन माँगी, तो मकान-मालिक ने पचीस एकड़ दिये—और भी लोगों ने थोड़ा-थोड़ा दिया।

प्रार्थना के पहले ही मालूम हुआ कि अभी-अभी पुलिस ने गाँव में से चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। इस शंका से कि उनका कम्युनिस्टों से कुछ संपर्क है।

इन गिरफ्तारियों का उल्लेख करते हुए प्रार्थना-प्रवचन में विनोबा ने कहा :

"पुलिसवाले अपना कर्तव्य करते हैं। आप लोगों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि पुलिस आपकी मदद के लिए है, आपको तकलीफ देने के लिए नहीं। जो लोग गिरफ्तार हुए हैं, उन लोगों ने कम्युनिस्टों को मदद दी होगी, तो कम्युनिस्टों के भय से दी होगी या उनके साथ सहानुभूति रखने के कारण दी होगी। यह कोई न समझे कि ये लोग जो पकड़े गये हैं, सारे-के-सारे गुनहगार होंगे। वे अगर बिना डर के जो कुछ हुआ है, पुलिसवालों को सुनायेंगे, तो मैं उम्मीद करता हूँ कि उन्हें भी कोई तकलीफ नहीं होगी।

निर्भयता की शक्ति

"एक नौजवान मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने एक सवाल पूछा

कि कम्युनिस्ट आते हैं, हमको धमकाते हैं। हम उन्हें खाना खिलाते हैं, तो पुलिस हमें डराती है। अगर हम कम्युनिस्टों को खाना नहीं खिलाते हैं, तो वे मार डालने का भय बताते हैं। इस तरह रात में कम्युनिस्टों से तकलीफ होती है, दिन में पुलिसवालों से। ऐसी सूरत में हमें क्या करना चाहिए ?

"मैंने कहा कि आप लोगों को निर्भय बनाने के लिए ही मैं आया हूँ। अगर कोई जबरदस्ती से आपके घर में घुसकर खाना माँगता है, तो उसको खिलाने की जिम्मेदारी आप पर नहीं है। उन्होंने कहा कि जिम्मेदारी तो हम पर नहीं है, लेकिन वे हमको मार डालेंगे तो हम क्या करेंगे ? मैंने उनको समझाया कि परमेश्वर ने जिसका मरण आज लिख रखा है, उसका मरण कभी टलनेवाला नहीं है। और उसने अगर हमारा मरण आज नहीं लिखा है, तो कोई कम्युनिस्ट हमको मार सकनेवाले नहीं। तो आप लोगों को मरण का डर छोड़ना चाहिए। जो लोग मरने से डरते हैं, वे जिन्दा नहीं हैं, लेकिन मर चुके हैं। आप इतना तो समझते ही हैं कि हममें से कोई यहाँ रहनेवाला नहीं है, सारे-के-सारे जानेवाले हैं। जब परमेश्वर का बुलावा आता है, तो हरएक को जाना ही पड़ता है। इसलिए कोई बन्दूक लेकर हमारे सामने आयेगा, तो उसके सामने छाती खुली करने की हिम्मत हममें होनी चाहिए। वह यदि मारने के लिए आयेगा और अगर वह भी हमारा भाई होगा, तो उस पर हमारे मन में दया होनी चाहिए। और उसके सामने शांति से खड़े हो जाना चाहिए एवं कहना चाहिए कि भाई, जबरदस्ती से कोई चीज माँगते हो, तो हम देनेवाले नहीं हैं। हमें कत्ल करके जो लेना हो, वह ले जाओ। जब हम लोग इस दुनिया को छोड़कर जाते हैं, तो यहाँ का सारा सरंजाम साथ लेकर नहीं जाते हैं। यह जो निर्भयता की शक्ति है, खूनी लोगों का सामना करने की शक्ति है, वह शक्ति हम लोगों में होनी चाहिए।

प्रह्लाद का उदाहरण

"आपने प्रह्लाद का चरित्र सुना है। वह छोटा-सा बच्चा था, लेकिन उसने हिरण्यकश्यपु का सामना किया। एक छोटा-सा बच्चा भी अगर यह समझे कि यह जो देह है, वह मेरा रूप नहीं है, मैं तो परमेश्वर की ज्योति हूँ और यह जो देह है, वह तो एक चोला है, जो मैं पहना हूँ, तो वह भी निर्भय हो सकता है। अगर वह यह समझे कि हम तो परमेश्वर की ज्योति हैं और यह शरीर ऊपर-ऊपर का हमारा एक कपड़ा है, हम परमेश्वर के प्रकाशमात्र हैं, तो हिम्मत आ जायगी। लोग मानते हैं कि हाथ में बंदूक आने से हिम्मत आती है, लेकिन यह बिलकुल गलत खयाल है।

मैं भी कम्युनिस्ट हूँ

"यही देखो न कि कम्युनिस्टों ने विचार किया कि गरीब लोगों की सेवा करें। उनका विचार तो अच्छा है, लेकिन उन्होंने जो तरीका अख्तियार किया है, उससे किसानों का कोई लाभ नहीं हो रहा है, बल्कि किसान भयभीत हो गये हैं। गांधीजी हम लोगों में आये और उन्होंने हमको हिम्मत दी, वह आप लोगों ने देखा। अंग्रेजों ने हमारे हाथ से शस्त्र छीन लिये थे, तो गांधीजी ने कहा कि हमें शस्त्रों की कोई दरकार नहीं। और सत्याग्रह की लड़ाई में जहाँ तक लोगों ने देखा, स्त्रियों ने—जो कभी घर से बाहर नहीं निकली थीं—भी अपनी जान खतरे में डाली और हिन्दुस्तान ने ऐसा दृश्य देखा कि हजारों स्त्रियाँ बाहर आ गयीं। मतलब उसका यह हुआ कि शस्त्र की ताकत कोई ताकत नहीं है, आत्मा की ताकत ही सच्ची ताकत है। लेकिन कम्युनिस्टों का अभी तक आत्मा की निष्ठा पर विश्वास नहीं बैठा, वे शस्त्र पर ही भरोसा रखे हुए हैं। अगर वे शस्त्र पर भरोसा रखते हैं, तो वे देखेंगे कि हिन्दुस्तान के लोग उनके बारे में कोई सहानुभूति नहीं रखते। लेकिन अगर वे शस्त्र का विश्वास छोड़ दें और आत्म-शक्ति पर विश्वास रखें, तो वे देखेंगे कि मैं भी उनके पक्ष में दाखिल

होता हूँ। फिर मैं कहूँगा कि मैं भी एक कम्युनिस्ट हूँ, और तुम भी कम्युनिस्ट हो। तो दोनों मिलकर हिन्दुस्तान की सेवा करेंगे। लेकिन उन लोगों का तरीका अभी तक यह रहा कि वे एक-एक गाँव में फूट डालते हैं और मेरा तरीका यह होगा कि सारे गाँव को मैं एक बनाऊँगा। वे एक ही गाँव में एक घरवाले को दूसरे घरवाले के साथ लड़ायेंगे, मैं सब गाँववालों को एक करूँगा।

और भी लो

"अभी देखिये, मैं एक छोटे गाँव में हो आया। उस गाँव को लूटकर आया हूँ। उस गाँव में ५० एकड़ जमीन एक श्रीमान् भाई से गरीबों को दिलवायी। उसके पहले भी ८ गाँवों में इसी तरह १०० एकड़, ७५ एकड़ जमीन लोगों से ली और गरीबों को दिलवायी। आज आपके गाँव को भी कुछ लूटनेवाला हूँ। लेकिन ये कम्युनिस्ट लोग कहेंगे कि जिसके पास ५-५ हजार एकड़ जमीन होती है, वह सौ एकड़ जमीन देता है, तो उससे क्या होगा? तो मैं कहता हूँ कि जरा धीरज रखो, अभी ५ हजार में से जो सौ देता है, वह प्रेम से देता है तो मैं लूँगा और बाकी के ४ हजार ९ सौ एकड़ भी मेरे ही हैं। जब ये लोग देखेंगे कि हम जमीन देते जाते हैं—गरीबों को, उससे गरीबों का प्रेम ही हमको मिलता है, तो फिर वे खुद कहेंगे कि और भी ले लो।

हवा बदल जानी चाहिए

"तो फिर कम्युनिस्ट हमको कहेंगे कि कैसा भोला मनुष्य है। लेकिन उनको मैं कहूँगा कि भोला मैं नहीं हूँ, मेरा धंधा मैं जानता हूँ। एक दफा थोड़ी भावना, थोड़ा वातावरण बनने दो कि जमीन गरीबों को देने में लाभ है; फिर एक दफा वातावरण तैयार हो जायगा, तो कानून मैं करा लूँगा। फिर राह नहीं देखनेवाला कि आज सौ एकड़ है, पाँच साल के बाद और १०० एकड़ मिलेगी, और फिर पाँच साल के बाद शेष १०० एकड़ मिलेगी। ऐसे चार हजार मिलने में तो सौ बरस चले जायँगे। बात ऐसी

है कि हवा बदल जानी चाहिए। और हवा बदल जाती है, तो कानून उसके साथ आता ही है। परन्तु मैं वातावरण तैयार करूँ, तो कानून को लोग पसन्द करेंगे। बाप ऐसा ही तो करता है। बच्चे को मिठाई खिलाता है, लेकिन मिठाई देता है, तो वह प्रेम से देता है और तमाचा लगाता है, तो प्रेम से लगाता है। और जो कोई लूटने के लिए आते हैं, वे बच्चे को मिठाई खिलाते तो हैं, पर वह प्रेम की मिठाई नहीं होती। लेकिन माता जो तमाचा लगाती है, वह प्रेम का होता है। मैं जो जमीन लेता हूँ, वह प्रेम से लेता हूँ।

आज मैं वामनावतार हो गया हूँ

मुझे आश्चर्य लगता है कि जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ लोग जमीन देने के लिए क्यों तैयार होते हैं? मैं सोचता हूँ कि क्या वह गांधीजी की करामात है? लोग जानते हैं कि यह गांधीजी का मनुष्य है, इसलिए प्रेम से देने को तैयार होते हैं। लेकिन इतनी ही बात नहीं है, और भी बात है। गांधीजी की करामात है, लेकिन परमेश्वर की भी करामात है। परमेश्वर की महिमा है कि इतनी सारी जमीन अपने हाथ में रखकर कोई ले जानेवाला नहीं है, ऐसा लोग जानते हैं। आखिर इतनी जमीन को वे खुद भी तो नहीं जोत सकते हैं। इसीलिए इतनी जमीन अपने हाथ में रखने से कोई लाभ नहीं है, यह बात उनके ध्यान में आ गयी। इसलिए आज मैं वामनावतार हो गया और कहता हूँ कि जमीन दे दो। तीन कदम दोगे, तो भी बस है। लेकिन मुझे जो सौ एकड़ मिले हैं, उतने ही मेरे नहीं हैं। वे जो चार हजार एकड़ बचे हैं, वे सारे-के-सारे मेरे ही हैं। जैसे वामन के तीन कदमों में सारा त्रिभुवन आ गया, वैसा यह मामला है। तो यह सारी खूबी अगर गरीब लोग समझेंगे, श्रीमान् समझेंगे और कम्युनिस्ट समझेंगे, तो सारा गाँव सुखी होगा। यह तो मैं कम्युनिस्टों का ही काम कर रहा हूँ। यह एक फच्चर है। इस फच्चर को डालता हूँ और फिर उस पर कानून का हथौड़ा पड़ेगा। अगर यह फच्चर काम नहीं

देगी, तो हमारा काम सिर्फ कानून से नहीं होगा। इसका आरंभ होता है दान से और समाप्ति होगी कानून से। और कम्युनिस्ट आरंभ करेंगे लाठी से और समाप्त करेंगे कानून से। आखिर में कानून से समाप्ति वे भी करेंगे, मैं भी करूँगा। लेकिन आरंभ में मैं प्रेम और दान चाहता हूँ, और वे लाठी तथा लूट चाहते हैं।"

● ● ●

परमेश्वर का न्यायालय : ८ :

सिवन्नागुड़ा
२२-४-'५१

वाविळापल्ली में वामनावतार की घोषणा करके और जमीन-सम्बन्धी कानून के स्वरूप की कल्पना देकर आज सबेरे सिवन्नागुड़े के लिए विनोबाजी ने कूच किया। रास्ते में अंतमपेठ, सोमराजगुड़ा आदि स्थानों के लोगों का स्वागत स्वीकार कर करीब ७-३० बजे मुकाम पर पहुँचे, तो मालूम हुआ कि एक जमीन्दार ने काफी जमीन अपने कब्जे में कर रखी है और उनके खिलाफ काफी लोगों को शिकायतें भी हैं। अर्जियाँ आने लगीं। कई अर्जियाँ आयीं। ३ बजे से विनोबाजी इन अर्जियों का फैसला करने के लिए बैठ गये। किसान और जमींदार, दोनों के सामने अर्जियों की सुनवाई होने लगी। हरएक को दूसरे के खिलाफ कुछ-न-कुछ शिकायत तो थी ही। विनोबाजी ने शुरू में ही अपनी शर्त बता दी कि यह सरकारी कोर्ट नहीं है, प्रेम का दरबार है। यहाँ कागजी कानून नहीं चलेगा—ईश्वरीय न्याय लागू होगा। मैं मानता हूँ कि हरएक की कुछ-न-कुछ गलती होगी ही। लेकिन आप यहाँ एक-दूसरे की गलतियाँ बतायें, यह नहीं चलेगा। हरएक अपनी-अपनी भूल स्वीकार करे, तब हम फैसला देंगे। जिसकी गलती उसीके मुख से सुनेंगे और न्याय नहीं देंगे। न्याय तो परमेश्वर ही दे सकता है। हम तो प्रेम का काम करने आये हैं। प्रेम का फैसला ही दे सकते हैं।

जो लोग 'न्याय' देने का दावा करते हैं, उनके लिए यह विचार कुछ आत्मनिरीक्षण का प्रेरक है। 'जस्टिस और मर्सी' का यह भेद, न्याय और करुणा का यह अन्तर, सभीको समझने की आवश्यकता है।

न्यायालय में भी केवल न्याय की कसौटी पर फैसले नहीं हो सकते—न्यायाधीश कितना ही दावा क्यों न करे। शेक्सपियर ने ठीक लिखा है कि न्याय के इजलास में भी हमें प्रेम और करुणा का सहारा लेना चाहिए। विनोबाजी ने तो शुरू में ही कह दिया कि मेरा प्रेम का दरबार है—प्रेम का ही कानून है—यहाँ फैसले होंगे—न्याय की बात यहाँ नहीं चलेगी। परस्पर सद्भावना पर ही सब निर्भर करता था—और सुतराम् जमींदार की सद्भावना पर, क्योंकि कितने ही मामले ऐसे थे, जिनमें कानून गरीब की कोई मदद नहीं कर सकता था।

अब फैसले होने लगे। बहुत पुरानी जमीनें भी, जो जमींदार के कब्जे में चली गयी थीं, किसानों को वापस मिलीं। कई बरसों पहले खोयी हुई अपनी ३ एकड़ जमीन को ६०० रुपये देकर फिर से वह जमीन पाने के लिए किसान कोशिश कर रहा था, जमींदार ९०० माँग रहा था। विनोबाजी ने जमींदार को समझाया कि किसान गरीब है, ६०० वह दे रहा है, ९०० आप माँग रहे हैं, उसे दे दो। और जमीन किसान को मिल गयी। एक भाई ने झूठा बयान किया था, विनोबा ने उसे समझाया कि यह ठीक नहीं है, इस तरह फैसले करते-करते ५॥ बज गये। प्रार्थना का वक्त हो चुका था।

अपने प्रार्थना-प्रवचन के आरंभ में विनोबाजी ने आज के इजलास की कार्रवाई का जिक्र करते हुए कहा कि जितनी अर्जियाँ आयी थीं, उनमें बहुत सारी ठीक थीं और उनका हल भी अच्छा हुआ। "गाँव-गाँव में इस तरह सेवक लोग दोनों पक्षों को साथ बैठाकर बातचीत करेंगे, तो बहुत कुछ काम हो सकेगा और यहाँ की समस्या सुलझाने में बड़ी मदद मिलेगी।" सेवकों के बारे में अपना निरीक्षण बताते हुए उन्होंने कहा कि यहाँ कोई सेवक नहीं है, जिसका नतीजा ये झगड़े हैं। विनोबाजी ने आशा प्रकट की कि जन-सेवक आगे आकर इस तरह के कामों को उठा लेंगे।

जो भू-दान मिला था, उसके लिए श्रीमानों और भूमिवानों को

धन्यवाद देते हुए उन्होंने कहा कि जो दान मैं गरीबों की ओर से माँग रहा हूँ, उसमें केवल गरीबों का ही बचाव नहीं है, श्रीमानों का भी है।

वित्तस्य गतयः

संपत्ति की त्रिविध फल-श्रुति बताते हुए कहा :

'दानं भोगो नाशः तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य'—खा-पीकर उपभोग करो, या दान करो, या फिर वह ऐसे ही नष्ट होनेवाली है, या तो डाकू ले जायेंगे, या और कोई। विनोबा ने बताया कि जिनके पास हजारों एकड़ जमीन है, वे उसका उपभोग नहीं कर सकते। "पेटभर खाओ, लेकिन पेटीभर मत रखो। अगर रखोगे, तो उस पर या तो मेरा हक होगा या कम्युनिस्टों का या डाकुओं का।"

"इसलिए भाइयो! देते जाओ। हमारी माँ ने हमें बचपन में समझाया था कि देनेवाला देव होता है और रखनेवाला राक्षस।"

अनेक उदाहरणों से समझाया कि संपत्ति एक जगह नहीं रहनी चाहिए। समाज में घूमती रहनी चाहिए। मेघ की तरह बरसनी चाहिए। गेंद की तरह एक के पास से दूसरे के पास जाती रहनी चाहिए। कन्या की तरह प्रेमपूर्वक दूसरों को समर्पण करनी चाहिए। स्वीकार करनेवाले का उपकार मानना चाहिए।

अन्त में गरीब भूमिहीनों को गांधीजी के सत्याग्रह के रास्ते का चमत्कार समझाते हुए कहा : लूटने-मारने की बात मन में हरगिज मत लाना। उससे कल्याण नहीं होगा। दीन मत बनना, उद्धत भी मत बनना।

प्रेम का दरबार

इस तरह आज शिकायतों और इजलास के रूप में समस्या का एक और नया स्वरूप और उसका हल प्रकट हुआ। बेदखलियाँ बढ़ाने में हैदराबाद के कानून से मदद मिल रही है। ये ईश्वरीय इजलास उन बेदखलियों को रोकने में कारगर हो सकते हैं। ईश्वरीय इसलिए कि

विनोबाजी ने शुरू में ही मुद्दई-मुद्दालयों से कह दिया था कि "इस इजलास में एक-दूसरे की गलतियाँ नहीं सुनी जायँगी, अपनी-अपनी गलती हर कोई बतावे। यह सरकारी कानून का कोर्ट नहीं है, यह परमेश्वरीय प्रेम का दरबार है।" वैसा ही हुआ।

कानून जिम्मेवार

जमींदार लोग पुराने काश्तकारों को बेदखल कर रहे हैं, इसके लिए हैदराबाद का सरकारी कानून भी जिम्मेवार है; जो उन्होंने अभी-अभी जारी किया है, जिससे किसान के अधिकारों की रक्षा होती है। छह साल तक जो किसान किसी खेती पर मेहनत करता है, किसी खेती को खुद जोतता है, उसे फिर मालिक निकाल नहीं सकता। किसान चाहे तो उस खेती को खरीद सकता है, जिसकी कीमत सरकार तय करेगी। याने इस कानून से जमींदारों का कब्जा जमीन पर नहीं रहेगा। एक परिवार अपने पास कम-से-कम जमीन कितनी रख सकता है, इसकी मर्यादा सरकार तय करनेवाली है। लेकिन भू-स्वामियों को अभी से यह भय हो गया है कि जमीन हाथ से निकली जा रही है। इसलिए वे किसानों को जमीन से बेदखल किये जा रहे हैं! लोगों को कानून का ज्ञान नहीं है। कचहरी में जाकर लड़ने की हैसियत नहीं है। जाकर भी फैसला अपने हक में होगा, इसका कोई विश्वास नहीं है। भू-स्वामियों का और उनके पैसों का प्रभाव अधिकारियों पर पड़ना स्वाभाविक है, इसलिए बेचारा किसान कचहरी में जाने की कल्पना ही नहीं कर सकता। तब आपसी समझौते करवाना बहुत जरूरी हो जाता है। ऐसे समझौते के अभाव में ही कम्युनिस्टों को मौका मिलता है। जमींदार से तंग आकर वे कम्युनिस्टों की शरण लेते हैं। कम्युनिस्ट लाठी और बंदूक की मदद से मामले को सुलझाने की कोशिश करते हैं। नतीजा यह होता है कि भय, आतंक, विद्रोह, दुःख, सब बढ़ते ही जाते हैं। सबके हृदय में जो परमेश्वर है,

उसे जगाये बिना और शांतिमय तरीके से ही कार्य करने का संकल्प किये बिना एक बुराई में से दूसरी बुराई निकलने का सिलसिला बंद नहीं हो सकता।

इस दृष्टि से आज के न्यायालय का दृश्य अद्भुत था। वह कोर्ट था ही नहीं। दैवी संपत् का दीक्षा-स्थल था जहाँ सचाई, उदारता, त्याग और सद्भाव आदि गुणों का आविष्कार हो रहा था। दस-दस, बीस-बीस बरस पुरानी जमीनें जो जमींदारों ने हथिया ली थीं, जिनकी थीं, उनको वापस मिलीं। चिर-विरह के बाद माता-पुत्र की भेंट हुई। कैसा पावन दर्शन था!

• • •

सज्जन-द्रोह का पातक   : ६ :

तिरगल्लापल्ली
२३-४-'५१

प्रकृति भी अनुकूल

सिवन्नागुड़ा से सबेरे पाँच बजे रवाना होकर, रास्ते-भर अत्यंत सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखते हुए करीब ८॥ बजे तिरगल्लापल्ली पहुँचे। कूच के समय गाँव के बाहर तक गाँववाले रामधुन गाते हुए पहुँचाने आये। फिर अत्यंत छोटी पगडंडी के रास्ते चलना पड़ा। तीनों तरफ पहाड़ियाँ, बीच में सुंदर ताड़वन। ताड़वन पार किया, तो अमराई और अमराई के बाद धान की खेती। फिर पहाड़ी, और जहाँ-तहाँ आँखों को प्रसन्न करनेवाले छोटे-छोटे झरने। धान की कटनी हो चुकी थी। इसलिए रास्ता खोजने में तकलीफ नहीं हुई। इधर से लोग अक्सर कम गुजरते हैं। रास्ते में जितने गाँव पड़े, कम्युनिस्टों के अड्डे माने जाते थे। एक झरने के पास बड़ी चट्टान के सहारे कुछ सोल्जरों के साथ एक अफसर कम्युनिस्टों की खोज में डेरा डाले हुए थे। चट्टान पर उनकी घड़ी और अखबार पड़े थे। हम लोगों को २-३ दिन से ताजे अखबार देखने को नहीं मिले थे। अफसर ने अपना अखबार हमें दे दिया। पूछने पर पता चला कि ४०-४५ कम्युनिस्टों को उन्होंने गिरफ्तार कर लिया है, परंतु उनके खयाल से वे लोग गुण्डे अधिक नजर आते हैं।

पहाड़ी चलकर ऊपर के मैदान पर आये, तो तिरगल्लापल्ली के लोग भजन गाते हुए हमें लेने आते दिखाई दिये। अब रास्ता अच्छा था। लक्ष्मी बहन ने कहा कि इस यात्रा में सारी प्रकृति कितनी अनुकूल है। मानो पंच-महाभूत अपनी तरफ से पूरी मदद पहुँचाना चाहते हैं।

सज्जनों की हत्या !

अभी मुकाम २ मील दूर था। जो लोग हमें लेने आये थे, रास्ते-भर अनेक मधुर गीत गाते रहे। पहुँचने पर देखा कि गाँव बहुत साफ-सुथरा है। इस गाँव के पुराने सेवक राज रेड्डी की हत्या कम्युनिस्टों ने कर डाली थी। गाँववाले राज रेड्डी को भूल नहीं सकते थे। हर किसीके मुँह से उनके लिए प्रेमभाव प्रकट हो रहा था। हरिजन भाइयों के लिए उन्होंने अपनी जमीन पर सुंदर मकान बनवाये थे। राज रेड्डी की हत्या का हाल सुनकर विनोबाजी के हृदय को काफी दुःख पहुँचा। सज्जनों की हत्या द्वारा गरीबों की सेवा करने की आशा कम्युनिस्ट करते हैं। एक विचित्र-सी बात थी। मन ही मन वे काफी गंभीरता से सोच रहे थे। तेलंगाना की समस्याएँ नया-नया रूप लेकर रोज प्रकट हो रही थीं। विनोबाजी नया-नया विचार देकर लोगों को अहिंसात्मक क्रांति के लिए प्रेरित कर रहे थे।

अरण्यकांड में जहाँ राक्षसों द्वारा मारे गये साधु-संतों की हड्डियों का ढेर रामचंद्रजी देखते हैं, वहाँ उनके मुँह से सहसा प्रतिज्ञा के शब्द निकलते हैं कि मैं इन राक्षसों का अंत करके ही रहूँगा। गुसाईंजी ने बहुत मार्मिक शब्दों में कहा है—'भुज उठाइ प्रण कीन्ह प्रभु।'

मानो ऐसी ही कुछ प्रतिज्ञा विनोबा भी आज मन-ही-मन कर चुके थे। आज इस छोटे-से गाँव में ७०-८० एकड़ जमीन का दान मिला था। एक मनुष्य को छोड़कर सभी काश्तकार छोटे-छोटे हैं। इसलिए अधिक दान की आशा भी नहीं थी। विनोबाजी ने प्रार्थना-प्रवचन में इस दान की सराहना की : "देनेवालों ने जमीन बहुत प्रेम से दी है, इसलिए मेरे दिल में उसकी कीमत बहुत ज्यादा है।" दान की इस प्रेरणा का कारण बताते हुए विनोबाजी ने कहा : "यहाँ जो प्रेम का वातावरण है, जो सद्भाव है, उसका कारण है—राज रेड्डी का बलिदान।"

सोल्जरों द्वारा की गयी उन ४०-५० गिरफ्तारियों के बारे में कहा

कि "अधिकारियों को वे लोग कम्युनिस्ट नहीं नजर आते। गुंडा दिखाई देते हैं। वे गुंडे हों, न हों; परंतु अच्छे उद्देश्य से बुरे साधनों को उत्तेजन देनेवाले लोग गुंडों को उत्तेजन तो देते ही हैं। गरीबों की भलाई के लिए भी जब हम जोर-जबरदस्ती और हिंसा तथा डकैती का रास्ता लेते हैं, तो उस रास्ते में गुंडा लोग शामिल हो ही जाते हैं, क्योंकि दोनों का मार्ग एक हो जाता है।" ऐसे लोगों से किसी भी तरह सहानुभूति न रखने की स्पष्ट सूचना विनोबा ने दी। उन्होंने कहा कि "राज रेड्डी जैसे सज्जनों की हत्या करके गरीबों का उद्धार कैसे होगा, मेरी समझ में ही नहीं आता।"

विनोबाजी ने इस हिंसक प्रवृत्ति का मूल कारण बताया: "यूरोप में तीस साल के अंदर दो लड़ाइयाँ हुईं। तीसरी की तैयारी है। वहाँ के लोग अक्सर लड़ते रहते हैं। उनका इतिहास हम अंग्रेजी में पढ़ते हैं। अंग्रेजी राज्य की ही यह देन इस हिंसा के रूप में हमें मिली है।" बोलते-बोलते उन्हें स्मरण हो गया: "भाइयो, ऐसे लोगों के विचार पढ़कर हमारे दिमाग बिगड़ जाते हैं। गांधीजी की हत्या करनेवाले ने भी यही कहा कि 'मैंने हिंदू-धर्म की रक्षा के लिए ही गांधीजी की हत्या की है'।" —बस, फिर वे अधिक बोल न सके।

● ● ●

बंदूक छोड़ो, हल लो : १० :

नागिल्ला
२४-४-'५१

नागिल्ला अब तक नलगुंडा जिले में ही था; लेकिन अभी-अभी वह महबूबनगर जिले में ले लिया गया है। नागिल्ला और अजलापुरम्—आगामी मुकाम—ये दो गाँव महबूबनगर जिले के इस यात्रा के बीच पड़ते थे। गाँव के बाहर एक बगीचे के पास एक बड़े दरख्त के नीचे विनोबाजी के लिए झोपड़ी बनायी गयी थी। बीच में एक बड़ा कुआँ था और उसके बाद एक बड़ा मंडप—जो साथियों, अन्य मेहमानों, भजन-मंडलियों आदि के लिए बनाया गया था। गाँववाले भजन गाते हुए और नाचते-कूदते हुए विनोबाजी के स्वागत के लिए आये थे। गाँव में से होते हुए जुलूस निवास पर पहुँचा, तो बीच में जगह-जगह बहनों द्वारा मंगल-आरतियों द्वारा स्वागत किया गया। दोपहर दो बजे से ही स्त्रियों की भीड़ शुरू हुई। सैकड़ों स्त्रियाँ जमा हो गयीं। लक्ष्मी बहन और मदालसा बहन ने उनसे बातचीत शुरू की। इधर लोगों को जो कष्ट था, उसकी शिकायतें भी आने लगीं। दरखास्तें लिखने के लिए दो कार्यकर्ता बैठ गये। उधर भू-स्वामियों से विनोबाजी की बातचीत शुरू हुई।

प्रेम की कीमत

कलवाले उस छोटे-से गाँव में अस्सी एकड़ जमीन मिली थी। आज का गाँव बड़ा था, फिर भी लोगों के दिल बड़े नहीं थे। भूमिवानों ने बताया कि बहुत-सी जमीन उन्होंने कानून के भय से बेच डाली है। सिर्फ उतनी ही रखी है, जितनी जरूरी थी। विनोबा ने कहा : "आपने जमीन बेच डाली और पैसा जमा किया। लेकिन आपका पैसा

मुझे नहीं चाहिए। आपके पैसे पर मेरी नजर नहीं है, न रहेगी। वह काम सरकार का है। आपके पास जो जमीन है, उसीमें से मुझे दीजिये।"

उन लोगों ने ४७ एकड़ जमीन अर्पण की।

विनोबा ने उन्हें कहा : 'मुझे आपके जमीन की भी कीमत नहीं है। कीमत है आपके प्रेम की। अगर आपने दान प्रेम से दिया है, तो मेरे लिए वह बड़ी बात है।"

प्रार्थना-प्रवचन में इस दान का जिक्र करते हुए बोले : "मेरा धंधा इस प्रकार जमीन के निमित्त गाँव-गाँव में प्रेमभाव बढ़ाने का है।"

समानता लाने का काम छिपकर नहीं हो सकता

गरीबों की सेवा का कम्युनिस्ट भी दावा करते हैं। उस बारे में कहा :

"उनकी बड़ी-बड़ी किताबें हैं। कुछ मैंने भी पढ़ी हैं। उनमें लिखा है कि जितने गरीब हैं, उन सबकी सेवा करनी चाहिए, उन सबको श्रीमानों के बराबर हक मिलने चाहिए। तो यह जो उनका विचार है, वह कोई नया विचार नहीं है। आपके 'पोतना' महाकवि भागवत में भी यह बात बता चुके हैं। 'तनयंदु अखिल भूत मुलंदु ओक भंगि समहितत्वं बुत जरगुवाडु' अर्थात् श्रीमान् और गरीब इस भेद के लिए गुंजाइश नहीं है। समझना यही चाहिए कि जितनी जमीन है, उतनी सब लोगों की मिलकर है। कम्युनिस्टों का यह जो कहना है, वह कहना सत्य है, लेकिन उसके अमल के लिए जो रास्ता उन्होंने लिया है, वह गलत है। दुनिया में समान भाव लाने का काम छिपकर रहनेवाले लोग नहीं कर सकते। सूर्य सबके साथ समान व्यवहार करता है। वह छिपा हुआ नहीं है। श्रीमान् के घर में सूर्यनारायण जितनी सेवा करता है, उतनी ही सेवा वह गरीब के घर में भी करता है। आलसी मनुष्य दरवाजे बंद करता है, तो उसके घर में सूरज नहीं जाता। लेकिन जो भी अपना दरवाजा खोलता है, उसके घर में वह जाता है। वह कभी छिपता नहीं। जिनको छिपना है,

वह अपने घर में छिपते हैं। तो जो सबमें समान भाव रखते हैं और दुनिया को समान बनाना चाहते हैं, उनको खुली हवा में आना चाहिए। समान भाव होना चाहिए, यह पोतना की इच्छा थी। इसीलिए वह खुली हवा में किसान बनकर लोगों में काम करता था और उसने अपने हाथ में बंदूक नहीं ली थी, बल्कि हल लिया था।

"तो मैं कम्युनिस्टों से प्रार्थना करूँगा कि अगर तुम सर्वत्र समान भाव चाहते हो, तो बंदूक छोड़ दो, हल हाथ में ले लो और किसानों के माफिक काम करना शुरू कर दो।"

प्रभु रखवारे !

रात को एक महान् दुर्घटना होते-होते बची। मंडप में जब लोग भोजन के लिए बैठे थे, तो विनोबा ने सोचा कि सबको देख आयें। रात अँधेरी थी, बत्ती मंडप में जल रही थी। विनोबा की झोपड़ी के पास के कुएँ का जिक्र ऊपर आ चुका है। मंडप के लिए रास्ता कुएँ के पास से दाहिने हाथ से होकर निकलता था। कुएँ को दीवार वगैरह कुछ नहीं थी। लम्बा-चौड़ा भी वह बहुत था। विनोबाजी बिना लालटेन लिये ही झोपड़ी से निकल पड़े। दाहिनी ओर मुड़ने के बजाय सीधे चले। नित्य-निरंतर जाग्रत रहनेवाली हमारी महादेवी बहन के ध्यान में बात आ गयी। वे सहसा भयभीत हुईं। लालटेन लेकर दौड़ीं। देखा तो विनोबाजी कुएँ की तरफ बढ़े जा रहे थे। अब अगला कदम भीतर पड़ने ही वाला था कि महादेवी बहन ने जोरों से विनोबा का हाथ पकड़कर उन्हें पीछे घसीटा, तब विनोबाजी के ध्यान में बात आयी। लेकिन फिर भी मानो कुछ हुआ ही नहीं, इस तरह दाहिनी ओर से वे मंडप में चले गये। आज भी उस प्रसंग के स्मरण-मात्र से रोम-रोम खड़े हो जाते हैं। ● ● ●

भूतदयां विस्तारय : ११ :

अजलापुरम्
२५-४-'५१

कॉलरा-ग्रस्तों के बीच

नागिल्ला से सबेरे रवाना हुए, तो दो मील पर ही जयघोष सुनाई दिया। तीन मील पर एक कुछ बड़ा गाँव आया। अठारह सौ बस्ती के इस गाँव के करीब पाँच सौ लोग विनोबा के दर्शनों के लिए जमा हुए थे। लोगों के चेहरों पर उदासीनता दीख पड़ी। पूछने पर मालूम हुआ कि दो रोज से कॉलरा के कारण सारा गाँव संकट में है और कुछ लोग कॉलरा के शिकार भी हो चुके हैं। आज भी दो-तीन की हालत नाजुक बताते थे। पासवाली किसी यात्रा की छूत का यह परिणाम था। तहसील का गाँव छह मील पर है, जहाँ डॉक्टर, तहसीलदार, अमीन सब रहते हैं। दो रोज पूर्व ही उन लोगों को इत्तिला दी जा चुकी है, परन्तु अब तक कोई सुनवाई नहीं, कोई मदद नहीं। उन्हें कॉलरा से बचने के उपाय बताकर और स्वास्थ्य-मंत्री के नाम पत्र देकर हम लोग आगे बढ़े।

कम्युनिस्टों के लिए क्षेत्र तैयार

करीब आठ बजे अजलापुरम् पहुँचे। छोटा-सा गाँव। साफ-सफाई बिलकुल ही नहीं थी। ऐसी गन्दगी सारी तेलंगाना-यात्रा में किसी भी गाँव में नहीं पायी गयी। गाँव काफी पिछड़ा हुआ। स्थानीय कार्यकर्ता भी कोई नहीं। तहसील के अध्यक्ष ने आकर सारा प्रबन्ध किया था। गाँव में कॉलरा के आसार थे, इसलिए गाँव के बाहर एक वृक्ष की साया में खास झोपड़ी बनाकर पड़ाव का प्रबन्ध किया गया था। इस गाँव को

छोड़ भी सकते थे, क्योंकि रास्ते में नहीं पड़ता था, परन्तु नलगुंडा और वरंगल के अलावा दूसरे जिलों में भी कम्युनिस्टों की कार्रवाइयों का क्या हाल है, तथा जनता की क्या स्थिति है, इसे विनोबा खुद देखना चाहते थे। इस दृष्टि से यहाँ आना महत्त्व का सिद्ध हुआ। महबूबनगर जिले का यह हिस्सा भी कम्युनिस्टों से अछूता नहीं था—गाँव के पटेल और देशमुखों का व्यवहार ऐसा था कि कम्युनिस्टों के लिए क्षेत्र तैयार मिल गया।

हम लोग पहुँचे ही थे कि जिलाध्यक्ष श्री हनुमंतरावजी भी आ पहुँचे। उन्हें बहुत अफसोस था कि विनोबाजी के आगमन के पहले नहीं आ सके। वरना गाँव का जो चित्र विनोबा को दिखाई दिया, उसमें कुछ तो परिवर्तन जरूर होता।

पिछले दिनों हैदराबाद में जो सर्वोदय-शिविर हुआ था, उसमें श्री हनुमंतरावजी अपने आठ-दस मित्रों सहित शरीक हुए थे। इन मित्रों में मुसलमान भाई भी काफी संख्या में थे। शिविर के बाद से ये सभी लोग अपने जिले में बराबर सर्वोदय-कार्य करते रहे हैं। भूदान के काम में इनसे विशेष सहायता मिलेगी, ऐसी सहज अपेक्षा की जाती है। श्री लक्ष्मी बहन ने श्री हनुमंतरावजी का जो परिचय पू० विनोबाजी से करा दिया, वह भी काफी आत्मीयता, आदर और अपेक्षाओं से भरा हुआ था।

हनुमंतरावजी के साथ ही एक लड़की भी आयी। बाबा को प्रणाम किया, तो बाबा ने आश्चर्य से पूछा : "अरे, मृदुला आ गयी। हो गयी महिलाश्रम की परीक्षा? लेकिन सच्ची परीक्षा तो अब होनेवाली है।"

शोषण का लगातार क्रम

विनोबाजी गाँव देख आये थे, फिर गाँववालों को भी देखा। गाँव के पटेल से भी बातें कीं। जैसे बाह्य शुचिता का अभाव था, वैसे ही अन्तर-शुद्धि का भी था। गाँव के पटेल को कांग्रेस के आंदोलन में जेल जाना पड़ा था। 'जाना पड़ा था', इसलिए कहा कि कांग्रेस-आन्दोलन में भी हथियार जमा करने और हथियार स्वयं इस्तेमाल करने के आरोप

में वह पकड़ा गया था। पटेल के व्यवहार से सारा गाँव दुखी था, गाँव-वालों के व्यवहार से पटेल दुखी था। कम्युनिस्टों ने पटेल के तीन रिश्तेदारों की हत्या कर डाली थी। पटेल का कहना था कि गाँववालों ने और लंबाड़ों ने कम्युनिस्टों से मिलकर यह खून करवाये। लंबाड़े स्त्री-पुरुष सैकड़ों की तादाद में झोपड़ी के पास सबेरे से ही आ बैठे थे कि महात्माजी को अपना दुख सुनायेंगे—परन्तु उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी—डरते थे कि महात्माजी के चले जाने के बाद पिटाई होगी! विनोबा ने सबको अपने पास बुला लिया और निर्भय होकर अपना दुखड़ा सुनाने के लिए कहा। उनके मुख से उनकी करुण-कथा सुनकर दुख होना स्वाभाविक था। पचास-पचास बरस से जो जमीनें वे जोत रहे थे, उनसे किसी-न-किसी बहाने वे छीनी जा रही थीं, बहुत-सी छिनी जा चुकी थीं। विनोबा ने देशमुखों को भी समझाया। उन्होंने शुरू में काफी भोलापन दिखाया। श्री लक्ष्मी बहन से रहा नहीं गया। उनका हृदय तड़प उठा। उन्होंने देशमुख का आवाहन किया कि "अरे! तुम महर्षि के सामने बात कर रहे हो, दुर्बुद्धि छोड़ो। सच-सच अपने अपराध कबूल करो। पिछला पाप भगवान् तुम्हें माफ करेगा। आइन्दा किसीको तकलीफ न देने की प्रतिज्ञा करो।"

शांति का तरीका

विनोबा ने लक्ष्मीबाई को शांत किया। गाँव के मुखिया लोग जमा थे। उनसे कहा: "इस गाँव में दो बरस से मिलिटरी बैठी है। हमारी रक्षा के लिए ये दिल्लीवाले यहाँ आकर बैठें, यह कोई शोभा की बात नहीं है। जो कुछ पिछली भूलें हुई हैं, वे भूल जानी चाहिए और गाँव में शांति रहे, ऐसी कोशिश करनी चाहिए। शांति रखने का हमने एक तरीका ढूँढ़ा है और वह है—जिनके पास जमीनें हैं, उनसे जमीनें माँगने का—जिनके पास नहीं हैं, उन्हें वे जमीनें देने का। तो आप लोग हमें जमीनें दे दो।" देशमुखों ने तीस एकड़ भूमि दी। उनके दिल के दरवाजे कुछ बंद-से

थे, कारण उनका खयाल था कि उनके भाइयों के कत्ल में गाँववालों का हाथ था। विनोबाजी ने सबको पिछली बात भूल जाने को कहा। शाम की प्रार्थना में इस संबंध में प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा :

"मैं समझ गया हूँ कि इस मुल्क में देशमुख, देशपांडे, जागीरदार वगैरा लोग बहुत हैं और उन लोगों के जुल्मों के नीचे प्रजा काफी पिस गयी है। फिर भी मैं कहता हूँ कि यद्यपि इतना जुल्म हो रहा है, तथापि इन लोगों की हत्या करना, उनको फँसाना, परेशान करना, उनके घर-बार बरबाद करना, यह अच्छा रास्ता नहीं है। इससे गरीब लोगों का काम बननेवाला नहीं है।"

उपाय बताते हुए उन्होंने कहा : "इसका उपाय वही हो सकता था, जो गांधीजी ने हमें बताया है। उसी रास्ते को आजमाने के लिए मैं गाँव-गाँव जा रहा हूँ और यहाँ भी आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि गरीब-श्रीमान्, सबके हृदयस्थ भगवान् प्रकट हों। इसलिए आजकल मैं ज्यादा व्याख्यान नहीं देता, बोलता कम हूँ—अंदर से ईश्वर की प्रार्थना ही ज्यादा करता हूँ कि वह हमारे सब भाइयों को अक्ल दे।"

फिर यहाँ के देशमुखों के बारे में कहा :

"मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की—परन्तु थोड़ी देर बाद मैं चुप हो गया, क्योंकि मैं समझ गया कि ज्यादा चर्चा से काम होनेवाला नहीं है। उनके दिलों में गहरे घाव हैं। उनके भाइयों की कत्लें हुई हैं। उनके हृदय में करुणा प्रकट हो, इसलिए भी परमेश्वर की करुणा ही बरसनी चाहिए। मेरे हृदय में भी जो दयाभाव है, वह परमेश्वर की दया का ही परिणाम है। इसलिए मैं प्रभु से नित्य प्रार्थना करते रहता हूँ कि तू प्रेम से भरा है—हम तेरी संतान हैं—हम सबको थोड़ा प्रेमभाव देना। शंकराचार्य के शब्दों में मैं भी रोज प्रार्थना करता हूँ कि भूतदयां विस्तारय—हे परमेश्वर, मेरे हृदय में सबके लिए दया रहे और वह दया निरन्तर बढ़ती रहे।

"और मुझे कहने में खुशी होती है कि भगवान् मुझे रोज दया का नित्य नया सबक सिखाता है—नित्य नया दर्शन कराता है। मैं गाँव-गाँव जाता हूँ, तो क्या सुनता हूँ कि कम्युनिस्टों ने फलाँ गाँव में इतने मनुष्यों को कत्ल किया। फलाँ जगह खेतों को जला दिया। फलाँ खेत में घास की गँजियाँ भस्म कर दीं। मैं मन में यही प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवन्! इन कम्युनिस्टों के लिए भी मेरे मन में दया-भाव ही रखना। ये लोग हिंसा का काम करते हैं, तो उनको हम किस मुँह से दोष दे सकते हैं? क्योंकि मौका पड़ने पर कांग्रेसवालों ने भी हिंसा की है, गांधीजी का नाम लेकर हिंसा की है।"

फी शादी एक कुआँ :१२:

तुरपल्ली

२६-४-'५१

आज मंजिल बारह मील की थी। पुनः नलगुण्डा जिले में प्रवेश करना था। विनोबा ने नित्य की भाँति सबेरे पाँच बजे कूच किया। थोड़ी ही देर में डेढ़ मील पर इर्वेन नामक गाँव आया। साढ़े पाँच भी नहीं बजे होंगे। सारा गाँव उमड़ पड़ा। विनोबा रास्ते में कहीं रुकते नहीं, परंतु अब तो 'भूदान' के लिए कहीं भी रुक सकते थे। अनंत रेड्डी ने पंद्रह एकड़ अच्छी जमीन का दान-पत्र पेश किया। उस प्रभात की मंगल बेला में वह दान स्वीकार करते हुए विनोबा ने गाँववालों को गाँव में प्रेम-भाव बनाये रखने के लिए कहा।

जब गाँव के समीप आये थे, तो "रामजी आये" का गीत गाया जा रहा था। जब भू-दान लेकर विनोबा चल पड़े, और वे तेजी से ही चलते हैं—तो गाँववाले भी उनके साथ हो लिये और उतनी ही तेजी से गाने लगे। अब की बार भजन में परिवर्तन हुआ कि "मन रामड्ड पोतुन्नाडु रामं भजे—रामजी रवाना हो रहे हैं, आओ मन! राम का भजन करें।"

रास्ते में कोतापल्ली और सिद्दमपल्ली के लोगों का आदर-प्यार स्वीकार करते हुए करीब दस बजे तुरपल्ली पहुँचे। रास्ते के दोनों ओर केतकी की बाढ़ और बीच-बीच में छह-छह, आठ-आठ फीट ऊँचे केतकी कमल ऐसे सुन्दर फब रहे थे कि मानो इसी अवसर के लिए सजाये गये हों। पड़ाव भी नजदीक ही था। बेला, कन्हेर और गुलाब के दर्जनों हारों की वर्षा हुई। विनोबा ने सबका उपहार प्रेमपूर्वक स्वीकार किया और उसी क्षण

साथ चलनेवाली 'बालकृष्ण' की मूर्तियों को अपने हाथों से वे सब मालाएँ पहना दीं। विनोबा की कसौटी करने के लिए ही मानो कभी-कभी कोई बालक कुछ असमंजस-सा, कुछ भयभीत-सा दौड़ने लगता, तो विनोबा भी अपने भगवान् के पीछे-पीछे दौड़ते और उसको मना लाते। फिर बड़े प्यार से उसे माला पहना देते।

आज तो विनोबा विशेष ही प्रसन्न थे। तीन बजे से प्रार्थना के समय तक मुलाकातों व शिकायतों का समय रहता है। गाँव में पटेल-देशमुखों या देशपांडों के खिलाफ कोई शिकायतें नहीं थीं। जमीन प्रायः सबको है। जिन थोड़े हरिजन-परिवारों को नहीं थी, उनके लिए स्थानिक लोगों ने पैंतीस एकड़ के करीब जमीन दे दी थी। इसलिए कुछ फुरसत पाकर विनोबा कमरे से बाहर निकले, तो देखा कि बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष, एक भीड़-सी जमा थी। भीड़ में जो बच्चे थे, वे विनोबा के साथ हो गये, और विनोबा बच्चों के साथ। पहले थोड़ी देर तो विनोबा का हाथ पकड़-कर बच्चे इधर से उधर, उधर से इधर आँगन में घूमते रहे। लेकिन वह शृंखला बढ़ती गयी। उस आँगन में अमाना कठिन हुआ। इधर लोगों की भीड़ भी बढ़ती गयी। विनोबा ने अब बाल-गोपाल-मंडली के साथ नाना तरह के खेल खेलना शुरू किया। खेल में तल्लीन हो गये। पूर्ण में पूर्ण की लीनता का ब्रह्मानंद लूटने लगे। इस ब्रह्म-समाधि में से जगाने के लिए ही मानो प्रार्थना की घंटी बजी। एक समाधि से दूसरी समाधि में ऋषि ध्यानावस्थित हुए।

साढ़े तीन हाथ जमीन काफी है

आज दान जिस कारण से कम मिला था, उसका विश्लेषण करते हुए कहा : "यह बहुत खुशी की बात है कि यहाँ बड़े जमीनवाले ज्यादा नहीं हैं। और उससे भी अधिक खुशी की बात यह है कि अब यहाँ कोई भूमिहीन नहीं रहा है। उन सबके लिए आवश्यक भूमि का प्रबन्ध हो गया है। आज हमें दान भी कम मिला है, क्योंकि उतने ही की जरूरत

थी। बहुत ज्यादा दान मिलता है, तो हमें उसकी खुशी नहीं होती। क्योंकि जहाँ ज्यादा दान मिलता है, वहाँ पहले से बहुत ज्यादा अन्याय हुआ रहता है। पहले विषमता रहती है, फिर हमको दान मिलता है। पास में ज्यादा जमीन रखना अच्छा नहीं है। आखिर हमें जमीन चाहिए कितनी ? संतों ने हमें बताया है कि साढ़े तीन हाथ जमीन हमारे लिए काफी है।"

भगवान् का प्रकाश

दोपहर विनोबाजी बच्चों के साथ रम गये थे। प्रवचन में उसका भी जिक्र किया : "जो बहुत-से लड़के आज यहाँ आये थे, हमने सोचा कि उनके साथ जरा खेल लें। फिर १०-१५ मिनट सब लड़कों के साथ खूब खेल लिया। खेलते-खेलते मेरे मन में विचार आया कि इतने सारे जो लड़के हैं, उनकी जिम्मेदारी सिर्फ उनके माँ-बाप पर ही है कि सारे गाँववालों पर है। एक श्रीमान् के घर में लड़का पैदा हुआ और गरीब के घर में लड़का पैदा हुआ, तो उन दो लड़कों में क्या फर्क है ? वह जो लड़का पैदा हुआ, वह भगवान् का प्रकाश है। दोनों घरों में समान प्रकाश आ गया। इसलिए गाँव के माता-पिता अगर यह विचार करेंगे कि जितने लड़के गाँव में हैं, सब हमारे हैं, तो गाँव सुधर जाता है। यह एक छोटी-सी युक्ति मैंने बतायी, जिसका अभ्यास करना चाहिए।

"एक श्रीमान् तो अपने लड़के को पढ़ाई के लिए शहर में भेजता है। अगर वहाँ कोई रिश्तेदार हो तो ठीक, नहीं तो वहाँ खुद जाकर रहेगा—बच्चे की तालीम के लिए। लेकिन सोचना चाहिए कि अपने बच्चे की तालीम के लिए इतनी फिक्र करता है, तो उस गाँव के दूसरे लड़के पड़े हैं, उनकी तालीम के लिये क्यों न फिक्र करे ? अरे, एक दीपक अगर जल गया, तो वह घर के भीतरवालों के भी काम आता है और बरामदे पर भी काम आता है। अगर एक स्कूल यहीं गाँव में बनाते हैं और दो-तीन शिक्षक रखते हैं, तो वे दो-तीन शिक्षक मिलकर के उस श्रीमान् के लड़के

को तालीम देंगे और गाँव के लड़कों को भी तालीम देंगे। भगवान् श्रीकृष्ण बालगोपालों में रहे और उन्हींके बीच में खेले-कूदे। कितना अच्छा था? अगर कहीं कृष्ण भगवान् को गोकुल से उठाकर स्कूल में दिल्ली भेज देते, तो क्या हालत हुई होती गोकुल की?

सब बच्चों की इकट्ठी तालीम

बच्चों की कोई जाति नहीं होती। उनके लिए गरीब-श्रीमान् के भेद-भाव भी नहीं होते। वे तो परमेश्वर की प्रजा हैं। लेकिन ये श्रीमान् लोग सारे गाँव के लिए सोचते ही नहीं। अपने खुद के लिए सोचते हैं। फिर उनका लड़का शहर में सीखने के लिए जाता है। उसको गाँव से नफरत पैदा होती है। फिर वह गाँव में रहने के लिए भी नहीं आता। बाप तो बचपन से गाँव में रहा, लेकिन उसका लड़का बचपन से शहर में सीखा। इस तरह वह पढ़ा-लिखा बनता है, तो गाँव को छोड़कर शहर में भाग जाता है। फिर उसकी गाँव के लोगों के साथ मैत्री नहीं हो सकती। वह लड़का गाँव में कुछ काम नहीं करता और फसल के समय आता है। ऐसी हालत में उसको फसल भी ठीक मिलती नहीं; क्योंकि वह गाँव में रहता नहीं, देखभाल करता नहीं। उसके और गाँववालों के बीच में वैर-भाव पैदा होता है। तो फिर उसको गरीबों का डर लगता है और तब अपने बचाव के लिए पुलिस को अपने पास बुलाता है। कहता है कि ये सारे गरीब लोग कम्युनिस्टों से मिल गये, हमको बहुत डर है। अब पुलिस तो कोई स्नेह-भाव से काम करना जानती नहीं। पुलिस के पास क्या ताकत है? उनका वह डंडा उनकी ताकत है। इस तरह जहाँ गाँव में मामला चला, तो क्लेश और द्वेष बढ़ता जाता है। इसलिए गाँव को अगर सुखी करना है, तो यह निश्चय कर लो कि हम अपने बच्चों को गाँव में ही तालीम देंगे और सब बच्चों को इकट्ठी तालीम देंगे।

गोकुल का जीवन

"इस तरह सारे गाँव के लड़के एक साथ खेलेंगे-कूदेंगे, तो आगे

जाकर अपनी जमीन भी सब मिलकर ही करेंगे। तब वे श्रीमान् के लड़के गरीब के लड़कों से डरेंगे नहीं। फिर जैसे श्रीकृष्ण भगवान् अपने घर का मक्खन सबको खिलाता था, उसी तरह वे लड़के अपने घर की चीज सबोंको खिलायेंगे। इसका नाम है—गोकुल। 'गोकुल' का अर्थ है—जो मक्खन हो, शक्कर हो, गन्ना हो, सब मिलकर खायें। चोर की तरह घर के अन्दर बैठकर छिप करके मीठी-मीठी चीजें खाना, यह गोकुल नहीं है। सबके साथ अगर खायेगा, तो कितना प्रेम आयेगा और कितना अच्छा लगेगा खानेवालों को भी। लेकिन वह खाने के लिए चुप-से बैठता है, तो उसके खाने में हिस्सा लेने के लिए मक्खियाँ आती हैं। अब वह मक्खियों से तो प्रेम नहीं कर सकता। इस तरह उसके प्रेम की भावना अतृप्त रहती है। फिर वह अपने घर में बिल्ली रखेगा, कुत्ता रखेगा और कुत्ते को, बिल्ली को खिलायेगा, दूध पिलायेगा। इस तरह वह कुत्ते से, बिल्ली से प्रेम कर सकता है। लेकिन अपने गाँव के लोगों से डरता है। तो, यह सारी समस्या तब हल होगी, जब सब मिलकर के स्कूल में प्रेम से इकट्ठा पढ़ना-लिखना, अभ्यास करना शुरू कर देंगे।"

सब समस्याओं का हल नयी तालीम

विनोबा ने नयी तालीम की पद्धति का रमणीय चित्र भी खींच दिया : "गरीब-अमीर जहाँ सबके बच्चे साथ-साथ काम करेंगे, साथ पढ़ेंगे। जब कभी मैं सोचता हूँ कि ये सारी समस्याएँ कैसे सुलझेंगी, ये सब दुःख कैसे दूर होंगे, तो मुझे यही सूझता है कि नयी तालीम शुरू करनी चाहिए। बच्चों की तरह बड़ों को भी तालीम मिलनी चाहिए। बच्चों को तालीम स्कूल में मिलेगी। बड़ों को जीवन में मिलेगी।"

फी शादी एक कुआँ

गाँव में आज एक जगह शादी का उत्सव था। हर साल करीब बीस-पचीस शादियाँ होती हैं। विनोबा ने "गणित" शुरू किया : ३६ करोड़ लोग। ४०-५० का आयुर्मान। ४०-५० साल में १८ करोड़ शादियाँ



कड़ी धूप में मीलों चले जा रहे हैं।



ठीक रास्ते नहीं होते हैं, तो खेतों में से ही जाना पड़ता है।

होंगी। फी शादी एक कुआँ—यह सिलसिला रहा, तो चालीस-पचास साल में १८ करोड़ कुएँ खुद जायेंगे। याने पचास साल में इंच-इंच जमीन तरी की बन जायगी।"

विनोबा ने कहा :

"भगीरथ तो स्वर्ग से गंगा लाये। आप लोग पाताल से सरस्वती लाओ—कुआँ खोदना शादी का एक हिस्सा समझो। जब तक कुआँ खोदने की तैयारी न हो, उतना पैसा भी जमा न हो, शादी मत करो।"

विनोबा ने विनोद किया :

"और अगर कुआँ बनने पर भी वरराजा खेती न करे, तो उसके नसीब फूटे और उसको अगर निराशा हुई, तो वही कुआँ उसे डूब मरने के लिए काम आयेगा।" ● ● ●

कम्युनिस्ट हिंदुस्तान में टिक नहीं सकते : १३ :

देवरकोण्डा
२७-४-'५१

आज पूरब दिशा में चलना था। सबेरे की प्रार्थना और बिदाई के बीच आधा घंटा मिल जाता है। इधर सबसे बिदा लेने का मूक कार्य-क्रम चलता, उधर भक्तजन विनोबा को तेलुगु भजन भी सुनाते रहते। इसी बीच श्री लक्ष्मी बहन सब साथियों को जलपान भी करा देती। योग-वियोग की संमिश्र भावनाओं से अंतःकरण भर आते। आज एक और बात विशेष हुई। प्रभात की उस मंगल वेला में शंख के गंभीर, बुलंद और कर्ण-मधुर स्वर ने सबके हृदयों को आकर्षित कर लिया। इधर जैसे ही शंख की आवाज रुकी, तो उधर वृक्षों की शाखाओं में कहीं कोकिला ने मंद राग आलापना शुरू किया। इतने में पाँच बज गये और कूच हुआ। भजन-मंडली ने पंढरपुर के विठोबा का आवाहन किया–"रंडैयो रंडैयो पांढारीपुर मुरको रेपटिकि, मापटिकि, मनतनुमा, शाश्वतमो"[1]। गीत के राग में स्वर और कदम मिलाकर चलने का आनंद सहयात्री लूटने लगे थे।

गाँव की सीमा आयी तो विनोबा रुके, 'अंदरिकि नमस्कारम्' किया और आगे बढ़े, तो इर्द-गिर्द पहाड़ियों की चित्र-विचित्र आकृतियों का लुभावना दृश्य सामने प्रस्तुत था। अरुणोदय का समय था। सामने क्षितिज पर रक्त-रेखाएँ खींची जा रही थीं। लालिमा बढ़ती जा रही थी। 'अन्तर मम विकसित करो' की भावना से सबके हृदय भगवान् सहस्ररश्मि के

---

१. आइये-आइये, पंढरपुर को जायँगे। क्या शरीर शाश्वत है? कल या परसों–(उसे जाना ही है।)

स्वागत को तत्पर नजर आ रहे थे और इस पावन तथा स्फूर्तिदायी वातावरण को पोतना, वेमना, कबीर, तुकाराम, गांधी, रमण तथा अरविंद आदि भक्तजनों के संबंध की चर्चा ने और भी पावन और प्रेरक बना दिया था। सारे इतने एकाग्र होकर विनोबा की वाणी का प्रसाद पा रहे थे कि देवरकोण्डा कब आ गया, पता भी नहीं चला। स्वागत-गान, जय-जयकार और अनेक उत्साह-भरी भावनाएँ भिन्न-भिन्न उद्घोषों का रूप लेकर सगुण होने लगीं।

शहर का मुकाम था—नलगुंडा जिले का प्रमुख स्थान था। बारह सौ मकानों में दो सौ घर मुसलमानों के थे, चालीस-पचास बुनकरों के। हरिजन भी काफी मात्रा में थे। दोपहर को छोटे-बड़े जमींदारों से काफी चर्चा हुई। कुल जमीन ४५८ एकड़ मिली।

देहात और शहरों का फर्क

हैदराबाद से चलने के बाद अब तक प्रायः सभाएँ देहातों में ही हुईं। परन्तु उपस्थिति कहीं-कहीं दस-दस, बारह-बारह हजार से भी अधिक रही। जागृति के लक्षण देहातों में साफ दिखाई देते थे और इसका श्रेय कम्युनिस्टों को ही था। देवरकोण्डा, जिसका अर्थ होता है—देवों का पहाड़—शहरी ढंग का होते हुए भी जागृति में वह देहातों से पिछड़ा हुआ नजर आया। न तो उन देहातों जैसी स्वच्छता यहाँ थी और न वैसी उपस्थिति। सभा में मुश्किल से दो हजार आदमी होंगे। देहातों में स्त्रियाँ बराबरी से और कहीं-कहीं तो आधी से भी अधिक होती हैं। आज तो शायद स्त्रियाँ नाममात्र को ही थीं। देहातों की अपेक्षा लोग यहाँ दुःखी भी कुछ कम होते हैं, क्योंकि दुःख सारा देहातों के हिस्से में ही आ चुका है।

क्रांति का सामान

यह सारी हालत देखकर विनोबा ने प्रार्थना-प्रवचन में कहा : "सुधार की आवश्यकता देहातों के बजाय शहरों में मुझे अधिक दिखाई देती है, जहाँ न देहातों की तरह स्त्री-पुरुषों की स्वतंत्रता है, न लड़के-लड़कियों की

संयुक्त पढ़ाई है। शहर पिछड़े हुए हैं। क्रांति के सारे सामान तो देहातों में मौजूद हैं। इन सबकी वजह यह है कि शहरों में जमींदार, मालदार लोग होते हैं और होते हैं वकील, न्यायाधीश, मिलिटरी-पुलिस आदि, जो उन श्रीमानों की रक्षा करते हैं। और ये सब लोग ज्यादातर पुराने खयाल के ही होते हैं। इसीलिए गांधीजी को भी जो सहकार देहातों से मिला, शहरों से नहीं मिला। पुराने संतों का भी जितना काम गाँवों में चला, शहरों में नहीं चला।"

गाँव का कचरा : शहर

कारण बताते हुए विनोबाजी ने कहा :

"बात यह है कि हर गाँव में जो कचरा होता है, वह सारा हवा से बहकर जहाँ इकट्ठा होता है, उस जगह का नाम है—शहर।"

प्रेरणा के अनुकूल हो जाइये

फिर शहरवालों को भी समझाया कि "भाइयो, आप लोगों ने देहातों से भर-भरकर पाया है—भू-दान के रूप में परमेश्वर की प्रेरणा काम कर रही है। उस प्रेरणा के लिए आप सब अनुकूल हो जाइये, और दान का प्रवाह शहरों की ओर से देहात की ओर, पढ़े-लिखे लोगों की ओर से अपढ़ किसान की ओर जाने दीजिये। अगर ऐसा होगा, तो आप देखेंगे कि कम्युनिस्ट लोग गायब हो गये हैं। और आप यह भी देखेंगे कि जो काम मिलिटरी और पुलिस से नहीं हुआ, वह आपके प्रेम से हो गया।"

और अन्त में कम्युनिस्टों को भी आगाह किया :

"मैं अपने को गरीबों का प्रतिनिधि मानता हूँ और मैं कम्युनिस्टों को कहता हूँ कि जब मैं यहाँ आ पहुँचा हूँ और मेरी राय लोग कबूल कर रहे हैं, तो आप भी बुद्धिमानी से काम लीजिये और खुलेआम मेरी तरह सेवा में लग जाइये। इस तरह अगर आप लोग करेंगे, तो आप देखेंगे कि आपका काम हिन्दुस्तान-भर में फैल गया है। लेकिन कम्युनिस्टों को एक

मित्र के नाते मैं आगाह कर देना चाहता हूँ कि अगर हिंसा का तरीका वे आजमाना चाहते हैं, तो हिन्दुस्तान में उनका टिकाव नहीं रहेगा।"

कानून से क्यों नहीं ?

दोपहर देवरकोण्डा में महत्त्वपूर्ण चर्चा हुई। एक भाई ने पूछा : "यह जमीन का सवाल आप कानून से क्यों नहीं हल करवा लेते ?"

उत्तर : "मुझे कानून से इनकार नहीं है। परन्तु कानून तो तब आता है, जब पहले लोकमत तैयार रहता है। अस्पृश्यता-निवारण का कानून बन सका, क्योंकि लोकमत उसके लिए अनुकूल था। कानून से सब काम होते ही हैं, ऐसा मैं नहीं मानता। क्या जातिभेद कानून से मिट सकेंगे ? क्या अंतर्जातीय विवाह कानूनन कराये जा सकते हैं ?"

कम्युनिस्टों के काम की बुनियाद

प्रश्न : "यहाँ जो कम्युनिस्ट-आंदोलन है, वह तो आर्थिक कारणों से है। उन्हें दूर करने से कम्युनिस्ट-आंदोलन अपने-आप ही खतम हो जायगा। केवल व्याख्यानों से क्या होगा ?"

उत्तर : "मैं ऐसा नहीं मानता। यहाँ के कम्युनिस्टों को यहाँ की आर्थिक हालत की कोई चिंता नहीं है। उन्हें चिंता है—सरकार को खतम करने की। खेत जल जाते हैं तो उन्हें बुरा नहीं लगता, बल्कि खुशी होती है कि सरकार के खिलाफ आंदोलन करने का एक और मौका मिला। अगर उन्हें सेवा का खयाल होता, तो वे मेरी तरह काम में लग जाते। तेलंगाना में लोग सेंदी-शराब इतनी ज्यादा पीते हैं। मैं पूछना चाहता हूँ कि वे इसके खिलाफ क्या कर रहे हैं ? मैं उन्हें खूब जानता हूँ। उनकी जाति सिर्फ यहीं नहीं है, हिंदुस्तान-भर में है। मेरे मित्रों में भी कम्युनिस्ट हैं, जिन्होंने मुझे जेल में सारा कम्युनिस्ट-वाङ्मय पढ़कर सुनाया है। उनका ध्येय राजनैतिक पहले है, आर्थिक बाद में। उनके काम की बुनियाद राजनीति है। सत्ता आने पर वे अर्थशास्त्र ठीक कर लेना चाहते हैं।"

"व्याख्यानों से कुछ होगा या नहीं, यह तो आप लोग ही जान सकते हैं। केवल व्याख्यान से कुछ नहीं होगा, यह तो मैं भी मानता हूँ। परन्तु आज जो लोग दान दे रहे हैं, उन्हें प्रेरणा भी व्याख्यानों से ही मिल रही है। अगर कांग्रेसवाले काम करेंगे, तो कम्युनिस्ट गायब हो जायेंगे। आज भी कम्युनिस्ट प्रकाश में आकर तो काम नहीं कर रहे हैं। जहाँ पिस्तौल हाथ में ली कि आम जनता के पास खुलेआम आने का रास्ता बंद हुआ।"

अन्न-संकट

प्रश्न : "क्या हमारे देश में सचमुच अन्न-संकट है?"

उत्तर : "अन्न-संकट कहीं नहीं है। संकट तो यह है कि सब आलसी बन गये हैं। अन्न-संकट कहते हैं और जरा-सा भी अन्न निर्माण नहीं करते। किसान तो बेचारा अनाज का उत्पादन कर ही रहा है। उसका अनाज जरूरत के स्थान पर नहीं पहुँचता, यह उसका दोष नहीं है। इन सबका इलाज तो यही है कि आवश्यकताओं के बारे में स्वावलम्बी बनना चाहिए और सबको कुछ-न-कुछ पैदावार बढ़ाने का व्रत लेना चाहिए। इतने सारे लोग आप आये हैं। मैं पूछता हूँ, आज भोजन तो सबने किया है, परन्तु क्या किसीने कोई पैदावार भी की है? गांधीजी ने कहा, अरे, कम-से-कम चरखा तो भी कातो। तो कहते हैं, स्वराज्य के बाद अब कातने की क्या जरूरत है? जिन साधनों से स्वराज्य मिला है, उन्हें छोड़कर अब मानो स्वराज्य गँवाने का कार्यक्रम शुरू करना है। अन्न-संकट तो नहीं, पर बातों का संकट अधिक नजर आ रहा है। जो उठता है, अन्न-संकट पर सवाल करता है। अच्छा होगा, यदि हम बातें करने के बजाय जितना भी बन सके, पैदावार बढ़ाने में जुट जायँ।"

श्रम-विभाग

प्रश्न : "लेकिन क्या सबको पैदावार बढ़ाने में लगने की जरूरत है? श्रम-विभाग द्वारा यह नहीं हो सकता?"

उत्तर : "जी नहीं। आपका मतलब है कि कुछ लोग केवल खाया करेंगे, कुछ केवल सोया करेंगे, कुछ केवल खेला करेंगे। हरएक व्यक्ति खायेगा, सोयेगा, खेलेगा, पर खोदेगा नहीं, सींचेगा नहीं। क्यों नहीं ? सब कोई जानते हैं कि हरएक व्यक्ति हर काम नहीं कर सकेगा। पर कुछ बुनियादी काम होते हैं, जो सबको करने चाहिए। पड़ोस में आग लगने पर हम यह नहीं सोचते कि कुछ लोग तो आग बुझा देंगे और मैं गणित के सवाल हल करता रहूँगा। परमेश्वर की अगर यही इच्छा होती कि हर मनुष्य एक ही काम करे, तो कुछ को केवल देखने के लिए एक बड़ी आँख, कुछ को केवल सुनने के लिए एक बड़ा कान और कुछ को बोलने के लिए एक बड़ा ग्रामोफोन दे देता। परंतु परमेश्वर ने ऐसा नहीं किया। उसने हाथ-पाँव सबको दिये हैं। फिर अपनी जरूरतों के लिए हमें काम क्यों नहीं करना चाहिए ?"

प्रश्न : "लेकिन फिर भी श्रम-विभाग तो रहेगा ही।"

उत्तर : "वही तो मैंने कहा कि श्रम-विभाग करके रसोई हमने स्त्रियों को सौंप दी। कई पुरुष ऐसे हैं, जो रसोई बनाना भी नहीं जानते।"

प्रश्न : "लेकिन अच्छा रसोइया तो अब तक पुरुष ही रहा है।"

उत्तर : "क्योंकि उसमें कमाई होती है। यही तो मैं कहता हूँ कि जहाँ कमाई का सवाल आता है, वहाँ अक्सर पुरुषों ने स्त्रियों के धंधे छीन लिये हैं। बुनने का काम पहले स्त्रियाँ करती थीं। आज पुरुष करते हैं। यहाँ तक कि उनका रसोई करने का काम भी उन्होंने छीन लिया है।"

• • •

कम्युनिस्टों ने सारा नष्ट कर दिया : १४ :

निरडगोम
२८-४-'५१

अब फिर एक देहात की ओर जाना था। रास्ता कच्चा ही था। जिस मकान में हमारा पड़ाव था, कम्युनिस्टों द्वारा वह जलाया गया था, जिसके चिह्न आज भी नजर आ रहे थे। मकान बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन विनोबा ने इसी मकान में ठहरना पसंद किया।

विनोबा के पहुँचने के बाद थोड़ी ही देर में लंबाड़े लोगों का एक दल उनसे मिलने आया। स्त्री-पुरुष, बच्चे, सब। स्त्रियाँ बड़ा लहँगा पहनी हुईं, पीतल और रूपे के जेवरों से पाँव से चोटी तक लदी हुईं। सेहत मजबूत। पुरुष से स्त्री कुछ होशियार नजर आती थी। ये लोग पहाड़ों में अपने दल बनाकर रहते हैं। कभी कहीं, कभी कहीं। दो-दो, तीन-तीन साल एक-एक जगह रहते हैं। फिर स्थान बदल देते हैं। कोई स्थायी भी रहते हैं। कम्युनिस्ट इनसे लाभ उठाते हैं, ये उन्हें आश्रय देते हैं, खिलाते-पिलाते हैं, ऐसा इन पर आरोप है। सरकार ने इन सबको अपनी खेती से उठाकर गाँव में बुला लिया था। इनकी काफी शिकायतें थीं। यात्रा में शिकायतें लिखने का और फिर उन्हें विनोबा के सामने रखने का एक विभाग ही चलता है। इनकी शिकायतें लिख ली गयीं और विनोबा के सामने पेश की गयीं।

विनोबा ने इन लोगों से काफी देर विस्तार के साथ बातचीत की। इस बातचीत से न सिर्फ इनके रीति-रिवाज पर प्रकाश पड़ता है, बल्कि इनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सहज ही मिल जाता है। इनके बारे में यह कहा जाता है कि ये लोग अपने दल

छोड़कर दूसरों के साथ रहना पसंद नहीं करते, न किसीको अपने साथ रखना ही पसंद करते हैं। कुछ लोगों ने, प्रमुख लेखकों ने, ऐसी सिफारिश भी की है कि इन्हें, जैसे हैं वैसा ही रखा जाय; इनकी एक खास संस्कृति है, उसे न तोड़ा जाय। लेकिन इनके साथ की बातचीत से मालूम होगा कि हम लोग अपने इन भाइयों के बारे में कितनी गलतफहमियाँ रखते हैं।

बातचीत

विनोबा : "आपकी दरखास्तें मैंने देखी हैं। मैं कोशिश करूँगा कि आप लोगों की माँग पूरी हो। लेकिन एक-दो बातें मैं पूछना चाहता हूँ। मैं आज के लिए बात नहीं करता। दस साल बाद के लिए ही सही। यह बताइये कि आप लोग गाँव के साथ रहना अच्छा समझते हैं या दूर रहना ही अच्छा समझते हैं ?"

लंबाड़े : "महाराज, हमारी खेती ही वहाँ है। इसलिए वहीं रहना पड़ता है।"

विनोबा : "अगर खेती यहाँ मिल जाय तो ? तब तो सबके साथ रहना पसंद करोगे ?"

लंबाड़े : "तब तो सबके साथ रहना अच्छा लगेगा, क्योंकि गाँववालों के साथ हमारा संबंध रहेगा। आज चीजें खरीदने के लिए जो दूर से आना पड़ता है, वह नहीं आना पड़ेगा। जंगली जानवर हमारी खेती खराब कर देते हैं। इसलिए हम खेती छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकते।"

विनोबा : "तुम लोगों की जमीन कितनी है ?"

लंबाड़े : "पाँच सौ एकड़।"

विनोबा : "आदमी कितने हो ?"

लंबाड़े : "पाँच सौ।"

विनोबा : "याने यहाँ गाँव के नजदीक जमीन मिल जाती है, तो आप लोगों को इधर रहने में हरज नहीं है ?"

लंबाड़े : "जी नहीं।"

विनोबा : "अच्छा। अगर आपके साथ वहाँ जंगल में और दूसरे लोग भी रखे जायँ, अर्थात् उन्हें उतनी और जमीन मिल जाय और इस तरह एक नया गाँव बसाया जाय, तो आपको कोई आपत्ति है ?"

लंबाड़े : "नहीं, बल्कि हमें तो खुशी होगी। आज हम अकेले रहते हैं। कल एक नया गाँव बस जायगा।"

विनोबा : "ठीक है। मैं आप लोगों की बात पूरी समझ गया हूँ। अब मैं कोशिश करूँगा।"

इसके बाद उनके रहन-सहन के बारे में भी चर्चा हुई। विनोबा ने कहा : "मैं आप लोगों से एक बात और कहना चाहता हूँ। हम लोग मांडवी गये थे। वहाँ तुम लोगों के एक नेता हैं। उन्होंने अपने घर में काफी सुधार किया है। स्त्रियों ने लहँगों और गहनों का यह भेष छोड़कर सादगी का रहन-सहन अपनाया है। क्या आप लोग अपने रहन-सहन में कुछ फर्क करना पसंद नहीं करेंगे ?"

लंबाड़े : "नहीं महाराज ! हम तो लंबाड़ों की तरह ही रहना चाहते हैं।"

विनोबा : "क्यों ? तुम्हारी स्त्रियों में और दूसरी स्त्रियों में भगवान् ने क्या फर्क किया है ?"

लंबाड़े : "फर्क तो कुछ नहीं है। लेकिन हमारी जाति के जो रिवाज हैं, वे हम चालू रखना चाहते हैं।"

विनोबा : "लेकिन समय के अनुसार और जातियों ने सुधार किया है।"

लंबाड़े : "आप चाहें तो जो छोटे बच्चे हैं, उनके जीवन में सुधार कर सकते हैं। परन्तु हमारा जमाना बीत चुका। हम अपने पुराने रीति-रिवाजों को नहीं छोड़ सकते। नौजवान लोग सुधार करना चाहें, तो कर सकते हैं।"

विनोबा : "ठीक। क्यों; और कोई बात कहनी है ?"

लंबाड़े : "हम गायों से हल जोतते हैं, तो पुलिस हमें रोकती है।"

विनोबा : "सरकारी कानून तो रोकने का नहीं है। आप लोग गायों

से काम लें, तो मुझे हर्ज नहीं है; परन्तु गर्भिणी गाय से काम नहीं लेना चाहिए।"

लंबाड़े : "गर्भिणी से काम नहीं लेंगे, क्योंकि उसमें तो हमें ही पाप लगेगा। परन्तु जब बैलों की कीमत पाँच-पाँच सौ, छह-छह सौ रुपया हो गयी है, तो हम गरीब लोग बैल कैसे खरीद सकते हैं ?"

विनोबा : "ठीक है। और कुछ तो कहने का नहीं रहा ?"

लंबाड़े : "एक बात और है महाराज ! हमें गाँव की रक्षा के लिए होम-गार्ड में लाजिमी तौर से भरती किया है। और यहीं रहना पड़ता है। हम यहाँ नहीं रहना चाहते। कम-से-कम रात में तो भी हमें अपने खेतों पर जाकर सोने की इजाजत चाहिए।"

विनोबा : "सरकार को भय है कि तुम कम्युनिस्टों को आश्रय दोगे, उन्हें भोजन कराओगे।"

लंबाड़े : "अगर ऐसा भय है, तो या तो हमें यहीं पर जमीन और मकान दीजियेगा; या फिर हमें वहाँ खेतों पर पक्के मकान बनवा दीजियेगा; ताकि हम स्थायी रूप से रह सकें और अपनी जमीन की रक्षा कर सकें। हमें आजकल पुलिस बहुत तंग करती है।"

विनोबा : "किसीको पीटा तो नहीं ?"

लंबाड़े : "जब कम्युनिस्टों ने यहाँ घर जलाये और लूट-मार की, तब पुलिस ने हमें पीटा। हमसे मुफ्त में मजदूरी भी करवायी।"

विनोबा : "और पूछा होगा कि बताओ, कम्युनिस्ट कहाँ हैं ?"

लंबाड़े : "जी।"

विनोबा : "तब उन्हें आप लोगों पर संशय था, इसलिए पूछा था। आप लोग भी पहाड़ में रहते हो। कम्युनिस्ट भी पहाड़ में रहते हैं। तो संगति का लाभ आपको मिल गया। और यह सजा भी मिल चुकी। अब जो कुछ हो चुका, उसकी शिकायत मत करो। अब यह बताओ कि आप लोगों में कोई भूखे तो नहीं रहते ? सबको खाने को मिलता है ?"

लंबाड़े : "चंद लोगों को तकलीफ रहती है।"

विनोबा : "तो जिन्हें तकलीफ है उन्हें, जिन्हें तकलीफ नहीं है वे, मदद क्यों नहीं करते ? आप लोगों को एक साथ रहना चाहिए। सबकी एक गल्ला-बैंक रखनी चाहिए। उसमें से सबको अनाज मिले। आज साहूकार की जरूरत पड़ती होगी। फिर वह भी नहीं रहेगी।"

लंबाड़े : "महाराज, गल्ला-बैंक पहले यहाँ थीं। लेकिन कम्युनिस्टों ने सारी लुटवा दीं। हिसाब-किताब जला दिये। एक-एक गाँव में चालीस-चालीस, पचास-पचास खंडी अनाज रहता था। कम्युनिस्टों ने सारा नष्ट कर दिया।"

● ● ●

यज्ञ में सब दें

: १५ :

पेदामुंगल
२९-४-'५१

करुण-रस उमड़ पड़ा

कूच करने के पहले विनोबा थोड़ा दही का नाश्ता कर लेते हैं, लेकिन आज उन्होंने नाश्ता नहीं किया। कारण, आज चार दिन हुए, पेट का दर्द फिर शुरू हो गया है। पिछले दो वर्षों से यह दर्द बन्द था। अब जब से पुनः शुरू हुआ है, विनोबाजी को थकान महसूस होने लगी है, लेकिन इससे दिनचर्या में कोई फर्क नहीं पड़ा है। ठीक पाँच बजे नियमानुसार वे निकल पड़े, अगले पड़ाव के लिए। लोग सीमा तक भजन गाते हुए पहुँचाने आये। एक वृद्ध गृहस्थ, जो पहले दिन भी 'इकतारे' पर भजन सुना गये थे, साथ हो लिये और तल्लीन होकर तेलुगु में भजन गाते रहे। अक्सर यह होता है कि सीमा पर विनोबाजी रुक जाते हैं, गाँववाले भी रुक जाते हैं, भजन-मंडली का भजन भी रुक जाता है, परस्पर प्रणाम के बाद मधुर स्मृतियों की सौगात साथ लेकर दोनों अपनी-अपनी राह मुड़ जाते हैं। लेकिन आज का दिन अपवाद का बना। सीमा पर विनोबाजी रुके, जनता रुकी, वह वृद्ध भी रुका; लेकिन उसका गीत नहीं रुका, उसकी भक्ति-गंगा बहती ही रही। उसके गीत के एक-एक चरण से करुण-रस निखर रहा था। सारा वातावरण भक्ति-भाव से ओत-प्रोत हो गया। भक्त, भगवान् और दर्शक श्रोता सब सजल नयन थे। मानो कौशल्याजी राम को बिदा कर रही हों। चलने का समय कब का हो चुका था। लेकिन उस भक्तराज वृद्ध को कौन रोक सकता था ? थोड़ी देर इसी तरह वह प्रेम-प्रवाह जारी रहा, फिर हमने धीरे-से उस वृद्ध के पास जाकर,

कुछ देर चुपचाप खड़े रहकर, अपने दाहिने हाथ से उसके कन्धे को अत्यन्त आदरपूर्वक छूकर इशारा किया कि अब इजाजत मिलनी चाहिए। इतना करना था कि करुण-रस और भी वेग से उमड़ पड़ा। एक अद्भुत अनुभूति थी। फिर कुछ क्षणों के बाद शान्ति हुई। और उस निस्तब्धता में भी कुछ क्षण बीते। और फिर विनोबाजी के मुख से बिदाई-सूचक अपेक्षित वाक्य निकला : "अंदरिकि नमस्कारम्!" "सबको नमस्कार!! अब जाइये! जाने दीजिये!!"

उस बूढ़े बाबा ने अपनी सारी शक्ति लगाकर गांधी बाबा का जय-जयकार किया। फिर अत्यन्त नम्रतापूर्वक विनोबाजी को नमन किया। दोनों, दोनों ओर बढ़े सही; लेकिन बड़ा प्रयत्न करना पड़ा!

पहाड़ियों से गुजरना था। एक के बाद एक, उन पर्वत-पंक्तियों को छोड़कर हम आगे बढ़ने लगे। नयी-नयी पंक्तियाँ नया-नया रूप लेकर सामने दिखाई देतीं। उनको पारकर यात्री-दल नयी पंक्तियों में प्रवेश करता। रास्ता ही ऐसा था कि हर मोड़ पर नयी पहाड़ी, नया मंडल।

छह बजे यात्री-दल कलेवे के लिए रुका। फिर थोड़ा चलना शुरू किया ही था कि एक फर्लांग दूर से नूपुर-ध्वनि सुनाई दी। कुछ ही क्षणों में लम्बाड़ी स्त्रियाँ दौड़ती हुई चली आयीं। बात की बात में पचासों इकट्ठा हो गयीं। एक-एक करके सबने प्रणाम करना शुरू किया। बिना कहीं रुके तीर की तरह सतत चलनेवाले विनोबा को उन बहनों ने रोक लिया। एक बहन ने अपने सिर से टोकरी उतारकर विनोबाजी के चरणों में रख दी। हम लोगों ने सोचा—"भिलनी के बेर" भेंट में रखे गये हैं। दूसरे ही क्षण मालूम हुआ कि टोकरी में अत्यन्त सुन्दर बालिका विराजमान है। श्री महादेवी ताई ने उस बच्चे को तत्क्षण गोद में उठा लिया। अब उस पर प्यार बरसना प्रारम्भ हुआ। वह भाग्यवान् बालिका विनोबाजी की गोद में भी जा बैठी। थोड़ी देर हाथों में, फिर कन्धों पर, पुनः हाथों में; इस तरह विनोबा उसे दुलारते और निहारते ही रहे; फिर वह

बालिका अपने माँ के पास पहुँच गयी। सबने पहले उस बालिका को निहारा, फिर विनोबा को और फिर एक-दूसरे को भी। उस बालिका ने 'हरि-कृपा' का स्मरण ताजा करा दिया। 'हरि-कृपा' सचमुच हरि-कृपा है। दिल्ली से जब कभी वह विनोबा के पास आती है, उन पर अपना एकाधिकार जमा लेती है।

उन बहनों की आँखों से प्रतीत होता था कि वे कुछ कहना चाहती हैं। पूछने पर उन्होंने शुरू किया : "हमें बचाइये ! हमारी खेती से हमें दूर मत कीजिये। ये मिलिटरीवाले हमें पीटते हैं। इन्हें रोकिये।" विनोबाजी ने उन्हें आश्वस्त किया। आधा मील दूर पर पुनः एक गाँव आता था। सड़क के दोनों ओर सैकड़ों स्त्री-पुरुष उसी लम्बाडा जाति के, अत्यन्त शान्त, विनोबा की प्रतीक्षा में खड़े नजर आये। विनोबाजी ज्यों ही पास पहुँचे, तो रघुराज का भजन प्रारम्भ हुआ। यात्रा जारी रही। गाँव के बाहर आधा मील दूर तक यह सारा गाँव-परिवार विनोबाजी को पहुँचाने आया। बायीं ओर से गायों का झुंड भी चला आया। श्री लक्ष्मी बहन कुछ पीछे रह गयी थीं। गायों की हिमायत लेकर उन्होंने ऊँची आवाज में कहा : "विनोबाजी, ये गो-माताएँ भी अपनी शिकायतें लेकर आपके पास आयी हैं।" इतना कहते-कहते वे गायों-सहित विनोबाजी के निकट पहुँच गयीं। शिकायत का सिलसिला जारी रखते हुए लक्ष्मी बहन ने कहा : "यह लम्बाड़े इन गायों को हल में जोतते हैं।" विनोबाजी ने कहा : "हमने तो कल ही इसकी इजाजत दे दी है। हाँ, गर्भवती गायों को नहीं जोतना चाहिए, इसका खयाल रखें।" गायों ने "बाँ" कर मानो विनोबाजी की बात पर मुहर लगा दी। "समता और स्वावलम्बन के इस युग में भला वे भी पुरुष-जाति से पीछे क्यों रहेंगी ? हम भी हल जोत सकती हैं।" यही शायद वे स्वाभिमानी गो-माताएँ कहना चाहती थीं।

करीब पौने आठ बजे पेदामुंगल के मकान दिखाई देने लगे। कुछ

ही क्षणों में प्रतीक्षा करनेवाली जनता भी उमड़ पड़ी। बाजा, शहनाई, भजन आदि के साथ सैकड़ों लोगों ने विनोबाजी का स्वागत किया।

डेरे की सारी व्यवस्था में किसी सुसंस्कृत मानस का हाथ नजर आता था। वैज्ञानिक ढंग के सुव्यवस्थित शौचालय, ताड़-पल्लवों की दीवारें, इन्हीं दीवारों का स्नानगृह, पानी पीने के लिए मिट्टी के सुन्दर कलश, वैसे ही सुन्दर लोटे, सारा दर्शन एकदम कलापूर्ण था।

वोट और वेदांत

शिकायतों की सुनवाई शुरू हुई। एक आदमी को पुलिसवालों ने मार डाला था। उसका कसूर यह था कि उसने कम्युनिस्ट को पकड़ रखा था, जिससे कि वह भागने न पाये। गोली अगर चलनी ही थी, तो कम्युनिस्ट पर; लेकिन चली पुलिस के उस मददगार पर। उसके बच्चे और पत्नी सहायता के लिए कब से अर्जियाँ दे चुके हैं, अब तक कोई सुनवाई नहीं। गाँववाले विनोबाजी से इन सबका अर्थ समझना चाहते थे। इस तरह रोज कोई न कोई नया घाव होता ही रहता था। अभी तो प्रारम्भ ही था। विनोबाजी ने सबको शान्त किया। उन्होंने प्रार्थना-प्रवचन में लोगों को पुरानी बातें भूलने की तथा हिम्मत से निर्भयतापूर्वक जीवन की समस्याओं को हल करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि "भाइयो, अब सारी हवा बदल गयी है। निजाम की सामन्त सत्ता गयी, चौधरी साहब का मिलिटरी राज्य भी गया, अब तो वेलोडी महाराज का जमाना है। वेलोडी आपके सेवक हैं, स्वामी नहीं, स्वामी तो आप सब हैं। आप सबको राज्य करने का हक जो मिला है। जैसा चाहो, राज्य चलाओ। आप सबको समान हक है, सबको एक वोट जो मिला है। एक मस्तक, एक वोट। भगवान् ने सबको एक ही मस्तक दिया है। रावण के समान कोई दस मस्तकवाला निकले, तो शायद दस वोट मिले। लेकिन अब रावण का जमाना खतम हुआ। और अब तो जो बड़ा जमींदार होगा, उसे भी एक वोट है, छोटे किसान को भी एक वोट है, खेतिहर मजदूर को भी



एक ओर पहाड़, दूसरी ओर जंगल, बीच में पहाड़ से सटी नदी और साथ में बालू। इस तरफ से उस तरफ, और उस तरफ से इस तरफ पुलिस को चकमा देकर कम्युनिस्टों की कार्रवाइयाँ जारी रहती थी।



चारों ओर कम्युनिस्ट आन्दोलन की ज्वाला फैली थी, फिर भी यह गाँव सरवैल उससे अछूता है; क्योंकि यहाँ एक सेवक रहते हैं श्री नारायण रेड्डी, जिन्होंने अपनी भूमि पहले ही भूमिहीनों को बाँट दी है।

एक वोट है, स्त्री को भी एक वोट और पुरुष को भी एक वोट है। पढ़े-लिखे मनुष्य को भी एक वोट है, बिल्कुल अनपढ़ को भी एक वोट है। ठीक वेदान्त के ज्ञान की तरह। वेदान्त का कहना है कि हर मनुष्य को एक ही आत्मा होती है, उसी तरह हमारे राज्य में हरएक को एक ही वोट होता है। इसलिए आप लोगों को डर छोड़ना चाहिए और समझना चाहिए कि इस देश में वही होगा, जो आप चाहेंगे। और इसलिए मैं कम्युनिस्टों को भी समझाता हूँ, भाइयो, अब पहाड़ की आड़ छोड़ो, जमीन पर उतरो, अब छिपने की जरूरत नहीं। पहाड़ में भेड़ियों को, शेरों को, जंगली जानवरों को छिपना चाहिए। उनको कोई वोट नहीं मिला है।"

मैं कम्युनिस्टों को भाई मानता हूँ

फिर कम्युनिस्टों को आगाह करते हुए कहा : "इन कम्युनिस्ट भाइयों को भी वोट का अधिकार मिला है, लेकिन वे अगर आग लगाना, लूटना-खसोटना और लोगों को तबाह करना, यही कार्यक्रम चलाना चाहेंगे, तो समझ लीजिये कि अब इस देश में उनका कुछ नहीं चलनेवाला है।" विनोबाजी ने हैदराबाद जेल में हुई कम्युनिस्ट मित्रों के साथ की बातचीत का भी जिक्र किया और कोई, यदि कम्युनिस्ट मिलना चाहे तो मिलने का निमंत्रण भी दिया। थोड़ा विनोद भी किया : "मैं तो कम्युनिस्टों को अपना भाई मानता हूँ। मैं तो जानवरों को भी—जिनको वोट नहीं मिला है, अपना भाई मानता हूँ। फिर ये कम्युनिस्ट तो भाई हैं ही। इसलिए आप लोगों को समझना चाहिए कि कम्युनिस्ट जिस तरह से काम कर रहे हैं, उस तरह काम करने की अब कोई जरूरत नहीं है। आप लोग जमीन ही चाहते हैं न? अगर आप लोगों का राज्य होगा, तो आप जो जमीन चाहेंगे, सारी आपको कानून से मिल सकेगी।"

कानून और दान

और फिर कानून और दान का फर्क बताते हुए कहा : "लेकिन मुझे तो आपके इस गाँव में भी ९३ एकड़ जमीन केवल माँगने से मिल

गयी है। बड़े लोगों ने भी दी है, छोटे लोगों ने भी दी है। जिसके पास ४० एकड़ है, उसने भी ५ एकड़ दी है, जिसके ५ है, उसने भी यथाशक्ति दी है। तो आप देखेंगे कि सबके दिल बदल रहे हैं और इस तरह अगर सब दिल बदल सकते हैं, तो कानून की कोई जरूरत नहीं रहती। प्रेम से ही सारी समस्या हल हो सकती है। जीवन के सारे कारोबार अच्छे चल सकते हैं।"

सारी जमीन सबकी

फिर सारे गाँव को एक परिवार समझने की दीक्षा देते हुए कहा : "देखिये, बारिश होती है तो आपके गाँव के हर घर पर बरसती है। सूरज की किरणें सबके दरवाजे पर पहुँचती हैं। मौत जब आयेगी, तो श्रीमान् और गरीब, सबके लिए आयेगी। दुनिया में परमेश्वर ने सबको समान पैदा किया है। वह रक्षण भी सबका समान करता है। सबको समान मिट्टी में पहुँचाता है। लेकिन रक्षण के मामले में लोगों ने दखल देना शुरू किया, इसलिए रक्षण समान रूप से नहीं हो रहा है। यह दोष परमेश्वर का नहीं, मनुष्य का है। इसलिए मैं आप सबको समझाना चाहता हूँ कि आप गाँववाले सारे एक हो जायँ, **"समझ लें कि गाँव की सारी जमीन सबकी है।"**

बिगड़ी बुद्धि के लक्षण

मिले हुए दान का जिक्र करते हुए कहा : "आपके गाँव में आज छोटे-बड़े, सबने दान दिया है। इसका मतलब यह हुआ कि अब इस गाँव में प्रेम का राज्य प्रारम्भ हो गया है। इसीको तो सर्वोदय कहते हैं। साम्ययोग भी इसीका नाम है और समाजवाद का भी यही लक्षण है। शब्द अलग-अलग हैं, अर्थ एक ही .... 'सर्वोदय'! एक कहता है मैं राम का भक्त हूँ, दूसरा कहता है मैं कृष्ण का हूँ, तीसरा कहता है मैं अल्लाह का हूँ, लेकिन सही बात यह है कि जो राम है, वही कृष्ण है और वही अल्लाह। तो, जो झगड़े होते हैं, वे बिगड़ी बुद्धि के लक्षण हैं।"

बड़ा कौन ?

अन्त में सबको सेवा की दीक्षा देते हुए कहा : "आप सब लोग एक-दूसरे की सेवा में लग जाइयेगा। मजदूरों का कर्तव्य यह है कि मालिक को पूरा काम दें। मालिक का फर्ज है कि पहले मजदूरों को खिलायें, पीछे खुद खायें। इस देश में पुराने जमाने में यही तरीका था। जो यजमान होता था, वह अपने कर्मचारियों को, गायों को, बैलों को, सारांश सबको खिलाकर फिर खाता था। यही बड़े आदमियों का लक्षण है। वे माता-पिता की तरह सबकी फिक्र रखते हैं। लेकिन आजकल बड़ा वह है, जो दूसरों का शोषण करता है यानी मानो अपने बच्चों को ही खाता है। यह तो राक्षस का लक्षण है। बड़ों में उदारता होनी चाहिए, छोटों में नम्रता होनी चाहिए। [illegible] व में उदारता, प्रेम, नम्रता होगी, परमेश्वर की कृपा उस गाँव पर जरूर होगी।"

आज के दान की विशेषता यह थी कि अब तक की तरह वह केवल बड़े जमींदारों से प्राप्त नहीं हुआ था—बड़ों ने पहले ४० एकड़ दी। फिर विनोबाजी ने कहा : "केवल बड़ों से ही क्यों? कम जमीनवालों से भी लेना चाहिए।" उन्हें भी बुलाया। उन सबको भी भूदान का उद्देश्य समझाया। उनकी ओर से दान-पत्र और दान, दोनों ज्यादा मिले। साढ़े तिरपन एकड़ का दान मिला।

विनोबाजी ने कहा : "यह मसला ऐसा नहीं है कि इसमें केवल ज्यादा जमीनवाले ही हिस्सा लें। यह एक यज्ञ है। यज्ञ में हर किसीको देना चाहिए। इसलिए जिस-जिसके पास जमीन है, वे सब दें। कमवाले सुदामा के तंदुल की तरह थोड़ी दें। परंतु दें सब।" • • •

बढ़ते जुल्म और उनका इलाज : १६ :

ओटकापल्ली
३०-४-'५१

आगमनी के समय से लेकर तो संध्या तक लोगों की अपार भीड़ जुटी रही। जिस मकान में विनोबाजी को ठहराया गया था, उस मकान का मालिक पुलिस द्वारा कत्ल कर दिया गया था। संन्यास रेड्डी नामक एक जमादार के जुल्मों की दर्द-भरी कहानियाँ लोगों ने सुनायीं। उसने तीन स्त्रियों पर बलात्कार किया था। 'रंगारेड्डीगुड़म' के दो लोगों की हत्या हुई, तीन भाइयों को इस बुरी तरह से मार पड़ी कि पिता से सहा नहीं गया। पिता ने कुएँ में पड़कर जान दे दी। कई लोगों के घुटनों पर इतनी मार पड़ी कि शरीर में विकृति हो गयी। ये सारी शिकायतें विनोबाजी के सामने आयीं। हमारी लक्ष्मी बहन और मदालसा बहन दुःखियों को ला-लाकर विनोबाजी के सामने पेश करतीं, उनकी करुण कहानी सुनातीं। उस समय इन लोगों की मनःस्थिति भी बड़ी करुणा-भरी हो जाती, हृदय में मानो ज्वालाएँ भड़क उठतीं, और लक्ष्मी बहन तो, अपना एकमात्र सहारा पाकर भूला-भटका बालक माँ की गोद में जैसे फूट-फूटकर रोता है, वैसे बाबा के संमुख रो पड़तीं। उस दिन की दर्दभरी कहानियों के कारण सारा वातावरण बड़ा गंभीर बन गया था। कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनों के अत्याचारों से पीड़ित जनता को आज पहली बार मौका मिला था कि अपनी दर्दभरी कहानी सुनाने और सांत्वना और आश्वासन पाने के लिए इस फकीर के दरबार में उपस्थित होती।

आज यहाँ पर भी, छोटे-बड़े, सबसे मिलाकर २६२ एकड़ जमीन दान में मिली। अब तक के दान में यह सबसे ज्यादा था।

पुलिस और प्रजा !

अपने प्रार्थना-प्रवचन में विनोबाजी ने पहले कम्युनिस्टों के जुल्मों का जिक्र किया। फिर पुलिस का जिक्र करते हुए कहा कि "पुलिस को तो कम्युनिस्टों का बन्दोबस्त करने के लिए सरकार ने यहाँ भेजा था। परंतु उनकी यहाँ पर मैंने बहुत शिकायतें सुनीं। मैंने सुना है कि उन्होंने लोगों को पीटा है। स्त्रियों को भी तकलीफ दी है। (कुछ गंभीर स्वर में) इन लोगों की हाजिरी में मैं कहना चाहता हूँ कि पुलिस को इस तरह ज्यादतियाँ करने का कोई अधिकार नहीं है। पुलिस को यहाँ पर प्रजा की रक्षा के लिए भेजा गया है। अगर वे ही प्रजा को तकलीफ देने लगे, तो सरकार की इज्जत घट जायगी। सरकार की ओर से पुलिस को कोई ऐसी आज्ञा नहीं है कि वे लोगों को तकलीफ पहुँचायें; इसलिए अगर आप लोगों को भविष्य में पुलिस की तरफ से कोई तकलीफ हुई, तो आपको वह सब शांति से सहन करना चाहिए, और तकलीफ देनेवाले को सुनाना चाहिए कि तुम बुरा काम कर रहे हो, ऐसा करने का तुमको कोई अधिकार नहीं है। पुलिस अगर आप लोगों को तकलीफ देती है या पीटती है, तो रोना नहीं चाहिए, बल्कि नम्रतापूर्वक उसकी शिकायत ऊपर के अधिकारियों से करनी चाहिए। आप निर्भय बनेंगे, तो पुलिस तकलीफ नहीं देगी। और अगर किसी कर्मचारी से गलती हुई, तो उसे काम पर से हटा दिया जायगा।"

विनोबाजी ने लोगों को समझाया कि "गाँव की रक्षा गाँववालों को करनी चाहिए। और गाँव की हिफाजत के लिए जो पुलिस आयी है, उसे हटा देना चाहिए।" कम्युनिस्टों के बारे में कहा कि "वे गरीबों की मदद के नाम पर लोगों को कत्ल करते हैं। लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि ऐसे बुरे काम करनेवालों से गरीबों को आशा नहीं करनी चाहिए। अट्ठावन साल के प्रयत्नों के बाद स्वराज्य आया है। स्वराज्य का लाभ उठाना है, तो प्रजा में शान्ति चाहिए। स्वराज्य के बाद प्रजा में शान्ति नहीं रही, तो

सरकार की सारी ताकत प्रजा को शांत रखने ही में खर्च हो जायगी। जहाँ पुलिस के लिए करोड़ों रुपये खर्च होते हैं, वहाँ प्रजा की भलाई के लिए पैसा कहाँ से बचेगा? और अगर प्रजा में असंतोष रहा, तो सरकार पुलिस पर खर्चा नहीं करेगी, तो क्या करेगी? इसलिए अगर आप चाहते हैं कि यहाँ से पुलिस उठ जाय, तो आपका काम है कि आप यहाँ शान्ति रखें। पुलिस उठ जायगी, तो जो पैसा उस पर खर्च होता है, वह जनता की भलाई पर खर्च होगा।"

जमीन के साथ ग्रामोद्योग भी

जमीन के साथ ग्रामोद्योगों का और खासकर कताई का महत्त्व समझाते हुए उन्होंने कहा : "कम्युनिस्ट आपको यह बात नहीं समझाते। वे तो सिर्फ यही कहते हैं कि श्रीमानों को लूटो, बस काम हो जायगा। लेकिन श्रीमानों के पास जो कुछ चीजें हैं, वह मिल जाने पर भी आप सुखी नहीं होंगे। काम करने से ही आप लोग सुखी होंगे। जमीन पर आपको सालभर पूरा काम नहीं मिलता। आपके पास बहुत समय बच जाता है। उस समय में आपको उद्योग करना चाहिए। लेकिन आप कोई उद्योग करते नहीं और जरूरत की सारी चाजें बाहर से खरीदते हैं। जब तक आप चीजें बाहर से खरीदेंगे, तब तक आपके गाँव में लक्ष्मी नहीं रह सकती। आप सुखी नहीं होंगे। अगर आप लोग रोज सूत कातकर सालभर का कपड़ा घर में तैयार कर लेंगे, तो घर-घर में थोड़ी संपत्ति बढ़ेगी। कोई घर नहीं, जहाँ कपड़े की जरूरत नहीं—और कोई घर नहीं, जहाँ यह काम संभव नहीं।"

तीन परहेज—तीन लाभ

शाम हो चली थी, हवा भी बहुत तेज बहने लगी थी। तूफान का समा बन गया। विनोबाजी ने फिर तीनों बातें दुहरायीं : "शान्ति रक्खो। निर्भय बनो। ग्रामोद्योगों को अपनाओ। अगर आप इन तीन बातों को अपनायेंगे, तो आप देखेंगे कि कम्युनिस्ट यहाँ से खतम होंगे। पुलिस

यहाँ से चली जायगी और परमेश्वर की कृपा से आप सब लोग सुखी होंगे।"

सर्वोदय की परिभाषा क्यों नहीं ?

उस दिन अखबार में जयप्रकाशजी का एक बयान निकला था, जिसमें कहा गया था कि अगर कांग्रेसवाले सर्वोदय-योजना को स्वीकार करते हैं, तो वे अपनी पार्टी को विलीन करने को तैयार हैं। जयप्रकाश जी के बयान का जिक्र करते हुए विनोबाजी ने यात्री-दल के सभी सदस्यों को बुलाकर सर्वोदय-समाज के कार्यक्रम के बारे में विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा : "मैं देख रहा हूँ कि कांग्रेसवालों के सामने भी अन्त में सर्वोदय के सिवा कोई कार्यक्रम नहीं है। आज तो उनके सामने कोई कार्यक्रम ही नहीं है। समाजवादियों के सामने अपना एक चित्र है। कम्युनिस्टों के सामने भी उनका एक अपना नक्शा है। लेकिन कांग्रेसवालों के सामने चुनाव के सिवा और क्या है ? क्यों नहीं वे जयप्रकाशजी का आह्वान स्वीकारते।"

फिर उन्होंने गांधी और मार्क्स का फर्क समझाया : "गांधीवालों पर आक्षेप है कि उन्होंने गांधी-विचार की परिभाषा नहीं बनायी। लेकिन परिभाषा के कारण विचार के विकास को लगाम लग जाती है। विचार के अनिर्बन्ध विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसे पारिभाषिक मर्यादाओं से मुक्त रखा जाय। मार्क्स ने एक परिभाषा दी है, 'डिक्टेटरशिप ऑफ दी प्रोलेटेरियेट' की। हिन्दुओं ने भी वर्णाश्रम की एक परिभाषा बनायी है। नतीजा यह हुआ है कि क्या साम्यवादी, क्या हिन्दू, दोनों ही अपनी-अपनी परिभाषा की मर्यादा के बीच ही सोचते रहते हैं।"

संघटन का चित्र

फिर संघटन के बारे में कहा : "हम पर यह आक्षेप है कि हम कोई संघटन नहीं बनने देते; परंतु हमने तो सर्वोदय का शब्द दिया, उसका एक कार्यक्रम दिया, उसके साधन भी बतलाये, और सर्व-सेवा-संघ के रूप में एक संघटन भी दिया। संघटन नीचे से ऊपर जाना चाहिए।

ऊपर से नीचे विचार आता है, संघटन नहीं। चित्र ऊपर से नीचे बनता है। मकान नीचे से ऊपर खड़ा होता है। संघटन वही टिक सकता है, जो मकान की तरह पक्की बुनियाद पर हो।"

कार्यकर्ताओं का हविर्भाग !

भूदान-यज्ञ के सम्बन्ध में अपने यात्री-दल की जिम्मेवारी को समझाते हुए कहा कि "आजकल हम सबको जो जमीन दे रहे हैं, उसमें आप लोगों को भी अपना हिस्सा देना चाहिए। अगर आपके पास जमीनें हैं, तो जमीन का हिस्सा देना चाहिए। संपत्ति हो, तो संपत्ति का हिस्सा देना चाहिए। संपत्ति सिर्फ रुपयों-पैसों की नहीं होती। जिनके पास किताबें हैं वे किताबें दें, जिनके पास समय है वे समय-दान दें, श्रमशक्ति है तो श्रम-दान दें, बुद्धि है तो बुद्धि-दान दें। लेकिन ऐसा होना चाहिए कि हर-एक ने दिया है।"

वाहन की मर्यादा

पदयात्रा के प्रभावकारी परिणामों को समझाते हुए कहा कि "आप लोगों को ध्यान रखना चाहिए कि बिना पैदल चले लोगों से संपर्क नहीं आता। मोटर से चलियेगा, तो कार्यक्रम वैसा ही बनेगा जैसा मोटर इजाजत देगी। जहाँ मोटर जाने से इनकार करेगी, वहाँ आप नहीं जा पाइयेगा। लेकिन पाँव तो सब जगह जा सकते हैं। कहीं भी जाने से इनकार नहीं करते।"

करीब ४५ मिनट तक विनोबाजी कार्यकर्ताओं के सम्मुख अपने हृदय के उद्गार सुनाते रहे।

● ● ●

कम्युनिस्टों का आवाहन : १७ :

चलकूर्ती
१-५-'५१

पुनः दर्दभरी कहानियाँ

यहाँ भी कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनों के जुल्मों की दर्दभरी कहानियाँ सुनीं। यह मालूम हुआ कि कम्युनिस्टों द्वारा १० आदमी मार डाले गये हैं। पुलिस-कार्रवाई के बाद भी रेंडी की तेरह गाड़ियाँ जला दी गयी थीं। पुलिस हाजिर होते हुए भी कुछ नहीं कर सकी। ४० मकान जला दिये गये थे। एक पुरुष और तीन औरतों को भालों से मार डाला गया था। बाँस और बडवा भी बहुत सारा जला दिया गया था। कुल नुकसान करीब ६० हजार रुपयों का बताया गया। नारायण स्वामी नाम के पुलिस-अफसर ने इर्द-गिर्द के गाँवों से रिश्वत के रूप में बहुत रुपया लिया, ऐसी शिकायत भी सुनी। विनोबाजी का हृदय बहुत ही दुःखी हुआ। इस कठोरता के वातावरण में भी करुणा का दर्शन हुए बिना न रहा। एक भाई, जो बहुत दूर के गाँव के रहनेवाले थे, और सहज इधर से गुजर रहे थे, जब सुना कि बेजमीनों को जमीन दिलानेवाला कोई फकीर आया है, तो खुद आकर अत्यंत नम्रतापूर्वक भक्ति-भाव से भूदान दे गये।

प्रार्थना-प्रवचन में विनोबाजी ने सर्वप्रथम तो कम्युनिस्टों के और पुलिस के जुल्मों का जिक्र किया। उन्होंने कहा : "मैंने यहाँ आते ही कम्यु-निस्टों के जुल्मों की कहानी सुनी। यह बहुत ही दुःखकारक घटना है। लेकिन दुःख करने से कोई लाभ नहीं होगा। हमें इसका इलाज करना चाहिए। कम्युनिस्ट लोग यह सब काम करते हैं, तो उनको भी काफी तकलीफ उठानी पड़ती है। वे लोग जंगलों में रहते हैं। कष्टमय और त्यागमय जीवन

बिताते हैं। लेकिन उनका रास्ता बिलकुल गलत है। आज हमारे देश की स्थिति ऐसी है कि उसमें हर आदमी की शक्तियों की आवश्यकता है। ऐसी हालत में मैं कम्युनिस्ट भाइयों से विनती करता हूँ कि आप लोग अपना तरीका छोड़ दीजिये और जनता की सेवा में लग जाइये। मैं नहीं जानता कि मेरी आवाज उनके कानों तक पहुँचती होगी या नहीं। लेकिन मैं विश्वास करता हूँ कि किसी तरह मेरी बात उनके कानों तक जरूर पहुँच जायगी। मैं इस इलाके में शांति कायम करने के लिए घूम रहा हूँ। इसलिए उन लोगों से मेरी प्रार्थना है कि हमारे इस देश की हालत पर सोचें। स्वराज्य के बावजूद हमारे देश की हालत बहुत खराब है। खाने के लिए आवश्यक अनाज भी यहाँ पैदा नहीं हो रहा है। विदेशों से अनाज मँगाने की जरूरत पड़ती है। बिहार जैसे बड़े प्रदेश में अन्नाभाव से लोगों के मरने की खबर है। इतने बड़े देश की यह हालत हमारे लिए अत्यंत शरम की बात है।"

परस्पर ठगाई

सुजलाम्, सुफलाम् भारत-भूमि के प्राकृतिक वैभव का जिक्र करते हुए विनोबाजी ने पूछा कि "ऐसे महान् देश में अनाज क्यों कम पैदा होता है? इसके कारण की हमें खोज करनी चाहिए। कारण यही है कि बहुत-से लोग बड़ी-बड़ी जमीनें अपने पास रखते हैं, किंतु उसमें अच्छी फसलें पैदा नहीं कर पाते। मजदूरों को मजदूरी कम मिलती है, इसलिए उन्हें काम में दिलचस्पी नहीं होती। जमीन में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं, इसलिए दिनभर काम करके भी वे चार घंटे से अधिक काम नहीं कर पाते। मालिक और मजदूर में परस्पर ठगाई चल रही है। देश का नुकसान हो रहा है। जमीन न तो श्रीमानों की है, न गरीबों की, वह है सारे देश की। फसल कम होती है, तो नुकसान देश का होता है। इसका उपाय यही है, जो आजकल मैं गाँव-गाँव जाकर बता रहा हूँ। यहाँ भी हमें १०० एकड़ जमीन मिली। एक भाई, जो इस गाँव के नहीं, दूसरे

गाँव से आये हैं, उन्होंने जब सुना कि हम भूमिहीनों को भूमि देते हैं, तो वे भी अपने पास की जमीन देने के लिए आये और बहुत प्रेम से जमीन दे गये। इस तरह बड़े लोग, मध्यम श्रेणी के लोग और गरीब लोग, सबका सहकार मिलेगा, तो जमीन का ठीक बँटवारा होगा और उसकी पैदावार भी बढ़ेगी।

कम्युनिस्ट, आओ

"लेकिन जहाँ एक ओर मैं पैदावार बढ़ाने की बात करता हूँ, वहाँ कम्युनिस्ट लोग तो सारे गाँव का अनाज ही जला देने का काम कर रहे हैं। इससे तो लोगों की तकलीफ बढ़ती है। आज देश की जो स्थिति है, उसमें हमें अमीर-गरीब, सबके सहयोग की आवश्यकता है। उसके बजाय अगर गाँव-गाँव में गरीब और अमीर का झगड़ा शुरू हो जाय, तो इससे भारत के देहातों में आग लग जायगी। गोकुल में आग लगी, तो भगवान् कृष्ण उसे पी गये। आज भी गाँवों में गरीबी और भूख की आग है, हमें उसे बुझाना है। उसके बदले अगर लोग और आग ही लगाना चाहेंगे, या आग लगाने का कार्यक्रम जारी रखना चाहेंगे, और दुश्मनी और वैरभाव बढ़ाने का काम करेंगे, तो दुनिया का भला नहीं होगा। भगवान् कृष्ण ने गोकुल के लोगों में, छोटे-बड़े सबमें, गोकुल हमारा, हम सब गोकुल के, ऐसी भावना भर दी थी। हमें यही भावना गाँव-गाँव में भरनी है। गाँव के गरीब-अमीर, सबके बीच प्रेमभाव बढ़ाना है। मैं इस काम के लिए अपने कम्युनिस्ट मित्रों का आवाहन करता हूँ कि 'आओ और यह काम करो। छोड़ो हिंसा का तरीका। उससे आपको भी तकलीफ हो रही है, और लोगों को भी तकलीफ हो रही है'।"

यम के दूत?

पुलिस के जुल्मों के बारे में कल की तरह आज भी दुहराया। उन्होंने पुराण की कहावत की याद दिलायी कि "यम राजा बड़े देव हैं, लेकिन उनके दूत राक्षस के समान होते हैं। सरकार पुलिस को जनता की

मदद के लिए भेजती है और पुलिस जनता को लूटती है। 'क्यों? कम्युनिस्टों को मदद करोगे?' बस, लोगों से ऐसा कहते हैं और पीटते हैं। मैं इसको भी माफ कर दूँ, लेकिन पीटते भी हैं और पैसा भी लेते हैं। आग बुझाने के बजाय उसमें केरोसिन उँडेलते हैं। यह तो सरकार का भी विद्रोह है और देश का भी विद्रोह है।"

पुलिस की व्याख्या

अन्त में कहा : "मैं पुलिसवालों को आगाह करना चाहता हूँ कि भाइयो, इस तरह लोगों को परेशान करना आपका काम नहीं है। आपको प्रजा के साथ प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। अंग्रेजी में पुलिस शब्द का अर्थ होता है—सेवा करनेवाला, रक्षण करनेवाला। आपको समझना चाहिए कि आप स्वराज्य के सिपाही हैं। स्वराज्य के सिपाही जनता के नौकर होते हैं, मालिक नहीं। पुलिस सभी बुरे होते हैं, ऐसा मेरा कहना नहीं है। लेकिन इस इलाके में कई जगह पुलिस के हाथ से गलतियाँ हुई हैं, ऐसा मैंने सुना है। कम्युनिस्ट गरीबों की सेवा के लिए आये और लूटने लगे। पुलिस प्रजा की रक्षा के लिए आयी और वह भी लूटने लगी। तो इस तरह कैसे काम बनेगा? शांति कैसे कायम होगी?

शांति का उपाय

"उसका उपाय यही है, जो मैंने आजकल शुरू किया है। प्रजा के भीतर जाइये, उनका प्रेमभाव बढ़ाइये, उनको हिम्मत दिलाइये, निर्भय बनाइये, भू-दान दिलवाइये और इस तरह अमीरों और गरीबों में मेल कायम करवाइये। दोनों को दौलत के निर्माण में जुटा दीजिये। हमें खेती का सुधार करना है, गायों का सुधार करना है, दूध बढ़ाना है, अनाज बढ़ाना है, यह सब कौन करेगा? हम सबको यह करना है। कांग्रेसवालों को, सोशलिस्टों को, कम्युनिस्टों को भी। तभी स्वराज्य के बाद यह देश सुखी हो सकेगा। अन्यथा एक-दूसरे के साथ लड़ाई शुरू होगी। स्वराज्य

के पहले हमें सुविधा थी कि हम अपनी जिम्मेवारी अंग्रेजों पर डाल सकते थे, अब वैसी सहूलियत नहीं है। अंग्रेजों की हुकूमत अब खतम हो चुकी है। अब अगर दुःख-दारिद्र्य रहता है, तो उसकी जिम्मेवारी हमारी है।"

सबसे दान

पेदामुंगल में अधिक जमीन रखनेवाले और कम जमीन रखनेवाले—दोनों से जमीन माँगने का जो सिलसिला विनोबाजी ने शुरू किया, वह कल और आज यहाँ भी जारी रहा। पहले बड़े काश्तकारों ने कुछ जमीन दी, फिर औसतवालों को बुलाया। शुरू में वे लोग विनोबाजी से मिलने में सकुचाये। किंतु दो-तीन बार बुलाने के बाद आ गये। विनोबाजी ने उनके साथ बातचीत की, तो उनका संकोच दूर हुआ और उन लोगों ने दिल खोलकर जमीन दी। कुल सौ एकड़ जमीन मिली।

प्रधानमंत्री की आज्ञा

अक्सर कहीं रेडियो सुनने का न अवसर रहता है, न सुविधा रहती है। परन्तु यहाँ एक भाई के पास बैटरी का रेडियो था। शाम को पंडित जवाहरलालजी का भाषण था। भाषण में संयोग से वे ही भाव थे, जो विनोबा के आज के प्रार्थना-प्रवचन में हम लोगों ने सुने थे। देश की परिस्थिति का चित्रण था और देशवासियों का आवाहन था कि पैदावार बढ़ाने में मदद करें। हफ्ते में एक भोजन छोड़ने की अपील थी, क्योंकि देश में चावल की कमी थी। "देश के प्रधानमंत्री का सुझाव उसकी आज्ञा ही होती है, जिस पर हर नागरिक को अमल करना चाहिए।" विनोबा अपने को इसमें अपवाद कैसे मान सकते थे ?

अलसर की बीमारी की वजह से विनोबाजी अन्न में चावल के सिवा दूसरा कुछ ले भी नहीं पाते थे। दूध, दही और मुलायम चावल या चावल की कांजी। प्रधानमंत्री का भाषण सुना, तो उस रोज से चावल छोड़ दिया।

● ● ●

तीन यक्ष प्रश्न : १८ :

राजावरम्
२-५-'५१

प्रेम की जीत

राजावरम् जाते हुए बीच के एक गाँव में एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। जब गाँव एक मील दूर रहा, तो पहले गाँव के छोटे-छोटे बालकों ने जयजयकार द्वारा विनोबाजी का स्वागत किया। फिर उन्होंने भजन गाना शुरू किया और विनोबाजी के पीछे-पीछे साथ हो गये। थोड़ी दूर चलने पर बड़े लड़के मिले और फिर गाँव के प्रौढ़ पुरुष। थोड़ा आगे चलने पर गाँव के समीप, गाँव के स्त्री-पुरुष, सब एक कतार में अत्यंत शान्त खड़े प्रतीक्षा करते दिखाई दिये। गाँव बायें हाथ पर था। राजावरम् का रास्ता बाहर ही बाहर दायीं ओर से गुजरता था। मोड़ पर पहले लोगों ने गाँव का रास्ता दिखाते हुए कहा : "महाराज, भीतर से।" छह मील चल चुके थे और करीब उतना ही चलना था। हम लोगों ने क्षमा माँगी और आगे बढ़ना चाहा। बहनों ने हाथ जोड़कर अपनी प्रार्थना दुहरायी। हमने फिर क्षमा माँगी और कुछ आगे बढ़ भी गये। अब बहनों ने घेर लिया। हमने रास्ता माँगना चाहा, लेकिन बात की बात में एक, दो, तीन, चार, अनेक बहनों ने पू० विनोबाजी के और उनके सहयात्रियों के पाँव ऐसे पक्के पकड़ लिये कि छुड़ाना असम्भव हो गया। **"तुका म्हणे** कळ, **पाय धरता न चाले** बळ।" पाँव पकड़ लेने पर भगवान् का भी बल भक्त के सामने नहीं चलता। विनोबा, जो रास्ते पर कभी कहीं रुकते नहीं, सहसा हँस पड़े। इस बीच मदालसा बहन ने उन लोगों की हिमायत और वकालत

भी काफी कर ली। बहनों की जीत हुई। विनोबा के मुख से निकला—"चलो"—और वे गाँव की ओर मुड़े।

सब दुःखों पर एक ही इलाज

गाँव का कोना-कोना साफ-सुथरा, आँगन लिपा-पुता, चौक पूरे हुए, जगह-जगह द्वार! गाँववालों की सूझ-बूझ, योजना-शक्ति, सब विस्मित कर देनेवाली थी। उनको कैसा आत्मविश्वास था कि विनोबा को गाँव में लायँगे ही। गाँव के भीतर, एक अच्छे स्थान पर सभा का आयोजन कर रखा था। व्यासपीठ आदि खूब सजा-सजाया तैयार था। विनोबाजी ने आसन ग्रहण किया, तो आरती आदि की रस्मों के बाद, थोड़ी देर बिलकुल शांति छा गयी। इस बाह्य शांति और प्रेम-प्रवाह के भीतर कितनी वेदना पड़ी थी, इसकी कल्पना उस निवेदन से मिलती है, जो गाँववालों ने विनोबाजी की सेवा में पेश किया। विनोबाजी को इस गाँव के भीतर आने के कारण जो कुछ कष्ट हुआ और उनका जो समय बीता, उसके लिए क्षमा माँगते हुए लोगों ने नम्रतापूर्वक कहा : "नारायण स्वामी नामक जमादार ने सामूहिक जुर्माने के नाम से सारे गाँव से जबरन् पचास हजार रुपया वसूल कर लिया है और उसकी शिकायतों की अब तक कोई सुनवाई नहीं हो पायी है।"

विनोबाजी ने आश्चर्य से पूछा : "क्या यह वही नारायण स्वामी है, जिसकी शिकायत कल भी सुनी थी?"

कार्यकर्ताओं ने "हाँ" में उत्तर दिया। विनोबा के दुःख का पार नहीं रहा। स्वराज्य की पुलिस का यह कैसा दर्दनाक रवैया!

विष का घूँट पीकर उन्होंने लोगों को सान्त्वना दी। "अच्छा किया, आप लोग मुझे यहाँ ले आये और अपना दुःख बताया। सब दुःखों पर एक ही इलाज है—निर्भय बनो। भाई-भाई की तरह रहो। आज सब कैसे एक परिवार की तरह जुट गये हो? हमेशा ऐसा नहीं रह सकते? इसके लिए जिन्हें भूमि नहीं उन्हें, जिनके पास भूमि है, वे दें। मैं आजकल यही

संदेश सुनाता जा रहा हूँ।" इतना कहकर, उनकी अर्जी लेकर विनोबा राजावरम् की ओर तेजी से बढ़े।

राजावरम् एक मील पर दिखाई दे रहा था। दायीं ओर पहाड़ियाँ अर्थात् बिना वृक्षों की—बायीं ओर एक बड़ा सुन्दर तालाब। थोड़ी दूर से **"रामं भजे, रघुरामं भजे"** का भावनापूर्ण भजन सुनाई देने लगा। बात की बात में सैकड़ों लोगों का दर्शन हुआ और एक बड़ा जुलूस बन गया, जिसके साथ गाँव की पाठशाला में हम लोग पहुँचे, जहाँ आज का डेरा था।

मालूम हुआ कि गाँव के सभी धनी मालगुजार लोग भय के कारण ग्राम छोड़कर मिरियालगुड़ा चले गये हैं—वहीं रहते हैं। छोटे-छोटे भूमि-वानों को बुलाकर उनसे बात की। भू-दान यज्ञ में इन अल्प भूमिवान् भाइयों ने भी पचीस एकड़ की आहुति प्रदान की।

प्रार्थना-सभा में विनोबाजी ने कम जमीनवाले भाइयों द्वारा मिले दान की सराहना की और आशा प्रकट की कि मिरियालगुड़ा पहुँचने पर इस गाँव के दूसरे लोगों से भी जो अधिक भूमि रखते हैं, भू-दान प्राप्त करेंगे।

भू-दान की भावना ने जनता के हृदयों में काम करना शुरू कर दिया था। जिस-जिसके पास है, उसे देना चाहिए—यह देने की हवा बनती जा रही थी। रामराज्य की अरुणिमा दिखाई दे रही थी। विनोबाजी ने आज शायद इसीलिए प्रार्थना-प्रवचन में रामराज्य का सीधा-सरल अर्थ समझा दिया : "रामराज्य क्या है ? वह कैसे प्रकट होगा ? आप लोगों को कठिन लगता है, किन्तु कठिन नहीं है। हम सबके भीतर घट-घट में जो राम रम रहा है, उसे बाहर के जीवन में प्रकट करना, यही रामराज्य है। यह कैसे हो सकता है ? सबसे पहली बात निर्भय बनने से और फिर प्रेम-मय बनने से अर्थात् राममय बनने से।

"निर्भय बनने के लिए, प्रेममय बनने के लिए—राममय बनने के लिए,



शांति सेना के सिपाही को अपने बीच पाकर तेलंगाना की जनता में उत्साह की लहर दौड़ गयी।



मुझे केवल जमीन नहीं चाहिए, आपकी जमीन भी इस काम के लिए चाहिए।

राम का ही राज्य चारों ओर छा जाय, इसके लिए, भय-निवारण और मोह-निवारण, दोनों जरूरी है। मोह संपत्ति का और जमीन-जायदाद का।" विनोबा ने समझाया कि "जब इन छोटे-छोटे लोगों ने भी मोह छोड़ा और जमीन दी, तो बड़े लोग क्यों नहीं देंगे ? वे भी देंगे। और बड़े लोग भी जब देने लगेंगे, तो भय का कारण ही नहीं रहेगा और दोनों के इस प्रेममय व्यवहार से गाँव भी प्रेममय बन जायगा। रामराज्य कायम होगा।"

एक ओर कम्युनिस्टों की कार्रवाइयों के फलस्वरूप बड़े लोगों का ग्राम-त्याग, दूसरी ओर पुलिस का त्रास, और इस कठिन परिस्थिति में भी भू-दान के लिए छोटे-छोटे लोगों की यह हिम्मत-भरी पहल ! सुख-दुःख के भावों से परे रहते हुए भी विनोबा के चित्त में ये घटनाएँ जरूर असर लाती हैं।

आज रास्ते में केशवरावजी ने महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछ लिये। केशवरावजी नलगुंडा जिला के ही हैं—वकालत करते थे–कुछ वर्षों से कांग्रेस के काम में सतत लग जाने के कारण वकालत छोड़ रखी है। पोतना का भागवत खूब कंठ है। जब भी मौका मिलता है, सारे रास्ते पोतना का भागवत सुनाते रहते हैं। विनोबा भी प्रेमपूर्वक और सराह-सराहकर सुनते रहते हैं। खासकर सत्याग्रही प्रह्लाद का आख्यान, जो श्रोता और गायक, दोनों को ही बहुत प्रिय है।

"कुछ निराशा के भावों से केशवरावजी ने पूछा : विनोबाजी, दुनिया में अब तक अनेक साधु-संत हो गये, परंतु दुनिया बदली-सी नजर नहीं आती।"

"ऐसा आपको क्यों लगता है ?" विनोबा ने आश्चर्य से पूछा। "फिर आप ऐसा तो कहते नहीं कि इतने राजा लोग आये परंतु दुनिया बदली नहीं। दुनिया में परिवर्तन हो चाहे न हो, राजा लोग तो आते रहने चाहिए। परंतु साधु-संत आये, तो एकदम परिवर्तन दीख पड़ना

चाहिए। लोगों की यह अपेक्षा बेठीक नहीं है। ठीक ही है। परंतु वस्तुस्थिति यह है कि जो परिवर्तन होता है; वह हमें दीखता नहीं। दुनिया कितनी बदल गयी है। द्रौपदी पाँच पति रखकर भी सती कहला सकती थी। आज वह बात नहीं रही।"

द्रौपदी की मिसाल से केशवरावजी चुप तो हो गये। परंतु उनका समाधान नहीं हुआ। उन्होंने दूसरे तरीके से फिर वैसा ही प्रश्न पूछा :

केशवराव : "लेकिन क्या यह यकायक संभव है कि मनुष्य अपने पारिवारिक क्षेत्र से बाहर जाकर सारे समाज के लिए ही सब कुछ सोचने और करने लगे ? यह कब होगा विनोबाजी ?"

विनोबा : "होगा तब, जब किया जायगा। संभव जरूर है। मनुष्य अपने बाल-बच्चों को अपने खुद की अपेक्षा अधिक प्यार करता है या नहीं ? उनके लिए जी तोड़कर मेहनत करता है या नहीं ? जिस न्याय से वह परिवारवालों के लिए यह परिश्रम करता है, उसी न्याय से वह समाज के लिए और संसार के लिए भी कर सकता है। जरूरत है उचित शिक्षण की, योग्य संस्कारों की। शिक्षण देने में हम हारते हैं—फिर किसी भी तरह कुछ भी कर डालने की हमें जल्दी होती है। उससे कुछ तो होता है—पर वह नहीं होगा, जो हम चाहते हैं। हम जो चाहते हैं वह तो तभी होगा, जब हम पूरी तरह अपने विचारों के अनुसार चलें। रास्ता वही शार्टेस्ट है और शुअरेस्ट भी।"

इस बार तसल्ली मिली। फिर भी एक और सवाल, जो प्रायः सभी कार्यकर्ताओं के दिल में—और खासकर राजनैतिक कार्यकर्ताओं के दिल में उठता रहता है, केशवरावजी ने पूछ लिया—शायद इसलिए भी कि अब शीघ्र ही चुनाव भी आनेवाले हैं। तो सफाई हो जाना ठीक है।

प्रश्न : "हम जनता का व्यापक हित सरकार द्वारा कर सकते हैं या सरकार से बाहर रहकर ?"

उत्तर : "सरकार द्वारा जनता का व्यापक हित हो सकता है—पर

वह होगा मर्यादित। याने कम-से-कम। सरकार तो औसत भलाई ही कर सकती है। वह न तो बहुत बुराई कर सकती है, और न बहुत भलाई। आम जनता जिन्हें अपना प्रतिनिधि चुन देती है, वे लोग अच्छे हैं—परंतु कर उतना ही सकते हैं, जितना आम जनता हजम कर सकती है। सौ एकड़ से अधिक भूमि पास न रख सकने का कानून सरकार कर सकती है। परंतु केवल आवश्यकता से ज्यादा न रखकर बाकी सबकी सब भूमि दान कर देने का आदर्श तो व्यक्ति के जीवन में ही प्रकट हो सकता है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि बाहर रहकर सरकार और जनता, दोनों का मार्गदर्शन किया जाय। संतों ने ऐसा ही किया और उसीसे समाज आगे बढ़ पाया है।"

● ● ●

दोनों का डर : १६ :

बिरलापल्ली
३-५-'५१

राजावरम् से रवाना होते समय ग्रामवासी लोग भजन गाते हुए काफी दूर तक निकल आये। एक मील पर अहिल्या नदी थी। लोग चाहते थे कि विनोबाजी को नदी पार कराके ही लौटें। परन्तु बीच में जब एक नाला आया, तो बाबा ने वहीं पर सबको रोक लिया और "अन्दरीकी नमस्कारम्" (सबको नमस्कार) कहकर ग्रामवासी जनों को लौटने का इशारा किया। लोग लौटने की मनःस्थिति में नहीं थे, केवल आज्ञा-पालन की भावना से रुक गये। न जाने कितनी देर तक विनोबाजी की दिशा में देखते रहे। आँखें विनोबाजी की ओर, मन भी विनोबाजी की ओर, मुख से "रामम् भजे" का मधुर गीत।

अहिल्याजी को पार करके देवलापल्ली होते हुए बिरलापल्ली पहुँचे। देवलापल्ली में भीषण उदासीनता पायी। ऐसी कि अब तक कहीं नहीं थी। बाद में मालूम हुआ कि हैजे के प्रकोप से लोग बहुत दुखी और परेशान हैं। इर्द-गिर्द नजदीक कोई दवाई का प्रबंध नहीं। घर-घर में मृत्यु की घटनाएँ घट रही हैं। मनःस्थिति ऐसी नहीं थी कि संत की अगवानी में आते और पत्र-पुष्प से भेट करते। संकोचवश घर से बाहर भी नहीं निकले।

बिरलापल्ली में भी पुलिस मौजूद थी, कम्युनिस्टों द्वारा डेढ़ साल पहले तीन हत्याएँ होने की शिकायत थी। रात को दस बजे के बाद लोगों का बाहर निकलना पुलिस और कम्युनिस्ट, दोनों के कारण असम्भव हो गया था। लोगों के दिलों पर दोनों का खूब डर छाया हुआ था। जमीन भी आज कुल पाँच ही एकड़ मिली। लोगों में गरीबी भी बहुत पायी गयी। जमीन यद्यपि कम मिली, भयभीत मनों को शांति और तसल्ली जरूर मिली। ● ● ●

नदी से बढ़कर कौन गुरु ? : २० :

वाड़ेपल्ली
३ तथा ४-५-'५१

पहाड़ी रास्ते से गुजरकर हिरन तथा अन्य वनचरों को देखते हुए सबेरे आठ बजे कृष्णा नदी के किनारेवाले इस गाँव में जब विनोबाजी और उनके सहयात्री पहुँचे, तो सहसा सबको परंधाम-आश्रम का स्मरण हुए बिना न रहा।

निवास पर पहुँचने पर वेदपाठी पंडित लोगों ने वेद-मंत्रों से पुष्पांजलि अर्पण की। यात्रा में यह तीसरा प्रसंग था, जब इस तरह वेदपठन-युक्त स्वागत-समारोह हुआ था। विनोबाजी ने बाद में बताया कि स्वर, संगीत और अर्थ, तीनों दृष्टि से पंडितों का ज्ञान बहुत ही कम था। अब तक के सारे प्रसंगों में सरवेलवाला वेदपाठ सर्वश्रेष्ठ था, क्योंकि वहाँ विनयाश्रम के सीताराम शास्त्री ने स्वयं वेद-मंत्रों का गान किया था।

स्नानादि के पश्चात् विनोबाजी कृष्णामाई के दर्शन के लिए गये। जल से मस्तक धोया, वस्त्र भी भिगोया, लौट आये। ग्यारह बजे ग्रामवासी मिलने आये। यही पहला गाँव था कि दुःख-दर्द की कोई विशेष कहानी सुनने का मौका नहीं आया। १,६०० की आबादी में करीब सौ लोग खादीवाले भी थे। हरएक को थोड़ी-थोड़ी जमीन है, किसीको २ एकड़, तो किसीको २० एकड़। अधिक जमीनवाले लोग बहुत कम हैं। करीब सौ चरखे चलते हैं। मजदूरी अनाज में प्रतिदिन चार सेर दी जाती है। यद्यपि कम्युनिस्टों द्वारा कोई कष्ट नहीं पहुँचा है, फिर भी पुलिस मौजूद है। लोगों को न विशेष दुःख है, न विशेष ज्ञान। न उनकी सेवा के लिए यहाँ कोई कार्यकर्ता कभी आये हैं।

कृष्णा के उस पार गुण्टूर जिला है। आवागमन के लिए नाव चलती रहती है। उधर से अनेक लोग विनोबाजी से मिलने आये थे।

कृष्णामाई

आज के प्रार्थना-प्रवचन में शुरू में विनोबाजी ने इस गाँव की समाधानकारक हालत पर संतोष प्रकट किया। फिर कृष्णामाई का दृष्टान्त देते हुए कहा : "यह कृष्णा तो परमेश्वर का रूप है, क्योंकि वह हमें नित्य शिक्षण देती है। उसके अखंड प्रवाह में अखंड कर्मयोग का संकेत भरा है। कृष्णामाई के हृदय में तनिक भी संकोच नहीं है। महाराष्ट्र में जन्म लेकर उसने आन्ध्र देश को भी समान प्रेम दिया है। दोनों जगह के लोगों को समान लाभ पहुँचाया है। उसके मत में भेदभाव नहीं है। गरीब-अमीर, सबको समान रूप से पानी पिलाती है। हरिजन, परिजन, गाय, शेर, यह भेद उसके पास नहीं है। उसकी उदारता का पार नहीं है। उसका एक ही उद्देश्य है—सागर में विलीन होना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह अखंड बहती है और रास्ते में सबका कल्याण करती जाती है।"

इतनी प्रस्तावना के बाद विनोबाजी ने मार्मिक प्रश्न पूछ लिया : "क्या ऐसी नदी से बढ़कर भी कोई गुरु हो सकता है ? मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसे महान् गुरु के होते हुए भी लोग गुरु की खोज में भटकते रहते हैं।"

गुलामी का प्रबल संस्कार

दोपहर की बातचीत में विनोबाजी ने यह इच्छा प्रकट की थी कि जब गाँव में कोई अशांति नहीं है, तो पुलिस की आवश्यकता नहीं रहनी चाहिए। इसलिए उन्होंने पुलिस को रवाना करने की सलाह दी थी। परंतु लोगों ने चाहा कि पुलिस रहे। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपना विचार जाहिर करते हुए कहा : "मुझे यह सुनकर बहुत दुःख हुआ कि आप लोग भी पुलिस चाहते हैं। कहते हैं पुलिस से हमारी रक्षा होती है। आपकी

बात सुनकर ऐसे आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि भारतवर्ष की गुलामी को मैं जानता हूँ। सैकड़ों वर्षों तक दूसरे लोगों ने हमारी रक्षा की, कभी हमारे देश के राजाओं ने, कभी बाहर से आये हुए लोगों ने। लेकिन हमारा समय गुलामी में बीता। मुझे खुशी होगी, यदि हमारे लोग इस स्वतंत्र भारत में अपनी मानसिक गुलामी को छोड़ सकें।"

यहाँ जो पुलिस रखी गयी थी, उनसे भी विनोबाजी की बातें हुईं। पुलिस सज्जन और भावनावान् प्रतीत हुई। गाँवों में उन्हें दूध आदि मिलने में कठिनाई होती थी। विनोबाजी ने लोगों को समझाया कि उनके बस की सहायता वे पुलिस को जरूर करें।

गीता-संवाद

कृष्णामाई के किनारे आज विनोबाजी ने कविवर सियारामशरणजी के गीता-संवाद की प्रस्तावना लिख दी। कविवर ने अनुवाद तो बहुत पहले भिजवाया था। विनोबा ने अनुवाद की दृष्टि से कुछ सुझाव दिये थे, तो श्री किशोरलाल भाई के साथ बैठकर उन्होंने सारा अनुवाद विनोबा की दृष्टि से दोहरा लिया था। यह अनुवाद सुधारा हुआ और दूसरी बार आया था। विनोबा ने आज समय निकालकर उसे देख लिया और तुरंत प्रस्तावना भी लिखा दी, जिसमें कविवर के मनोयोग की प्रशंसा करते हुए लिखा : "सियारामशरणजी जैसे भक्त-जन किसी तरह का दावा किये बिना केवल चित्त-शुद्धि के हेतु ऐसे प्रयत्न किया करते हैं। और उस प्रयत्न से उसी तरह का उपयोग अगर दूसरे चंद भाइयों को हुआ, तो अपनी अपेक्षा से बहुत अधिक हुआ, ऐसा मानते हैं।"

× × ×

प्रवचन के बाद शाम को विनोबाजी संगम के तथा मंदिर के दर्शन करने गये। उनके पहुँचने पर विधिवत् पूजन के बाद भावपूर्ण वातावरण में भगवान् की आरती की गयी। चारों ओर जगमगाती दीपशिखाएँ, मंत्रोच्चार, पुष्पांजलि, सारा समारोह बड़ा प्रेरक था। थोड़ी देर अपने को

भूल सके, ऐसा वातावरण सबने अनुभव किया। विनोबा तो आरती में इतने तन्मय हो गये कि हाथ से ताल देने लगे। मंदिर में पुजारी पूजा और आरती में मग्न था। मानव-मंदिर का पुजारी अपनी विश्वभावना में तल्लीन था। मंदिर में भगवान् की मूर्ति विराजमान थी। किंतु इधर हृदय-मंदिर में तो आत्माराम नित ही रममाण थे। इसलिए ज्यों ही आरती समाप्त हुई, विनोबा की आरती शुरू हुई। गगन का थाल था, रवि-चंद्र दीपक बने, तारिका-मंडल ने ज्योति जगायी, मलयानल का धूप जला और पवन चँवर ढालने लगा। नानक की पावन वाणी में आरती गूँज उठी। अनहद नाद बजने लगा। अमूर्त की सहस्र मूर्तियाँ और अनयना के सहस्र नयन। उस भाव-आरती में विनोबा तल्लीन हो गये। लोगों के लिए वामन का यह रूप और भी प्रिय हो गया। भक्त विनोबा अनंत में लीन थे। इर्द-गिर्द जनों का मानस उस परम भक्त के चरणों में लीन था। ● ● ●

कम्युनिस्ट होना गुनाह नहीं है : २१ :

पालखेड
५-५-'५१

वाड़ेपल्ली से पालखेड आते रास्ते में डेढ़ मील पर ही मूसा नदी को पार करना था। यह डेढ़ मील का रास्ता अत्यंत कठिन, एक ऊँची पहाड़ी से गुजरता था। पहाड़ी, जो केवल कंकरीली और कंकर भी अत्यधिक नोकीले। रास्तेभर कसरत से बिखरे हुए।

काननु कठिन भयंकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी ॥
कुस कंटक मग काँकर नाना। चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना ॥

और फिर ऐसे बिना पदत्राण के चलनेवाले विश्वात्मा को निहारकर ये पंक्तियाँ भी याद आना स्वाभाविक था :

चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कंदर खोह नदीं नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥

यह सब था, 'भालु बाघ बृक केहरि नागा' भी थे, परंतु शांति-सेना के धीर-गम्भीर सैनिक के लिए असुविधाएँ भी सुविधाएँ थीं। और उसका कदम बढ़ता ही चला जा रहा था।

रास्ता किसी भी प्रकार के वाहन के लिए अनुकूल न था। अलसर के रोगी के लिए दो-दो घंटों से दही की खुराक आवश्यक थी। सारी मंजिल तीन बार के खुराक की थी। एक सेवक सहयात्री सिर पर इस दूध-दही के खुराक की टोकनी लिये चल रहा था। और यह विकट रास्ता सवेरे के अँधियारे में तय हुआ जा रहा था। पग-पग पर सब कुछ बिखर जाने का भय बना था। परंतु धूपों में भी वृक्षों को हरा-भरा रखने की चिंता करनेवाला क्या दरिद्रनारायण के पुजारी की चिंता नहीं करेगा ?

तो फिर कंकरीवाला रास्ता भी कुसुमवत् नहीं होगा ? इसी श्रद्धा से सेवक भी बढ़ा जा रहा था। पौराणिक वर्णनों में रास्ते के काँटों का फूलों में परिवर्तित होना सुना है। यहाँ तो मानो उसका साक्षात्कार ही हुआ जा रहा था।

आखिर पहाड़ी खतम हुई। पाँवों को मृदुलतम बालू का स्पर्श हुआ। मूसा का दृश्य भी बड़ा सुन्दर था। एक ओर पहाड़, दूसरी ओर जंगल, बीच में पहाड़ से सटी नदी और इर्द-गिर्द बालू। इस तरफ से उस तरफ, और उस तरफ से इस तरफ कम्युनिस्ट पुलिस को चकमा देकर अपना काम करते रहते थे। कई कम्युनिस्ट यहाँ भूमिगत थे। सरकार का कहना है कि उनमें से एक-एक कम्युनिस्ट दस-दस, बीस-बीस हत्याओं के लिए जिम्मेदार है।

मूसा के बाद का सारा रास्ता रेगिस्तान-सा है। बीच-बीच में लम्बाड़ों के समूहों को बसाया गया है। कम्युनिस्ट अब भी इन्हें पहाड़ों में लौट चलने की प्रेरणा देते रहते हैं। इन्हींके यहाँ वे खाते-पीते हैं। फी रोटी एक रुपया इन्हें पुरस्कार में मिलता है। लेकिन लम्बाड़े अब समझ गये हैं; इसलिए जब कम्युनिस्ट आते हैं, तो दूर से ही हाथ जोड़कर उनसे क्षमा माँग लेते हैं। भय बना रहता है कि कहीं उन्हें भी कम्युनिस्टों की गोली का शिकार न होना पड़े। लम्बाड़ों को अपनी जमीन नहीं है, जिसके लिए वे तरसते हैं। कम्युनिस्ट उन्हें जमीन की आशा दिलाते हैं।

जबरन् लेवी

अक्सर कार्यकर्ता लोग दोपहर में आकर मिलते हैं और शंका-समाधान कर जाते हैं। परंतु तेलंगाना में जनता जाग्रत है, इसलिए जब जो शंका मन में उठती है, पूछ लेते हैं। प्रातःकालीन स्वागत-सभा में एक अर्धनग्न किसान भाई ने पूछा : "महाराज, हमसे लेवी जबरन् ली जाती है।"

"क्योंकि बिहार और मद्रास में अपने देशवासी भाइयों के मर जाने का अंदेशा है।" विनोबा ने समाधान किया।

किसान ने फौरन दूसरा प्रश्न पूछा :

"तो यहाँ तो मूसा भी है। उससे नहर निकलवाकर सिंचाई का अच्छा प्रबंध करवा दीजियेगा, ताकि फसलें अच्छी और ज्यादा आ सकें।"

"हाँ, मैं अभी मूसा ही पार करके आ रहा हूँ। तुम्हारा सुझाव ठीक है। और शाम की प्रार्थना में मैं इस संबंध में समझा दूँगा।"

किसान खुश हुआ। सभी खुश हुए—और शाम तक उन्होंने करीब पंचानवे एकड़ जमीन भूदान भी जमा कर लिया।

वर्षा की सीख

शाम को तीन बजे से छह बजे तक विनोबाजी के यहाँ एक बड़ा दरबारे आम लगा रहा। शिकायतों की चालीस अर्जियों में से तीस का फैसला हुआ। बेगार को लेकर पुलिस के खिलाफ भी काफी शिकायतें थीं। इस बीच वर्षा भी जोरों की आयी। कोई स्थान सहारे के योग्य नहीं था। जिस झोपड़ी में विनोबाजी का निवास था, उसीमें खड़े होकर प्रार्थना करना निश्चय हुआ। वर्षा के बावजूद अर्जियों की सुनवाई जारी रही। कुछ देर में वर्षा रुकी। आसमान के नीचे खड़े होकर स्त्री-पुरुष, सबने प्रार्थना की। तेलंगाना में जहाँ एक ओर से हिंसा और नास्तिकता का इतना आन्दोलन था, वहाँ वर्षा के बावजूद भी सैकड़ों लोग प्रार्थना में जुटे रहे। खड़े-खड़े ही विनोबाजी का प्रार्थना-प्रवचन हुआ। उन्होंने प्रारम्भ में वर्षा की आगमनी का दृष्टान्त देकर कहा : "देखिये, दोपहर की धूप के कारण आप लोगों को कितनी तकलीफ हो रही थी। लेकिन आखिर बारिश आयी, ठंडक आयी। इसी तरह मनुष्य अगर शान्ति से कष्ट सहा करता है, तो अच्छे दिन अवश्य आते ही हैं। सीता ने भी बहुत कष्ट सहन किये, किन्तु आखिर उसे सुख मिला। आप लोगों को भी इस मुल्क में बहुत तकलीफ सहनी पड़ी है। थोड़ा और सहन कीजिये तो देखिये, कि आपके भी अच्छे दिन आ ही रहे हैं।"

प्रवचन में उपस्थित जनता को, पुलिस को और कम्युनिस्टों को, तीनों

को लक्ष्य कर उन्होंने कुछ बातें साफ-साफ कहीं। उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनों उनकी सभा में शरीक हों। "जो प्रार्थना में शरीक होते हैं, वे सब भाई-भाई बन जाते हैं। इसलिए कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनों के लिए जो मुझे कहना है, मैं यहाँ उनके सामने कह देता हूँ।"

बेगारी से इनकार करो

शुरू में लोगों को अपनी जिम्मेवारी और शक्ति का भान कराते हुए कहा: "अगर पुलिस बिना मजदूरी दिये आपसे काम करवाती है, तो आपको काम करने से इनकार कर देना चाहिए। मैंने सुना है कि उन्होंने आपसे मुफ्त में काम करवाया है। अगर उन्होंने ऐसा किया है, तो यह उनकी गलती है। आइन्दा अगर आप पर कोई ऐसी जबरदस्ती करें, तो आप उन्हें मेरा नाम बताकर कह देवें कि विनोबा आये थे; उन्होंने मुफ्त काम करने की मनाही की है।"

पुलिस सरकार की बेइज्जती न करें

फिर पुलिसवालों से कहा: "आप लोग स्वराज्य के पुलिस हैं। हमारा स्वराज्य सारी जनता का राज्य है। अर्थात् पुलिस जनता की स्वामी नहीं, सेवक है। उनको जनता की सेवा करनी है। पुलिस को यहाँ भेजने में सरकार का मनशा यही है कि वे जनता के दिलों में प्रवेश करें और शान्ति कायम करें। इसके विपरीत अगर पुलिस जुल्म, जबरदस्ती करती है, तो उनको यहाँ भेजने का मनशा सिद्ध नहीं होता है और भेजनेवाले की यानी सरकार की बेइज्जती होती है।"

कम्युनिस्टों द्वारा गरीबों की सहायता असंभव

फिर कम्युनिस्टों के बारे में कहा: "मैं देख रहा हूँ कि कम्युनिस्ट भाइयों ने यहाँ काफी उपद्रव मचाया है। लोगों ने जो उन्हें मदद दी है, वह तो कुछ भय के वश दी है और कुछ इस खयाल से कि कम्युनिस्ट गरीबों का भला करनेवाले हैं।

"किन्तु आपको मैं कहना चाहता हूँ कि आप लोग भय से सहायता

करना छोड़ दें। और अगर आपका यह खयाल है कि वे लोग गरीबों की सहायता करनेवाले हैं, तो मैं कह देना चाहता हूँ कि वे गरीबों की कोई सहायता नहीं कर सकते। यह तरीका, जो उन्होंने अपनाया है लूट का, डकैती का, खून का, इससे वे गरीबों का भला नहीं कर सकते हैं। अगर वे अपना हिंसा का तरीका बदल देते हैं, तो मैंने उनको निमंत्रित किया है कि वे मेरी प्रार्थनाओं में शामिल हो जायँ।"

विनोबाजी का एक-एक शब्द कम्युनिस्टों के लिए स्पष्ट आवाहन के रूप में था। लोगों के दिलो-दिमाग पर उसका जो असर हो रहा था, वह उनके चेहरों से साफ दिखाई दे रहा था। वे लोग गौर से विनोबाजी की बात सुनते थे। फिर एक-दूसरे की ओर देखकर विनोबाजी के वचनों का मानो अनुमोदन करते थे और फिर ध्यानपूर्वक विनोबाजी की ओर उनका दूसरा उद्गार सुनने के लिए उत्सुकताभरी आँखों से देखने लगते थे। विनोबाजी का स्वर भी थोड़ा बढ़ता जा रहा था। तेलुगु में अनुवाद करनेवाली श्री लक्ष्मीबहन भी तन्मय होकर विनोबाजी के भावों को अपनी वाणी द्वारा, आँखों द्वारा और दोनों हाथों की प्रक्रिया द्वारा मानो अपने-आपको भूलकर प्रकट करती जा रही थी। विनोबाजी का अन्तिम वाक्य तो सबके हृदयों को जाकर भिड़ गया : "गरीबों की सेवा, यही अगर कम्युनिस्ट होने का अर्थ है, तो कम्युनिस्ट होना कोई गुनाह नहीं है। तब तो हम सब कम्युनिस्ट हैं।"

पुलिस फौरन उठ सकती है

उस दिन जो फैसले हुए थे, उनका जिक्र करते हुए विनोबाजी ने कहा : "आप लोगों की बहुत सारी शिकायतें सुन ली गयीं और उनमें से बहुतों के फैसले भी हुए। जितना समाधान देना संभव था, दिया गया है। इतना ध्यान रखना चाहिए कि समय ज़रा कठिन है और कठिन समय में तकलीफ सहनी ही पड़ती है। लेकिन किसीका यह मनशा नहीं हो सकता कि आपको तकलीफ पहुँचाये। अगर सरकार मुझे यहाँ आने का मौका देती है, तो उसका अर्थ यही है कि सरकार शान्ति-स्थापन करना चाहती

है। अगर वह शान्ति का मार्ग पसन्द नहीं करती और हर चीज डंडे से ही करना चाहती, तो मुझे यहाँ नहीं आने देती। लेकिन मुझे यहाँ आने की इजाजत दी गयी है। इतना ही नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट नेताओं से जेल में जाकर मिलने की भी सुविधा दी गयी है। अर्थात् सरकार चाहती है कि अगर पुलिस को यहाँ से उठा लिया जा सके, तो बहुत अच्छा होगा। इसलिए अगर मेरे आने से आप लोगों के दिलों में निर्भयता पैदा होती है, तो सरकार यह पुलिस फौरन हटा लेगी।"

अंत में, सबेरेवाली सिंचाई की बातचीत का जिक्र करके विनोबाजी ने कहा: "आप देखते हैं कि पुलिस को यहाँ रखने पर सरकार को कितना खर्च करना पड़ता है। यह खर्च कहाँ से आता है? आप लोग जो टैक्स देते हैं, उसीमें से सरकार यह सब खर्चा करती है। आप सिंचाई के लिए मूसा नदी से नहर की माँग करते हैं। लेकिन नहर के लिए पैसा चाहिए और सरकार का पैसा तो पुलिस पर ही खर्च हो रहा है। इसलिए इच्छा रहते हुए भी सरकार नहर पर खर्चा नहीं कर पाती। इसलिए यहाँ से पुलिस जल्द-से-जल्द उठ जानी चाहिए। इसीमें सरकार का और आपका, दोनों का भला है। आपको इसके लिए अपने मन की तैयारी करनी चाहिए। हिम्मत के साथ कह सकना चाहिए कि हम आपस में लड़ेंगे नहीं। खुद अपने गाँव की रक्षा कर लेंगे। अगर सारा गाँव निर्भय बन जाता है और एक-दूसरे के बारे में सुरक्षितता का अनुभव करता है, तो पुलिस यहाँ से हट सकती है और नहर भी आ सकती है।"

विनोबाजी ने मूसा का नक्शा भी मँगवा लिया और नहर की संभावना पर भी विचार किया। मालूम हुआ कि नहर पहले थी, परन्तु मिट्टी से भर गयी है। लोगों का शरीर-श्रम और सरकार के साधन, दोहरे प्रयत्न से नहर बन सकती है। अतः कार्यकर्ताओं को इस दिशा में उचित संयोजन करने की सलाह देकर लोगों को भी श्रम-दान की प्रेरणा दी।

• • •

जिले-जिले में आश्रम : २२ :

चिल्लेपल्ली
६-५-'५१

स्टेट कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष स्वामी रामानन्द तीर्थ ने यहाँ कुछ दिनों से एक आश्रम खोल रखा है। विनोबाजी का पड़ाव आज इसी आश्रम में था। हैदराबाद से विनोबाजी से मिलने के लिए मालमन्त्री बी० रामकृष्णराव तथा स्टेट कांग्रेस के वर्तमान अध्यक्ष श्री बिन्दुजी भी आये थे। दोपहर को कार्यकर्ताओं की सभा भी रखी गयी थी। सभा के पहले विनोबाजी नित्य की तरह ग्राम-प्रदक्षिणा भी कर आये थे।

बेगार के लिए आन्दोलन क्यों ?

शाम की प्रार्थना-सभा में उन्होंने अपनी यात्रा का उद्देश्य और पिछले दिनों आये हुए अनुभवों का जिक्र करते हुए सबसे पहले लोगों को "निर्भयता" की दीक्षा दी। बेगार के बारे में पहले रोज भी कह चुके थे। परन्तु यहाँ भी इर्द-गिर्द इतनी व्यापक पीड़ा इस मर्ज ने फैला रखी थी कि पुनः उस बारे में कहना पड़ा। पडोसी प्रांत बरार का दृष्टान्त देकर विनोबा ने कहा : "तीस साल पहले बरार में भी, अंग्रेजों के जमाने में, बेगार के खिलाफ आंदोलन हुआ और वहाँ यह प्रथा बन्द हुई। हैदराबाद राज्य में उस जमाने के ये सब आन्दोलन **नहीं** हो पाये, इसलिए बेगार भी आज तक जारी है। लेकिन अब तो स्वराज्य आ गया है। ऐसी बातों के लिए आन्दोलन की जरूरत ही नहीं होनी चाहिए। जरूरत चाहिए सिर्फ हिम्मत की—लोगों के दिलों में। हिम्मत पुलिस को साफ कह देने की कि 'काम जो चाहे लो, दाम देना होगा।' फिर भी पुलिस न माने तो

हिम्मत से कहना चाहिए कि 'आपको तनख्वाह इसलिए नहीं दी जाती कि आप ऐसे बुरे काम करें'।"

विनोबाजी ने आशा प्रकट की कि पुलिस भी अब समझ गयी है और आइन्दा ऐसा नहीं करेगी।

आश्रम का स्थान होने के कारण विनोबा ने रचनात्मक कार्य के स्वरूप और उसके प्रशिक्षण की योजना के बारे में विस्तार से समझाया तथा आशा प्रकट की कि गाँव-गाँव में नहीं तो कम-से-कम जिले-जिले में तो भी ऐसे आश्रम स्थापित किये जायँगे। "पद-यात्रा के कारण शांति का वातावरण निर्माण हो रहा है। कार्यकर्ताओं का काम है कि उससे लाभ उठायें और सेवा के काम में जुट जायँ।"

● ● ●

मुझे तो आपकी जिंदगी सेवा में लगानी है : २३ :

मिरियालगुड़ा
७-५-'५१

दो विचारधाराओं का झगड़ा

राजपुरम् में ही मालूम हो गया था कि वहाँ के धनी-मानी लोग भय के कारण मिरियालगुड़ा आकर रहने लगे हैं। बड़ा गाँव होने से और पुलिस वगैरह का ठीक प्रबन्ध होने के कारण लोगों ने यहाँ अपने को सुरक्षित समझा होगा। गाँव में पहुँचते ही विनोबा ने भूमिवानों से और खासकर राजपुरम् के लोगों से मिलने की इच्छा प्रकट की। अपने दर्द का इलाज पूछने के लिए मरीज तो पहले ही उपस्थित थे।

"हम आप लोगों के गाँव गये थे। आप वहाँ नहीं थे। हमारे रहते आप वहाँ आ जाते, तो बहुत अच्छा होता। हम गाँववालों से कुछ कहते। बताइये, भय कुछ कम हुआ है या नहीं अब?"

"पुलिस के बिना तो हम अपने गाँव नहीं जा सकते।"

"जा सको, इसके लिए क्या इलाज हो सकता है?"

"सरकार की तरफ से इन्तजाम होना चाहिए, इतना ही हम जानते हैं। और कोई तरीका हम नहीं जानते।"

"कितने रोज आप गाँव की नाराजी लेकर गाँव से अलग रह सकते हैं?"

"गाँव नाराज नहीं है। गाँव तो हमारी जमीन को जोतता है और हमें मुआवजा भी देता है। हमें तकलीफ तो इन पार्टीवालों* से होती है। सरकार कहती है हमारा साथ दो। पार्टी कहती है हमारा साथ दो। न्यूटरल

---

* कम्युनिस्ट पार्टी के लिए यहाँ केवल 'पार्टी' शब्द रूढ़ है।

तटस्थ रहने का कोई इलाज बताइये। अगर हम जालिम होते, तो अब जो गरीब लोग पीछे रह गये हैं, वे खुशहाल रह पाते। लेकिन उनमें से भी लोग मारे जा रहे हैं।"

"आखिर पार्टी वाले चाहते क्या हैं ?"

"अपनी हुकूमत चाहते हैं। चाहते हैं कि सबको गुलाम बनायें। कम्युनिज्म में सबको खाना-कपड़ा जरूर दिया जाता है, परन्तु गुलाम बनाकर और गुलाम रखकर।"

"कम्युनिज्म की कौन-सी किताबें आप लोगों ने पढ़ी हैं ?"

"कुछ तेलुगु में, कुछ उर्दू में पढ़ी हैं।"

विनोबा ने देखा कि इन लोगों को कुछ गहराई में ले जाना चाहिए। ऐसे भी कम्युनिस्टों के प्रचार के कारण इधर के लोग काफी बुद्धिमान् नजर आते हैं। फिर ये लोग तो ब्राह्मण थे और उनके साहित्य का अध्ययन भी कर चुके थे। विनोबा ने समझाना शुरू किया :

"वास्तव में यह झगड़ा दो विचारधाराओं का है। मैं किसी व्यक्ति-विशेष का दोष दिखाना नहीं चाहता, परंतु आप देखेंगे कि यह सारी लड़ाई धनैषणा में से निकली है। धनैषणा छूटती नहीं। फिर वह स्वतंत्र भी नहीं है। पुत्रैषणा और दारैषणा के साथ वह बँधी हुई है।"

"क्या रशिया में लोगों को बाल-बच्चे और परिवार नहीं हैं ?"—सहसा और आवेश में उन लोगों ने पूछ लिया। उतनी ही शांति से उन्हें उत्तर मिला :

"जरूर होंगे। लेकिन उन लोगों को भी धनैषणा छोड़नी होगी। वैसे, अपने यहाँ ब्राह्मण तो पहले भी थे, परंतु वे अपने पास धन नहीं रखते थे। इसका अर्थ यह नहीं कि उनके परिवार नहीं था या बच्चे नहीं थे। अगर उनके लिए निपुत्रिक रहने का विधान होता, तो आज ब्राह्मणों का वंश ही डूब जाता। ब्राह्मण की जो व्याख्या शास्त्रकारों ने की है, उसमें यह बात मुख्य है कि वह पास में संपत्ति न रखे। धन छोड़नेवाले की

कीर्ति तो और बढ़ जाती है। लेकिन धन छोड़ने से लोकैषणा छूट जाती है, ऐसा नहीं है। लोकैषणा तो आत्मज्ञान से छूटती है।"

प्रश्नकर्ता देशमुख थे। देशमुखों में ब्राह्मण भी होते हैं, जो आम तौर पर पढ़े-लिखे होते हैं। और हमारे देश में वेदांत का संस्कार तो प्रायः सबको ही रहता है और दिलो-दिमाग में उलझन भी उतनी ही रहती है। बातचीत जारी रही। देशमुख ने कहा : "एक-दो ज्ञानी ही ऐसे होंगे। बाकी सब तो ऐसे ज्ञानी नहीं बन सकते हैं। वेदांत और अनुभव, दोनों का कहना है कि खाना खाते हैं, तो काम-वासना बढ़ती है।"

"यह गलत है। मैं रोज खाता हूँ, पर मुझे तो नहीं होती कामवासना। कामवासना होती है जरूरत से ज्यादा खानेवाले को। कम्युनिज्म क्या खाने को मना करता है?"

खिलाकर खाने का विचार

फिर उनको वेदांत की परिभाषा में समझाना शुरू किया :

"आप लोग 'माता भूमिः पुत्रोहम् पृथिव्याः' कहते हैं न? क्या माता चाहती है कि एक को उसका प्यार मिले, अनेकों को न मिले? आपने वेदांत की बात कही, लेकिन वेदांत तो वासना का नियमन करने का आदेश देता है। घर में दो बालक पैदा होते ही आपको खुद दूध न पीकर बच्चों के लिए दूध रख छोड़ने की इच्छा होती है। आप उनके लिए दूध छोड़ने लगते हैं। परिवार में हम रहते हैं, इसलिए जैसे परिवार के लिए वासना-नियमन जरूरी है, वैसे ही समाज में हम रहते हैं, इसलिए समाज के लिए भी वासना-नियमन जरूरी है। बिना वासना-नियमन के संसार सुखी नहीं हो सकता। वासना-परित्याग तो उससे भी कठिन है। खैर, कम्युनिज्म में खराबी इतनी ही है कि अच्छी चीज़ भी बुरी बन जाती है। संन्यास के लिए यद्यपि सिर मुँड़ाने का और गेरुआ पहनने का नियम था, जबरन् सबको संन्यासी बनाया जाता, तो क्या शंकराचार्य

का काम चलता ? कम्युनिज्म में यह सारी जबर्दस्ती है। समझाने की शक्ति का प्रयोग करने के बजाय लोग बंदूक की शक्ति से काम लेते हैं। समझाने के लिए चाहिए धीरज। वह उन लोगों में है नहीं। रूस में उन्होंने मारकाट का तरीका आजमाया है। यहाँ वह चलनेवाला है नहीं, क्योंकि यहाँ की भूमि में विचारशक्ति से काम होता है, और लोगों में सब विचारवालों को सुनने की उदारता है। परंतु यदि हर नये विचारवाला अपने विचार-प्रचार के लिए मारकाट से काम लेगा, तो उसका विचार यहाँ की भूमि में जम नहीं पायेगा। कम्युनिज्म का विचार यहाँ की भूमि के लिए नया नहीं है। पुराने जमाने से यहाँ जो विचार चलता आया है, और जो अभी पुनः गांधीजी ने भी समझाया, वह सबको खिलाकर खाने का विचार है। यहाँ घर का बड़ा आदमी पहले परिवार को खिलायेगा, गाय-बछड़ों को खिलायेगा, नौकर-चाकर को खिलायेगा, फिर खुद खायेगा। और अतिथि आ गया, तो सबसे पहले उसे खिलायेगा। सबको खिलाकर खाना, यह बड़े आदमी का लक्षण था। लेकिन आज जो खुद को बड़ा समझता है और समाज में बड़ा समझा जाता है, वह शेर की तरह पहले खुद खाता है। लोगों को रहने के लिए झोपड़ी भी नसीब न हो, परंतु खुद बड़े मकानों में रहता है। बताइये, ऐसे आदमी को आप बड़ा ज्ञानी कहेंगे या बड़ा बेवकूफ ? इसलिए जरूरत इस बात की है कि अपने आसपास के लोगों के लिए कुछ किया जाय।"

मुखिया मुख सों चाहिए

फिर मजदूर-समस्या, उत्पादन की समस्या, ग्रामोद्योगों की समस्या आदि सभी प्रश्नों पर प्रकाश डालकर सभी समस्याओं के हल के लिए भूदान की आवश्यकता बताते हुए कहा :

"इसलिए हम गाँव-गाँव जाकर समझाते हैं कि परमात्मा ने जिनके पास जमीन दी है, वे अपनी जमीन बाँट दें, तो आज नहीं तो कल जिस

कम्युनिज्म के विचार का आपको भय लगता है, उसके प्रतिकार की शक्ति भी आपमें आयेगी। आखिर जमीनवालों का भी कोई एक अलहदा वर्ग तो नहीं होगा ? क्या आप लोग आपस में लड़ते नहीं ? परंतु प्रवाह के विरुद्ध जाकर धीरज के साथ कुछ नैतिक बल प्रकट करने का सामर्थ्य आप लोगों ने नहीं प्रकट किया। जो भी सरकार हो, उसका साथ देने की पूरी कोशिश आप लोगों की रही। पहले आपने निजाम का साथ दिया। और अगर कम्युनिज्म आया, तो आप उनका भी साथ देंगे। आप लोग देशमुख हैं न ? देश के मुखिया हैं। '**मुखिया मुख सों चाहिए, खान-पान को एक।**' मुख अपने पास कुछ नहीं रखता। जो कुछ रखता है, पेट रखेगा। मुखिया तो सदा देता ही रहेगा। और यदि सौ हाथों से लिया, तो हजार हाथों से देता रहेगा। दसगुना लिया, तो सौगुना देगा बीज की तरह। मुखिया तो समाज के ट्रस्टी हैं। आप ट्रस्टी बनेंगे, तो आप लोगों की भी रक्षा कर सकेंगे। पुलिस आप सबकी कब तक रक्षा करेगी ? और कब तक सरकार भी आपके लिए पुलिस यहाँ रख छोड़ेगी ? और अब तो चुनाव भी सामने आये हैं ? जो लोग चुनकर आयेंगे वे यह सारा खर्च राज्य पर न डालकर देशमुखों पर डालें तो ? और आप अपने पैसों का उपयोग पुलिस के लिए करने के बजाय जनता की भलाई के लिए करें तो ?"

कब तक डरते रहोगे ?

विनोबा का प्रवाह जारी ही था। किंचित् रुककर कुछ विशेष हमदर्दी से कहा : "भाइयो, जब देशमुख-वर्ग निकला, तब वह लोगों की सेवा के लिए ही निकला था।"

क्षणभर वे पुनः रुके। इस बीच एक भाई ने कहा :

"महाराज, सेवा तो हम आज भी करते हैं।"

"आपका जैसा खयाल है, बात वैसी नहीं है। कोई एकाध

सेवा भी करता होगा। परन्तु रवैया यही है कि **"एरंडनी चोरी ने सुईनो दान*।"**

देशमुख किसी तरह अपनी संग्रहशीलता के लिए संरक्षण चाहते थे। पुनः शास्त्रों का आधार लेकर कहा : "महाराज, शास्त्रों ने भी तो कुछ रखने को कहा है ?" तब विनोबा को कहना पड़ा : "शास्त्रों की बात छोड़ दीजिये। शास्त्रों की बात मानते, तो यह परिस्थिति ही न होती। आपसे तो मेरा यही कहना है कि आप लोग देना शुरू करें। कम्युनिस्ट तो खतम होनेवाले हैं, क्योंकि उन्होंने रास्ता गलत अख्तियार किया है। परंतु आप कब तक अपने गाँव से भगे-भगे यहाँ रहनेवाले हैं ? जहाँ जमीन है, वहाँ न रहें—डर के मारे बाहर-बाहर जिंदगी बितायें ! कैसी अशोभनीय हालत है यह !! आखिर डरते भी कब तक रहेंगे ? और क्या यहाँ मिरियालगुड़ा में मरना नहीं होगा ? क्या यहाँ आप अमरपद लेकर आये हैं ? शेर के डर से क्या हिरन जंगल छोड़ देता है ? साँप के डर से क्या हम घर छोड़ देते हैं ? इतने पर भी, याने हिम्मत करके अपने गाँववालों के बीच रहने पर भी, यदि कुछ हो गया, तो डरना क्या है ? हृदय में प्रेम रखकर मरना चाहिए। आज राजवरम् छोड़कर यहाँ आये हैं। अगर यहाँ भी वे लोग हथियार चलायें, तो क्या हैदराबाद भगोगे ? इसके बजाय सेवा करते-करते मृत्यु आ गयी, तो कितना अच्छा होगा। गांधीजी ने जिंदगी-भर सेवा की और अंत में उन पर गोली चली—तो क्या उन्हें दुःख हुआ ? उनकी जीवन-भर की सेवा अंत में सफल हुई—और अत्यंत धन्य होकर वे चले गये। ऐसी सेवा करते हुए भी अगर मौका आया और किसीने मार डाला तो मार डाला। उसमें दुःख की कोई बात नहीं।

'मेरा काम तो खतम हुआ। आप लोग अपना काम करें। मैं तो

*** गुजरात की कहावत, जिसका अर्थ साफ है कि चोरी इरंडी की की और दान सूई का दिया।**

वामन बनकर आया हूँ। आप कुछ जमीन आज देंगे। पर मुझे तो आपकी जिंदगी सेवा में लगा देनी है।"

थोड़ी देर एक सन्नाटा-सा छा गया। आज तक किसीने इस तरह साफगोई की नहीं थी--नेक राह बतायी नहीं थी! एक फकीर आया, और जिंदगी की ही माँग कर रहा—फिर जमीन का तो सवाल ही क्या? उन लोगों ने सात सौ एकड़ जमीन शाम तक इकट्ठा कर ली। अब तक जो भूमि मिली थी, उसमें यह अंक सबसे ज्यादा था। ● ● ●

मेरे जैसे को भी बलिदान देना होगा : २४ :

मिरियालगुड़ा
७–५–५१

—२—

गरीबों की पिटाई

न्यायालय में रोज की तरह आज भी काफी अर्जियाँ आयी थीं। तहसीलदार और पुलिस अफसर, दोनों हाजिर थे। एक किसान को चलकूर्ति की पुलिस ने इतना पीटा था कि उसकी पीठ पर अठारह जगह बेंत के बल उठे थे। देखनेवाले सभी सिहर उठे। प्रशांत महासागर में भी तूफान के आसार नजर आये—"इस मामले को आगे ले जाना होगा। इस भाई का पूरा बयान लिख लो।"—विनोबा के मुख से सात्त्विक प्रकोप प्रकटा। थोड़ी ही देर में पुलिस का वह सूबेदार, जिसके इलाके में और शायद जिसके इशारे से भी, उस किसान की पिटाई हुई थी, वहाँ आ पहुँचा था। उसने सफाई दी कि जमादार की गलती हुई है। इस बीच किसान भी कुछ साहस समेट पाया। कारण बताते हुए उसने कहा : "हुजूर, इन लोगों के लिए मुफ्त दूध नहीं जुटा सका, इसके लिए मेरी पिटाई हुई है।"

शिकायतें प्रार्थना के बाद भी रात के ९ बजे तक आती रहीं।

दोनों रास्ते गलत

शाम की सभा में विनोबा खूब दिल खोलकर बोले। चाहते थे कि तरजुमा न करना पड़े, क्योंकि काफी लोग उर्दू जाननेवाले थे। परन्तु जब सभा में इस बारे में पूछा गया, तो लोगों ने तरजुमे का आग्रह किया। तो लक्ष्मी बहन खड़ी हो गयीं। प्रारम्भ में विनोबाजी ने भारत के उज्ज्वल

अतीत का चित्र खींचा, फिर अंग्रेजों की गुलामी के कारण उसकी जो दुर्दशा हुई—आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक; वह थोड़े में दिग्दर्शित की तथा निजाम के राज्य में देशमुखों, जागीरदारों एवं रजाकारों से प्रजा को जो कष्ट हुए, उसका भी बयान किया। किसानों के हाथ से जमीन निकलकर इन धनी-वर्ग के हाथ में कैसे गयी, यह सब बताया और नलगुंडा जिले की परिस्थिति पर भी प्रकाश डाला।

जमीन के बँटवारे के सम्बन्ध में बोलते हुए कहा :

"अब इस मसले को हल करने के लिए दो रास्ते हैं। एक कत्ल का, दूसरा कानून का। कत्ल का रास्ता यही कि श्रीमानों को कत्ल करो, उनकी जमीनें छीन लो और गरीबों को दे दो। यह मार्ग कम्युनिस्टों ने अख्तियार किया है, जिसे उन्होंने रशिया से सीखा है। वहाँ की किताबें उन्होंने पढ़ीं, और वे विचार उनके दिमाग में भरे गये। लेकिन यह हिंदुस्तान में चलनेवाली बात नहीं है। इसकी बहस में मैं नहीं पड़ूँगा। परंतु आपने देखा कि यहाँ नलगुंडा में यह मार्ग बहुत अपनाया गया। लेकिन इसका कोई अच्छा परिणाम नहीं आया है। और मैं जानता हूँ और कहता हूँ कि यह रास्ता भारत में नहीं चलेगा। दूसरा मार्ग कानून का। सरकार कानून मौके पर जरूर बनायेगी, सरकार का यह कर्तव्य भी होगा; लेकिन यह काम इस ढंग से होना चाहिए कि केवल गरीब ही नहीं, बल्कि श्रीमान् भी उसमें अपना हित समझे। लेकिन आज क्या होता है? सरकार एक कानून बनाती है, तो व्यापारी उसमें लूप-होल देखकर उसे नाकाम बनाने की कोशिश करते हैं। इस वास्ते देश में परिस्थिति बिगड़ रही है। अगर देश की सारी परिस्थिति सुधारनी है, तो केवल कानून से काम नहीं होगा।

भिक्षा का अधिकार

"इस वास्ते इस मुसाफिरी में मैंने एक नया प्रयोग शुरू कर दिया है। मैं जन्म से ब्राह्मण हूँ, मेरा भिक्षा माँगने का हक है। तो मैंने सोचा कि

भिक्षा के अधिकार को आजमा लूँ। इसलिए जहाँ जाता हूँ, वहाँ धनिकों को समझाता हूँ और गरीबों के लिए कुछ-न-कुछ माँगता हूँ और धनिक देते भी हैं। इस गाँव में ५-७ सौ एकड़ जमीन मिली है, लेकिन इसमें बड़ी बात यह है कि देनेवाले प्रेम से और समझकर देंगे, तो उनका जीवन पलट जायगा। अगर वे समझ गये कि बात क्या है, तो वे अपना सारा जीवन गरीबों की सेवा में दे देंगे। वामन अवतार में भगवान् ने तीन कदम भूमि माँगी थी, लेकिन वह तीन कदम भूमि त्रिभुवनव्यापी बन गयी। क्योंकि वामन अवतार के कारण बलि का परिवर्तन हो गया। उसी तरह से यह जो थोड़ी-सी जमीन देते हैं, वह यदि भक्ति-भाव से देते हैं, तो उनकी सारी जमीन उसमें आ गयी। अगर कानून बनेगा, तो क्या बनेगा ? श्रीमान् लोगों के लिए कोई मर्यादा बाँध दी जायगी। लेकिन कोई भी सरकारी कानून २० एकड़वाले के पास से ३ एकड़ नहीं ले सकता; लेकिन जहाँ हृदय में परिवर्तन होता है, वहाँ यह हो सकता है। मुझे ऐसा दान मिला है।

न च कंकणेन

"संपूर्ण ऐश्वर्य में जनमे हुए भगवान् बुद्धदेव सब कुछ छोड़कर निकल पड़े। उनके हृदय में यह बात आ गयी कि राजा बनकर गरीबों की सेवा मैं नहीं कर सकूँगा। तो उन्होंने राज्य फेंक दिया और गरीबों की सेवा में लग गये। कोई भी कानून ऐसा त्याग नहीं करा सकता। मैं तो त्याग की एक हवा फैलाना चाहता हूँ। अगर यह हवा चली और सबके हृदयों को उसका स्पर्श हुआ, तो हर कोई कुछ-न-कुछ देने ही लगेगा। हर कोई समझेगा कि भगवान् ने जो हाथ दिये हैं, वह जानवरों को नहीं दिये हैं। '**दानेन पाणिर्न च कंकणेन।**' हाथ देने से शोभते हैं, कंकण से नहीं शोभते। और न हाथ शोभते हैं दूसरों की कत्ल से, न दंड करने से। हाथों की शोभा तभी है, जब नम्रता से जुड़कर गरीबों को देने लगते हैं। तभी उसकी सार्थकता है।

कत्ल हो जाओ, तो परमेश्वर का उपकार मानना

"भाइयो, यह मानव-तनु भोगने के लिए नहीं, त्याग के लिए है। सारी मानवता का इतिहास त्याग से भरा है। जिन्होंने त्याग किया, उनका स्मरण मानव करता है। आप जानते हैं राजा-महाराजा कितने ही हुए, लेकिन उनको कौन याद करता है? लेकिन रामकृष्ण, तुलसीदास, कबीर का नाम आज भी लिया जाता है। बहुत सारे बड़े-बड़े लोग आये-गये, लेकिन उनको कोई जानता नहीं है। अगर यह मेरी बात आपके हृदय में पहुँच जाय, तो समझ लो कि कम्युनिस्ट खतम हो जाते हैं। जहाँ दया-भाव का उदय हुआ, समानता का प्रकाश फैला, वहाँ अंधकार टिक नहीं सकता। मेरे पास धनवान् मिलने के लिए आये। उनको मैंने वही बात बतायी। मैंने कहा: 'तुम श्रीमान् हो, परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा करता है कि तुम गरीबों की सेवा में कैसे लगते हो। तो सेवा का व्रत ले लो और जहाँ से भाग करके आये हो, वहाँ हिम्मतपूर्वक फिर जा बसो। वहाँ जाने के बाद अगर कत्ल हो जाओगे, तो परमेश्वर का उपकार मानना। छिपकर, डरपोक बनकर शहर में आकर जिन्दा रहना मरने से बुरा है। लेकिन निर्भय कौन बनेगा? जो लोगों को लूटेगा, वह निर्भय बन सकेगा? निर्भय तो वह होगा, जो गरीबों पर प्रेम करेगा, सेवा का व्रत लेगा।' यह तो मैंने उनको कहा, लेकिन केवल उनके लिए नहीं, आप सब लोगों के लिए यही बात है।

सार्वत्रिक गुमराही

"मैं तो कहता हूँ कि कम्युनिस्ट कोई जानवर तो नहीं है। जानवर मेरी बात समझेगा नहीं, लेकिन दयाभाव से जानवरों का भी परिवर्तन हुआ सुना है। फिर ये कम्युनिस्ट कौन हैं? मानव हैं। उनमें से कई २० साल पहले हमारे साथ काम करते थे। उनमें से कइयों ने कंधों पर खादी लेकर बेचने का काम किया है। आज भी उनका जीवन काफी त्यागमय है। तो ये क्रूर नहीं, गुमराह हैं। रास्ता भूल गये हैं।

उनको रास्ते पर लाना, यह भी मेरा काम है। श्रीमान् भी रास्ता भूल गये हैं, गरीब भी रास्ता भूल गये हैं। वे तो आज ताड़ी पीने में मशगूल हो गये हैं। उनको मैं भूमि दूँगा, तो वे कुछ दिनों में जमीन बेचकर शराब पीयेंगे। कांग्रेसवाले भी गुमराह हैं। वे अपने हाथ में सत्ता किस तरह रहेगी, इसीकी फिक्र में पड़े हैं। गांधीजी ने सेवा का सबक सिखाया था, वह वे भूल गये हैं। इतने सारे लोग गुमराह हो गये हैं, यह मैं निःशंक होकर आपको कहता हूँ। सबोंसे मेरी प्रार्थना है कि गांधीजी ने जो मार्ग बतलाया था—सेवा का मार्ग—उस पर आ जाओ।

"गरीबों को यह समझना चाहिए कि पहले तो उनकी अक्ल गयी, पीछे लक्ष्मी गयी; गरीबों को यह कोई नहीं सिखा रहा कि दुर्गुणों को छोड़ो। तो हमको गरीबों के दुर्गुणों का निराकरण भी करना होगा। तब उनमें शक्ति आयेगी। श्रीमानों को भी रास्ता सिखाना है, गरीबों को भी रास्ता सिखाना है, कांग्रेसवालों को भी। वे सीधे रास्ते पर नहीं आयेंगे, तो मेरे जैसे को भी बलिदान देकर उन्हें रास्ते पर लाना होगा।" ● ● ●

गृह और धन भी रक्षा के पवित्र स्थान : २५ :

कामारेड्डीगुड़ा
८-५-'५१

दूरदृष्टिवाला किसे कहें ?

रास्ते में अक्सर कुछ गम्भीर बातें भी हो जाती हैं। इधर खासकर राजपुरम्, चिल्लेपल्ली आश्रम और मिरियालगुड़ा के बाद तेलंगाना के भावी काम के बारे में विनोबा के मन में काफी विचार चलते रहे। रचनात्मक काम के बिना इस इलाके में शांति नहीं होगी, ऐसा उन्हें लगता था। एक आश्रम अभी चिल्लेपल्ली में उन्होंने देखा था, जहाँ कुछ रचना-कार्य जड़ पकड़ने की उम्मीद थी! "परन्तु वहाँ भी काम तो तब होगा, जब आश्रम के संचालक महोदय वहाँ समय दे सकेंगे। उन्होंने अपने पीछे इतने ज्यादह काम लगा लिये हैं कि आश्रम के लिए शायद ही समय निकाल सकें।"

इधर कांग्रेस के जिम्मेवार लोग कह रहे थे कि कांग्रेस का काम भी हैदराबाद में रुक-सा गया है। विनोबाजी ने इसका जिक्र करके कहा : "दो बरस पहले राजा प्रतापगिरजी की कोठी में मैंने कांग्रेसवालों के मतभेद मिटाने की कोशिश की। उस समय लोग मान जाते, तो कांग्रेस में जो फूट पड़ी है, वह न पड़ती। लेकिन एक पक्ष ने माना, तो दूसरे ने नहीं माना। लोग मतभेद भूलना जानते नहीं। दूरदृष्टि रखते नहीं। यह समझना चाहिए कि मतभेद हमेशा टिकते नहीं। वे तो मिटने ही वाले हैं। यह जो समझ लेता है और इसलिए जो आज से ही सबके साथ प्रेमपूर्वक रहता है, वह दूरदृष्टिवाला समझा जाता है।"

गुण-ग्रहणता के बारे में कहा : "मेरे जैसे आदमी के साथ निबाह

कर लेना कोई बड़ी बात नहीं है। वह तो मेरे कारण संभव होता है! जो मुझसे भिन्न या विरोधी विचारों के हैं, उनसे निबाहना बड़ी बात है। खूबी उसीमें है।"

बातें चल रही थीं कि सामने कामारेड्डीगुड़ा दिखाई देने लगा। छोटा-सा गाँव, परंतु यहाँ भी एक हत्या हो चुकी है। इसलिए लोग भयभीत थे। फिर भी दिन-भर इर्दगिर्द के लोगों का ताँता लगा रहा। शाम तक तो स्त्रियाँ भी खूब तादाद में जुट गयीं। प्रार्थना-प्रवचन में विनोबाजी ने ग्रामवासियों को निर्भय बनने की प्रेरणा दी। "डरनेवालों का रक्षण ईश्वर भी क्या करेगा?" उन्होंने पूछा। "परमेश्वर तो हमारी परीक्षा करता है कि मैंने मनुष्य को बुद्धि दी है, देखें, वह उस बुद्धि का क्या उपयोग करता है।"

सब मिलकर सबकी चिन्ता करें!

फिर छोटे गाँवों को जीवन की कला समझाते हुए कहा : "ऐसे छोटे-छोटे गाँव यदि प्रेम से रहते हैं, तो बड़े शहरों से भी ज्यादा ताकतवाले हो जाते हैं। क्योंकि बड़े शहरों में तो एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं हैं। और छोटे-छोटे देहात में तो हर कोई एक-दूसरे को पहचानता है। मानो सारा गाँव मिलकर एक कुटुंब होता है। मैं आपके गाँव में थोड़ी देर घूम आया। मैंने देखा, हरएक घर पर तोरण भी लगे थे। मानो सारे लोग मेरा स्वागत करने के लिए उत्सुक थे। मैंने हरिजनों के घर देखे, ब्राह्मणों के घर देखे, कोमटियों के और रेड्डियों के भी घर देखे। हरएक घर में मैंने वही चीज देखी। हरएक घर में खाने-पीने की चीजें होती हैं, नहाने-धोने की जगह होती है। इस तरह हरएक घर में वही नाटक चलता है, लेकिन किसीके घर में खाने के लिए कुछ विशेष मिलता नहीं है, तो किसीके घर में ज्यादा खा-खाकर बीमार पड़ते हैं। मतलब एक ही, गाँव के एक हिस्से में कुछ लोग चने खाकर रहें और दूसरे हिस्से में मिठाइयाँ खाकर बीमार पड़ें, ऐसा क्यों होता है? इसलिए

होता है कि हम एक-दूसरों की चिंता नहीं करते हैं। होना यह चाहिए कि सब मिलकर सबकी चिंता करते हैं।"

सब जमीन सबकी

अंत में भूमि के संबंध में अपना विचार समझाते हुए कहा : "आज ही एक भाई मेरे पास आये, कहने लगे कि मेरे पास जमीन नहीं है, जमीन दिलाओ। आपके इस मुल्क में जाहिर हो गया है कि मैं जमीन देनेवाला हूँ। और हर गाँव में कुछ-न-कुछ भूमि लेता हूँ और वहीं दूसरों को देता हूँ। लेकिन आज आपके इस गाँव में मुझे कुछ मिला ही नहीं है। कहते हैं कि यहाँ किसीके पास ज्यादा जमीन ही नहीं है। किसीके पास ५० एकड़ है, तो किसीके पास ४० एकड़। तो मैं कहता हूँ कि जिसके पास कुछ भी नहीं है, उससे ५० एकड़ जिसके पास है, वह ज्यादा है या नहीं ? ५०० एकड़वाले से ५० एकड़वाले की जमीन कम है, लेकिन जिसके पास शून्य एकड़ है, उससे ५० एकड़वाले के पास बहुत ज्यादा है। तो जिसके पास ५० एकड़ है, वह २-४ एकड़ क्यों नहीं देता ? तो आखिर एक भाई ने ५ एकड़ जमीन दी है, ऐसी इत्तिला मुझे मिली। इस पाँच एकड़ में से अब किसीको देना है, तो दे सकता हूँ। लेकिन भाइयो, इससे मसला हल नहीं होगा। मसला तो तभी हल होगा, जब गाँव की जितनी जमीन है, वह सबकी मिलकर है, ऐसा आप समझेंगे।

परमेश्वर की योजना

"तो मैं कहना यह चाहता था कि यहाँ जितनी जमीन है, उसमें सब मिलकर पैदा करें और सब मिलकर खायें। जिसके पास ५० एकड़ जमीन है वह, और जिसके पास कुछ जमीन नहीं है वह, दोनों एक साथ काम करेंगे और दोनों एक साथ भोगेंगे। फिर यह लेने-देने का मामला ही नहीं रहेगा। लेकिन जब तक लोगों की अलग-अलग ज़मीन पड़ी है, तब तक जिसके पास ५० एकड़ है, वह यदि थोड़ी-सी देता है, तो उस देने-

वाले को भी लाभ होता है। मुझे तो कई गाँवों में छोटे-छोटे लोगों ने दान दिया है। अगर यहाँ जमीन माँगनेवाले पड़े हैं, तो देनेवाले होने ही चाहिए। यह परमेश्वर की योजना है। जहाँ वह भूख पैदा करता है, वहाँ खिलाने की व्यवस्था भी करता है। तो अगर गाँव में माँगनेवाला है, तो देनेवाले क्यों नहीं होने चाहिए ? इसलिए माँगनेवाला मिल जाय, तो उसको दे ही डालना चाहिए। जो देता है, वह जबरदस्ती से नहीं देता है, प्रेम से देता है। जिसने ५ एकड़ जमीन दी है, उसने ५ हजार दान दिया है। लेकिन ५ हजार दान दिया है तो ५ लाख का प्रेम कमाया है। तो ऐसा देनेवाला होगा, तो उसके वास्ते लोग मर मिटने के लिए तैयार होंगे।

प्रेम का उदय

"जिनके पास धन है, वे रात को सोते समय अपने घर के सारे दरवाजे खुले रखकर सोते हैं, ऐसा होना चाहिए। उनकी रक्षा करने का जिम्मा सारे गाँव का होगा। उनका घर और उनका धन गाँव के लिए एक पवित्र स्थान होगा। पवित्र स्थान का रक्षण सारे लोग करते हैं। यह केवल मैं कल्पना की बात नहीं करता हूँ। पाँच हजार साल पहले हिन्दुस्तान के धनवान् लोग दरवाजे खुले रखकर सोते थे, ऐसा ग्रीक लोगों ने इतिहास में लिखा है। तो जहाँ के श्रीमान् उदार होते हैं, वहाँ उनकी रक्षा गरीब करते हैं। तब उन श्रीमानों को धन की रक्षा की फिक्र नहीं होती है। ऐसी स्थिति आज भी आ सकती है। कोई प्रयोग करके देखे कि उसमें क्या आनन्द है। फिर कम्युनिस्टों का कोई डर नहीं रहेगा। और पुलिस का भी कोई काम नहीं रहेगा। और ये पुलिस अपने बिस्तर उठाकर हैदराबाद चले जायेंगे और कम्युनिस्ट पहाड़ और जंगल छोड़कर अपने-अपने गाँव में रहने के लिए आयेंगे। वे समझ जायेंगे कि श्रीमानों के हृदय में प्रेम का उदय हो गया है।"

● ● ●

क्या माँगने से कोई देता है? : २६ :

राजपेठ

९-५-'५१

पड़ाव पर पहुँचते ही थोड़ा आराम लेकर विनोबा गाँव-प्रदक्षिणा के लिए निकल पड़े। अधिक मकान हरिजनों के ही हैं। कई मकानों के भीतर भी गये। हर मकान साफ-सुथरा, लाल मिट्टी से लिपा-पुता। सफेद खड़ी के अलपनाओं से सजाया हुआ। घरों में बड़े-बड़े नाँद, जिनमें अनाज तथा अन्य वस्तुओं का संग्रह। प्रायः सभी मकान बिना दरवाजों के, फिर ताला-कुंजी का सवाल ही क्या? द्वारों के अभाव में भी तोरण तो हर घर पर सजा था। दीवारों पर मिट्टी के ढेले रखकर उनमें आड़ी लकड़ी दे दी गयी थी, जिस पर तोरण खूब फब रहे थे।

कमरे में पहुँचते ही हवा की कमी पायी, तो दम घुटने लगा। फौरन बाहर निकल आये, तो ग्रामवासियों की भीड़ पायी। एक वृक्ष के चबूतरे पर तथागत की तरह उदासीन बैठ गये। सुख-दुःख की चर्चा शुरू हुई।

"जमीन किन लोगों के पास नहीं है? हाथ ऊँचा करें।"

बीस हाथ उठे।

"जिनके पास है, वे भी ऊँचा करें।"

कुछ हाथ उठे। कुछ संकोच से उठे-न-उठे-से प्रतीत हुए।

किसके पास कितनी जमीन है, इसकी भी चर्चा हुई। खुला दरबार था। कोई बात छिप नहीं सकती थी। बड़ी जमीनवाले कोई विशेष थे नहीं, सिवा एकआध के।

विनोबा ने अपनी यात्रा का हेतु समझाया और बेजमीनों के लिए जमीन की माँग की, तो एक भाई ने पूछा :

"क्या माँगने से भी कोई जमीन देता है ! लोग तो डंडे से ही मान सकते हैं।"

विनोबाजी ने उस आदमी की बात अपनी ओर से दुहराते हुए पूछा : "क्या यह सही है कि बिना डंडे के दान नहीं मिल सकता ? क्या आप लोगों के बीच कोई नहीं है, जो भू-दान में अपना भी हिस्सा देवे ?"

सुदामा के तंदुल

विनोबाजी हिन्दी में बोल रहे थे। लक्ष्मी बहन तेलुगु में समझा रही थी। लोग कुछ असमंजस-से विनोबा की ओर देख रहे थे। कुछ क्षण ऐसे ही बीते। भौतिक निगाहों को निष्क्रिय दीखनेवाले वे क्षण थे, पर किसी शक्तिशाली अव्यक्त प्रक्रिया से खाली नहीं थे। थोड़ी ही देर बाद उसकी फलश्रुति प्रकट हुई। विनोबाजी ने एक भाई को खड़ा रहने के लिए कहा :

"क्यों कुछ जमीन रखते हो ?"

"जी।"

"कितनी ?"

"सिर्फ एक एकड़।"

"परिवार में प्राणी कितने हैं ?"

"दस।"

"निर्वाह कैसे चलता है ?"

"मजदूरी से।"

"अपने भूमिहीन पड़ोसी को कुछ देना चाहोगे ?"

बेचारा असमंजस में पड़ गया। एक एकड़ में से क्या देता ? विनोबाजी ने अपनी बात जारी रखी : "देखो, संकोच की बात नहीं है। एक एकड़ का अर्थ चालीस गुंठा होता है न ? एक गुंठा दे सकते हो ?"

"अगर एक गुंठे से समाधान हो सकता है, तो ले लीजिये सरकार।"

"अरे, ये सुदामा के तंदुल हैं। वह भाई कहता है न कि माँगने से

नहीं मिलेगा। देखो, यहीं उसे माँगने का चमत्कार दिखाई देगा। थोड़ा-थोड़ा सब दें, जिनके पास कम है वे कम दें, अधिक है वे अधिक दें, बिना दिये कोई न रहे।"

और फिर बूँद-बूँद बरसना शुरू हुआ। साठ आदमियों ने मिलकर ३० एकड़ का दान दिया। जिसने यह कहा था कि 'माँगने से कोई नहीं देगा', उसने भी अपने दस एकड़ में से एक एकड़ दे दिया।

जिनके पास ज्यादा जमीनें थीं, वे गैरहाजिर थे। परन्तु कमवालों से भी विनोबाजी ने इतना सब सहज प्रेम-भाव से प्राप्त कर लिया था। एक-एक एकड़वालों से भी एक-एक गुंठा मिल चुका था। "अधिक जमीनवालों की चिंता नहीं है। वह तो आज नहीं, तो कल मिलने ही वाली है।"

आठ बजे दही लेते हैं। परंतु आज साढ़े नौ बज गये। दरिद्र-नारायण को जमीन का भोजन चाहिए था और वह मिल रहा था। सेवक लोग बराबर पंद्रह-पंद्रह मिनट से दही की याद दिलाते गये--आग्रह करते गये--नाराजी की जोखिम उठाकर भी पूछते गये--परन्तु सामने मानो प्रत्यक्ष भगवद्-दर्शन था, तो उसकी तुलना में दूध-दही की परवाह कौन करता ?

भीतर आये, दही लेकर सो गये। इधर बात-की-बात में गाँवभर में बात फैल गयी। स्त्रियों की भावनाएँ उमड़ आयीं। घर-घर की स्त्रियाँ आरती लेकर आने लगीं। विनोबाजी तो सो रहे थे। हम लोगों ने रोकना उचित न समझा। माताएँ बहनें आतीं--आरती उतारकर, आम रखकर भक्तिभाव से प्रणाम करके चली जातीं। करीब एक घंटे तक यह चलता रहा।

तीन बजते ही विनोबा ने पूछा : "अर्जियाँ नहीं आयीं ?" कोर्ट का काम आज तीन के बजाय साढ़े तीन बजे शुरू हुआ। तीस-तीस, चालीस-चालीस बरस पुराने झगड़ों के फैसले किये गये। एक भाई ने दूसरे

एक गरीब किसान की जमीन पर जबरन कब्जा कर लिया था। किसान भी तंग आकर दूसरे गाँव मजदूरी करने चला गया। बड़े जमींदार ने कहा कि यदि किसान इस गाँव में आकर रहने को तैयार हों, तो मैं जमीन लौटाने को तैयार हूँ। किसान राजी हो गया। जमीन लौटा दी गयी। इस तरह अनेक मामले, जो कानून के सहारे सुलझ ही नहीं सकते थे, सुलझा दिये गये।

जब का तब

रोज जो दान-पत्र प्राप्त होते हैं, विनोबाजी उन पर उसी वक्त अपने दस्तखत कर देते हैं। आज शाम को देर तक दस्तखतों के लिए दान-पत्र नहीं आये। उनकी खानापूर्ति नहीं हो पायी थी, जो हो जानी चाहिए थी। इसमें कार्यकर्ताओं की कसौटी होती है। परन्तु विनोबाजी इसके लिए तैयार नहीं कि दान-पत्र बिना दस्तखत किये दूसरे रोज के लिए रह जायँ। उन्हें इस विलंब में दरिद्रनारायण का नुकसान दिखाई देता है। अतः कार्यकर्ताओं को आगाहकरते हुए उन्होंने कहा : "जिस दिन के दस्तखत उसी दिन होने चाहिए। दूसरे रोज दस्तखत करवाने की अपेक्षा मुझसे नहीं रखनी चाहिए।" चार रोज के दान-पत्रों पर दस्तखत होना बाकी था। दौड़-धूप करके कुछ आज, कुछ कल दस्तखत पूरे करवाये।

शाम को प्रार्थना के बाद भजन-कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। गरबर दाडिया, डबेल्स आदि अनेकविध साधनों से भजन-कीर्तन, नृत्य किया गया। देहातों में होनेवाले ऐसे कार्यक्रमों के लिए विनोबाजी जरूर समय निकाल लेते हैं।

द्रव्य की व्याख्या

सायंकाल के प्रवचन में विनोबा ने प्रारंभ में सबेरे की घटना का जिक्र किया और गाँववालों को बधाई दी। जबरदस्ती और प्रेम का फर्क समझाया। फिर मोदक की मिसाल देकर कहा कि "मोदक की तरह संपत्ति भी समाजरूपी शरीर में सतत एक स्थान से दूसरे योग्य स्थान पर बहती

रहनी चाहिए। इसीलिए तो उसका नाम द्रव्य है।" सामने बैठे हुए छोटे-छोटे बच्चों से उन्होंने पूछा :

"कहो, तुम्हें हम लड्डू दें खाने के लिए, तो मुँह में डालोगे या हाथ में पकड़े रहोगे ?"

"मुँह में डालेंगे।"

"केवल हाथ ही में धरे रहोगे, तो क्या होगा ?"

"हाथ बेकार हो जायगा।"

"केवल हाथ या सारा शरीर ?"

"सारा शरीर।"

"और केवल मुँह में धरे रहो, तो ?"

"तब भी वही होगा।"

"और पेट में धरे रखो तो ?"

"पेट का आपरेशन करना होगा।"

"संपत्ति को भी इसी तरह समाज में और समाज के कल्याण के लिए सदा-सर्वदा बहते रहने दो। नहीं तो जो कुछ होगा उसका अनुभव अब तेलंगानावालों को हो चुका है।"

तूफ़ानी हवा में शाम की प्रार्थना हुई। सबने खड़े-खड़े प्रार्थना और प्रवचन में हिस्सा लिया। बारिश के बावजूद यह ऊपर का संवाद भी हुआ। आसमान में बिजलियाँ चमकती थीं। तूफ़ान और अँधेरे में आशा की किरण जो थी।

यहाँ से ८ मील पर कल ही नलगुंडा जाना है। नलगुंडा, जो कम्युनिस्ट-आंदोलन का केन्द्र है। उसीके समीप के एक देहात में यह आज की घटना घटी थी। तेलंगाना में छाये तूफ़ान और अंधियारे में मार्ग-दर्शन करनेवाली यह आशा की किरण थी। ● ● ●

जमीन नहीं, जीवन भी : २७ :

नलगुंडा
१०-५-'५१

नल, नील, जामवन्त आदि वानर-सेना के स्मारक के रूप में ही शायद इन पहाड़ों को ये नाम मिले थे। मूल शब्द है "नल्लकुंडा" याने काला पहाड़। शहर दो ऐसे बड़े काले पहाड़ों के बीच बसा है। दूर से ही दिखाई देने लगता है। कहावत की बात छोड़ दें, तो भी पहाड़ दूर से भी बड़े सुहावने प्रतीत हो रहे थे। दो मील तक स्वागत-समारोह, उद्घोष, लता-पल्लवों के द्वार, पुष्प-वर्षा, सब होता रहा। कम्युनिस्ट-आन्दोलन के इस केन्द्र में राम के भक्त का कीर्तन-भजन से अभूतपूर्व स्वागत हुआ।

जैसे दो सुन्दर पहाड़ों के बीच यह शहर बसा है, वैसे ही एक अति-रम्य मनोहर तालाब भी इससे सटा हुआ है। कुछ अच्छे मंदिर भी यहाँ खड़े हैं, जो करीब एक हजार बरस से अधिक पुराने हैं। मूर्तियों की शिल्प-कला से एलोरा का स्मरण ताजा हो आता है। एक विशाल मंदिर के द्वार पर दो बड़े हाथी खड़े हैं। भीतर अनेक स्तंभ हैं, जिन पर अनेक पौराणिक कथाएँ भी खुदी हुई हैं, जो लोकमानस पर दिखाई देनेवाले धर्म-विचार की प्रभाव के साक्षी हैं।

परंतु इधर की घटनाओं ने तो साफ कर दिया था कि लोक-जीवन से अछूता रहनेवाला धर्म बहुत देर तक लोकमानस पर हावी नहीं रह सकता। यही कारण है कि स्वभाव से हिंसा के प्रति रुचि न रखते हुए भी लोगों के द्वारा यहाँ इतना हिंसाकांड हो गया। परंतु उनकी भावनाओं को पहचाननेवाला और उनके दुःख-दर्द का इलाज बतानेवाला वैद्य उन्हें मिल गया, तो उनकी सहृदयता प्रकट होने लगी और यह जो ऊपर-ऊपर की आवेशपूर्ण लहरें थीं, वे विलीन होने लगीं।

कम्युनिस्टों के साथ नलगुंडा-जेल में

पड़ाव पर पहुँचते ही विनोबाजी जेल में कम्युनिस्ट राजबन्दियों से मिलने गये। जाना-आना और तीन मील हुआ। सबेरे करीब आठ-नौ मील चल ही चुके थे।

हैदराबाद-जेल के बाद कम्युनिस्टों के साथ यह दूसरी मुलाकात थी। बन्दियों की बातचीत का स्तर हैदराबादवालों से भिन्न था। वहाँ विनोबाजी से उनकी बात समझने की वृत्ति प्रकट हो रही थी। हैदराबाद के लोक-जीवन में आयी हुई चिन्ताजनक परिस्थिति को सुधारने के लिए मार्ग-संशोधन की इच्छा दिखाई दे रही थी। जिम्मेदार, विचारवान्, किन्तु लाचार लोगों से बात हो रही है, ऐसा आभास वहाँ हो रहा था। इसी बीच विनोबाजी ने जगह-जगह अपनी प्रार्थना-सभाओं में कम्युनिस्टों का आवाहन किया था कि मेरी तरह खुलेआम घूमो, प्रेम से समझाओ, माँगो और पाओ। हिंसा को त्यागो, अहिंसा को अपनाओ। नलगुंडा-जेल में सींखचों के भीतर भी विनोबाजी के विचार पहुँच चुके थे; लेकिन मुलाकात की बात-चीत से जाहिर था कि क नस्ट भाई उन विचारों से विनोबाजी के प्रति अधिक रुष्ट हुए थे। उनको लग रहा था, मानो विनोबाजी उनकी बुनियाद ही आमूल उच्छेदित करना चाहते हैं। इसलिए विनोबाजी की पदयात्रा और उनका विचार-प्रचार सब उनके लिए असह्य हो गया था। फलतः कम्युनिस्ट मित्रों ने तेलुगु में एक पत्रक निकालकर विनोबाजी के प्रति अपना तीव्र विरोध प्रकट किया था और भू-दान में मदद न करने के लिए तेलंगाना की जनता के नाम अपील की थी। बातचीत के सिलसिले में इन सब बातों का भी जिक्र हुआ। विनोबाजी ने समझाया कि प्राप्त परिस्थिति में, जब कि चुनाव आनेवाले हैं, और अपना-अपना विचार समझाकर जनता का निर्णय प्राप्त करने का प्रजासत्तात्मक मार्ग सबके लिए खुला हुआ है, हिंसक तरीके को छोड़कर विचार-परिवर्तन के मार्ग को

अपनाने में उन्हें क्यों संकोच होना चाहिए ? अगर उनके विचारों में बल होगा, तो लोग उनकी बात सुनेंगे और उनको अपना प्रतिनिधि बनाकर धारासभा में भेजेंगे, जहाँ वे चाहेंगे, वैसी भूमि-व्यवस्था कर सकेंगे। लेकिन विनोबाजी की बात सुनने के लिए इन भाइयों में आवश्यक धीरज का अभाव था। उन्होंने विनोबाजी पर आक्षेप भी लगाये कि वे जमींदारों को पुनः प्रतिष्ठा देने के लिए आये हैं। क्रांति को उनके कार्यक्रम से धक्का पहुँच रहा है। प्रारंभ में उन मित्रों का रुख कुछ गरम ही रहा। परंतु विनम्र विनोबा की साफगोई ने उनके हृदयों में प्रवेश किया ही, जिसके कारण विनोबा खाली हाथ नहीं लौटे। विनोबाजी ने उन लोगों के मुँह से कहलवा ही लिया कि ठीक है, हम लोग कुछ समय के लिए आपको मौका देते हैं, आप अपने तरीके को भी आजमा लीजियेगा। जो अपने को विरोधी समझते हैं, उनकी भी सहानुभूति प्राप्त करके आगे बढ़ने का विनोबाजी का यह राजमार्ग था।

जेल में विनोबाजी कम्युनिस्ट बहनों से भी मिले। औरंगाबाद के श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की पत्नी भी यहाँ कैद थी। और भी कुछ बहनें थीं। हम लोगों ने श्री विद्यालंकार के स्वास्थ्य आदि की खबरें उन्हें सुनायीं। कुछ शिकायतें हों, तो सुनने की इच्छा प्रकट की। कम्युनिस्ट भाइयों की तरह उनके साथ भी बातें करने की आवश्यकता हो तो विनोबाजी तैयार थे, यद्यपि समय बहुत हो गया था। बहनों की ओर से श्रीमती चंद्रगुप्त ने ही बातें कीं। उस बहन की मुद्रा पर जेल-जीवन का कोई असर नहीं था। उसके हर शब्द में उसकी दृढ़ता टपक रही थी। उसने अपनी कोई शिकायत नहीं बतायी। यही कहा कि सरकार और जमींदार की ओर से गरीबों पर इतने जुल्म लादे जा रहे हैं। ऐसी हालत में विनोबाजी क्यों उम्मीद करते हैं कि उन लोगों से जनता का भला होगा ? कम्युनिज्म के सिवा लोगों का कल्याण नहीं होगा। प्रारंभ में उसके शब्दों में आवेश था, आँखों में ज्वाला थी, परंतु विनोबा की बातचीत ने उसे शांत किया।

किसी संत से मिलने का शायद उसका यह पहला ही प्रसंग था। **'क्षणमिह सज्जनसंगतिरेका, भवति भवार्णवतरणे नौका'** की याद आ रही थी।

विचार से ही विचारक को समझाना संभव

दोपहर को नगर के जमींदारों से बातें हुईं। विनोबा ने समझाया :

"दो-तीन वर्षों से हम आपके यहाँ के कम्युनिस्ट-आंदोलन के बारे में सुनते रहे हैं। इसके पहले ही आने का सोचा था, अगर अब और अधिक देर करते, तो इस मसले का शांतिमय हल निकलना मुश्किल हो जाता। यहाँ की समस्या मिलिट्री और पुलिस से हल होनेवाली नहीं है। जहाँ विचार का सवाल है, वहाँ पुलिस क्या कर सकती है? कम्युनिज्म केवल हथियारों के आधार से तो नहीं बढ़ पाया है। वह तो अपने विचार के कारण इतना फैला है। इसलिए हमें भी लोगों को अपना विचार समझाना चाहिए। विचार-क्रांति से ही यह मसला शांतिमय तरीके से हल हो सकता है। विचार समझाने के लिए हमें गाँव-गाँव लोगों के पास पहुँचना होगा और पैदल ही पहुँचना होगा। लोगों से मिलना होगा। उनका सुख-दुःख समझना होगा। आज पचीस रोज हुए, हमने करीब एक सौ गाँव अपनी आँखों से देखे। पदयात्रा द्वारा परिस्थिति का जो चित्र हम देख सके, वह दूसरे किसी तरीके से हरगिज नहीं देख पाते।

"हैदराबाद से चलते समय हमने वहाँ की जेल में कम्युनिस्ट भाइयों से भेंट की। आज यहाँ भी उनसे मिले। ये कम्युनिस्ट भी हमारे भाई ही हैं। हमें चाहिए कि उनके विचारों को समझें, अपने विचार भी उन्हें समझायें। विचारों की छननी होना जरूरी है। अगर कोई यह समझता हो कि कम्युनिस्टों को मार डालने से कम्युनिज्म खतम हो जायगा, तो वह भ्रम में है। विचार से ही विचार करनेवाले को समझाया जा सकता है। जो कम्युनिस्ट नेता जेल में हैं, वे पिस्तौल की नीति को ही मानते हैं, ऐसा नहीं है। मेरी उनसे काफी बातें हुई हैं। मेरा विचार वे समझ गये हैं।

गांधीजी का विचार

"हमें गांधीजी ने जो विचार दिया है, उसमें हमें इस समस्या का हल दिखाई देता है। अब दुनिया में दो ही विचार चलनेवाले हैं और उन्हींमें मुकाबला होनेवाला है। अगर श्रीमान् और गरीब का भेद रहा, तो वह देश के लिए ठीक न होगा। हम कहना चाहते हैं कि वह भेद यहाँ हमने देखा है और इसलिए अनेकविध तरीकों से हमने लोगों को अपना विचार भी समझाया है। हम जमीन को माता कहते हैं, परंतु यहाँ तो हमने देखा कि चंद लोग उस पर कब्जा किये हुए हैं और अनेक लोग भूमिहीन हैं। तो, हमने लोगों से बातें कीं और पचीस रोज में करीब पचीस सौ एकड़ जमीन भी हमें मिली।

जीवन-दान के लिए आवाहन

"परंतु हमें केवल जमीन नहीं चाहिए। जमीन तो एक संकेत है—इशारा भर है। आखिर केवल जमीन दे देने से काम पूरा नहीं होगा। हमें तो जीवन चाहिए। इसलिए हमने तो लोगों को जीवन देने के लिए भी आवाहन किया है। माता-पिता के हाथ में बच्चों का जीवन सुरक्षित रहता है। बुद्धिमान् और साधनवान् लोगों को भी चाहिए कि देहात के लोगों के जीवन की जिम्मेदारी अपने ऊपर लें। आप लोग जो शहरों में रहते हैं, ऐसे साधन भी रखते हैं। इसलिए आप चाहें, तो यह कम्युनिज्मवाला मसला आसानी से हल कर सकते हैं।

देते रहने का उसूल

"श्रीमान् और गरीब, दोनों के हित परस्परविरोधी हैं, यह विचार गलत है। यह तो आज की समाज-व्यवस्था का दोष है, जो ऐसा विरोध दिखाई देता है। इस विरोध को मिटाने का मार्ग है—देते रहने का उसूल। इसलिए आप लोगों से भी मेरा कहना है कि आपको देना चाहिए। देते रहना चाहिए, यह उसूल सभीने समझाया है। फकीरों ने, साधु-संतों ने, सबने। आप नलगुंडा के नागरिक हैं। आप पर तो अधिक जिम्मेदारी है।

सहकार का अभाव

"हम लोगों में परस्पर सहकार का बहुत अभाव रहता है। हम आपस में बैठकर सोचते नहीं। जमींदार और जनता में सहकार नहीं। सरकार और जनता में सहकार नहीं। इन सबमें आपस में मेल-जोल नहीं। यहाँ तक कि कार्यकर्ता-कार्यकर्ताओं में भी आपस में मेल-जोल नहीं। संस्थाओं में भी आपस में विचार-विनिमय और सहकार नहीं। नहीं तो देश की शक्ति जो बिखर रही है, ये जो टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं, वे न होते। पहले तो ये कांग्रेसवाले प्रायः गांधीवाले ही थे। उनमें से ही समाजवादी बने। उनमें से ही साम्यवादी भी बने। अब कांग्रेसवालों में भी आपस में पक्ष-भेद बढ़ते जा रहे हैं। इस तरह अधिकाधिक टुकड़े होते ही जा रहे हैं। नतीजा यह हो रहा है कि सबकी शक्ति नष्ट हो रही है और देश का नुकसान हो रहा है।"

देने की त्रिविध मर्यादा

अपने भाषण में विनोबाजी ने कानून की निरर्थकता पर भी प्रकाश डाला : "कानून से जो मिलेगा, वह प्रमाण में कम-से-कम होगा—एक मर्यादा में ही मिलेगा। परन्तु मैं तो गरीबों से भी ले रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि जिसको हाथ मिला है, उसे देने का सुख भी मिलना चाहिए। कानून से जमीन का मसला हल नहीं होगा और न तो कम्युनिज्म का ही होगा। कम्युनिज्म का मसला तो देने से हल होगा, उदार दिल से और सतत देते रहने से।"

देने की त्रिविध मर्यादा भी बनायी

१. झगड़ेवाली जमीन मत दो,

२. दूसरे का देखकर मत दो,

३. केवल जमीन देकर ही समाधान मत मानो।

सौ एकड़वाला अपनी पूरी सौ एकड़ जमीन देकर संन्यासी फकीर भी बन सकता है और अपना जीवन भी दे सकता है।

आश्वासन

नलगुंडा जिले का स्थान था। सरकारी अधिकारी ऐसे तो बीच के पड़ावों पर भी बराबर मिलने आते थे, परन्तु यहाँ तो सभी पुनः मिलने आये और जिले की परिस्थिति के बारे में विचार-विनिमय किया। अब तक जो-जो शिकायतें पुलिस के बारे में आयी थीं, वे उनकी निगाह में लायी गयीं। लोगों से जबरदस्ती 'येट्टी' याने बेगार ली जाती थी; आइन्दा के लिए हिदायतें दी गयीं कि येट्टी कतई नहीं ली जायगी। बंजारे लोगों के गिरोह की तकलीफें थीं; उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार जमीनों पर बसाना तय हुआ। नारायण स्वामी और संन्यास रेड्डी ने पैसा भी खूब वसूल किया था और जुल्म भी खूब बढ़ाया था। उन्हें नौकरी से रुखसत दी गयी। जो शिकायतें यात्रा के दरमियान ध्यान में आयी थीं, अधिकारियों को बतायी गयीं, और उन्होंने जहाँ फौरन अमल करना था, अमल किया। जहाँ जाँच की आवश्यकता थी, जाँच का प्रबन्ध करके शीघ्र कार्यवाही का आश्वासन दिया। कम्युनिस्टों ने शिकायत की थी कि उनके व्यक्ति-स्वातन्त्र्य की दरखास्तें बीच में ही पुलिस द्वारा दबा ली गयी हैं। यह बहुत गंभीर शिकायत थी। कलेक्टर तथा पुलिस, दोनों ने इस बारे में आश्वासन दिया कि फौरन जाँच करके आवश्यक कार्यवाही की जायगी। इसके सिवा सिंचाई आदि के बारे में भी कहा गया। गाँव-गाँव के लोग भी आये थे कि हमारी शिकायतों के बारे में क्या किया जाता है। उन लोगों को भी अधिकारियों से मिला दिया गया। सभी प्रकार से लोगों को आश्वासन मिलता गया। जिले में कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनों के कारण जो आतंक और भय छाया हुआ था, उसके निवारण में इससे काफी मदद पहुँची। बातें मामूली थीं, परंतु भय के वातावरण में बड़ी आश्वस्त करनेवाली थीं।

जेल के कम्युनिस्ट भाइयों ने शिकायतें की थीं कि उन्हें पानी अच्छा और पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता, अखबार नहीं दिये जाते, किताबें नहीं मिलतीं, बाहर सोने नहीं दिया जाता तथा मुलाकातें नहीं दी जातीं।

इन शिकायतों के बारे में भी अधिकारियों से बातें हुईं और ये सभी शिकायतें फौरन दूर कर दी गयीं।

जाग्रत किसान खामोश न बैठेगा

हैदराबाद की उस विशाल सभा के बाद आज की यह पहली सभा थी, जहाँ विनोबा के भाषण का तेलुगु में अनुवाद नहीं करना पड़ा। स्त्रियाँ भी कसरत से हिंदी-उर्दू जाननेवाली थीं। एक माह के बाद विनोबाजी अखंड प्रवाह से बोल सके और अपने भावों को सीधे जनता तक पहुँचा सके। विनोबाजी ने बताया कि कैसे कम्युनिस्ट-आंदोलन के कारण भारत के कोने-कोने में नलगुंडा का नाम पहुँच चुका है। अगर यही परिस्थिति जारी रही, तो देश को कितना खतरा है, इसकी कल्पना भी उन्होंने दी। इसका इलाज बताते हुए उन्होंने भू-दान-यज्ञ का महत्त्व समझाया और बेजमीनों को जमीन देने का आवाहन किया : "अगर यह जमीन का मसला हल न हुआ और शान्तिमय तरीके से हल न हुआ, तो सदियों की नींद के बाद जो किसान जाग उठा है, वह खामोश न बैठेगा। फिर उसके असन्तोष का परिणाम सारे देश को भुगतना पड़ेगा।"

उन्होंने कम्युनिस्ट भाइयों के साथ की बातचीत का भी जिक्र किया और उनके ध्येय का औचित्य मानते हुए भी उनके रास्ते को ग़लत बताकर लोगों को उनके दबाव में न आने की सूचना दी।

जेल के अधिकारियों ने आज दो राजबंदी कम्युनिस्ट बहनों को रिहा भी कर दिया था, जो जेल से सीधे विनोबाजी के पास मिलने आ पहुँची थीं। दोनों ननद-भौजाई थीं—कम्युनिस्ट-विचारों से भरी हुईं। दो साल से जेल में थीं। दोपहर को जेल में इनसे भेट भी हुई थी। इनके भाई, पति आदि परिवार भी कम्युनिस्ट-विचारों का है और जेल में ही है। विनोबा ने बहुत देर तक उनसे बातें कीं। रात में वे वहीं पद-यात्री दल की बहनों के साथ रहीं तथा सबेरे अपने गाँव सूर्यपेठ चली गयीं। उन्हें अपने घर सुरक्षित पहुँचाने की सारी सुविधाएँ कर दी गयीं।

मृत्यु से डरना नहीं है

सोने के पहले एक पिता-पुत्र विनोबाजी से मिलने आये। कितने ही दिनों से वे अपना गाँव छोड़कर नलगुंडा आकर बसे थे। विनोबा के भाषण से प्रभावित होकर वे सलाह पूछने आये कि क्या किया जाय। विनोबाजी ने कहा : "निर्भय होकर जरूर अपने गाँव जाओ, गाँववालों का प्रेम संपादन करो। मृत्यु से डरना नहीं है, इतना याद रखो।" दोनों ने हिम्मत की—तय किया कि जायँगे। उठते समय नमस्कार किया और सौ एकड़ का दान-पत्र भी भेंट किया। ●●●

प्रेमगढ़ी उत्तमगढ़ी : २८ :

पज्जोर
११-५-'५१

क्या भगवान् की कोई अलग जगह होती है ?

उस रोज, नलगुंडा के उस ओर, राजपेठ में हमने लोगों की भक्ति-भावना का दर्शन किया। एक एकड़वाले ने भी एक गुंठा दिया और छोटे-छोटे भूमिवानों ने तीस एकड़ दिया। आज नलगुंडा के समीप का ही दूसरा गाँव पज्जोर है, यहाँ भी भारतीय संस्कृति का अद्भुत दर्शन हुआ। छोटा-सा गाँव है, साफ-सुथरा लिपा-पुता। गाँव की रक्षा के लिए एक गढ़ी भी है। ग्राम-प्रदक्षिणा के लिए विनोबा निकले, तो बीच-बीच में कुछ घरों में प्रवेश करते गये। लोगों की रहन-सहन निहारते गये। नाई के घर गये, कुम्हार का घर देखा, हरिजनों के घरों को निहारा। कहीं पूजा का सामान देखा, कहीं दूध-दही की हँडियाँ देखीं, हरिजन बालकों को देखा कि चेचक से भरे पड़े हैं। सबको बड़ा क्लेश हुआ। एक बहन के घर पोतना का भागवत, गीता की पुस्तक आदि भी देखी। उससे सहज पूछा : "तुम्हारा भगवान् कहाँ है ? जगह बताओ।" अर्थात् विनोबाजी तो उसके घर का 'देवालय' या 'उपासना' का स्थान देखना चाहते थे। उस बहन ने विनोबा की आँखों में अपनी आँखें गड़ाकर प्रति-प्रश्न पूछा : 'क्या भगवान् की कोई अलग जगह होती है ? वह तो विश्वव्यापी है। उसके लिए देवालय की क्या जरूरत ? मेरा भगवान् तो मेरे साथ ही रहता है।"—इतना कहकर वह बड़ी तेजी से भीतर गयी। 'आज मेरे घर संत के चरण लगे हैं। सबको प्रसाद लेना होगा'—कहकर

उसने अपनी हँडिया का दही सबको बाँट दिया। विनोबा ने भी सबके साथ प्रसाद ग्रहण किया।

भारत के इस पुरातन वैभव को इन छोटे-छोटे गाँवों में आज भी ऐसा सुरक्षित पाकर हृदय भक्ति-भाव से ओत-प्रोत हो जाता है। यह है हमारी संस्कृति और शिक्षा का नमूना। क्यों न ऐसी माताओं की कोख से आत्मज्ञानी संतान निपजेगी? वह बहन डेरे पर भी आयी। विनोबाजी को उसने भजन भी सुनाये। उसका वह मकान-बैठक और रसोई के बीच के द्वार पर एक हाथ टेककर उसका खड़ा रहना—उसकी वह भव्य मूर्ति, आबदार आँखें, निःसंकोच व्यक्तित्व, विनोबाजी के साथ की उसकी बातचीत और अंत में दही-मही वितरण, सारा दृश्य आज भी चित्त पर कैसा सजीव अंकित है।

लक्ष्मी बहन का स्वास्थ्य आज ठीक नहीं था। हम लोगों को अनुवाद की चिंता थी, क्योंकि हर कोई विनोबा के भाषण का अनुवाद नहीं कर सकता। उन्होंने शब्द-रचना और भावों को अब ठीक समझ लिया है और तद्रूप होकर अनुवाद करती हैं। विनोबा भी उनके स्वास्थ्य की चिंता कर रहे थे कि इतने में मंच पर लक्ष्मी बहन आ पहुँचीं और नित्य की भाँति अनुवाद करने बैठ गयीं। तेलुगु में स्थितप्रज्ञ के श्लोक आदि सारी प्रार्थना होने के बाद विनोबा ने प्रारंभ में उस देहात को देख जो खुशी उन्हें हुई थी, उसे प्रकट किया। फिर गाँववालों के साथ की बातचीत का जिक्र करते हुए पाँच पांडवों की तरह एकरूप होकर, एक-कुटुंब-भावना से रहने की प्रेरणा दी। पांडव पाँच ही थे, फिर भी जंगलों में भी वे अपनी रक्षा कर सके; क्योंकि वे किसी और गढ़ी के सहारे नहीं रहते थे, केवल प्रेम-गढ़ी ही उनकी एकमात्र गढ़ी थी।

नित्य-धर्म की दीक्षा : २६ :

चरकूपल्ली

१२–५–'५१

शून्य में से सृष्टि

सारा गाँव खाक हो चुका था। लोग भयभीत थे। कितने ही पचास मील की दूरी पर भारत की सरहद में जा बसे थे। गाँव का देशमुख गाँव में गैरहाजिर था। निराशा और निरुत्साह का वातावरण गाँव में था। लेकिन विनोबाजी के आगमन के कारण बहुत दिनों के बाद गाँव में कुछ रौनक छायी थी। खँडहरों की लिपाई-पुताई हुई थी। चौक पूरे थे। दीपक जले थे। तोरण और बंदनवार बँधे थे।

लेकिन दर्द जाहिर था। मिलनेवालों का ताँता बँध गया। शिकायतों की दर्खास्तों पर दर्खास्तें आने लगीं।

विनोबा ने सबको सांत्वना दी। परंतु उन्हें तो निराशा के वातावरण को आशा और उत्साह में बदल देना था। "भूमिहीन कितने हैं और कौन हैं ?" पृच्छा की। उन सबको खड़ा कर दिया। तीस लोग गिने गये। अब उनके लिए विनोबा ने माँगना शुरू किया और हकदार होकर माँगने लगे।

शून्य में से सृष्टि निर्माण हुई। एक-एक एकड़वालों से माँगना शुरू किया और देने का एक अद्‌भुत सिलसिला चल पड़ा। बात-की-बात में तीस एकड़ जमीन का दान मिल गया। भगवान् की इस कृपा से इधर भक्तों की आँखें भींगीं। उधर प्रकृति ने भी सहानुभूति प्रकट की।

पहले खूब जोरों की आँधी आयी और आँधी के बाद मेहा भी बरसने लगा। मई कड़ी तप रही थी। बूँदों ने ठंडक छा दी। सबने अंतर-बाह्य शांति का अनुभव किया। इतने में घंटी ने प्रार्थना की सूचना

दी। सभी भगवान् का भजन गाने और आर्षवाणी का प्रसाद पाने के लिए नये उत्साह से उठे। दान बरसा, मेहा बरसा, अब ऋषि की वाणी भी बरसने लगी।

गरीबों का धर्म

"आपके गाँव में भूमि-दान का जो सिलसिला चला, उसका मुझे बहुत आनंद हुआ है। इसमें कुछ तो गरीब लोगों ने भी दिया है। असल में जो लेना है, वह श्रीमानों से लेना है; लेकिन गरीबों को भी पुण्य की प्रेरणा, दान की प्रेरणा चाहिए। गरीबों को भी आपस में एक-दूसरों की फिक्र करने का धर्म समझना चाहिए। भगवान् ने गीता में समझाया है कि एक पत्ती दे दो, एक फूल दे दो, एक फल दे दो। जो थोड़ा भी देता है, भगवान् उसकी भी रक्षा करता है। आप लोगों ने सुदामाख्यान सुना है। दामाख्यान में सुदामा एक मुट्ठीभर चावल लेकर भगवान् के पास जाता है और उसके तंदुल से भगवान् प्रसन्न होते हैं। शुकदेव ने भागवत में इसका वर्णन किया है। आज हमारी एक बहन ने पूछा कि जो गरीब हैं, उनसे दान क्यों लेते हैं? लेकिन आज हमारे देश में ऐसे भी लोग हैं, जिनके पास जमीन बिलकुल नहीं है और न आज के खाने के लिए ही कुछ है। तो, जिनको खाने को भी नहीं मिलता, ऐसों की सेवा करना गरीबों का भी धर्म होता है। आखिर भगवान् ने गरीबों के उदार दिल तो रखे ही हैं। इसलिए जो देता है, वह सौ गुना पाता है। आपने देखा कि यहाँ पर एक धोबी खुद होकर जमीन देने के लिए सामने आया। उसका नाम तो किसीने नहीं लिया था। वह गरीब है, यह जाहिर बात है। फिर भी उसने दान दिया, इसलिए भगवान् संतुष्ट हुआ होगा। इस तरह यह दान की हवा उत्तरोत्तर बढ़ती जायगी, ऐसी मैं आशा करता हूँ।

छठा हिस्सा समाज का

"हरएक को यह व्रत लेना चाहिए कि जिसके पास कुछ नहीं है, ऐसा आदमी माँगने के लिए आये, तो फौरन दे ही देना चाहिए। समझना

चाहिए कि ऐसा माँगनेवाला हकदार है। गरीब के घर में भी नया लड़का जन्म लेता है, तो गरीब क्या करता है ? पहले घर में तीन थे, अब चार हो गये, तो चार मिलकर बाँटकर खाते हैं। अतः हम लोगों को समझना चाहिए कि अपने घर में पाँच लड़के हैं और यह छठा लड़का समाज है। चाहे गरीब हो, चाहे श्रीमान् हो, उसे समझना चाहिए कि अपने घर में जितने मनुष्य हैं, उससे एक ज्यादा है और वे उस ज्यादे मनुष्य का हिस्सा अलग रखें। यदि किसीके घर में छह लाख की इस्टेट है और घर में पाँच लोग हैं, तो उस इस्टेट के छह हिस्से करने चाहिए और समझना चाहिए कि यह छठा हिस्सा समाज का है। अगर किसीके घर में पाँच रुपये की इस्टेट है, तो उसको भी इसी तरह बाँटना है।

जो कुछ है, सबका हिस्सा देना है

"इस तरह केवल भूमि और पैसे का ही हिस्सा नहीं देना चाहिए, बल्कि बुद्धि और समय का भी हिस्सा देना चाहिए। मतलब कि हमारे पास पैसा, शक्ति, बुद्धि, समय, जो भी कुछ है, उसका हिस्सा दूसरों को दान में देना ही चाहिए। यह दान-धर्म नित्य-धर्म के तौर पर हमें शास्त्रकारों ने सिखाया है। जैसे हम रोज खाते हैं, वैसे रोज दान देना चाहिए।"

न डरो, न डराओ

विनोबा ने अंत में कहा : "अब एक बात और कहना चाहता हूँ। घरों को आग लगाना, जानवरों को मारना, फसल जलाना आदि बिलकुल गलत तरीका है। यह अपवित्र तरीका है, यह मनुष्य-धर्म नहीं है। इस तरह के मार्ग को चाहे कम्युनिस्ट अख्तियार करें, चाहे कांग्रेसवाले करें, चाहे श्रीमान् करें, वह पाप ही है। इसलिए हम लोगों को यह निश्चय करना चाहिए कि हम किसी दूसरे को तकलीफ न देंगे। हमें कोई तकलीफ देता है, तो उसके प्रतिकार का कोई अहिंसक तरीका ढूँढ़ना

चाहिए। लेकिन उसे तकलीफ न पहुँचानी चाहिए। हमें किसी मनुष्य को शत्रु नहीं समझना चाहिए। कोई जुल्म करता है, तो सहन न करना चाहिए ; लेकिन उस मनुष्य के शरीर को तकलीफ देना, उसे लूटना, उसका घर जलाना यह बिल्कुल निकम्मी--खराब बात है। हम या तो सामनेवाले के घर को आग लगा सके, तो लगाते हैं या डर के मारे भागने का प्रयत्न करते हैं। ये दोनों काम हमें न करने चाहिए और दोनों ही काम आपके गाँव में हुए हैं। हमने सुना है कि कुछ लोग यहाँ से 'यूनियन' में भाग गये हैं। यूनियन यहाँ से ५० मील से ज्यादा दूर होगा। इतने दूर भाग जाने का क्या मतलब है ? अपना स्थान कभी न छोड़ना चाहिए और हिम्मत के साथ प्रतिकार करना चाहिए। इस तरह भाग जाना मानवता के विरुद्ध बात है। पशु ही ऐसा करता है। उससे कोई बलवान् आता है, तो वह भाग जाता है और कमजोर पर हमला करता है। यह जो जानवर का काम है, वह मानव को नहीं करना चाहिए। हमसे कोई बलवान् मिले, तो भी हमें उसका सामना करना चाहिए और कमजोर मिले, तो उसे हमसे जरा भी भय नहीं मालूम होना चाहिए। अपनी बात साफ बता देनी चाहिए और सज्जनों का मन अपनी तरफ खींच लेना चाहिए। जैसे धर्मराज ने बहुत सारे दुःख सहन किये, लेकिन सबकी सहानुभूति अपनी तरफ खींच ली। परिणाम यह हुआ कि भगवान् ने उन्हें सहायता दी। तो, काम यह करो कि डर के मारे भागना नहीं और विरोधियों को भगाना भी नहीं। किसीसे डरना नहीं, किसीको डराना नहीं। इतना अगर आप करते हैं, तो बहादुर साबित होते हैं और भगवान् की कृपा के पात्र बनते हैं।

न अहंकार हो, न तिरस्कार

"मेरे भाइयो, आपने जितना मेरे से सुना, उतना काफी है। जिन लोगों ने प्रेम से, खुशी से मुझे भूमि-दान दिया है, उनका मैं आभार

मानता हूँ। जिन्होंने जमीन दी है, उन लोगों को मन में अहंकार नहीं करना चाहिए और जिन्होंने जमीन नहीं दी है, उनके प्रति तिरस्कार भी नहीं होना चाहिए। जिन्होंने आज नहीं दिया है, जिनको देने की प्रेरणा नहीं मिली है, उनको कल भगवान् प्रेरणा देगा, तो वे अपने-आप देने लगेंगे। तो, अपने लिए अहंकार मत रखो, दूसरों के लिए तिरस्कार मत करो। ऐसा आप करोगे तो बहुत अच्छा होगा। आपका गाँव सुखी होगा और दूसरे गाँवों के लिए एक नमूना बनेगा।"

● ● ●

सर्वस्व-दान की दीक्षा

: ३० :

सूर्यपेठ

१३-५-'५१

नास्तिकवादी या निर्गुणवादी

वैसे नलगुंडा जिले का आखिरी पड़ाव तो कल चंदुपाटला में है। परन्तु चंदुपाटला छोटा गाँव है। जिले के कार्यकर्ताओं की सुविधा की दृष्टि से सूर्यपेठ को ही आखिरी पड़ाव माना गया। यहीं जिलेभर के कार्यकर्ताओं को बुलाया गया। सूर्यपेठ, जिसमें चंदुपाटला शरीक है, जिले के सभी सामाजिक, राजनैतिक आंदोलनों का और दलबन्दियों का भी केन्द्र माना गया है। नास्तिकों का केन्द्र भी वह है। उनका अपना एक 'एथिस्ट सेण्टर' भी शहर से नजदीक ही है, जो रास्ते में दिखाई भी दिया। बेजवाड़ा के श्री गोरा की प्रेरणा से यहाँ काम चलता है। श्री गोरा एक अत्यन्त सज्जन और सेवाभावी व्यक्ति हैं। कुछ दिन बापू के साथ सेवा-ग्राम भी रह आये हैं। दीन-दुखियों की सेवा के लिए इनका हृदय तड़पता है। विनोबाजी को रास्ते में उनके इस केन्द्र की जानकारी दी गयी तो उन्होंने समझाया :

"यह केन्द्र नास्तिकों का नहीं, असत्-वादियों का है। सत्-असत्, दोनों रूप में लोग मुझे पहचानते हैं, ऐसा गीता का वचन है। उपनिषदों में भी असत्-रूप का वर्णन है। ये लोग एक तरह से निर्गुणवादी ही हैं।"

यह चर्चा चल ही रही थी कि सामने से गुलाबी धोतियाँ पहने भजन की मंडली "रामं भजे" के गीत गाती हुई आ पहुँची।

सबेरे ६ बजे जिले के कार्यकर्ताओं की सभा हुई। अधिकतर कार्यकर्ता कांग्रेसी ही थे। पिछले दस-बारह दिनों में जिले में जो कुछ काम

हुआ, खासकर जो सांत्वना लोगों को मिली और सामाजिक मसलों को सुलझाने का जो एक नया रास्ता प्रकट हुआ, उस पर विनोबाजी ने समाधान प्रकट किया। पदयात्रा के कारण जो वातावरण जिले में बना है, उससे लाभ उठाने की जिम्मेदारी कार्यकर्ताओं की निगाह में ला दी। फिर भूदान-यज्ञ की पार्श्वभूमि बनाकर कहा :

अपने को ट्रस्ट में परिवर्तित कर दो

"आज लोगों में जमीन की भूख जोरों से जाग्रत हुई है और वह ठीक भी है। जमीन है भी सबकी माता। तो, उसके लिए लोगों की माँग गलत नहीं है। पर वह सबको मिले कैसे? एक रास्ता कत्ल का है, जो कम्युनिस्टों ने यहाँ अपनाया है। पर वह इस देश में चलनेवाला नहीं है। दूसरा कानून का है, जिसकी भी मर्यादाएँ हैं और उससे भी मसला नहीं हल होगा। इसलिए हमने यह भू-दान का रास्ता अपनाया है। यह तो सबका प्रेम संपादन करने का मार्ग है। जमीनवाले समझें कि हमारे पास जो जमीन है, उसमें सबका हिस्सा है। परंतु यह ध्यान रहे कि मैं कोई भीख माँगने नहीं आया हूँ। वामन बनकर आया हूँ। सर्वस्व माँगने में और स्वीकारने में मुझे संकोच नहीं है। रघुवंश में राजा का वर्णन आया है कि सर्वस्व दान कर देने के कारण वह इतना गरीब और साधनहीन हो गया कि माँगने के लिए उसके पास भिक्षापात्र भी नहीं रहा। दान तो निरंतर देते ही रहना चाहिए और छोटे-छोटे दान तो रोज होंगे भी। परंतु जीवन में कोई ऐसा क्षण भी आना चाहिए कि सर्वस्व-दान कर दिया और केवल एक आधार रखा, ईश्वर का। यहाँ के इस हिंसामय वातावरण को देखकर और कम्युनिज्म का जो प्रचार लोगों में हुआ है, उस पर सोचने पर हमें इसके इलाज के रूप में यह सर्वस्व-दान का ही विचार सूझता है। इसलिए आपको अपनी संपत्ति का ट्रस्टी नहीं बनना है। उसे तो समाज को समर्पण कर ही देना है, आपको खुद अपने को भी एक ट्रस्ट में परिवर्तित कर देना है।"

भू-दान के आवाहन पर लोगों ने अपनी जमीन का एक अंश देना शुरू किया ही था कि विनोबा ने तो सर्वस्व-समर्पण की बात समझाकर खुद को ही ट्रस्ट बना देने की प्रेरणा दी।

देने का सुख

सब कार्यकर्ता एकाग्र हो सुन रहे थे। कुछ लोगों ने दस-दस एकड़ का दान भी घोषित किया। एक व्यक्ति उनमें ऐसा था, जो भीतर-ही-भीतर बेचैनी का अनुभव कर रहा था। वह उठा। दुबली, श्यामवर्ण सुन्दर काया, मोटी आँखें, गंभीर और चिंतनशील मुद्रा! कोदंड रेड्डी ने हृदय का मंथन सभा के सामने रखना शुरू किया।

"हमारे भाग्य से विनोबाजी का आगमन इस प्रदेश में हुआ। उनके आने के बाद यहाँ की 'कम्युनिस्टों की समस्या' ने जो करवट बदली, वह किसीसे छिपी नहीं है। विनोबाजी ने रास्ता दिखा दिया है। लेकिन कार्यकर्ताओं के जीवन में त्याग प्रकट हुए बिना लोगों पर असर नहीं होनेवाला है। अगर हमें इस काम को जारी रखना है और लोगों के पास जाकर जमीन माँगनी है, तो छिटपुट दान देने से काम न चलेगा। हमें चाहिए कि हम अपनी जमीन का एक हिस्सा प्रदान करें।"

कोदंड रेड्डी सोच-समझकर ही खड़े हुए थे। सबेरे से किसीकी खोज में थे। बाद में मालूम हुआ कि वे भाई की खोज में थे। संयुक्त परिवार था, बिना आपस में राय-मशविरा किये कोई कदम उठाने में सकुचा रहे थे। लेकिन वेला भी टल न सकती थी। उन्होंने नम्रतापूर्वक निवेदन किया :

"विनोबाजी, हम दो भाई हैं। मुश्तरका हैं। मैं अपने हिस्से की जमीन का चौथा भाग भू-दान में अर्पण करता हूँ।" और एक सौ सोलह एकड़ का दान-पत्र भेट कर दिया।

बोलते-बोलते कोदंड राव की आँखें सजल हो गयीं। देने का सुख

भीतर समा जो नहीं रहा था ! फिर तो और कार्यकर्ताओं ने भी अपना-अपना भाग देना शुरू किया ।

धन्य भूदान

कोदंडराव रेड्डी के बड़े भाई शाम की सभा में पहुँच गये थे । छोटे भाई ने जो दान दिया था, उसकी खबर अब तक उन्हें मिल चुकी थी । सभा समाप्त होते ही वे विनोबाजी के पास पहुँच गये । कोदंड रेड्डी भी सकुचाते हुए पास आकर बैठ गये कि न जाने वे क्या कहेंगे । बिना सलाह किये दान-पत्र जो भर दिया था । भीड़ काफी जम गयी । प्रणाम करके बड़े भाई ने निवेदन किया :

"विनोबाजी, मैं एक शिकायत लेकर आपके पास पहुँचा हूँ ।"

"कहिये ।"

"हम लोग आज तक एक साथ रहे । सारा कारोबार मिल-जुलकर किया । शादी-ब्याह के खर्चे भी एकत्र किये । दोनों का सुख-दुख एक रहा और आज भी एक ही है । परंतु आज इसने दूसरा व्यवहार कर डाला ।"

कोदंडराव रेड्डी और भी सकुचाये । जाहिर था कि भाई दान की बात पर बिगड़ते दिखाई दे रहे थे । सभी लोग चुप थे । बड़े भाई ने अपनी बात जारी रखी :

"मुझे यहाँ आने पर मालूम हुआ कि आपकी अपील पर कोदंडराव ने अपने हिस्से की जमीन का चौथा हिस्सा अर्पण किया । अगर वह हमारी पूरी जमीन का चौथा हिस्सा दे देता, तो क्या मैं उस पर नाराज होता ? क्या उसे मेरे प्रति ऐसा अविश्वास का भाव रखना उचित था ?"

यह कहते हुए बड़े भाई का कंठ भर आया । आदरपूर्वक उन्होंने भी अपने हिस्से की चौथाई जमीन का दान-पत्र विनोबाजी को अर्पण कर दिया । किसी पुराण की कहानी होती, तो लिखा जाता—'दोनों भाइयों पर आकाश से पुष्पवृष्टि हुई ।' धन्य कोदंड रेड्डी, धन्य भ्राता, धन्य भूदान !

पुनः कार्यकर्ताओं के बीच

सबेरे कार्यकर्ताओं की सभा तो था ही, पर वह खासकर भूदान के लिए ही हुई थी। कार्यकर्ताओं को कुछ शंका-निरसन भी करना था। इसलिए प्रार्थना के बाद पुनः वे लोग विनोबाजी से मिले। विनोबाजी दिनभर काफी थक गये थे; फिर भी सभा में बैठ गये। कार्यकर्ताओं के लिए समय देना ही चाहिए, इस खयाल से कम्युनिस्ट-आंदोलन के कारण मार्क्स की विचारधारा के बारे में कार्यकर्ता भी काफी सोचने लगे थे। एक भाई ने पूछा :

गांधी और मार्क्स

प्रश्न : "मार्क्स कहता है कि इन्सान की फितरत में हिंसा है।"

उत्तर : "मार्क्स ऐसा नहीं कहता। बहुत-से लोग बिना मार्क्स को पढ़े ही बात करते रहते हैं। वे मार्क्स को ठीक पढ़ते नहीं, इतना ही नहीं, पढ़ने के लिए आवश्यक बुद्धि का भी उनमें अभाव होता है। अगर मार्क्स इन्सान को फितरतन् हिंसानिष्ठ मानता, तो एक दिन स्टेट के 'विदर अवे' होने की बात कैसे करता ?"

प्रश्न : "क्या महात्माजी जर्मनी में होते, तो वहाँ की परिस्थिति में हिंसा को नहीं अपनाते ?"

उत्तर : "नहीं, क्योंकि वे भीतरी सूझ पर निर्भर रहते थे, जब कि मार्क्स परिस्थिति पर निर्भर रहता है। वह परिस्थिति से बनता है।"

टंडन और कृपालानी

उन दिनों टंडनजी और कृपालानीजी, दोनों में कांग्रेस के चुनाव को लेकर होड़ थी। कार्यकर्ताओं के मन में यह उलझन थी कि किसका साथ दिया जाय ! पूछा :

प्रश्न : "टंडनजी और कृपालानीजी में किनका रास्ता सही है ?"

उत्तर : "यह सवाल आपको या तो टंडनजी से पूछना चाहिए या कृपालानीजी से या उन दोनों से संबद्ध किसी व्यक्ति से।"

प्रश्न : "लेकिन हम कार्यकर्ता तो आपका मार्गदर्शन चाहते हैं।"

उत्तर : "तो, दोनों को नमस्कार करके चुपचाप देहात के लोगों की सेवा में जुट जाइये।"

नेहरूजी की विदेश-नीति

प्रश्न : "नेहरूजी की विदेश-नीति के बारे में आपकी क्या राय है ? 'न्यूटरल' रहने से कभी ऐसा तो नहीं होगा कि मौका पड़ने पर हमारा कोई साथी ही न रहे।"

उत्तर : "अरे भाई, साथी नहीं रहेगा, तो दुश्मन भी तो नहीं रहेगा ?"

भूल जाओ

एक भाई : "आपने अभी मार्क्स के बारे में बताया कि वह परिस्थिति से बनता है···"

विनोबा : "अरे भाई, मार्क्स का नाम रटते रहने से हमें कोई लाभ नहीं होनेवाला है। आप तो अपने सूर्यपेठ के बारे में ही सोचिए।"

दूसरा भाई : "बापू कांग्रेस को नहीं रखना चाहते थे। क्या आज भी कांग्रेस की आवश्यकता है ?"

विनोबा : "जैसे मैंने उनसे कहा कि मार्क्स को भूल जाओ, वैसे आपसे भी कहता हूँ कि बापू को भूल जाओ।"

प्रश्न : "लेकिन हमें यह बताइये कि टंडनजी और कृपालानीजी के संघर्ष का क्या परिणाम आयेगा ?"

उत्तर : "उनके संघर्ष से हमें क्या प्रयोजन है ? आज यहाँ इतने लोगों ने जमीनें दीं, उन्हें किसने रोका ? मैंने कहा न आपसे कि उनको भूल जाइये और देहात की सेवा में लग जाइये। वही आपके सवाल का जवाब है।"

ऋषि-मुनियों से लाभ

प्रश्न : "ऋषि-मुनियों से समाज को क्या लाभ है ?"

उत्तर : "वे हैं कहाँ ? जरा बताइये तो सही ? कहीं देखा भी है ?"

प्रश्नकर्ता : "वे तो हिमालय में जाकर बैठते हैं।"

उत्तर : "याने आपका सवाल यह है कि समाज से अलग रहकर चिंतन-मनन करनेवालों से देश का कोई लाभ हो सकता है ?"

प्रश्नकर्ता : "जी।"

उत्तर : "जैसे कोई वैज्ञानिक विज्ञान-शाला में प्रयोग करता है, वैसे ही चिंतन-मनन करनेवाले लोग समाज की ओर से एकांत में मनोवैज्ञानिक प्रयोग करते रहते हैं। अगर उनके प्रयोग का कोई परिणाम आया, तो समाज को लाभ दिखाई देगा ही। समाज की ओर से वे प्रयोग हुए, यह मानना चाहिए।"

सेवा की मर्यादा

प्रश्न : "सेवा व्यक्तिगत करना ठीक है या संस्था के आधार से ?"

उत्तर : "याने भोजन हाथ से करना अच्छा या चम्मच से ? ऐसा सवाल है यह आपका। प्यासे को पानी पिलाना, बिच्छू काटा है तो दवाई देना, इन सब बातों के लिए हम संस्था की बाट नहीं देखते। उसी तरह ऐसे बहुत-से काम होते हैं, जिनके लिए संस्था की जरूरत नहीं होती। किंतु कुछ काम ऐसे भी होंगे, जिनके लिए संस्था की जरूरत होगी।"

चुनाव

प्रश्न : "अब चुनाव आ रहे हैं। इस बारे में आप कुछ सुझाव देंगे ?"

उत्तर : "चुनाव में झूठ और हिंसा न हो, इतना पथ्य भी आप लोग पालेंगे, तो हिन्दुस्तान का कल्याण होगा।"

प्रश्न : "हमारे आपसी चुनावों के बारे में ?"

विनोबा : "आपको यह अक्ल होनी चाहिए कि दोनों में से एक अपनी उम्मीदवारी वापस ले लें।"

खतरे की सूचना

"नलगुंडा जिले के कांग्रेसवालों से मुझे खास तौर से कहना है कि जिन्होंने अब तक जमीन नहीं दी, वे जमीन दें। वरना नलगुंडा में कांग्रेस-वाले जिंदा नहीं रहेंगे। पंडित जवाहरलालजी आकर भी आप लोगों को नहीं बचा सकेंगे।" ● ● ●

यूरोप की सीख

: ३१ :

चंदुपाटला

१४-५-'५१

जो परशुराम न कर सका, वह कम्युनिस्ट कर सकेंगे ?

सूर्यपेठ से चंदुपाटला पहुँचते समय रास्ते में दो स्थानों पर अत्यंत उत्साहभरा भारी स्वागत हुआ। एक जगह सैकड़ों लड़के एक कतार से शांत और प्रसन्न खड़े थे। विनोबाजी आये, तो लड़के उनके साथ हो लिये। विनोबा ने उनका हाथ पकड़ लिया और फिर तो विनोबा और बालक, दोनों ही दौड़ने लगे।

दूसरी जगह भजन-मंडलियों ने खूब स्वागत किया। उनके साथ विनोबाजी भी चंदुपाटला तक कीर्तन करते, गीत गाते गये। चंदुपाटला पहुँचने पर भी उन लोगों का मधुर भजन-कीर्तन जारी रहा। ताल-मृदंग, सब सजावट ऐसी सुंदर थी कि खूब समाँ बँध गया, यहाँ तक कि विनोबाजी उन लोगों के नृत्य में भी शरीक हो गये।

गाँव खूब सजाया गया था। फिर भी वीरान मालूम होता था। गाँववाले काफी संख्या में अगवानी में आये थे। २००० की बस्ती, २१०० एकड़ जमीन, खुश्की-तरी मिलाकर। जिनके पास पाँच एकड़ जमीन हो, उन्हें हाथ ऊँचा करने के लिए कहा गया। कोई हाथ नहीं उठा। पाँच एकड़ से ज्यादावाले काफी हाथ उठे। पाँच एकड़ से कमवाले भी काफी उठे। और नहींवाले हाथ भी काफी उठे। तब विनोबा ने कहा कि "इन बेजमीनों को जमीन मिलनी चाहिए। कैसे मिले ? कम्युनिस्ट कहते हैं : मारो, चीरो, काटो, जमीन का बँटवारा करो। तो, क्या इससे ये

मरेंगे ? परशुराम ने २१ बार प्रयत्न किया। फिर भी ये नष्ट नहीं हुए। तो, जो काम परशुराम नहीं कर सका, वह क्या ये कम्युनिस्ट कर सकेंगे ? यहाँ जो विषमता है, उसको दूर करने का इलाज यही है कि जिनके पास है, वे नहींवालों के लिए दें। हम सब पाँच अंगुलियों की तरह रहें, जिनमें छोटी-बड़ी भी हैं। नहीं हैं, ऐसा नहीं। पर ऐसा भी नहीं है कि एक दो इंच की है, तो दूसरी दो फीट की। किंचित् फर्क है और उतना रह सकता है। अगर ज्यादा फर्क होता, तो इन पाँचों से मिलकर आज जो काम होता है, वह कभी होता ? आप लोगों को पाँच पांडवों की तरह रहना चाहिए। तभी इस देश में जो तकलीफ है—कम्युनिस्टों की, पुलिस की, मिलिट्री की, वह सब मिट सकती है।"

विनोबा की अपील पर सबेरे की सभा में ही कुछ लोगों ने भू-दान घोषित किया।

संगठन के लिए भाई की हत्या

आगे चलकर मालूम हुआ कि विनोबाजी का वह भाषण सहज प्रेरणा से होने पर भी यहाँ की परिस्थिति के लिए एकदम अनुकूल था। गाँव की प्रदक्षिणा की गयी। कुछ मकान तो बिलकुल उजड़े हुए थे। लोगों ने डी० व्यंकटेश्वर राव का मकान भी बताया। उनके परिवार के लोगों से परिचय कराया। डी० व्यंकटेश्वर राव इस कम्युनिस्ट-आन्दोलन के नेता हैं। दो हजारवाली इस छोटी-सी बस्ती में उन्होंने चालीस अच्छे कार्यकर्ता निर्माण किये थे, जो आगे उनके आन्दोलन का आधार बने। नलगुंडा जिले के सारे हत्याकाण्ड की प्रेरणा यहीं से मिली। रावी नारायण रेड्डी के विचार व्यंकटेश्वर राव की तरह उग्र नहीं थे ; अधिकतर नौजवान व्यंकटेश्वर राव के साथ हो गये। व्यंकटेश्वर राव चार भाई थे। तीन एक विचार के थे, परन्तु बड़ा भाई पार्टी का साथ देने को राजी नहीं हुआ। चंदुपाटला में ही नहीं, नलगुंडा जिले में और हैदराबाद की कम्युनिस्ट पार्टी में व्यंकटेश्वर राव का बड़ा सम्मान था। व्यंकटेश्वर राव

ने अपने भाई को एक माह की मुहलत दी। अगर एक माह के भीतर वे पार्टी का साथ देने का फैसला करते हैं, तो उनके हक में ठीक है। वरना वे कोर्ट-मार्शल कर दिये जायँगे।

बड़े भाई ने ही व्यंकटेश्वर राव को लिखा-पढ़ाकर बड़ा किया था। उन्हें यकीन था कि आखिर भाई है। चाहे जो कुछ कहे, मेरे साथ कोई आत्यंतिक व्यवहार तो नहीं करेगा। एक माह हुआ। भाई का रुख बदला नहीं, बल्कि लापरवाही नजर आयी। चंदुपाटला में इजलास हुआ। भाई से जवाब तलब किया गया। भाई ने पार्टी का साथ देने से इनकार किया। व्यंकटेश्वर राव के हुक्म से भाई को गोली से मार डाला गया।

गाँववालों ने भयभीत होकर सारा किस्सा सुनाया। कौन जाने, आज भी व्यंकटेश्वर राव के दूत वहाँ हों और विनोबाजी की बिदाई के बाद फिर इन लोगों पर नयी आफत न आ जाय।

व्यंकटेश्वर राव की सारी जमीन पर सरकार ने कब्जा कर लिया था। गाँव के अनेक नौजवान या तो जेल में लंबी सजाएँ काट रहे थे या 'अण्डर ग्राउण्ड या भूमिगत' थे। गाँव पर अजीब दहशत और बेबसी छायी हुई थी।

सरकार की ओर से इस छोटे-से गाँव में बीस मिलिट्री गार्ड को रखा गया था।

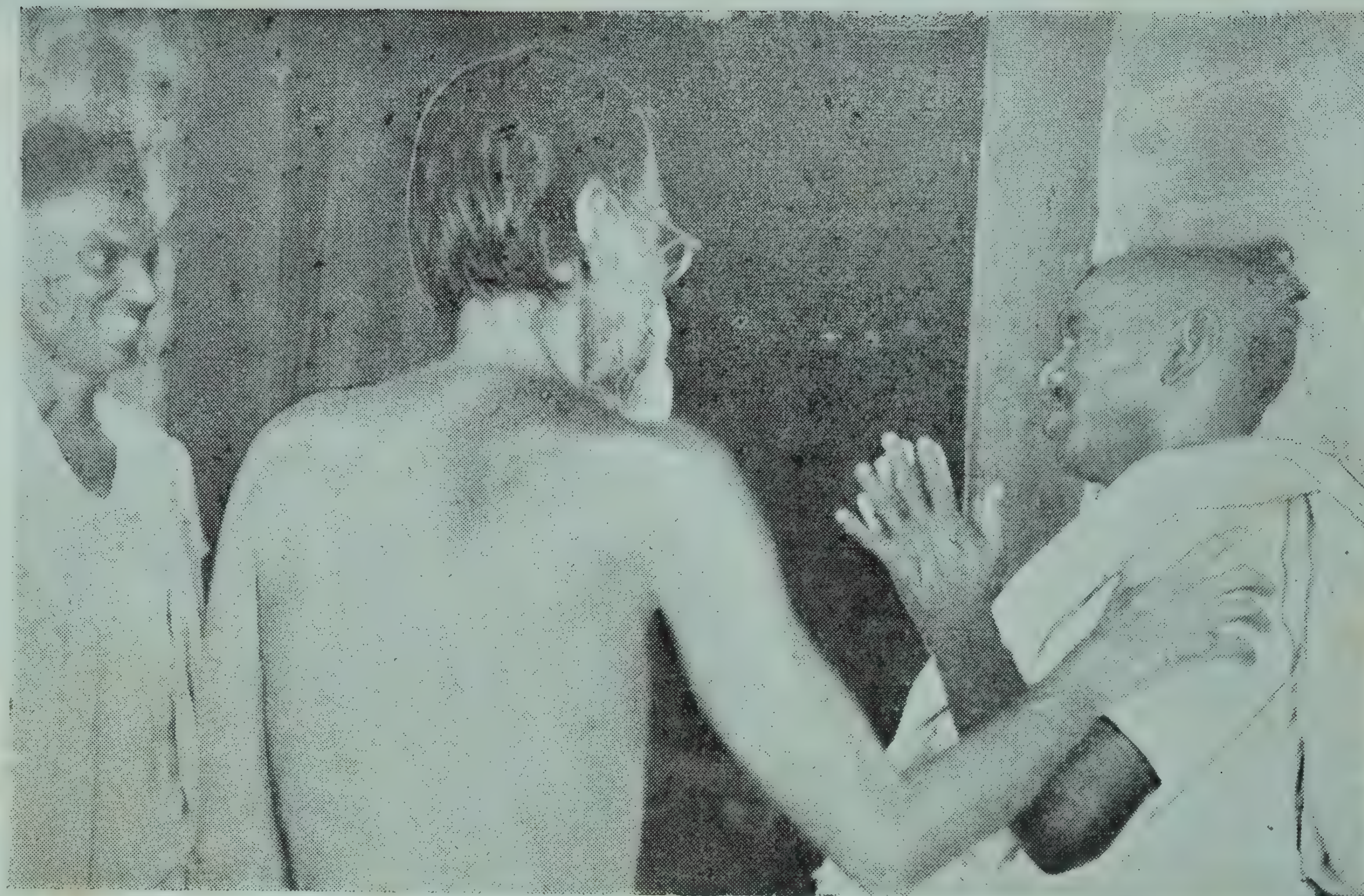
सारे इलाके में यह गाँव 'स्टालिनग्राड' के नाम से मशहूर था।

और इसी गाँव में अमेरिका के 'टाइम्स' पत्र के संवाददाता भी आ पहुँचे। विनोबाजी ग्राम-प्रदक्षिणा कर रहे थे, तब यह भाई भी साथ थे। एक उजड़े मकान में राज रेड्डी का परिवार था : पत्नी, बहन, सास। राज रेड्डी के बारे में मालूम हुआ कि जेल में ही उन्हें मार डाला गया है। उनका एक जेल से दूसरे जेल में तबादला हुआ था। मिलिट्री की निगरानी में रवानगी हो रही थी। राज रेड्डी ने भागने की कोशिश की, तो गोली का शिकार होना पड़ा। बात हाईकोर्ट में गयी थी और पुलिस ने कोर्ट के सामने अपनी भूल का इकबाल किया था।

प्रेम का मार्ग

प्रार्थना-सभा में विनोबाजी ने गाँव की परिस्थिति के बारे में तथा गाँववालों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा कि "कम्युनिस्ट होना कोई गुनाह नहीं है। कम्युनिस्ट होने का अर्थ इतना ही है कि गरीबों की सेवा में लग जाना है।" खून-खराबी के तरीके का निषेध करते हुए उन्होंने कहा कि "यह तरीका बिलकुल गलत तरीका है।" व्यंकटेश्वर राव के बारे में आशा प्रकट की कि "मैं अगर उनसे मिला, तो उन्हें समझा सकूँगा।" उन्होंने कहा कि "यह खून-खराबी का रास्ता हमारे युवकों ने यूरोप से सीखा है, जहाँ सबके पास हथियार हैं। हमारे हथियार-हीन लोग तो प्रेम के मार्ग से ही ऊँचे चढ़ सकते हैं। प्रेम के रास्ते से श्रीमान् और गरीब, दोनों का भला हो सकता है।"

● ● ●



विनोबा : अगर इस उम्र में भगवान् की कृपा से और एक बेटा तुम्हारे घर पैदा हो, तो उसे अपना हक दोगे या नहीं ?

किसान : जी। जरूर !

विनोबा : तो समझ लो कि मैं तुम्हारे घर बेटा पैदा हो गया और मुझे गरीब का हक दो।



जैसे हवा, पानी और सूरज की रोशनी सबके लिए है, वैसे भूमि भी भगवान् ने सबके लिए निर्माण की है।

बहनो, कुदाली चलाती चलो ! : ३२ :

नायकमगुड़ा

१५-५-'५१

आज वरंगल जिले में प्रवेश था। एक मकान, जिसमें हवा का प्रवेश नहीं था, विनोबाजी के लिए पसंद किया गया था। लेकिन अपरिग्रही विनोबा को अपने और आकाश के बीच ऐसी दीवारों के परदे का परिग्रह कैसे बर्दाश्त हो ? दो-तीन मिनट भी भीतर न रुक पाये होंगे कि बाहर निकल आये। "कोई पेड़ वगैरह हो, तो जरा देखता हूँ" कहकर निकल पड़े। श्री महादेवी ताई के जी में पहले ही से धड़कन थी कि न जाने आज क्या होगा। रोकने की किसीकी हिम्मत नहीं थी, क्योंकि उस मकान में किसीके लिए भी अधिक देर टिकना संभव न था। विनोबा ने स्थान की खोज शुरू कर दी थी। मकान से दक्षिण दिशा में खुला मैदान देखकर उधर ही निकल पड़े। पास में ही दो बड़े वट-वृक्ष थे। उनकी छाया में आसन जमा दिया। स्थान बहुत प्रसन्न प्रतीत हुआ। सामने विशाल तालवन था। बगल में अर्धवर्तुलाकार भव्य तालाब पर बीचोंबीच दूर तक जाता दिखाई देनेवाला भव्य पुल ! मानो किसी धनुष की डोरी पर बाण चढ़ा हो और इस प्रतीक्षा में हो कि अब हुक्म हुआ और अब निकला कि दशोंदिशाओं में विनोबा का संदेश फैला दूँ।

थोड़ी देर में तो काम भी शुरू हो गया। कुछ महत्त्व की चिट्ठियाँ लिखवायीं और फिर पासवाले तालाब पर चले गये, जहाँ अनेक जलचर क्रीड़ा कर रहे थे। विनोबा रुक गये और काफी देर तक उनको निहारते रहे। इतने में गाँववाले आये और उन्होंने गोफ का खेल शुरू किया। वट-वृक्ष में ही गोफ का सिरा बँधा, नृत्य भी शुरू हुआ और गोफ़ की

गुँफाई भी शुरू हुई। नृत्य के साथ उनके भावपूर्ण लोकगीत भी शुरू हुए।

इधर श्री महादेवी ताई का भी उत्साह दुगुना हुआ। गाँववालों का अपनी ओर से भी कुछ आतिथ्य होना चाहिए, इसलिए छोटी मृदुला से कुदालीवाला गीत गाने को कहा : **"भाई कुदाली चलाते चलो, मिट्टी से सोना बनाते चलो।"** गीत शुरू हुआ और सबने साथ दिया। गीत देहातवालों को भी पसंद आया। इस अवसर को भी ज्ञान के अवसर में बदलने की दृष्टि से विनोबा ने पूछा : "इस गीत में केवल भाइयों का ही आवाहन क्यों है ? बहनों का क्यों नहीं ? लोगों को कुछ भ्रम ही हो गया है कि स्त्रियाँ कुदाली चला नहीं सकतीं, बढ़ईगिरी कर नहीं सकतीं। यह सारा बिल्कुल गलत है। पवनार में वह हमारी बिंदी बहन कुदाली तो चलाती ही है, और भी कितना ही काम कर लेती है। बढ़ईगिरी में सिर्फ आरीवाला काम कुछ ज्यादा ताकत का है, जो शायद स्त्रियाँ न कर पायें। लेकिन बाकी का सारा काम करने में तो कोई भी हर्ज नहीं। खूब अच्छा सुव्यवस्थित कर सकती हैं। इसलिए ऐसे गीतों में **"बहनो, कुदाली चलाती चलो"** भी कहना चाहिए, जिससे स्त्रियों को भी ऐसे कामों की प्रेरणा मिले।

भूदान का सूत्र-पंचक

प्रार्थना का समय हो गया था, प्रार्थना बस शुरू होने को ही थी कि बहुत जोरों की आँधी आयी और फिर उस आँधी में ही प्रार्थना हुई। आँधी ने विनोबा को अधिक बोलने भी नहीं दिया। फिर भी, गत माह के अनुभवों का सार बताकर विनोबा ने नये जिलेवालों को अपनी जिम्मेदारी का अहसास करा दिया। सरकार, कार्यकर्ता और जनता, तीनों के लिए उन्होंने अपने भाषण में हिदायतें दीं :

१. शांति-सैनिक के नाते सब जगह जाकर शांति और प्रेम कायम किया जाय।

२. लोगों की शिकायतें सुनकर उन्हें फौरन मौके पर ही सुलझाने की कोशिश की जाय।
३. जितना भी दान दिया जा सके, दिया जाय।
४. जमीन पानेवाले जमीन का अच्छा उपयोग करें।
५. सरकार का कर्तव्य है कि जिनके पास साधन नहीं हैं, उन्हें जमीन को जोतने के लिए आवश्यक साधन मुहय्या करा दे।

पागला हवा—बादल दिने

प्रार्थना समाप्त होते-होते हवा ने खूब जोर लगाया। तूफान शुरू हो गया। बदन को बूंदों का परस होने लगा। परस, जिसमें विनोबा को परमेश्वर के सहस्र-सहस्र हाथों का ही परस प्रतीत होता है। सहारे के लिए फिर सब सबेरेवाले मकान की ओर चल पड़े। बीच-बीच में चमकनेवाली बिजली रास्ता दिखाने लगी, क्योंकि लालटेन तो जैसे ही जलता, बुझ जाता था। हवा में मस्ती थी। वातावरण में मस्ती थी। मुसाफिर में मस्ती थी। "मन मस्त हुआ" फिर किसको किससे बोलने की फुरसत हो सकती थी। शायद इसी मस्ती में रवि ठाकुर ने गाया था—**"पागला हवा—बादल दिने, पागोल आमार मन जेगे उठे।"** जब एक सहयात्री ने उस गीत का स्मरण दिलाया, तो विनोबा को **"जेगे उठे"** बहुत यथार्थ मालूम हुआ।

● ● ●

ग्राम-संरक्षण की समस्या : ३३ :

मेडपल्ली

१६-५-'५१

बहुत देरी से मुकाम पर पहुँच सके, क्योंकि तेरह मील का फासला बताया गया था और चौदह मील हो चुका था। छोटा गाँव, फिर भी पुलिस का डेरा है, क्योंकि कम्युनिस्टों द्वारा पाँच हत्याएँ की जा चुकी हैं, अपने ही रिश्ते में। पटेल की विधवा पुत्री ने पटेल की इच्छा के विरुद्ध एक कम्युनिस्ट के साथ शादी कर ली थी। कम्युनिस्टों ने उस लड़की के जरिये पटेल से पैसे ऐंठना शुरू किया। लड़की की माँग पर पिता भी देने के लिए मजबूर हो जाता। पुलिस को पता चल गया। पुलिस जैसे ही गाँव में आयी, पटेल घबराया—पैसा देने से इनकार कर दिया। कम्युनिस्टों की नाराजी के लिए इतना काफी था। एक दिन मौका पाकर घर में घुस गये और पटेल की हत्या कर दी। वरंगल जिले में मेडपल्ली पहले कम्युनिस्टों का केन्द्र ही था। परंतु जब पुलिस आयी, तब से उनकी हलचल यहाँ बहुत कम हो गयी थी। इसी तरह और भी चार घरों में हत्याएँ हुई थीं।

इस देश का स्वभाव

विनोबा ने घर-घर जाकर दुःखी विधवाओं से देर तक बातें कीं। उनको सांत्वना दी, हिम्मत दी। आश्चर्य की बात यह कि पटेल के घर में वह लड़की मौजूद थी, जिसके कारण उसके पिता की हत्या हुई थी। लड़की को कम्युनिस्टों के प्रति सहानुभूति थी और पिता ने इमदाद देने से इनकार किया, इसमें उसे पिता की भूल नजर आती थी। अपनी दुःखी विधवा माँ के साथ रहते हुए भी उसे पिता के हत्यारों से कोई शिकायत नहीं

थी। माँ को यह सब मालूम था, फिर भी उसने पुत्री को अपनाया था! उसका कम्युनिस्ट पति जेल में था, यह तो एक कारण था, परन्तु सबसे बड़ा और स्वयंभू कारण तो यही था कि वह माता थी और यह पुत्री थी। और, सद्भाव और सहनशीलता इस देश का स्वभाव है, जो अभी कायम है।

लेकिन विनोबा को देखकर वह अपने दिल का ज़ख्म नहीं छिपा सकी। हृदय भर आया। फूट-फूटकर रोने लगी। लड़की किसी तत्त्ववेत्ता की तरह तटस्थ भाव से सारा देखती रही।

अमेरिकन 'लाइफ ऍण्ड टाइम' का पत्रकार भी यह सब देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहा। जैसा कि विनोबाजी कहते हैं—तेलंगाना की समस्या शस्त्रों से नहीं, विचार-परिवर्तन से ही सुलझ सकती है, इसमें उसे भी संदेह नहीं रहा।

दोपहर को गाँव के कुछ बड़े लोगों से बातें हुईं। गाँव की परिस्थिति विनोबा देख ही चुके थे। गाँववालों को समझाया :

"यहाँ जो हो रहा है, उसकी ओर दुनिया की नजर है, क्योंकि यह सवाल अकेले तेलंगाना का या हिन्दुस्तान का नहीं है—सारी दुनिया का सवाल है।"

गाँव में पुलिस का डेरा तो था ही। विनोबाजी ने सबेरे लोगों से पूछा था कि भविष्य में इस गाँव में पुलिस रखने न रखने के बारे में गाँववाले सोचें, ताकि फिर सरकार को वैसी सलाह दी जा सके। पुलिस रहेगी, तो खर्च गाँववालों को बर्दाश्त करना पड़ेगा, यह बात भी विनोबाजी ने समझायी थी। गाँववालों की राय जानने की इच्छा से उन्होंने फिर वह सवाल लोगों से पूछा।

गाँव के एक प्रतिष्ठित भाई ने जवाब दिया : "मेरी इन्फरादी राय तो यह है कि पब्लिक की इमदाद से गाँव की रक्षा की जाय और पुलिस को रवाना किया जाय।

विनोबा : अर्थात् गाँव की रक्षा की जिम्मेवारी गाँव उठाये। आज तो हालत यह है कि कम्युनिस्ट आते हैं, खून-खराबियाँ करते हैं और अंडर-ग्राउंड हो जाते हैं। गाँव में से कुछ लोगों की सहानुभूति रहे बिना तो वे इतनी हिम्मत कर नहीं सकते। फिर गाँव में कुछ लोग तो ऐसा कहनेवाले भी होंगे कि हमें पुलिस की जरूरत नहीं है। "जरूरत है" कहनेवाले भी कुछ लोग होंगे। लेकिन पुलिस का खर्चा तो सारे गाँव पर पड़ेगा। वह कुछ लोगों पर ही लागू होगा, कुछ पर नहीं—ऐसा तो हो नहीं सकता।

विनोबाजी गाँववालों के साथ प्रकट चिंतन-सा कर रहे थे, ताकि गाँववालों को भी सोचने की आदत हो। पटेल—पटवारियों से राय पूछने पर पटवारी ने उठकर कहा :—पुलिस को रखना होगा, तो खर्चा भी देना होगा। यह खर्चा सरकार ही दे सकती है।

विनोबा : लेकिन सरकार के पास पैसा तो आप लोगों का ही है न? वह दूसरे जिले का पैसा यहाँ क्यों खर्च करेगी? हम सबको मिलकर इस मसले का हल निकालना चाहिए।

फिर लोकमानस का विश्लेषण करके कहा :

"लोगों में तीन प्रकार होंगे। कुछ कम्युनिस्टों को मदद करनेवाले होंगे, कुछ कांग्रेसवालों को मदद करनेवाले होंगे, कुछ ऐसे होंगे, जो दोनों को नहीं करना चाहेंगे। इसलिए हम अब आपसे पूछते हैं कि आप लोग, जो गाँव के जिम्मेवार लोग हैं, क्या गाँव की जिम्मेवारी उठा सकते हैं?"

ग्यारह सौ लोगों की बस्ती थी। विनोबाजी ने सौ पीछे एक के हिसाब से ग्यारह लोगों की एक समिति बनाने की सलाह दी, जो गाँव के सुख-दुःख, शिक्षण-रक्षण, दवाई-सफाई आदि की चिन्ता करे। विनोबा ने प्रश्न भी पूछा :

"क्या आज ऐसी चिंता कोई करता है, सारे गाँव की?"

"जी नहीं।"

"जानवर भी एक-दूसरे की चिंता नहीं करते। बताइये, उनके और हमारे जीवन में क्या फर्क हुआ? हम सबेरे गाँव-प्रदक्षिणा करने गये थे। और बातें तो हमने देखी ही, परंतु एक बात यह भी देखी कि एक बहन क्षयरोग से बीमार है। पति ने उसको त्याग दिया है। मैके में रहती है और सब लोग साधनहीन हैं। तब उसके बारे में गाँववालों ने कुछ सोचा है?"

"जी नहीं।"

"तब बताइये, इसे गाँव कहा जाय या जंगल? और फिर इस जंगल में बसनेवालों को क्या कहा जाय? और उनकी फिक्र कौन करे? हैद्राबादवाले? हैद्राबादवाले तो जंगल में रहनेवाले शेरों के शिकार के लिए कुछ शिकारियों को भेज देंगे।—ऐसे शेर यहाँ होंगे भी, जो हर किसीसे बराबर लड़ते रहते होंगे?"

उस गंभीर वातावरण में भी, विनोबा के उस प्रश्न ने एक बार तो सबको हँसा दिया। विनोबाजी ने जवाब जानना चाहा, तो एक भाई ने उठकर कहा:

"जी हाँ, हैं।"

"कितने?"

"करीब दस।"

इस पर एक बार तो पुनः सबको हँसी आयी। परंतु समस्या को सुलझाना जरूरी था। विनोबा ने समझाया कि हर बात में बच्चों की तरह सरकार की ओर ताकना उचित नहीं है। गाँव के मसले गाँववालों को तय करना चाहिए।

झगड़े के लिए कम्युनिस्टों की जरूरत नहीं!

ग्यारह सौ में से छह सौ भूमिहीन थे। इसलिए इस विषय को भी छेड़ना जरूरी था। विनोबा ने कहा:

"जिस गाँव में इतने बेज़मीन हों, उसमें अशांति रहने के लिए कम्यु-

निस्टों की कोई जरूरत नहीं। वहाँ तो किसी भी निमित्त से झगड़ा पैदा किया जा सकता है। कभी वह हरिजन और गैर-हरिजन के निमित्त से होगा, कभी और किसी कारण से होगा। लेकिन मैं आपसे पूछता हूँ कि अगर हम भूमि को माता मानते हैं, तो ग्यारह में से छह लड़कों को माँ का स्नेह, प्यार नसीब ही न हो, माँ के पास पहुँचने का उन्हें अधिकार ही न हो, केवल पाँच लोगों को ही पूरा अधिकार हो, तो यह कब तक चलते रहना संभव है? इसलिए मेरा कहना है कि अपने भूमिहीन भाइयों के लिए कुछ जमीन दे दो। मैं केवल श्रीमानों से ही माँगता हूँ, ऐसा नहीं है। एक-एक एकड़वाले भी दें। मैं यह केवल कल्पना की बात नहीं कर रहा हूँ। मुझे एक-एक एकड़वालों ने, कइयों ने दिया है। कोई कवि इन घटनाओं का साक्षी रहा होता, तो उसे स्फूर्ति हो सकती थी एक महाकाव्य लिखने की।"

बोलते-बोलते विनोबाजी गंभीर हो गये। गरीबों से मिले दान का नैतिक मूल्य उनकी वाणी की तरह उनकी आँखों में भी चमक उठा। ● ● ●

जटायु बनकर टूट पड़ो : ३४ :

चिरुमाधवरम्, कान्हापुरम्

१७-१८-५-'५१

मंजिल बारह मील की थी। सबेरे मेडपल्ली से चले, तो दो मील पर ही गोकेनापल्ली में और उसके आगे नेलकोंडापल्ली में लोगों ने भावभीना स्वागत किया। चारों तरफ पहाड़ियों से घिरे इस प्रदेश के साथ उत्तर गोहरण के संस्मरण जुड़े हुए हैं। कोंडापल्ली विराट महाराज का स्थान बताते हैं। यहाँ ६″×१८″ की बड़ी-बड़ी ईंटें पायी जाती हैं। गोकेनापल्ली गोकर्ण का अपभ्रंश है, जहाँ से अर्जुन गायों को घुमाकर विराट नगर ले गया। कीचकवध का संबंध भी इस भूमि से लोग लगाते हैं। इस छोटे से गाँव में एक सौ भूमिहीन हैं और पचास एकड़ से अधिक भूमि रखनेवाले भी तीन ही लोग हैं। बाकी जो हैं, वे कमवाले हैं। गरीब लोग अधिक हैं। फिर भी दरिद्रनारायण के प्रतिनिधि की माँग पर भूदान के लिए लोगों ने जमीन दी।

ता० १८ को पड़ाव कान्हापुरम् में था। मंजिल दस मील की थी, परंतु रास्ते भर स्वागत-समारोह और भजनानंद के कारण पता नहीं चला कि किधर रास्ता निकल गया।

राजनीति और रामनाम

इतना जुल्म कम्युनिस्टों द्वारा हुआ है, लोगों में भय इतना छा गया है, फिर भी लोगों की भक्ति-भावना में कमी नहीं हुई, बल्कि उभार-सा आ गया है। शायद यही इनकी प्रकृति का सही दर्शन है। भूमि-दान की प्रेरणा में यह भक्ति-भावना स्रोत का काम कर रही हो, तो आश्चर्य नहीं। जब से तेलंगाना की यात्रा शुरू हुई, प्रवचन समाप्त होने पर विनोबाजी रोज

बराबर कुछ समय के लिए भजन सुनते रहते हैं। कोई गाँव अब तक ऐसा नहीं पाया, जहाँ इसका अभाव महसूस हुआ हो या अपवाद करना पड़ा हो। गाँववाले बड़े प्रेम से इसमें हिस्सा लेते हैं। किंतु सार्वजनिक कार्यकर्ता, खासकर राजनैतिक कार्यकर्ता इस सम्बन्ध में उदासीन रहते हैं। उनकी इस नित्य की उदासीनता को देखकर विनोबाजी ने उनके मुखिया को ललकारकर कहा :

"ऐ राजनीतिवालो, अरे रामनाम से संबंध रखो, नहीं तो तुम्हारी संस्था खतम हो जायगी।"

इधर रामनाम का महत्त्व विनोबा समझा रहे थे कि उधर 'रामं भजे' से वातावरण गूँज उठा। दीपार्ति, कलश, श्रीफल से कान्हापुर-निवासियों ने मुदमंगलमय स्वागत किया। पचास घरों का गाँव, हर घर, हर रास्ता, हर मकान, आँगन, देहलियाँ, दीवारें सारा इतना मनोहर सजा था कि मानो किसी मंदिर से होकर गुजर रहे हों। इंच-इंच जमीन ने कलाकार के कर का परस पाया था। उस गाँव को निहारकर विनोबाजी को अपने गाँव गागोदा की याद हो आयी। कहने लगे : "मेरे जन्म के समय गागोदा की खानाशुमारी भी पचास ही घर की थी।" इतने थोड़े समय में यहाँ के लोगों के साथ विनोबाजी को पारिवारिकता का ऐसा अनुभव हुआ कि अपनी दिनभर की दिनचर्या उन्हें बताकर फिर दूसरे रोज सबेरे की प्रार्थना आदि का भी जिक्र किया। इतना ही नहीं, उन्हें सवेरे की प्रार्थना में आने का निमंत्रण भी दिया। अक्सर वे ऐसा करते नहीं।

लड़की की वीरता

जिस पटेल के यहाँ विनोबाजी ठहरे थे, उसकी राम-कहानी भी बड़ी दर्दनाक थी। पटेल गांधीनिष्ठ मनुष्य है। कम्युनिस्टों ने उसका घर काफी जला दिया था, जिसके चिह्न दुरुस्ती के बाद भी अब तक दिखाई दे रहे थे। जब कम्युनिस्ट घर में घुसे, तब पटेल घर में नहीं था। केवल उसकी लड़की और उसकी ३ वर्ष की दुधमुँही बच्ची थी। उसने बड़े धीरज और

कुशलता से काम लिया। उसने हिम्मत से आगंतुकों से बातें कीं। पिता की अनुपस्थिति का जिक्र किया। ऐसे कामों से बाज आने को कहा। किसी तरह वह बच गयी। गाँववाले तो भयभीत होकर पुलिस को इत्तला देने दौड़े। इधर कम्युनिस्ट घर का धान, मूँगफली, और घास आदि जलाने लगे, पर जब लौटने लगे तो खेत में पटेल को पाकर उसे रोका और पैसे की माँग की। पार्टी में शामिल होने को कहा। इनकार करने पर उसे इतना पीटा कि सर और पाँव में गहरी जख्में हुईं। वह कैसे बचा, इसीका आश्चर्य। सामनेवाले के हाथ की स्टेन-गन पटेल ने छीन ली और एक फर्लांग फेंक दी। कम्युनिस्ट अपनी बंदूक लेने दौड़ा, पटेल दूसरी तरफ भाग निकला। कम्युनिस्टों ने पीछा किया, तो पटेल एक मकान में जा छिपा। कम्युनिस्टों को उस मकान की ओर आते देख पटेल एक कुएँ में जा गिरा। बहुत खोजने पर भी कम्युनिस्टों ने उसे कहीं नहीं पाया। तब शिकार छोड़कर उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा।

इधर पुलिस और मिलिटरी ने कम्युनिस्टों का पीछा किया, परंतु तब तक तो वे फरार हो चुके थे। जब कुएँ में से पटेल ने आवाज दी, तो मिलिटरीवालों ने उसे बाहर निकाला।

इस तरह दस माह तक सतत यहाँ पुलिस का डेरा जमा हुआ था।

स्वयं अधिकारियों ने भी बताया कि पुलिस इधर अधिक संख्या में है, जिसकी आवश्यकता नहीं। लोगों की सहानुभूति अधिकाधिक कैसे प्राप्त हो, इसीकी चिन्ता अधिकारियों के दिलों में थी। लोगों में खेती-कानून के सुधार की माँग प्रतीत हो रही थी, क्योंकि जमीन के मामले में जनता जाग्रत नजर आ रही थी। सरकार की ओर से भी लगानदारी शासन, टेनेन्सी एक्ट को शीघ्र लागू करने के लिए चंद-रोजा रजिस्टर तैयार किये जा रहे थे, जिनके जून तक मुकम्मिल होने की उम्मीद थी। परंतु उसके जरिये भूमिहीनों की समस्या कैसे सुलझेगी?

ऐसे समय भूदान का कार्यक्रम एक अनोखी जाग्रति और आशा की किरण लेकर यहाँ पहुँचा है, ऐसी अधिकारियों की राय थी।

इस छोटे-से गाँव में काफी शिक्षित नवयुवक पाये गये। उनमें भावना है, पर उन्हें उचित मार्ग-दर्शन मिलना चाहिए। विनोबाजी ने उन लोगों से आत्मीयता से बातें कीं। बातचीत से यह भी मालूम हुआ कि मधिरा के यंगलराव, गोलपाडू के कृष्णा रेड्डी और कान्हापुर के रंगराव आदि कुछ लोग बिना कारण ही जेल में बंद हैं। इधर परिवारवाले कष्ट पा रहे हैं। उपस्थित अधिकारियों ने भी इस शिकायत की सत्यता को स्वीकार किया।

इन सबके बारे में ऊपर लिखकर उन्हें यथासंभव तुरंत रिहा कराने की जिम्मेवारी विनोबा ने अधिकारियों पर सौंपी। हर रोज की तरह आज भी विनोबाजी की अदालत का काम चला, जिसे जिले के इन बड़े-बड़े अधिकारियों ने भी गौर से निहारा। स्थानीय झगड़े तो आसानी से तय हुए ही, लेकिन आसपास के गाँवों के भी कुछ मामले तय हुए, क्योंकि संबंधित दोनों फरीक हाजिर थे। इतने में प्रार्थना की वेला हुई और कोर्ट समाप्त हुआ।

जीते जी बुरा काम नहीं करने दूँगा

प्रार्थना-प्रवचन में विनोबा ने पूछा : "जब पटेल के घर में कम्युनिस्टों ने आग लगायी, तब गाँववाले क्या कर रहे थे? या तो वे दरवाजा बंद करके बैठे थे, या उन्हें संन्तोष हो रहा था कि घर जल रहा है, तो अच्छा है।" फिर लोगों की भयभीत मनोवृत्ति के बारे में कहा : "हम लोग कैसे डरपोक बन गये हैं? कितने निष्क्रिय हो गये हैं? किसीके ऊपर जुल्म हो रहा हो, तो हम केवल देखते रहते हैं। उसकी मदद के लिए नहीं जाते। डरते हैं कि कहीं हम पर ही न बीते। खतरा उठाने की वृत्ति नहीं है। यह कोई निवृत्ति या ज्ञान का लक्षण नहीं है। यह तो आलस्य और कायरता है। लोग कहते हैं कि "हमारे हाथ में शस्त्र नहीं है। सामनेवाला शस्त्र

लेकर आये, तो हम क्या कर सकते हैं ?" क्यों नहीं कर सकते हैं ? हम पिस्तौलवाले का हाथ पकड़कर उसे उसकी भूल समझा सकते हैं और इतने पर वह हमें मारेगा, तो आनंद के साथ भगवान् का नाम लेकर मर सकते हैं।

विनोबाजी ने जटायु की मिसाल देकर कहा : "रावण कितना बलवान् था ! जटायु जानता था कि मैं रावण के हाथ से सीता को मुक्त नहीं कर सकूँगा, लेकिन उसने राम का काम करते-करते मरना पसंद किया। उसने कहा, मेरे जीवन में इससे बेहतर और क्या अवसर आ सकता है ? वह जानता था कि रावण उसे मार डालेगा, फिर भी वह उस पर टूट पड़ा। कहने लगा, अपने जीते जी तुझे बुरा काम नहीं करने दूँगा।

● ● ●

दानं समविभागः : ३५ :

कोदनूर

१६-५-'५१

कान्हापुर के लोग सबेरे प्रार्थना में तो शरीक हुए ही, काफी दूर तक पहुँचाने भी आये। और भी आना ही चाहते थे ,किंतु विनोबा ने रोका और प्रेमपूर्वक सबको बिदा किया। लोगों के हृदय भर आये। जिसके घर में ठहरे थे, उस पटेल का कदम लौटने के लिए उठता नहीं था। उसने अगले पड़ाव तक चलने की आज्ञा माँगी। पड़ाव तक बाबा को पहुँचाकर पुनः-पुनः भक्तिभावपूर्ण प्रणाम करके भींगी आँखों बिदा ली। सहयात्रियों से भी प्रेमपूर्वक मिले। उसे ऐसा ही लग रहा था कि परिवार से बिछुड़ रहा हूँ। कान्हापुर ग्राम और वहाँ के ग्रामवासी, दोनों की चिरस्मृति हम सबके अंतःकरण में अमिट रह गयी।

दुःखदायक कहानी

कोदनूर एकसौ अस्सी घरों का गाँव है। करीब २४०० एकड़ भूमि है। गाँव में एक पिता-पुत्र की निर्मम हत्या हुई है। विनोबाजी उसी घर में ठहरे हैं। पड़ोस के अनंतवरम् में भी एक पटवारी मारा गया है। ६ मील पर एक सब-इन्स्पेक्टर का भी खून हुआ है। पुलिस और भय, दोनों के खेमे तने हुए हैं।

ग्राम-प्रदक्षिणा में विनोबाजी ने देखा कि हरिजनों के मकान बहुत ही छोटे-छोटे हैं। बहुत दुःख हुआ। उनके मकानों के लिए आवश्यक जमीन का प्रबंध दोपहर को ग्राम के प्रमुख व्यक्तियों की सभा में ही हो गया। उसी सभा में थोड़ी जमीन एक दाता ने अपनी इच्छा से विद्यालय के लिए भी दी। भू-दान-यज्ञ में भूमि छोटे-छोटे लोगों ने ही विशेष दी।

गाँववाले काफी संख्या में मिलने आये। विनोबा ने समय भी उन्हें पर्याप्त दिया। बोले, "आपके इस जिले को रावण के जिले की प्रख्याति है। जिधर जाओ उधर सुनते हैं यहाँ एक खून हुआ, वहाँ दो खून हुए। और फिर बंदोबस्त के लिए सरकार को पुलिस भेजनी पड़ती है। सारे हिन्दुस्तान की पुलिस इस समय तेलंगाना में आयी हुई है। मद्रास, पंजाब, उत्तर-प्रदेश, सब जगह का पुलिस-विभाग यहाँ पहुँच गया है।"

कुछ देर रुककर, उन लोगों की मुद्राओं की ओर कुछ गंभीर निगाह डालकर विनोबा ने पूछा :

"तो, यह जो आप लोगों के यहाँ हो रहा है, उसका क्या यही उपाय है कि पुलिस को यहाँ अखंड काल के लिए रखा जाय? हम तो इस उद्देश्य से आये हैं कि शांति का कोई उपाय ढूँढ़ा जाय।"

फिर नलगुंडा जिले के एक मास के प्रवास के कुछ अनुभव बताये। रामायण, महाभारत से अनेक दृष्टांत देकर समझाया : "भाइयो, आप जानते हैं कि कौरव-पांडवों में आपसी झगड़ों के कारण अनेक अक्षौहिणी सैन्य नष्ट हुआ और आखिर में पांडवों के पक्ष में सात और कौरवों के पक्ष तीन, ऐसे कुल सिर्फ दस लोग शेष रहे। और फिर भगवान् कृष्ण ने जब अपने घर जाकर शांति से रहना चाहा, तो वहाँ भी यादवों में झगड़ा हुआ। कृष्ण ने उन यादवों को बहुत समझाया, परन्तु यादव भी तेलंगाना-निवासियों की तरह थे—ताड़ी-शराब खूब पीते थे। नहीं माने। अन्त में सारे के सारे बर्बाद हुए।"

विनोबा का हृदय भर आया। शायद सोचते थे—तेलंगानावासी अगर न सँभले, तो न जाने उनका भी क्या हाल होगा!

थोड़ी देर बाद पुनः बोले : "भाइयो, आप लोगों में भी ऐसी ही आपसी लड़ाइयाँ चल रही हैं। लोग हमें कहते हैं कि गरीबों के पास जमीनें नहीं हैं, इसलिए झगड़े होते हैं। यह सही है, परन्तु यह भी सही है कि झगड़े होते रहेंगे, तो गरीबों के हाथ कुछ भी नहीं आयेगा। यहाँ

पुलिस आकर बसेगी और कायम के लिए बसेगी। ऐसी दुःखदायक कहानी आप लोगों की है।"

द्वेषभाव ऐसे मिटेगा

फिर बोले : "ऐसे जब हम इस तेलंगाना में आये, तो हमें सूझता नहीं था कि क्या करेंगे। लेकिन हमने सोचा कि घूमेंगे तो रास्ता मिलेगा, भगवान् दिखायेगा। पोचमपल्ली में भगवान् ने रास्ता दिखा दिया। भाइयो, प्रेम से जमीन थोड़ी भी मिलती है, तो गरीबों को संतोष होता है। फिर कम्युनिस्टों का काम वहाँ नहीं रहता।

"आपके गाँव में ७७४ लोग हैं। फी आदमी औसत तीन एकड़ जमीन आती है, जब कि दूसरे गाँवों में एक एकड़ का प्रमाण भी मुश्किल से पड़ता है। और ऐसा होते हुए यहाँ के १८६ घरों में से ६८ घरों में जमीन नहीं है। तब बताइये, यहाँ शांति कैसे रहेगी? और अगर लोगों ने दान दिया, तो अशांति क्यों रहेगी?"

फिर कम्युनिस्टों के बारे में कहा :

"मैं तो उनसे भी हैद्राबाद में तथा नलगुंडा में मिला। अगर उनके लोग यात्रा में मुझसे आकर मिलें, तो मैं मिलने को तैयार हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरी आवाज उनके पास पहुँचे। मैंने उन्हें जेल में समझाया है कि केवल इस हैद्राबाद में ही आपकी पार्टी गैरकानूनी है। क्यों खून-खराबी में पड़े हो? हिंसा त्यागो। औरों की तरह तुम भी चुनावों में हिस्सा ले सकोगे।

"अगर आप लोगों को दान करने की और कम्युनिस्टों को हिंसा छोड़ने की बुद्धि हुई, तो इस देश में शांति कायम हो सकेगी। कम्युनिस्ट आपका द्वेष करते हैं, परंतु आपके जीवन में प्रेमभाव प्रकट हुआ, तो उनका द्वेष-भाव टिकेगा नहीं।"

लोगों ने कुल दस एकड़ दान दिया। दान बहुत कम था। परंतु प्रेम से दिया, तो विनोबा ने मंजूर कर लिया।

गरीब के घर में भी परमेश्वर आता है

प्रवचन के प्रारम्भ में कान्हापुरवासियों का प्रेम, यहाँ के हरिजनों की स्थिति, उनके मकानों के लिए मिली जमीन, विद्यालय की जमीन, सबका जिक्र करके फिर अपने मिशन की अब तक की पार्श्वभूमि बताकर कहा : "भाइयो, यह जो मैं दान माँग रहा हूँ और आप देते चले जा रहे हैं, तो यह कोई उपकार नहीं किया जा रहा है। शास्त्रकारों ने दान की अच्छी व्याख्या बतायी है। उन्होंने कहा है "**दानं समविभागः**" अर्थात् अपने पास जो चीज है, उसे दूसरों को देने की बात इसमें है। समान विभाजन की बात है, न कि उपकार की। माता-पिता जमीन कमाते हैं, फिर भी अपने बच्चों को हिस्सा देते हैं। मैं पूछता हूँ, जमीन लड़के ने तो नहीं कमायी, फिर देते क्यों हैं? तो कहते हैं कि 'हमारा लड़का है।' तो मैं पूछता हूँ कि क्या लड़के माता-पिता के होते हैं? अगर वे माँ-बाप के होते, तो उनके मन के मुताबिक वे तैयार होते। माता-पिता तो यह भी नहीं जानते कि लड़का होनेवाला है या लड़की। वे यह भी नहीं जानते कि उसकी शक्ल कैसी होगी। वे यह भी नहीं जानते कि उसके विचार क्या होंगे, वह हमें अनुकूल होगा या प्रतिकूल। अर्थात् जो बच्चे होते हैं, उन पर माता-पिता का कोई हक नहीं होता, परमेश्वर का हक होता है। तो अगर आपके घर में परमेश्वर आता है, तो आप उसको भूमि देते हैं, उसी तरह गरीब के घर में वही परमेश्वर आता है। इसलिए होना यह चाहिए कि जितने लड़के-बच्चे हैं, वह सारे परमेश्वर के हैं और उनकी चिंता सारा गाँव करता है। तो आपके पास जितनी भूमि होती है, उसके समान हिस्से करके अपने हरएक बच्चे को आप देते हो, वैसे ही कुछ हिस्सा गरीबों को भी देना चाहिए। और यह समझना चाहिए कि जैसे घर के बच्चों का जमीन पर हक है, वैसा गरीबों का भी उस जमीन पर हक है।"

फकीरी और प्रेम-कानून

कानून के बारे में कहा : "मेरे हाथ में कानून दो, तो मैं फौरन

आपको फकीर बना दूँगा और जहाँ मैंने आपको फकीर बनाया, कि आप देखेंगे कि सबको सुख ही सुख मिलता है।

वत्सलता का सुख

"जैसे माता-पिता अपने लड़के की चिंता करते हैं, वैसे गरीबों की चिंता करनी है। जिस तरह माता के स्तन का पान करने के लिए बच्चों का मुँह स्तन को छूता है, तो माता को आनंद होता है, उसी तरह कोई जमीन माँगने को आयेगा, तब ऐसा आनंद होना चाहिए।

"जैसे गाय का दूध लेनेवाला उसके पाँव बाँधकर दूध लेता है, वैसा हमको नहीं लेना है। लेकिन, जैसे गाय का बछड़ा हक के साथ उसका दूध लेता है और गाय भी दिल खोलकर देती है, वैसा मुझे आपसे लेना है। आप देखते हैं कि आपने मुझे ज्यादा दान नहीं दिया है, लेकिन जितना दिया है, उससे हवा बदल गयी है। इस तरह उदारता से दिल खोलकर देते चलो, तो आप देखेंगे कि हवा में क्या फर्क होता है।

"मुझे मालूम नहीं था कि कम्युनिस्टों की समस्या का हल इतना आसान होगा। लेकिन यहाँ आने पर ध्यान में आ गया कि यह समस्या आसान है। आप उदार दिल से दान देने लगेंगे, तो कम्युनिस्ट वैसे ही खतम हो जायेंगे। मैं जानता हूँ कि कम्युनिस्टों के नेता विचारवान् हैं। वे समझ गये हैं कि इस तरह खून-खराबी से काम नहीं चलेगा। लेकिन उसके साथ-साथ उदार दिल से गरीबों को अपनाने लगोगे, तो काम ठीक होगा। आज यहाँ दस एकड़ दान मिला है। मैं आशा करता हूँ कि सोने के समय तक और भी मिलेगा।"

प्रार्थना के बाद थोड़ी देर भजनानंद चला। और जैसे ही भजन खतम हुआ, एक भाई ने उठकर कहा : 'सरकार, मेरे दो एकड़ दान में लिख लिये जायँ।'

• • •

आपके घर एक लड़का और पैदा हो गया : ३६ :

वैरा
२०-५-'५१

ये हत्याएँ

वैरा नदी के किनारे बसा हुआ यह छोटा-सा गाँव, नदी के बाँध और रेलवे की सुविधा के कारण काफी महत्त्व का है। लेकिन यहाँ पहुँचते ही इर्द-गिर्द में कम्युनिस्टों द्वारा हुई हत्याओं की शिकायतें आने लगीं। एक मील पर रेड्डीगुडा में चिरगुर वेंकटरामय्या को मार डाला गया था। लक्ष्मी नरसिंहम् को मारने की कोशिश की गयी थी।

गाँव कुछ बड़ा होने से इर्द-गिर्द से काफी लोग बड़े सबेरे से ही जमा हो गये थे। सबेरे की सभा भी आज काफी महत्त्व की हुई। डेढ़ घंटे तक विनोबाजी बोलते रहे। दोपहर में भूमिवानों की सभा में भी एक घंटा बोले। फिर शाम को भी विस्तार से समझाया। और फिर रात में सोने के समय तक लोग आते ही रहे और विनोबा भी उनसे बातें करते ही रहे।

आपसी झगड़ों का भूदान पर असर

नलगुंडा में कार्यकर्ताओं में दो ही वर्ग दीखे। एक कम्युनिस्टों का, जो गुप्त था और एक कांग्रेसवालों का, जो इस काम में सहयोग दिये जा रहा था। इधर वरंगल में कम्युनिस्टों का संघटन तो व्यवस्थित दिखाई दिया। लेकिन कांग्रेसवाले खूब उदासीन मालूम हुए। उनके आपसी झगड़ों के कारण वे यात्रा में भी ठीक सहयोग दे नहीं पाये।

एक भाई ने विनोबाजी से पूछ भी लिया कि "चूँकि इस जिले में कांग्रेस का काम ठीक नहीं चल रहा है और आपसी झगड़े चलते रहते हैं, भूदान के काम पर भी उसका असर पड़ता है।"

विनोबाजी ने कहा : "आपका कहना ठीक है। हमारे काम पर यहाँ के आपसी झगड़ों का असर पड़ रहा है, यह हम देख रहे हैं। परंतु हम साफ कर देना चाहते हैं कि हमने अपने काम का जो तरीका अख्तियार किया है, उसके कारण वह काम किसी एक संस्था से खास संबंध रखता है, ऐसी बात नहीं है। वह न तो कांग्रेस से संबंध रखता है, न अन्य किसी राजनैतिक दल से। परंतु इसमें शक नहीं कि यहाँ जो कुछ काम होगा, उसका असर सारे देश के वातावरण पर होगा; क्योंकि कम्युनिस्ट पार्टी तो देशभर में है। और इसलिए अगर हम प्रेम से यह जमीन का मसला हल नहीं करते हैं, तो देश के लिए एक खतरे की बात होगी, यह समझ लेना चाहिए। क्योंकि ऐसे खतरों के लिए इस देश में इस समय वातावरण अधिक अनुकूल है।"

समानता की कल्पना

दूसरे एक भाई ने पूछा : "क्या गांधीजी होते, तो वे इस मसले को ऐसा ही हल करते? आप तो सबको समान ही बनाना चाहते हैं। क्या गांधीजी इसे पसंद करते?"

"गांधीजी इस मसले को कैसे हल करते, मैं नहीं कह सकता" विनोबा ने अत्यंत नम्रभाव से उत्तर दिया, "हरएक मनुष्य का सोचने का तरीका जुदा हो सकता है। उसका अनुभव भी जुदा होता है। इसलिए किसी दूसरे के अनुभव के बारे में हम चर्चा नहीं कर सकते और न चर्चा करने से कोई लाभ ही होता है। अब रहा प्रश्न समानता का। तो हमारा प्रयत्न सबको समान बनाने का तो नहीं हो रहा है। सामान्य दया का प्रश्न मैंने आप लोगों के सामने रखा है। मुख्य प्रश्न है, सबको थोड़ी-थोड़ी भूमि देने का। इससे कुछ विषमता तो दूर होगी ही। परंतु जो समानता आयेगी, वह पाँच अंगुलियों के समान होगी। ऐसी समानता आने की आज जरूरत भी है।"

यह तो मैंने यज्ञ शुरू कर दिया है

प्रश्न : "आपके प्रयत्नों से अभी तेलंगाना में शांति होती दीखती है। आपके आने के बाद भी वह टिककर रह सकेगी, ऐसा आप मानते हैं?"

उत्तर : "अगर आप सब कोशिश करें, तो क्यों नहीं टिकी रहेगी? रहनी चाहिए--रह सकती है। परंतु यह नहीं हो सकता कि आसपास लोग भूखे हों, दुःखी हों और हम सुख से खाते रहें, सुख से जिंदगी बसर करते रहें। इसलिए मैंने यह जमीन माँगना शुरू किया है। लेकिन लोगों का खयाल है कि मुझे सिर्फ श्रीमानों से लेना चाहिए। मेरा विचार ऐसा नहीं है। **यह तो मैंने एक यज्ञ शुरू किया है।** इसलिए जमीन ज्यादा मिलनी चाहिए, इस बात का उतना महत्त्व नहीं है, जितना ज्यादह लोगों से मिलने का महत्त्व है। अब तक मुझे ३५०० एकड़ से अधिक जमीन मिली है, परंतु कुल करीब तीन सौ लोगों से ही मिली है। बहुत संभव है, कोई एक बड़ा जमींदार मुझे बहुत ज्यादह जमीन दे दे। परंतु हरएक मनुष्य से लेने में जो आनंद है, वह सिर्फ एक ही आदमी से लेने में नहीं है। गोवर्धन पर्वत उठाने में छोटे-बड़े, सबने हाथ लगाया, तो फिर भगवान् ने भी अपनी अंगुली लगा दी और पर्वत खड़ा हो गया।

शबरी के बेर

"मैं तो यहाँ की हवा बदल देना चाहता हूँ। मैं यहाँ आया, तो कार्यकर्ताओं ने कहा कि यहाँ तो कोई बड़े जमींदार हैं नहीं। पचास-पचास एकड़वाले हैं। लेकिन मैं तो भाई का हक माँगता हूँ। आप अगर पाँच हैं, तो मुझे छठा मानकर दीजिये। छह हों, तो सातवाँ दीजिये। सात हों, तो आठवाँ दीजिये। नलगुंडा में हमारे साथ के एक भाई ने हमें अपनी जमीन का चौथा हिस्सा दिया। तो फिर औरों ने भी दिया। परन्तु एक भाई के पास केवल चार गुंठे ही थे। उसने भी एक गुंठा दिया। क्या उसका दान कम महत्त्व का है? शबरी के पास बेरों के

सिवा क्या था ? वह एक गुंठा जमीन शबरी के बेर से कम महत्त्व नहीं रखती ।

"इस तरह अगर सारे लोग यज्ञ में हिस्सा लेते हैं, तो देखते-देखते हवा बदलती है और मसला हल होता है । इतना ही नहीं, देश के कितने ही निर्माण-काम हमें करने हैं । उन सबके लिए वातावरण तैयार हो जाता है ।"

प्रधानमंत्री का पत्र

प्रार्थना के बाद विनोबाजी नदी के किनारे टहलने के इरादे से निकले । तो हैदराबाद-सरकार के प्रचार और प्रकाशन-विभाग के प्रमुख श्री विनोदराव मिलने आये । भक्तिभाव से प्रणाम किया और एक मुहर-बंद लिफाफा देकर बोले : "पंडितजी की तरफ से आया है ।"

घूमने निकल ही चुके थे । रास्ते में ही लिफाफा खोलकर पढ़ लिया । इधर तेलंगाना में जो कुछ काम हुआ, उसकी जो जानकारी उन्हें मिली थी, उससे वे बहुत प्रभावित थे । विनोबा के स्वास्थ्य के बारे में भी पत्र में चिंता प्रकट की थी । पत्र पढ़ने पर विनोबा बोले : "इतने काम में रहकर भी कितनी फिक्र रखते हैं ।" परंतु उन्हें यहाँ की सब खबरें मिलती कहाँ से हैं ? अखबारों में तो विशेष कुछ आता नहीं है । नहीं आता है, यही अच्छा है । कुछ काम होने पर लोगों को उसकी जानकारी मिल ही जाती है । काम ही न हो और खबरें छपती रहें, यह अच्छा नहीं है ।

लौटकर आये, तो अँधेरा हो चुका था । विनोबाजी ने बाहर तकिये के सहारे श्री विनोदराव से कुछ देर बातें कीं । रास्ते में भी बातें हुई थीं । विनोदराव चाहते थे कि यदि विनोबाजी जवाब लिखा दें, तो वे अपने साथ ही ले जायेंगे । विनोबा ने बाद में जवाब भेजने की बात कहकर विनोदराव को बिदा किया ।

आपके घर का छठा लड़का !

इतने में दो-तीन भाई विनोबा से मिलने आये । "आपने सुबह चर्चा

में गरीबों से भी जमीन माँगने की बात कही। यह कैसे संभव है ? गरीब लोगों को तो अपने परिवार का पोषण करना ही मुश्किल होता है। उन्हें तो आपकी ओर से ही और मिलना चाहिए।"

"आपके कितने लड़के हैं ?"

"आठ लड़के हैं।"

"जमीन कितनी है ?"

"पाँच एकड़ है।"

"आपकी उम्र क्या है ?"

"करीब पचास।"

"क्या आपको उम्मीद है कि अब भी कोई संतान आपके घर में आ सकती है ?"

"(कुछ संकोच से) यह कौन कह सकता है ? परंतु भगवान् की कृपा हुई, तो असंभव क्या है ?"

"मान लीजिये कि इस उम्र में भी आपके घर में और एक लड़का आ गया, तो उसे भी आपके पाँच एकड़ में से अपना हक मिलेगा या नहीं ?"

"जी, क्यों नहीं मिलेगा ?"

"तब आप देरी क्यों कर रहे हैं ? समझ लीजिये कि मैं आपके घर में नौवाँ लड़का पैदा हो चुका हूँ। फिर मुझे लड़के का हिस्सा दीजियेगा या नहीं ?"

सुननेवाले की आँखों में आँसू चमक गये। उसने अत्यंत भक्तिभाव से विनोबा को प्रणाम किया और पाँच एकड़ में से नौवें हिस्से का दान-पत्र प्रसन्न मन से भर दिया। ● ● ●

क्रांति की कीमिया   : ३७ :

तन्निकल्ला

२१-५-'५१

अत्यंत छोटा-सा गाँव, यात्रियों के लिए बनी एक छोटी-सी छपरी में निवास। सामने घनी अमराई। सबेरे तीन-चार घंटे तक, लिखने-पढ़ने के लिए, बाबा ने यह आम की छाया ही पसंद की।

पंडितजी को पत्र लिखा, जिसमें उनके प्रेमपूर्ण पत्र के लिए धन्यवाद मानते हुए अपनी श्रद्धा को दोहराया कि "अहिंसक मार्ग से सभी सामाजिक तथा आर्थिक मसलों का हल निकल सकता है। लेकिन उसके लिए हृदय-शुद्धि की आवश्यकता है। ऐसी हृदय-शुद्धि हम कहाँ से लायें, यही सवाल है। लेकिन अगर उसीके लिए हम कोशिश करते रहेंगे, तो वह जरूर कभी-न-कभी हासिल होगी, ऐसा विश्वास रख सकते हैं।"

गाँव की प्रदक्षिणा हुई, तो मालूम हुआ कि यहाँ भी हत्याकांड हुआ है। लोग बहुत गरीब हैं। कुछ के पास जमीनें हैं, पर वे भय के कारण बाहर चले गये हैं और आज जब लौटने का अवसर था, अभागे लौट भी नहीं पाये हैं।

जाहिर है कि तेलंगाना में भूदान के कारण जो दर्शन हो रहा था, उसने विनोबाजी की इस मूलभूत श्रद्धा को बलवती कर दिया था।

इतने में अखबार आये। दिनांक १६ मई, १९५१ को संसद् में भारतीय संविधान-संशोधन-विधेयक उपस्थित करते हुए और उसे प्रवर-समिति को सुपुर्द करने का प्रस्ताव करते हुए प्रधान-मन्त्री ने जो भाषण किया, उसमें तेलंगाना में चल रही विनोबाजी की पद-यात्रा का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा :

"तेलंगाना में आज क्या हो रहा है, मैं सदन को बतलाना चाहता हूँ। आज वहाँ की परिस्थिति का सामना बिलकुल ही भिन्न और नये तरीके से किया जा रहा है। यह तरीका शान्ति और अहिंसा का है। हम देख रहे हैं कि उस उपद्रवग्रस्त क्षेत्र में अपनी दुर्बल काया लिये विनोबा भावे निश्चिन्ततापूर्वक परिभ्रमण कर रहे हैं और अपनी वाणी और कार्यों के द्वारा अत्यन्त व्यापक प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं। वे जो कुछ कर रहे हैं और उसका जो कुछ परिणाम हो रहा है, वह इतना अधिक है कि कदाचित् ही किसी सबल और सशस्त्र सैन्य द्वारा संभव होता। यदि आज भी वह इतना प्रभावपूर्ण है, तो उसके आधार पर हम इस बात की परिकल्पना तो कर ही सकते हैं कि भविष्य में इसका प्रभाव अनिवार्यतः बहुत अधिक पड़ेगा। यह स्पष्ट है कि सैन्य-शक्ति का प्रभाव वर्तमान काल के लिए भले ही उपयुक्त हो; किन्तु अन्ततोगत्वा वह इतना प्रभावी सिद्ध न हो, इतनी ही अपनी कटु स्मृतियाँ भी पीछे छोड़ जाय।"

पंडितजी के निवेदन के बाद रिपोर्ट में लिखा है कि विधान-सभा में बहुत देर तक तालियाँ पिटती रहीं।

बयान सभी सहयात्रियों को बहुत ही अच्छा लगा। संभव है, पत्र लिखने के बाद पण्डितजी को तुरन्त पार्लियामेण्ट में भी बोलने की प्रेरणा हुई हो। सहयात्री विनोबा की प्रतिक्रिया जानने को उत्सुक थे। "भगवान् का काम है, तो उसके प्रचार की चिंता भी वही करता है" इतना कहकर विनोबा शांकर-भाष्य पढ़ने में तल्लीन हो गये।

यज्ञ-प्रक्रिया

इजलास का काम दोपहर से प्रार्थना के समय तक चलता रहा। जितनी शिकायतें आयी थीं, उन सबके फैसले देकर विनोबा सीधे प्रार्थना-स्थल पर पहुँचे। अमराई में हजारों स्त्री-पुरुष जमा हो गये थे। कल विनोबाजी ने चर्चा में कहा ही था कि मैंने यह एक यज्ञ शुरू किया है। इसके पहले भी एक बार उन्होंने 'यज्ञ' में सबको भूदान देने का आवाहन किया था। उसी यज्ञ-

प्रक्रिया का उन्होंने आज विस्तार से विवेचन किया। बोले : "जब-जब अशांति पैदा होती है, हमारे बुद्धिमान् लोग यज्ञ शुरू करते हैं। तो, मैंने इस मुल्क में प्रवेश किया और यहाँ की अशांति देखी, तो सोचा कि मुझे भी यहाँ यज्ञ शुरू कर देना चाहिए और यहाँ के खून, मार-पीट और झगड़ों के लिए शांति-यज्ञ के सिवा क्या उपाय हो सकता था?"

फिर यज्ञ के स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा : "मुझे पहले सूझता नहीं था कि कौन-सा यज्ञ शुरू किया जाय।...पशु-बलि-यज्ञ से तो मनुष्य को कोई लाभ नहीं था। लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि पशुओं की बलि से लाभ हो सकता था। वे ही पशु हैं, जिनका राज्य हमारे मन पर चलता है। मेरे ध्यान में आया कि इस जमाने में द्रव्य-लोभरूपी पशु से जो तकलीफ हो रही है, वह शेरों से भी ज्यादा है। लोभरूपी पशु से हर जगह तकलीफ हो रही है। इसलिए मैंने भूदान माँगना शुरू किया है। लोगों ने लोभरूपी पशु का पूरा बलिदान तो किया नहीं है, परंतु थोड़ा-थोड़ा भूमिदान देना शुरू किया है।"

फिर विनोबा ने समझाया कि "जैसे किसी महायज्ञ में सबको हिस्सा लेना होता है, भूमिदान-यज्ञ में भी सबकी ओर से आहुति अपेक्षित है, जिससे सबकी चित्त-शुद्धि हो।"... लेकिन "जिनके पास भूमि नहीं, वे इस यज्ञ में कैसे हिस्सा ले सकते हैं? यह बात सही है कि वे भूमिदान नहीं दे सकते। वे तो भूमि पानेवाले हैं। उनको जब भूमि दी जायगी, तो उस पर वे अच्छी तरह मेहनत करेंगे। देश की पैदावार बढ़ायेंगे। उनका यही यज्ञ कहा जायगा।"

सबेरे एक कांग्रेसी मित्र ने कहा : "विनोबाजी, आप भूदान में हृदय-परिवर्तन की शक्ति की बात करते हैं। परंतु हमें महसूस नहीं होता कि उसमें ऐसी कोई शक्ति मौजूद है।"

क्रांति की कीमिया

अपने प्रवचन में इसका जिक्र करते हुए विनोबाजी ने कहा : "उस

भाई का वह सवाल सुनकर ही मैं समझ गया कि उनकी आँखें बंद हो गयी हैं। वे देखते नहीं कि यह तो हृदय-परिवर्तन का काम चल रहा है। अगर किसीका हृदय-परिवर्तन पर विश्वास नहीं है, तो उसका हिंसा पर विश्वास है और उस मनुष्य को कम्युनिस्टों की पार्टी में ही दाखिल होना चाहिए। जिनका हृदय-परिवर्तन पर विश्वास नहीं है, वे कांग्रेस में रहते हैं और काम करते हैं किसलिए? कांग्रेस एक ऐसी संस्था है, जिसको गांधीजी ने पाला-पोसा है, बुद्धि दी है। यह मेरी बुद्धि भी उन्हींकी देन है। इसलिए कांग्रेसवालों से कहता हूँ कि आप लोग इसे समझो, तो आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। बात ऐसी है कि किसी चीज में क्या ताकत है, दूर दृष्टि से देखना होता है। हरएक लोभी बन गया, तो गाँठ बाँधकर रख देता है। अगर भूदान का कुछ मजा वह चखता है, तो गाँठ खुलती है। जहाँ उसके हृदय की गाँठ खुलती है, वहीं आत्मशुद्धि होती है। हृदय-शुद्धि हो गयी, तो विशेष दर्शन होता है। जब दर्शन होता है, तब जीवन पलट जाता है। जहाँ जीवन पलट गया, वहाँ समाज में क्रांति होती है। समाज में क्रांति चंद लोगों के हृदय-परिवर्तन द्वारा होती है। चंद लोगों के हृदय-परिवर्तन से समाज में विचार फैलता है, उस विचार के अनुसार कानून बदलते हैं, समाज-रचना बदलती है। तो यह सारी कीमिया क्रांति की होती है, जो हृदय-परिवर्तन से होती है। यह एक जादू है। इसका अर्थ कोई गणित-शास्त्र के मुताबिक नहीं समझा सकता। उसको समझने के लिए कल्पना-शक्ति की आवश्यकता है। कल्पना-शक्ति भी पारदर्शक होनी चाहिए। ऐसी प्रतिभावान् कल्पना-शक्ति जहाँ है, वहाँ यह जो काम चल रहा है, उसका महत्त्व समझ में आयेगा।"

● ● ●

भिद्यते हृदय-ग्रंथिः : ३८ :

खम्मम
२२-५-'५१

कम्युनिस्टों से सबक सीखना चाहिए

जिले का प्रमुख शहर होने से आम जनता में तो मानो उत्साह की बाढ़ आयी थी। शहर में पहुँचते ही एक जगह एक छात्रावास का शिलान्यास किया गया और फिर विनोबा कम्मा हॉस्टेल पहुँचे, जहाँ आज का पड़ाव था। 'कम्मा' जाति के लोग रेड्डी ही होते हैं, खेती का पेशा है। अपने को रेड्डियों से ऊँचा मानते हैं। पहले जमाने में शासक-वर्ग में से रहे हैं। रहन-सहन का ढंग खर्चीला होता है। रॉयल सीमा के कुछ जिलों में अधिक तादाद में और अधिक प्रभावी भी हैं।

जिले-भर से कार्यकर्ता लोग जमा हो गये थे, उन्हें बुलाया भी था। पड़ाव पर पहुँचने पर एक पेड़ के नीचे विनोबा दही लेने के लिए बैठे। जिला-कांग्रेस के अध्यक्ष श्री बम्मकट सत्यनारायणराव मिलने आये। ऐसे इनसे मिलने की ख्वाहिश विनोबा की नलगुंडा जिला से ही थी। वरंगल का प्रोग्राम बनाने के बारे में इन्हें कई बार बुलाया भी था। न खुद आये, न किसी प्रतिनिधि को भेजा। जब केशवरावजी ने और मित्रों की सलाह से प्रोग्राम बनाया, तो उसे इन्होंने नापसंद किया। यात्रा में इनके जिले के कार्यकर्ता भी बहुत कम साथ रहे। विनोबाजी रोज देख रहे थे कि काम नहीं हो पा रहा है, जिसकी वजह और कुछ नहीं है, कार्यकर्ताओं के आपसी झगड़े ही हैं और परिणाम यह हो रहा है कि गरीबों के लिए जमीन हासिल करने के काम में रुकावट पैदा हो रही है। तो, जिलाध्यक्ष से कुछ स्पष्ट बातें करना विनोबाजी ने उचित समझा।

"दौरे में आप लोग दिखाई नहीं देते, क्योंकि इस दौरे की अपेक्षा

आप लोगों को अन्य सभाएँ महत्त्व की मालूम होती हैं। यह सब आप लोगों के आपसी झगड़ों का नतीजा है। आपको समझना चाहिए कि अगर आप लोग इस समय इस यात्रा में हमारे साथ रहते हैं और कुछ काम करते हैं, तो कांग्रेस की प्रतिष्ठा है। आपके साथ न रहने से हमारी कोई अप्रतिष्ठा नहीं होगी। हम तो अपना काम करते चले जायँगे। पर आप लोगों की प्रतिष्ठा खतम हो जायगी।"

फिर आपसी झगड़ों के संबंध में कहा : "आप लोगों को अब आपके यह आपसी झगड़े छोड़ देने चाहिए! यह हम बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकते कि आप लोग छोटे-छोटे ग्रूप्स बनाकर लड़ते रहें। इस मामले में आपको कम्युनिस्टों से सबक सीखना चाहिए। उनके सिद्धान्तों की बात छोड़ दीजिये, परंतु उनमें आपस में कितना भाईचारा है। नलगुंडा में हमने कार्यकर्ताओं में ऐसी फूट नहीं देखी। परंतु यहाँ वह नजर आ रही है।"

पद-लोलुपता

इस फूट और आपसी झगड़े की कारण-मीमांसा करते हुए कहा :

"स्वराज्य के पहले हम सबके सामने अंग्रेजों को यहाँ से निकालने का एक महान् कार्य था। आप लोगों के सामने भी निजाम का सवाल था। परंतु अब स्वराज्य मिल जाने के कारण आप लोगों के सामने वैसा त्याग का कोई कार्यक्रम नजर नहीं आ रहा है। ऐसे समय प्रत्यक्ष सेवा के काम में लग जाना चाहिए, जो नहीं हो रहा है। सबको एक होकर रहने के लिए जो कुछ भी जरूरी है, वह सब आप लोग कीजिये। अगर आप लोगों में किसी पद के लिए आपस में कोई होड़ हो रही हो, तो समझदारी इसीमें है कि किसी एक को फौरन हट जाना चाहिए।"

दरिद्रनारायण का हिस्सा

कार्यकर्तागण तथा स्थानीय लोग काफी जमा हो गये थे। विनोबा ने देखा कि दरिद्रनारायण का कुछ काम हो सकता है। बापू की तरह

विनोबा भी दरिद्रनारायण के लिए माँगने का कोई अवसर जाने नहीं देते। उपस्थित मित्रों से उन्होंने भू-दान का जिक्र किया और जमीन की माँग भी की, तो जिस 'कम्मा' हॉस्टेल में ठहरे थे, वहीं के व्यवस्थापक ने पचास एकड़ का दानपत्र भेंट किया और फिर काम को गति मिल गयी।

एक के बाद एक दानपत्र मिलते गये।

पुत्र, सुहृद्-शोक

भीड़ कुछ कम हुई। विनोबा विश्राम के लिए अपने कमरे में आकर बैठे। 'कम्मा' हॉस्टेल के व्यवस्थापक भी पीछे-पीछे आये और नम्रता से पास बैठ गये। उनका भक्तिभाव देखकर विनोबा ने उनसे अपना हाल बताने को कहा। विनोबा की स्नेहभरी वाणी सुनकर उनके हृदय का बाँध टूट गया और फूट-फूटकर रोने लगे। कुछ कहते नहीं बनता था। कुछ दिन पहले एक रोज जब उनका जवान लड़का भोजन कर रहा था, तब कम्युनिस्टों ने उसे उसी हालत में मार डाला।

उनका दुःख उतना ही नहीं था। उनकी दृष्टि से सर्वोदय में श्रद्धा रखनेवाले उनके दो अत्यंत निकट के मित्र श्री शंकरय्या और सीतारामय्या बिना कारण जेल में बंद थे। यह भी कार्यकर्ताओं के आपसी फूट का ही एक परिणाम था कि परस्परविरोधी दल के कार्यकर्ताओं की झूठी शिकायत पुलिस से की जाय, ताकि वे जेल में बंद कर दिये जायँ और बाहर राजनैतिक दाँव-पेंच के लिए रास्ता साफ हो जाय।

"निजाम के राज्य का अनुभव तो हम ले चुके हैं। दिल्ली का राज्य याने हम तो रामराज्य ही समझते थे। परंतु स्वराज्य-सरकार के राज्य में भी ऐसा अन्याय जारी रहे, इससे हमें बहुत दुःख और निराशा होती है।"

रियासती प्रजा के दिलों में अब तक कितनी श्रद्धा और भावना कायम है!

उन दो कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी के लिए सरकार के पास भी कुछ कारण होंगे ही। परंतु आपसी फूट का कारण सभी ने मुख्य बताया।

चेतावनी

दोपहर को भूमिवान् और कार्यकर्ता, दोनों पुनः मिलने आये। सबेरे विनोबा काफी बोल ही चुके थे। भीड़ के कारण भी थकावट काफी थी। शाम को फिर बोलना ही था। फिर भी जब स्वयं चक्रवर्ती राजा बलि मिलने आये, तो विनोबा को विश्राम कहाँ? मन में काफी चिंतन भी चल ही रहा था। परिस्थिति अब विनोबा से छिपी नहीं थी, इसलिए पुनः कुछ साफ शब्दों में बातें हुईं :

"मैं देख रहा हूँ कि इस इलाके में देहातवाले कांग्रेसियों से तंग आ गये हैं। और इधर एक ऐसा यज्ञ शुरू हुआ है, ऐसा आंदोलन चल रहा है, जिसका अखिल भारतीय महत्त्व है। ऐसी परिस्थिति में अगर कार्यकर्ता और जनता गफलत में रही, तो परिणाम अच्छा नहीं होगा।

"हमारा रिवाज यह रहा कि हम किसीके दिल को दुःख नहीं पहुँचाते। लेकिन हम कहना चाहते हैं कि आप लोगों ने बिल्कुल गलत काम किया है। यहाँ तो एक गोवर्धन पर्वत उठाने का काम सामने खड़ा है, जिसमें आपको चाहिए था कि आप अपनी सारी ताकत जुटा देते। मैं चाहता हूँ कि पुलिस अब इस इलाके से उठ जाय। लेकिन अगर आप लोगों का रवैया ऐसा ही रहा, तो पुलिस को यहाँ से हटाने की सलाह मैं नहीं दे सकूँगा। नतीजा यह होगा कि पुलिस और मिलिटरी का खर्च यहाँवालों को बर्दाश्त करना होगा।"

उज्ज्वल अतीत

लोगों को देश की स्थिति और जागतिक पार्श्वभूमि में उनका कर्तव्य समझाते हुए बोले :

"हमारे यहाँ के लोग सारी दुनिया को एक समझने की बात आसानी से समझ लेते हैं। बच्चे तक समझते हैं। लेकिन यूरोप की हालत ऐसी नहीं है। उन लोगों के देश हमारे यहाँ के छोटे-छोटे प्रान्त-जैसे हैं। परन्तु वे लोग प्रेम से रहने के बजाय आपस में लड़ते रहते हैं।

उनकी वे लड़ाइयाँ स्वतन्त्र राष्ट्रों के बीच की लड़ाइयाँ होती हैं। इसके विपरीत हमारे यहाँ शंकराचार्य ने चार दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। मलाबार का आदमी हिमालय में जाकर साधना करता था और समाधि लेता था। उस समय कोई रेलवे आदि तो थी नहीं। लेकिन लोगों के हृदय विशाल थे, भावना व्यापक थी। आज सुविधाएँ अधिक हैं। चंद घंटों में दिल्ली पहुँच सकते हैं, लेकिन दिल तंग हो गये हैं, भावनाएँ संकुचित हो गयी हैं।"

संकुचित अभिनिवेश

आजकल जो प्रान्ताभिमान विशेष रूप से प्रकट हो रहा है, उसको उद्देश्य करके कहा :

"हमारा आदर्श था **दुर्लभं भारते जन्म**। परन्तु आज हममें आन्ध्र राष्ट्र, महाराष्ट्र आदि अलग-अलग प्रान्तों के लिए अभिमान और अभिनिवेश प्रकट हो रहा है। यूरोप की बराबरी का हमारा देश। इतनी भिन्न भाषाएँ। बंगाल का निवासी तमिल से अपरिचित, फिर भी एक-दूसरे को भाई-भाई समझते हैं; क्योंकि संतों द्वारा यहाँ एकता की भावना का पोषण हुआ है। एकता की भावना देश-भर में उन्होंने फैलायी है। परन्तु आज हमें भाषा और जाति के लिए कुछ ज्यादा आकर्षण हो रहा है। पहले सारा देश एक माना जाता था। किसी भी प्रदेश में जाइये, नदी के लिए गंगा शब्द का प्रयोग सामान्य था। गोदावरी भी गंगा थी, कृष्णा भी गंगा थी और गंगा तो गंगा थी ही। कोई फ्रेंच किसी जर्मन को अपना नहीं मानता। लेकिन भिन्नप्रांतीय और भिन्नभाषी होते हुए भी मैं आपके लिए पराया नहीं हूँ। आप मुझे अपना ही मानते हैं। यह है भारत की खूबी! उसकी विशेषता!! यह देन है, जो हमें मिली है।"

कम्युनिज्म का कारण

फिर तेलंगाना की परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा :

"इस देन का महत्त्व हम नहीं समझ रहे हैं और आपस में

द्वेष करते रहते हैं। यह आपसी द्वेष ही है, जिसकी कोख से यहाँ कम्युनिज्म का जन्म हुआ है। दो भाई आपस में लड़ते हैं और एक-दूसरे को कम नेस्ट समझकर गिरफ्तारियाँ करवाने की कोशिशें होती हैं—यह सब मैंने यहाँ देखा है। ये सारे लक्षण यादवों के हैं और उनकी तरह विनष्ट होने के हैं। यही यादव हैं, जो महाराष्ट्र में जाधव के नाम से पहचाने जाते हैं। वे लोग भी शराब पीते थे। बर्बाद हुए। यहाँ भी वही दृश्य दिखाई देता है। एक समय था, जब यहाँ काकतीय राज्य था। लेकिन शराब और अन्य व्यसनों के शिकार बनकर लोग ऐसे तबाह हो गये कि फिर यहाँ अब तक कोई पुरुषार्थ नहीं प्रकट हुआ।"

चुनाव पवित्र, वोट पवित्र

फिर लोकसत्ता का महत्त्व समझाया :

"आज़ देश में गरीबों की सरकार है। उसकी अपनी मर्यादाएँ हैं। लेकिन आपको वोट के रूप में एक बड़ी दौलत मिली है। सारी शक्ति गरीबों की उन्नति में लगाने का अवसर मिला है। ऐसे समय हम पारस्परिक दुश्मनी में अपनी शक्ति बरबाद करें, गाँव-गाँव में फूट का जहर फैलाकर लोगों को तबाह करें, यह गलत है। वोटिंग का हक तो स्त्री-पुरुष सबके लिए समान रूप से मिला है। चुनाव एक पवित्र वस्तु है। वोट एक पवित्र कर्तव्य है। हो सकता है कि उम्मीदवार हमारे पिता हों, परन्तु हमारी कसौटी के अनुसार वे योग्य न हों, सच्चे न हों और अच्छे सेवक न हों, तो उन्हें हम वोट नहीं देंगे। जिसे हम वोट दें, उसकी सच्चाई और अच्छाई, उसका सेवकत्व और उसका चारित्र्य, सब देखकर हमें वोट देना है; वरना पार्टीबाजियाँ बढ़ेंगी।"

रहना नहिं, देश विराना है

विषय बढ़ रहा था और प्रार्थना का समय भी हो रहा था, इसलिए इस चर्चा को समेटते हुए प्रस्तुत कार्य के बारे में कहा :

"मैं इस मुल्क में इसी खयाल से घूम रहा हूँ कि शांति का कोई मार्ग

ढूँढ़ सका, तो ढूँढ़ूँ । आगे फिर बारिश का मौसम आ रहा है । चुनाव के दिन भी आ रहे हैं । मैंने देखा कि यहाँ श्रद्धा है, शक्ति है । इसके बावजूद भी अगर अशांति है, तो शांति का कोई और भी आसान तरीका ढूँढ़ें, तो उसमें से यह भूमि-दान-यज्ञ प्रकट हुआ । जो लोग अपने को जमीन का मालिक समझते हैं, उनसे मैं पूछता हूँ कि अगर तू जमीन का मालिक होता, तो जमीन के पहले तू यहाँ से कैसे जाता ? लेकिन जमीन ही तेरी मालिक है । अरे भाई, हम तो दूसरे देश के रहनेवाले हैं । **'रहना नहिं, देश बिराना है ।'** हमें अगर यहाँ भेजा गया है, तो हमारी कसौटी करने के लिए ही ।

गुमराहों का लक्षण

"जहाँ लोग सिंदी पीते हैं और नित्य जासूसी उपन्यास पढ़ते रहते हैं, वहाँ अक्ल जैसी किसी चीज का अस्तित्व मुश्किल ही है । यह गुमराही का ही लक्षण है कि अपने ही लोगों की हत्या करके कुछ काम करने की इच्छा होती है, दूसरे के पास जो सम्पत्ति है, उसके लिए द्वेष पैदा होता है । उसके पास जितना धन है, वह क्यों नहीं देता—ऐसा हम सोचते हैं । जब देने का सवाल आता है, तो दूसरों का इन्तजार करते हैं । मरने का सवाल आता है, तब हम किसीकी राह नहीं देखते; क्योंकि जाना ही पड़ता है । जन्म लेने के समय भी हम किसीका इन्तजार नहीं करते । फिर किसी पुण्य-कार्य के लिए हम क्यों किसीकी राह देखें ?

कम्युनिस्ट-आंदोलन की जिम्मेदारी !

"आज हर कोई यहाँ के कम्युनिस्ट प्रॉब्लम की जिम्मेदारी दूसरे पर डालना चाहता है । लेकिन जरा हम अपने भीतर सर्चलाइट डालकर देखें, तो पता चलेगा कि इस समस्या की जिम्मेदारी हम सब पर है । हमारे भीतर जो लोभ है, जो पाप-वासनाएँ भरी हैं, वह हमें नहीं दीखतीं । अपनी भूल कैसे दुरुस्त हो सकती है, यह हमें देखना चाहिए । दूसरों के दोष देखने में कोई लाभ नहीं । अपने भीतर के दोषों को देखो और

फिर कम्युनिस्ट प्रॉब्लम हल करने की कोशिश करो। रास्ता सूझेगा। देखो कि एक एकड़वाला भी एक गुंठा देता है। उसकी महानता और उदारता का खयाल करो। मैं तो जिंदगीभर उसे नहीं भूल सकता। मेरे लिए उस एक गुंठे की कीमत बहुत ज्यादह है। जो केवल अपने लिए पकाता है, वह पाप खाता है, ऐसा शाप भगवान् दे गये। वेदों ने कहा है कि जिसने केवल अपना कुटुम्ब पालन किया और उसीके लिए धनादि संपादन किया, उसने तो वध का ही संपादन किया है। इसलिए जब मैंने उसे कहा कि आठ लड़कों में और नौवाँ आये, तो उसे हक दोगे या नहीं, तो उसने 'हाँ' कहा और जब मैंने समझाया कि मुझे ही नौवाँ मान लो, तो फौरन उसके समझ में आ गया और उसने पाँच एकड़ में से भी मुझे नौवाँ हिस्सा दे दिया।

भिद्यते हृदय-ग्रंथिः

"हम कहना चाहते हैं कि इस वक्त यहाँ जो काम हो रहा है, उसकी ओर सारे देश का ध्यान लगा हुआ है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि गांधीजी का भी लक्ष्य इधर है और वे खुश होंगे कि लोगों ने मेरा रास्ता ठीक समझा है और उस पर चल रहे हैं। यह ऐसा रास्ता है कि **"भिद्यते हृदय ग्रंथिः"**—आपके हृदय की शंकाएँ दूर होनेवाली हैं। फिर भी अगर कोई शंका रही हो, तो आप बता सकते हैं। मुझे विश्वास है कि यदि आप इस यज्ञ में अपना हविर्भाग देंगे, तो आपको अपने को मानव कहने का आनंद मिलेगा। आप देखते हैं कि जमीन तो जमीन ही की है, वह और किसीकी नहीं है। अंग्रेजों ने भी माना था कि जमीन पर हमारा ही कब्जा है। पर वह नहीं रहा। जमींदार अगर अपने को जमीन के मालिक मानते हैं, तो वे भूल कर रहे हैं। इसलिए यह जो प्रेम का मार्ग निकला है, उसे अपनाओ। जो कुछ देना है, प्रेम से दे जाओ। जबर्दस्ती से लेने के लिए तो पुलिस और मिलिटरी है ही, वह मेरा काम नहीं है।"

मानो सारा हृदय ही निचोड़कर रख दिया था। आज विनोबा हिंदी में ही बोल रहे थे। अनुवाद की आवश्यकता नहीं थी। लोगों पर असर भी अच्छा हुआ। एक महाराष्ट्र के भाई दिनकरराव चुपचाप सब सुन रहे थे। उन्होंने पाँच सौ एकड़ भूमि दी। प्रार्थना तक कुल एक हजार एकड़ हो गयी।

आज दिनभर विनोबा मुसलसल बोल ही रहे थे। शाम को प्रार्थना के बाद भी लोग आकर बैठ गये। अब कल विनोबा अगले पड़ाव जायेंगे। एक सेवक ने कहा : "जाने से पहले कुछ संदेश देकर नहीं जाइयेगा ?" ऐसे मीठे प्रश्न को सुनकर विनोबाजी का हृदय भी द्रवित हो गया। बोले :

"हम चाहते हैं कि हैदराबाद में सर्वोदय-समाज कायम हो। उसमें परखे हुए सेवक तैयार हों। उनके काम की रिपोर्ट हमें मिलती रहे। हो सकता है कि फिर हमें पुनः इधर आने का आकर्षण हो या इधर कहीं रहने की भी प्रेरणा हो। परन्तु वैसा काम होना चाहिए।" ● ● ●

भक्ति-मार्ग बढ़ाना है, शक्ति-मार्ग नहीं : ३६ :

पिंडिपोल
२३-५-'५१

पावन दान

पाँच बजने में पाँच मिनट कम होंगे। विनोबाजी अब कूच करनेवाले ही थे अगले पड़ाव के लिए, कि एक बहन ने आकर निवेदन किया : 'मैं कल शाम को भाषण सुनकर घर लौटी, घर के लोगों से चर्चा हुई। मेरे पास दो एकड़ जमीन है। मेरे केवल एक लड़का है। एक एकड़ आप स्वीकार करें।'

बाबा उससे कुछ कहें या पूछें, उसके पहले उसने फिर कहा : 'एक और प्रार्थना ! साथ में एक गाय भी दे रही हूँ, स्वीकार हो।'

बिदाई की वेला में उस बहन की वह भावना, वह प्रातःकालीन दान देखकर सभी प्रभावित हुए। गुसाँईजी ने ऐसे ही अवसर के लिए शायद गाया था **"दीनन को देत दान भूषण बहुमोले।"** ऐसे उस बहुमोल भूषण का सगुन लेकर विनोबाजी पिंडिपोल पहुँचे।

गाँव की दुर्दशा

गाँव में चार सौ मकान हैं। पचीस सौ की बस्ती। कई लोग बाहर हैं। बारह युवक जेल में बन्द हैं। एक घर के तो पाँच में से चार भाई जेल में हैं। विनोबाजी का निवास आज इसी मकान में है। परन्तु उस पर पुलिस का कब्जा है। बुढिया माँ को दोहरा दुःख है। बच्चे जेल में, वह बिना घर-बार के। बच्चों में कोई स्टेशनमास्टर था, तो कोई स्कूलमास्टर। परन्तु साम्यवाद का विचार सब पर हावी हो गया था। इन लोगों ने गाँव के देशमुख लोगों की जमीन पर गरीब भूमिहीनों को जबरन कब्जा

दिलवा दिया था। जिन्होंने जमीनें स्वीकारी थीं, उन्हें भी अनधिकृत वस्तु कब्जे में रखने के जुर्म में सजाएँ भुगतनी पड़ीं। सारा गाँव दुःखी था। परन्तु विनोबा की आगमनी के कारण पुनः जीवन छा गया था।

गाँव-प्रदक्षिणा के बाद गाँववालों से बातें हुईं। शुरू में गाँव की सर्वसामान्य सुख-दुःख की चर्चा हुई। शिक्षण, रक्षण, शांति आदि सभी बातें निकलीं। लोगों को शिक्षण का महत्त्व भी रक्षण की योजना से कम नहीं मालूम होता। बालक पढ़ना चाहते हैं, परन्तु स्थान नहीं है। बारह लड़कियाँ भी पढ़ रही हैं। अंक सुनकर विनोबा ने हिसाब बताना शुरू किया। पचीस सौ की बस्ती में बारह सौ स्त्रियाँ, जिनमें से बारह लड़कियाँ पढ़ती हैं। केवल एक फीसदी। वोट का अधिकार सौ फीसदी स्त्रियों को और शिक्षण पाये केवल एक फीसदी। लड़के सब सीखें, लड़कियाँ क्यों न सीखें? विनोबा ने गाँववालों के सामने एक-एक समस्या पेश करना शुरू किया।

एक घण्टा स्कूल

मदरसे के मकान के लिए सरकार पर निर्भर न रहने की सूचना देते हुए विनोबा ने अपने एक घण्टेवाले स्कूल की कल्पना समझायी—ऐसा स्कूल, जो कहीं भी चलाया जा सकता है। गाँववालों की इस कल्पना को कि मकान के अभाव में बच्चे नहीं आ रहे हैं, विनोबा ने भ्रम बताया। समझाया कि दिन में लड़के खेती में जानवर चराते हैं, कुछ कमाते भी हैं। सबेरे-शाम के वर्ग होंगे, तो बालक और बड़े, सभी पढ़ेंगे। पचीस सौ लोग हैं, तो एक घण्टा रोज के हिसाब से दस साल में सब सीख लेंगे—लड़कियाँ और लड़के, सभी।

मकान के बारे में कहा कि गाँव का कोई भी मकान काम में आ सकता है। जहाँ हम बैठे हैं, वहीं क्यों न हो? मकान-मालिक ने याने उस वृद्धा ने उत्साह से स्वीकार तो कर लिया, परन्तु अपनी लाचारी बतायी कि मकान पुलिस के कब्जे से स्कूल के लिए दिलवाना होगा।

गुलामी का असर

विनोबा की यात्रा वरंगल जिले में चल रही है और वरंगल से हम अब बहुत नजदीक हैं। विनोबा ने कुछ गम्भीर चर्चा छेड़ते हुए कहा : "आप सब लोग नहीं जानते होंगे, फिर भी कुछ तो जानते ही होंगे कि जिस जगह हम बैठे हैं, वहाँ एक जमाने में काकतीय राज्य था। उसके पहले शालिवाहन का था। लेकिन देशभर में तो उस समय एक ही समय में अनेक राज्य थे। जैसे यहाँ काकतीय था, हैदराबाद में निजाम था, नीचे हंपी में विजयानगरम्। कुछ ऐसे भी थे, जो आसपास के गाँवों में वर्ष में एक बार जाते और जो कुछ लूट में मिल जाता, वह वसूली के रूप में ले आते। लेकिन किसीको एक-दूसरे की हरकतों और हलचलों का पता भी नहीं रहता था। उधर शिवाजी ने स्वराज्य स्थापना की, तो इधर के लोगों को पता भी नहीं। इधर लोग सिंदी पीने में मस्त थे और मुसलमानों की हुकूमत के शिकार बन चुके थे। जहाँ राजा लोग एक-दूसरे को जानते थे, वहाँ आपस में लड़ाइयाँ भी काफी होती थीं। निजाम के राज्य में लोग सिर्फ शासन के ही गुलाम नहीं बने, मजहब के भी गुलाम बने। उस समय मुसलमान बनने से सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ती थी।

"निजाम के शासन के कारण लोगों के दिलो-दिमाग पर गुलामी का जो प्रभाव बना रहा, वह अब तक कायम है। कम्युनिस्टों के द्वारा भी लोगों के दिलों पर एक तरह से गुलामी का ही संस्कार बलवान् होता गया। हर गाँव में किसीका खून, किसीके घर में आग, किसीकी जायदाद की बर्बादी—यह सब क्या हो रहा है ? जिनके पास कुछ धन-संपत्ति, जमीन है, वे कंजूस हैं और जिनके पास नहीं है, वे बहकावे में आकर गलत तरीके अख्तियार कर रहे हैं। क्या श्रीमान् और गरीब आपस में बैठकर अपने गाँव के मसले पर सोच नहीं सकते ? एक परिवार की तरह रह नहीं सकते ? माता-पिता की तरह श्रीमान् अपने गरीब भाइयों के सुख-दुःख

में हिस्सा नहीं ले सकते ? गरीब लोग अपने प्रेम से श्रीमानों को निर्भय नहीं बना सकते ? पिंडिपोल की यह जो बुरी हालत हुई है, उसका यही कारण है कि आपस में एक-दूसरे पर विश्वास नहीं है और हिंसा पर प्रायः सबका विश्वास है। यों इस देश को स्वराज्य मिल गया। उसका एक ही कारण है कि बापूजी के मार्गदर्शन से देश एक हो गया। देश में सहसा एक सामूहिक शक्ति प्रकट हुई। परंतु आज स्वराज्य के बाद वह कहीं दिखाई नहीं दे रही है। इस प्रदेश में कम्युनिज्म को क्षेत्र मिल गया है, उसका भी यही कारण है कि गरीबों को पूछनेवाला कोई रहा नहीं। सेवक लोग जागते, इधर आते, तो यहाँ काम करने का कितना मौका था !

बूँद-बूँद बरसो

"अब यह भूदान-यज्ञ शुरू हुआ है। मुझे कार्यकर्ताओं ने बताया कि देशमुख गाँव में नहीं हैं, इसलिए दूसरे लोग भी देने में हिचकिचाते हैं। बड़े आदमी की तरफ देखते हैं, लेकिन कोई यह न समझे कि इस यज्ञ में सिर्फ बड़े लोग या श्रीमान् लोग ही हिस्सा ले सकते हैं। बारिश बूँद-बूँद सब तरफ बरसती है। वैसे हर कोई दे। एक और आधा एकड़-वाले भी थोड़ा-थोड़ा दें।

कल्याण का मार्ग

"आज तक यह खयाल रहा कि जो काम हो, वह बड़े आदमी के जरिये, बड़े आदमी के सहारे हो। लेकिन आप जानते हैं कि श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गये, तो कहाँ ठहरे ? दुर्योधन के यहाँ नहीं ठहरे। विदुर के घर ठहरे। जो कम-से-कम जमीनवाला है और फिर भी देता है, हमारी फेहरिश्त में उसका नाम सबसे पहला रहेगा। हमें भक्ति-मार्ग बढ़ाना है, शक्ति-मार्ग नहीं। ये शक्ति-मार्गवाले इतने उन्मत्त हो गये हैं कि सारी दुनिया इनके भय से तोबा-तोबा करने लगी है। इसलिए हम तो भक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ाना चाहते हैं। वह भक्त श्रीमान् ही हो, यह जरूरी नहीं है। श्रीमान् न हो,

यह भी जरूरी नहीं। कोई एकाध हो भी सकता है। वह अगर हमारे मार्ग पर चलता है, तो उसका कल्याण होगा, नहीं तो उसका भाग्य। हम क्या कर सकते हैं ? इसलिए जमीन देते समय श्रीमानों की ओर देखना ठीक नहीं। यह भू-दान की गंगा आपके द्वार से गुजर रही है। जिसे उसमें स्नान करके पावन होना हो, वह स्नान करे, जिसे गंदा ही रहना है, वह वैसा ही रहे। इसलिए दान देने के लिए गाँव के देशमुख की ओर देखने का खयाल बिल्कुल गलत है।

मैं भी लूटने आया हूँ

"एक बात आप ध्यान में रखिये कि कम्युनिस्टों के समान ही मैं भी लूटने के लिए आया हूँ। परंतु कम्युनिस्ट रात को लूटते हैं, मैं दिन को लूटता हूँ। वे पिस्तौल से लूटते हैं, मैं प्रेम से लूटता हूँ।"

धर्म-हानि

प्रार्थना-प्रवचन में गाँव की परिस्थिति पर अपना दुःख प्रकट करते हुए विनोबा ने लूट-खसोट की जमीन स्वीकार करनेवाले भूमिहीनों को साफ कहा कि "आपकी इसमें धर्म-हानि हुई है। आपने जमीन स्वीकार की याने आपकी कम्युनिस्टों से सहानुभूति है। उनका तरीका आपको मान्य है। श्रीमानों से जबरन जमीनें छीनना आप खराब नहीं मानते हैं। मैं इस विचार को नहीं मानता। यह खतरनाक विचार है। हो सकता है, जमीनवालों के पास जमीन कुछ अन्यायपूर्वक भी आयी हो। लेकिन उसका अर्थ यह नहीं कि अन्यायपूर्वक छीनी भी जाय। उन्हें समझाकर, प्रेम से माँग सकते हैं या कानून से ले सकते हैं। अब लोकसत्ता है। पर सबसे उत्तम मार्ग प्रेम का मार्ग है, जो परमेश्वर का मार्ग है।"

बहनें सत्याग्रह करें

जो युवक जेल में बंद हैं, उनकी माताएँ, बहनें, स्त्रियाँ विनोबाजी से मिलने आयी थीं। उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए विनोबाजी

ने समस्त स्त्री-जाति को आवाहन किया। उन्होंने कहा : "अगर अपने लड़के, भाई या पति मानते नहीं, गलत राह पर जाते हैं, तो स्त्रियों का काम है, बहनों और माताओं का काम है कि अपने पति के विरुद्ध, अपने भाई और पुत्र के विरुद्ध सत्याग्रह करें, उनके साथ संपूर्ण असहयोग करें। आवश्यक हो, तो उपवास भी करें।" ● ● ●

ग्राम-परिवार

: ४० :

बलपाला
२४-५-'५१

मंजिल तेरह मील थी। रास्ते में तिरमल्ला संकेशा नाम का गाँव मिला। रजाकारों ने यहाँ अठारह हत्याएँ की हैं। गाँव पूरा जला दिया गया है। गाँववालों ने रजाकारों का प्रतिकार भी किया और उनका एक आदमी भी मारा, लेकिन आखिर उन्हें हारना पड़ा और भागना पड़ा।

बलपाला पहुँचने पर मालूम हुआ कि अनेक कम्युनिस्ट कार्यकर्ता भूमिगत हैं। कुछ जेल में भी हैं। कम्युनिस्टों द्वारा चार कत्ल भी किये गये हैं। जनसंख्या तीन हजार है। जमीन तीन हजार एकड़ से कम है। सात सौ के करीब मकान हैं, पर जमीन केवल नब्बे घरों में ही है। याने छह सौ से ज्यादा घर भूमिहीनों के हैं। ग्रामोद्योग सारे खतम हैं।

पानी या डंडा ?

गाँव-प्रदक्षिणा में विनोबा ने सारी परिस्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण किया, बुनकरों से बातें कीं। हरिजनों के सुख-दुःख समझे। लौटने पर गाँववालों से भी बातें हुईं। उन्हें समझाया कि कैसे सारा देश यहाँ की हालत से चिंतित है और सरकार द्वारा जो इलाज चल रहा है, वह इलाज नहीं है। सरकार ने पुलिस रखी है, जो शांति नहीं कायम कर सकती। आग बुझाने के लिए पानी ही चाहिए। पुलिस के पास तो डंडा है।

गाँवों की महिमा

विनोबा ने फिर समझाया कि कैसे शांति का रास्ता खोजते-खोजते वे इस ओर आये हैं और मोटर से नहीं, पैदल आये हैं। क्योंकि "मोटरवाले के दिलो-दिमाग पर मोटर की गति का और पेट्रोल के स्वभाव का असर

होता है। सामने किसीको देखा, तो मोटर में बैठनेवाला चिढ़ जाता है। कहीं-कहीं तो मैंने देखा है कि भीतर बैठनेवाला बाहर चलनेवाले को पीटता भी है! फिर, पैदल चलने से तो हम छोटे-छोटे गाँवों में भी जा सके हैं। पहाड़ों और जंगलों में भी घूम सके हैं। जिन गाँवों में अशांति छायी है, उन गाँवों को देख सके हैं। उनमें से कई गाँवों के लिए तो मोटर का रास्ता भी नहीं है।"

इन गाँववालों का स्वभाव-दर्शन कराते हुए कहा :

"यह आपका हिंदुस्तान देश बहुत ही उदार है। दिलो-दिमाग पर दुःख छाया हुआ होता है, फिर भी हँसते रहते हैं। यह संत-महिमा है।"

शहर और देहात का फर्क बताते हुए समझाया कि कैसे शहरी जीवन में कृत्रिमता आ गयी है, जब कि देहातों में आज भी भक्ति का, स्नेह का दर्शन होता है। "कई लोग गाँव छोड़कर चले गये, अच्छा नहीं किया। आप उन्हें आश्वासन दीजिये कि आपकी रक्षा हम करेंगे। तब वे जरूर आयेंगे। अमीर-गरीब में ऐसी शान्ति और परस्पर विश्वास कायम हो सके, उसके लिए जिनके पास जमीन है, वे दें।"

ज्ञानरूप अस्त्र

नब्बे लोगों में से बहुत कम याने केवल बाईस लोगों ने जमीन दी थी। उनमें से एक भाई ने तो बीस एकड़ दी। परन्तु सबने नहीं दी थी और जिन्होंने दी, उन्होंने भी कम दी थी। इसलिए उन सबकी ओर इशारा करके विनोबाजी ने कहा :

"आज कुछ लोगों ने अपने पास की जमीन लोगों को दी भी है। लेकिन अभी तो कंजूसी से दे रहे हैं। वे कंजूसी इस वास्ते करते हैं कि भला किसमें है, वह वे समझते नहीं हैं। मैं उनको समझा रहा हूँ, वे नहीं समझते हैं, तो और समझाऊँगा। मेरे पास समझाने के सिवा कोई अस्त्र नहीं है। और मैं कहता हूँ कि ज्ञानरूप अस्त्र के सिवा दूसरा कोई भी अस्त्र दुनिया में कारगर नहीं है। भगवान् ने कहा है कि ज्ञान प्राप्त करने से लेशमात्र

पाप नहीं रहता। ज्ञान से सब पाप नष्ट होते हैं। सारा संचित पाप भस्म हो जाता है। इस तरह ज्ञान प्राप्त करना और दूसरों को देना, निरंतर सुनाना और समझाना चाहिए। इस तरह मेरा काम यहाँ पर मैंने शुरू कर दिया है। मैं कह रहा हूँ कि इस गाँव में ६० पटेदार हैं, तो सारे ६० लोग मुझे जमीन दें। तो मैं समझूँगा कि आप सब लोग गाँव के बारे में विचार करने लगे हैं। जिसके पास दो एकड़ है, वह भी २-४ गुंठे दे। आप लोगों ने मेरे स्वागत के लिए हरएक घर पर तोरण लगाये हैं। मैंने गरीबों के घर पर भी तोरण देखे, श्रीमानों के घर पर भी देखे। लेकिन मैं तो जमीन माँगता हूँ, तो हरएक घर से मुझे जमीन मिलनी चाहिए। जिनके पास थोड़ी जमीन है, वे भी देते हैं, तो जिनके पास ज्यादा है, वह शरमायेंगे और देंगे। उपनिषद् में कहा है, शरम से भी दो, लेकिन दो। क्योंकि देने से लाभ हैं। "**श्रिया देयं, ह्रिया देयं, भिया देयं, संविदा देयं, श्रद्धया देयं, अश्रद्धया अदेयम्।**" ज्ञानपूर्वक दो, लज्जा से दो, भय से दो, विचार से दो, श्रद्धा से दो, लेकिन अश्रद्धा से मत दो। कोई लज्जा से देगा, कोई ज्ञानपूर्वक देगा, दोनों चलेगा। क्योंकि जिसमें लज्जा होती है, उसमें भी ज्ञान होता है। किसीको शराब पीने की लज्जा मालूम होती है और लज्जा के कारण वह शराब नहीं पीता है, तो बहुत अच्छी बात है। लज्जा होती है, इसका मतलब शराब पीना खराब है, इसका ज्ञान हो गया है। आप लोग लज्जा के कारण नंगे नहीं रहते हैं, लेकिन छोटे बच्चे लज्जा के अभाव में नंगे रहते हैं। जहाँ आपको ज्ञान हो गया कि नंगा रहना अच्छा नहीं है, वहाँ शरम शुरू होती है। तो जब कोई लज्जा से भी देता है, तो मैं कहता हूँ कि उसको ज्ञान हो गया है।"

हृदय मत खो बैठो

जिस भाई ने बीस एकड़ जमीन दी थी, उसकी थोड़ी सराहना भी की। परन्तु यह भी कहा कि "उससे हमें संतोष नहीं होता है। बूँद-बूँद बारिश की तरह थोड़ी-थोड़ी जमीन सबसे मिलनी चाहिए। तब मैं समझूँगा कि

यह विचार आप समझ गये। जिनके पास जमीन नहीं है, उन लोगों को जितना दुःख होता होगा, उससे ज्यादा हमको होना चाहिए। हम जानते हैं कि किसीको बिच्छू काटा, तो उसको कितना दुःख होता है। लेकिन उसका दुःख देखकर हमें ज्यादा दुःख होता है। क्योंकि उसका जो दुःख है, वह शारीरिक है और हमें जो दुःख होता है, वह मानसिक होता है। तो जिनके पास जमीन नहीं है, खाने को नहीं है, उनको शारीरिक दुःख होता है, लेकिन वह दुःख देखकर हमारे हृदय को दुःख होता है। परन्तु हाँ, हम अपना हृदय खो बैठें, तो हमें दुःख नहीं होगा।"

● ● ●

दीनता-निवारक दीक्षा : ४१ :

महबूबाबाद
२५-५-'५१

अहिंसा की उपासना आवश्यक

शहर का मुकाम है, इसलिए प्रातःकाल की स्वागत-सभा में ही कुछ बातें कर लीं। बोले : "अशांति तो अच्छे विचार और अच्छे कारणों से भी फैलती है। आखिर कम्युनिस्ट चाहते क्या हैं ? यही न कि गरीब जनता जाग्रत हो जाय ? तो इसमें बुरा क्या है ? उनका रास्ता अगर बुरा लगता है, तो दूसरा अच्छा रास्ता बताना चाहिए।

"मुझे अब अहिंसा की शक्ति का थोड़ा अनुभव आपके इस प्रदेश में हो गया है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि अहिंसक शक्ति की भी उपासना करनी पड़ती है। हिंसक शक्ति के विकास के लिए बड़े-बड़े देशों में कितना प्रयत्न किया जाता है, फिर अहिंसा क्या ऐसे ही बिना प्रयत्न और पुरुषार्थ के ही सिद्ध होगी ? इस भू-दान-यज्ञ में ऐसा प्रयत्न और पुरुषार्थ, दोनों है।"

सबेरे की सभा के बाद ही लोगों ने दान-पत्र भरना शुरू किया। कुछ भाइयों ने चौथा हिस्सा भी दिया। प्रार्थना के समय तक एक हजार एकड़ हो गये।

दोपहर विनोबाजी से मिलने के लिए गृहमंत्री श्री बिंदु तथा मिलिटरी व पुलिस के मुख्य अधिकारी श्री नंजप्पा आये। दोनों के साथ नलगुंडा और वरंगल जिले की परिस्थिति के बारे में काफी देर तक चर्चा हुई। जहाँ-जहाँ कुछ शिकायतें सुनी थीं, उनकी ओर ध्यान आकर्षित किया गया। कुछ बातें तो उसी समय तय हो गयीं। पिंडिपोलवाला मकान उस

बुढ़िया को फौरन लौटाने के लिए लिखित आज्ञा दी गयी। जेल में कम्युनिस्ट मित्रों की जो दिक्कतें थीं, उनके निवारण की भी बातें हुईं। कम्युनिस्ट नेता श्री नारायण रेड्डी और चन्द्रगुप्त चौधरी, दोनों को एक बार एक जगह मिलाने का सुझाव भी दिया गया। उन-उन स्थानों की चर्चा हुई, जहाँ से पुलिस हटायी जा सकती है। इसके अतिरिक्त सिंचाई आदि के बारे में भी विचार-विनिमय हुआ।

कार्यकर्ताओं के सहयोग के बारे में श्री बिंदु ने जानना चाहा, तो विनोबा ने उनकी उदासीनता और तज्जन्य खतरे की ओर श्री बिंदु का ध्यान आकर्षित किया।

परिवर्तन की निशानी

प्रार्थना का समय हो गया था। आज का प्रवचन शहरवालों की दृष्टि से महत्त्व का रहा।

भूमिदान के सम्बन्ध में एक नया पहलू समझाते हुए विनोबा ने कहा : "जिन्होंने जमीन दी है, उन्होंने वह देने से पूरा काम कर दिया है, ऐसा मैं नहीं मानता हूँ। उन्होंने जो उनके पास था, उसका थोड़ा-सा हिस्सा दे दिया। मैंने वह स्वीकार कर लिया। इस वास्ते स्वीकार किया कि मैं उनके प्रेम की वह निशानी समझता हूँ। उससे मैं आशा करता हूँ कि वे अपने मन की शुद्धि करें। इस दान के आरंभ के साथ-साथ उनके जीवन के परिवर्तन का आरंभ हो जाना चाहिए। तो अगर जीवन-परिवर्तन की एक निशानी के तौर पर यह जमीन मिलती है, तो मैं प्रसन्न हूँ। लेकिन अगर वह जीवन-परिवर्तन की निशानी नहीं है और केवल दान ही है, तो उससे कुछ नहीं हो सकता।"

दीनता मुझे सहन नहीं होती

फिर गरीबों, श्रीमानों और कम्युनिस्टों, तीनों को उद्देश्य कर कहा : "मैं गरीबों को भी कहता हूँ कि तुम भी कुछ-न-कुछ दो। एक-एक, दो-दो, पाँच-पाँच एकड़ जमीनवालों से भी मैंने लिया है। और उन्होंने खुशी से

दिया है। यह मैंने क्यों लिया है? मैं जानता था कि वे गरीब हैं। फिर भी मैंने क्यों लिया? क्योंकि मैं उनमें आत्म-विश्वास और संघटन-शक्ति पैदा करना चाहता हूँ। गरीब लोग एक-दूसरे से मदद करने लग जायँ, तो बहुत कुछ काम कर सकते हैं। मैं नहीं चाहता कि वे दीन रहें और श्रीमानों के मुँह की तरफ ताकते रहें। इस वास्ते मैं उनमें ताकत पैदा करना चाहता हूँ। मैं मानता हूँ कि उनके पास कम शक्ति नहीं है, श्रम-शक्ति उनके पास काफी है। किसीका मकान बनाना है और १०-५ अड़ोसी-पड़ोसी मदद करने लगें, तो फौरन मकान तैयार हो जाता है। इस वास्ते मैं उनसे भी जमीन माँगता हूँ। मैं श्रीमानों को और गरीबों को, दोनों को सबक दे रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि गरीब लोग दीन बनें, मैं नहीं चाहता कि श्रीमान् डरपोक, दीन बनें। लेकिन आज तो मैं दोनों में दीनता देखता हूँ। जो लोग शहर में भागकर आये हैं, वे दीन नहीं, तो क्या हैं? अगर श्रीमान् मदद नहीं करेंगे, तो हम जिन्दा कैसे रहेंगे, ऐसा गरीब को लगता है, तो वह दीनता ही है। इस तरह दोनों की दीनता मुझे सहन नहीं होती। फिर इन दोनों की दीनता का लाभ कम्युनिस्ट लेते हैं। कम्युनिस्टों को इसमें लाभ मालूम होता होगा, लेकिन उसमें उनका भारी नुकसान होता है। इन दीनों का लाभ लेने के कारण वे भी दीन बने हैं। कम्युनिस्ट गरीबों की सेवा करना चाहते हैं, इतना अच्छा उद्देश्य रखते हैं, तो फिर खुले में क्यों नहीं रहते? छिपते क्यों हैं? आज इस गुफा में, कल उस गुफा में, आज इस पहाड़ में, कल उस पहाड़ में अपने को छिपाते क्यों फिरते हैं? वे लोग श्रीमानों का खून करते हैं, तो लगता है कि वे शूर हो गये। लेकिन बंदूक के आधार पर कोई शूर नहीं बनता। उनके हाथ से बंदूक छीन ली, तो वे भी दीन हो जायँगे। तो मैं कहता हूँ, दीन मत बनो। तुम्हारे काम के लिए हिन्दुस्तान में बड़ा क्षेत्र है। जो तुम्हारा उद्देश्य है, वही मेरा है; लेकिन मैं जैसा खुली हवा में अकेला घूमता हूँ, वैसा आप क्यों नहीं घूमते? क्योंकि

आपने गलत रास्ता लिया है। इसलिए शूर बनने के बजाय आप दीन बने हैं।

"इस तरह ये गरीब, श्रीमान् और कम्युनिस्ट, तीनों अत्यंत दीन बने हैं। और इन तीनों को मैं निर्भय बनाना चाहता हूँ। तीनों मेरे मित्र हैं। इस वास्ते तीनों पर मेरा प्रेम है। यह जो मैंने काम शुरू किया है, वह दान का नहीं, लेकिन दीनता दूर करने का है। अगर किसीने दान दिया है और मन में माना है कि इतना देने पर मेरा काम हो जायगा, तो वह समझा नहीं है। यह तो मैं उनको एक दीक्षा देता हूँ, जैसे एक बटु को, जो नंगा था, लँगोटी पहनाते हैं। वह लँगोटी नहीं, बल्कि उसको वेदाध्ययन, ब्रह्मचर्य की वह दीक्षा है। इस तरह यह दान नहीं, दीनता-निवारण की दीक्षा है। इस तरह मेरा जो काम हो रहा है, उसका मैंने आपको दर्शन कराया है और इसको आप ठीक समझते हैं, तो कम्युनिस्टों की समस्या हल कर सकते हैं।

सच्ची समस्या

"लोग पूछते हैं कि क्या यह लैण्ड-प्रॉब्लम दान से हल कर सकेंगे? मैं कहता हूँ कि यह जमीन की समस्या तो बिलकुल छोटी समस्या है। वह तो सहज ही हल हो सकती है। लेकिन मेरे सामने जो समस्या है, वह दूसरी ही है, मानसिक समस्या है। वरंगल और नलगुंडा जिले में मिलकर ३० लाख जनसंख्या है और कहा जाता है कि पिछले ५ साल में यहाँ १००० खून हुए। मैं कहता हूँ कि अगर इतना हुआ तो क्या हुआ? १ लाख में ४-५ लोगों का खून हुआ। ३० लाख लोगों में इतने खून हुए तो क्या बड़ी बात हुई? मलेरिया, कॉलरा, प्लेग से कितने मरते हैं, उसका हिसाब लगाओ। तो ये जो मर गये हैं, वह इतनी बड़ी बात नहीं हुई। लेकिन हम डरपोक बन गये हैं, यह बड़ी भारी समस्या है।"

गांधीजी का कारगर तरीका

प्रार्थना के बाद कार्यकर्ताओं की चर्चा हुई। एक भाई ने कहा:

"आपका कहना तो ठीक है, परन्तु हमारा अनुभव बताता है कि गांधीजी के याने अहिंसा के तरीके से यहाँ का मसला हल नहीं होगा।"

"तो आपके पास कोई दूसरा तरीका हो, तो बताइये।" प्रश्नकर्ता कांग्रेस के कार्यकर्ता थे, इसलिए विनोबा ने कहा: "आप लोग अपने अध्यक्ष से पूछिये या वेलोदी साहब से पूछिये। आप चाहें, तो आपकी ओर से मैं पूछ सकता हूँ। आज आपके वेलोदी साहब क्या कर रहे हैं? करोड़ों रुपया मिलिटरी और पुलिस पर खर्च कर रहे हैं। क्या इससे मसला हल होगा? क्या कम्युनिस्ट शेर हैं, जो बंदूकों से खतम होंगे? उनका तो एक विचार है। विचार का मुकाबला बंदूकों से कैसे होगा?"

"क्या आपको अब तक अनुभव नहीं हुआ कि हाथ में हथियार लेने पर उसके परिणामों पर आपका काबू नहीं रहता? रजाकारों के जमाने में आपके कुछ लोग तो जेल में थे। लेकिन अधिकतर लोग बॉर्डर ऐक्शन में उलझे हुए थे। उस समय कम्युनिस्टों ने रजाकारों के जुल्मों के खिलाफ जनता की सहायता की। उन्होंने जनता को समझाया कि चीन तक तो कम्युनिज्म आ ही पहुँचा है। अब थोड़ा जोर लगाओ कि भारत में भी आया ही समझो। अब लोगों ने पहचान लिया कि कम्युनिस्टों के ये इरादे इरादे ही हैं। कम्युनिस्ट भी अब थक गये हैं और लोग भी थक गये हैं।

"गांधीजी ने जब स्वराज्य के लिए अहिंसक लड़ाई का तरीका बताया, तब भी लोग ऐसी ही शंका किया करते थे। मैं यह नहीं कहता कि केवल सत्याग्रह से स्वराज्य मिला। लेकिन अहिंसक लड़ाई के कारण जो जाग्रति हुई, वह दूसरे तरीके से न होती। और जाग्रति न होती, तो स्वराज्य भी हमारे पल्ले न पड़ता।

"भाइयो, इस पर सोचो। यह भू-दान-यज्ञ केवल जमीन दिलाने का काम नहीं है। यह तो आज की हवा बदल देने का काम है।"

कहीं के नहीं रहोगे

फिर अन्त में कुछ गम्भीर इशारा देते हुए कहा : "मैं जानता हूँ कि आज वेलोदी साहब की सत्ता है और आप लोगों को अब तक पूरी पाप्युलर गवर्नमेंट नहीं मिल पायी है। लेकिन अगर आप लोगों का खयाल हो कि पाप्युलर गवर्नमेंट आने के बाद आप इस कम्युनिस्ट समस्या को हल कर सकेंगे, तो आपका भ्रम है। बंगाल में पाप्युलर गवर्नमेंट थी, फिर भी वे लोग अकाल की भीषण दुर्घटना को न रोक सके।

"इसलिए मैं रोज आप लोगों को और खासकर कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को यहाँ ताकत लगाकर काम करने की प्रेरणा दे रहा हूँ। फिर भी आप लोग काम के बारे में उदासीन दीखते हैं। अगर ऐसी ही हालत रही और आप लोगों ने काम नहीं किया, तो भगवान् ही आपकी रक्षा करें। जब आपको काम करना चाहिए था, तब आपने किया नहीं, इसलिए यह कम्युनिस्टों का आंदोलन हुआ। अब भी अगर नहीं जागोगे और सेवा में जुट नहीं जाओगे, तो कहीं के नहीं रहोगे।"

● ● ●

इस भूमि पर वैकुंठ आ सकता है :४२ :

मुकपाल
२६-५-'५१

मंजिल बारह मील थी। धूप सिर पर बढ़ी जा रही थी। रास्ते में दो गाँव आये—अजोध्या और गोपामुबगल। पर दोनों जगह उदासीनता की छाया मिली। गोपामुबगल में देशमुख ने किसानों पर बहुत जुल्म ढाये थे। कइयों को बेदखल किया था। कइयों की जमीनें फरोख्त कर दी थीं। आखिर मामला श्री रंगा रेड्डीजी के पास गया और उन पर फैसला सौंपा गया।

मुकपाल के लोग भजन गाते हुए, नृत्य करते हुए, खँजड़ी आदि बजाते हुए अगवानी में आये। हम जिस मकान में ठहरनेवाले थे, उस मकान के मालिक ने तो हमारे साथ ही गाँव में प्रवेश किया था और मकान में भी।

समाज-धर्म की दीक्षा

गाँव-प्रदक्षिणा के बाद ग्रामवासियों से बातें हुईं। गाँवों के बढ़ते हुए कष्टों का अपना विश्लेषण सुनाते हुए विनोबा ने कहा : "जहाँ जाते हैं, यही सुनते हैं कि कम्युनिस्टों से बहुत उपद्रव है। कम्युनिस्ट गत चार-पाँच बरसों से काम कर रहे हैं। पर वे जनता को कोई लाभ नहीं पहुँचा सके हैं। हर गाँव में झगड़े जरूर बढ़े हैं। पुलिस भी बढ़ी है। और इन दोनों के कारण लोगों के कष्ट भी बढ़े हैं।

"कोई स्वर्ग में जाने की इच्छा करे और मार्ग नरक का अपनाये, तो मुकाम पर कैसे पहुँचेगा ? मैं अब आपसे पूछता हूँ कि कम्युनिस्ट गरीबों का भला चाहते हैं, तो यह सारा उपद्रव उन्होंने क्यों किया ? उन्हें उपद्रव

करने का मौका कैसे मिला ? ऐसे मिला कि यहाँ श्रीमान् और गरीब में प्रेम नहीं है और भेदभाव खूब है। हरएक मनुष्य में अलग-अलग शक्ति रहती है। हम सबको मिलकर काम करना चाहिए। सबकी समान शक्ति तो नहीं बन सकती, न सब समान काम कर सकते हैं। स्त्री-पुरुष में झगड़ा हो गया, तो संसार नहीं चलेगा। गरीब-अमीर में झगड़ा हो गया, तो समाज नहीं चलेगा। इसलिए मैंने भूमिदान-यज्ञ शुरू किया है और सबसे माँग रहा हूँ। एक एकड़वाले से भी और एक हजारवाले से भी। अब तक साढ़े पाँच हजार एकड़ मिले हैं याने साढ़े पाँच हजार लोगों के लिए जीविका का साधन हो गया है। कम्युनिस्टों ने जो जमीन दी, वह तो छीनी गयी है। परंतु यह भूदानवाली जमीन जिन्हें दी जायगी, उनसे कोई वापस छीननेवाला नहीं है।

"मैं चाहता हूँ कि हर कोई गाँव के लिए सोचे। इसीको जाति-धर्म या समाज-धर्म कहते हैं। रोज के चिंतन में थोड़ा चिंतन गाँव का। घर में पाँच लड़के हैं। पाँच हिस्से उनके, तो छठा हिस्सा गाँव का। इस तरह आप लोग करेंगे, तो कम्युनिस्टों के लिए काम ही नहीं रहेगा। वे देखेंगे कि वे जो करना चाहते थे, वह हो रहा है।"

पुल का काम

गाँववालों से बातचीत होने पर थोड़ा-थोड़ा भूदान सबने दिया। गरीबों ने दिया, मध्यम श्रेणीवाले ने दिया, अमीरों ने भी दिया। प्रार्थना के समय तक ७६ एकड़ जमीन हो गयी। प्रार्थना में अनेक गाँवों से लोग आये थे। स्त्री-पुरुष, बच्चे, सभी आये थे। विनोबाजी ने कहा : "नदी के दो किनारों को जैसे पुल जोड़ता है, वैसे ही मैं भी भूमिहीन और भूमिवानों के हृदयों को जोड़ने का काम कर रहा हूँ।...ताली एक हाथ से नहीं बजती, दोनों हाथों से बजती है। काम श्रीमान् और गरीब, दोनों ने बिगाड़ा है। गरीब सद्गुणों के पुतले नहीं हैं। उनकी हालत बैलों से भी बदतर है। गाड़ीवाला सो जाता है, तब भी बैल चलता रहता है।

परंतु मालिक का खयाल नहीं रहा, तो मजदूर काम टालता है। अगर मजदूर ईमानदारी से काम करेगा, तो उसकी भी इज्जत बढ़ेगी। हमको दोनों में प्रेम-संबंध जुड़ाना है, बढ़ाना है। जिन्होंने आज भूदान दिया है, उन्होंने इसमें सहायता दी है। उन्होंने मानों सेवा का व्रत लिया है। अगर वे अपने व्रत को निरंतर सींचते रहेंगे और गरीब लोग ईमानदार रहेंगे, तो इस भूमि पर वैकुंठ आ सकता है।"

● ● ●

जीवन-रहस्य : ४३ :

कल्लाडी

२७-५-'५१

मंजिल तो बारह मील ही थी और धूप भी काफी थी। रास्ता बहुत रमणीय था। जंगल में से होकर गुजरना था। शुरू से आखीर तक जंगल-ही-जंगल था। बहुत दिनों के बाद इतना अच्छा और इतना घना जंगल मिला था। बीच-बीच में तालाब के कट्टे से गुजरना था।

काफी दूर तक एक कतार में एक के पीछे एक चलना पड़ रहा था। फिर बीच-बीच में अनेक प्रकार के मोड़ आते थे। तब सब सहयात्रियों को एक साथ अनेकविध मनोहर रूप-दर्शन होता था। वृक्ष भी मोड़ पर परस्पर अभिन्नता का अनुभव करते दिखाई देते थे। वृक्षों के पल्लवों की जालियों में से तालाब का नीर और कमलवृन्दों के समूह बड़े सुहावने प्रतीत होते थे। मार-काट और खून-खराबियों की जहरीली हवा में यह सुखद-शीतल दर्शन श्रमपरिहारक ही था; फिर जब कि मई की धूप सिर पर चढ़ी आ रही थी।

जंगल शेरों के लिए प्रसिद्ध था। गाय-बैलों की शिकार आये दिन होती थी। और ऐसे ही स्थान हैं, जो कम्युनिस्ट भाइयों के लिए अनुकूल होते हैं। खतरों के बावजूद भी वे अपने को इन्हीं जंगलों में सुरक्षित पाते हैं। यहाँ भी कोई हो, तो पता नहीं। उन्हें ऐसे स्थानों में सहारा न मिले, इसलिए तेलंगाना का कितना ही जंगल कट चुका है। अपवादरूप बचा यह घना जंगल इसलिए और भी सुहावना प्रतीत हो रहा था।

रास्ते में इनगुर्ती नामक देहात में बैंड आदि सहित करीब एक हजार लोगों ने स्वागत किया। दही-दूध भेंट किया और दस एकड़ का दान-पत्र

भी अर्पण किया। हवा फैलती जा रही थी। सुंदर भजनों से सारा वातावरण तन्मय हो उठा। गायक खुद कवि होने से भक्ति-रस विशेष खिल उठा।

गाँव के बाहर डेरा था—पास में एक बहुत बड़ा मकान—बड़ी-बड़ी दीवारों से घिरा हुआ, बहुत बड़ा दरवाजा, जिस पर संगीनों का पहरा। छोटी मृदुला ने सहसा पूछ लिया कि वरंगल का जेल इसी गाँव में तो नहीं है ? बाद में मालूम हुआ कि श्री राजेश्वरराव के इस प्रासादवत् निवास को देखकर और लोगों को भी ऐसा ही भ्रम हुआ था।

राजेश्वरराव गाँव के बड़े धनी आदमियों में से माने जाते हैं। कम्युनिस्टों के भय से शहर में ही रहते हैं। आजकल घर में लड़की की शादी है, इसलिए आये हुए हैं। दूसरे कई लोग, जो गाँव छोड़कर शहरों में जा बसे थे, आज विनोबाजी आये हैं, इसलिए लौट आये थे।

पहले निवास राजेश्वर गारू के इस घर में ही रखा गया था। लेकिन कार्यकर्ताओं में मतभेद हुआ और लोकापवाद के भय से निवास राजेश्वरराव के इस मकान के भीतर न रखकर पड़ोसवाले मकान में रखा गया। यद्यपि यह स्थान भी उन्हींका था। भोजन आदि का सारा प्रबन्ध उन्हींने किया था।

सहकारी खेती क्यों नहीं ?

विनोबाजी ने राजेश्वरराव से जमीन के बारे में बात की। वे गाँव में सबसे बड़े माने जाते थे, इसलिए उनके खिलाफ शिकायतें भी बहुत ज्यादा आ चुकी थीं। लेकिन विनोबा ने उनसे बात की, तो बिना किसी पूर्वग्रह के ही की, जैसा कि उनका तरीका है।

राजेश्वरराव ने भूमिहीनों के लिए जमीन देना स्वीकार किया, बशर्ते कि उनकी सहकारी खेती की योजना बने, जिसमें खुद राजेश्वरराव भी एक सदस्य रहें और उनकी भी खेती उसमें शामिल रहे। सब मिलकर सब खेती करें। अगर ऐसी सहकारी खेती की कल्पना विनोबाजी

पसंद करते हैं, तो वे ढाई सौ एकड़ देना चाहते थे। वरना पचास एकड़ से फिलहाल अधिक देने का उनका इरादा नहीं था।

"आप फिलहाल पचास ही दीजिये" विनोबा ने कहा।

"आप सहकारी खेती के खिलाफ हैं?"

"जी नहीं।"

"फिर यहाँ क्यों नहीं वैसा प्रबंध कर देते?"

"उन लोगों पर सहकारिता लादना नहीं चाहता।"

"उसमें तो उनको ही लाभ होगा।"

"तो वे फिर खुद उसे अपना लेंगे।"

"लेकिन मैं तो उसी शर्त पर जमीन देना चाहता हूँ।"

"इसीलिए मैं नहीं ले रहा हूँ।"

"उनका कोई नुकसान है?"

"अगर आप लोगों को लाभ नजर आता है, तो पहले आप बड़े लोग आपस में सहकारी खेती शुरू करें। इन गरीब लोगों को तो हिसाब वगैरह कुछ आता नहीं। काम तो इन्हें पूरी खेती पर करना होगा। इनके हिस्से में कुछ नहीं आयेगा। जब तक इनके भीतर लोग लिख-पढ़कर सहकारिता के लाभालाभ को समझते नहीं और हिसाब आदि में माहिर होते नहीं, तब तक मैं उन पर सहकारिता की शर्त नहीं लादूँगा। तब तक बड़े लोग रास्ता दिखायें। पर बड़े लोग आपस में ऐसी खेती करते नहीं, क्योंकि गरीब मजदूर के बिना उनका काम चलता नहीं और मजदूर का शोषण किये बिना वह सहकारी खेती पनपती नहीं। इसलिए मैंने तय किया है कि भूदान में जिन्हें जमीन दी जायगी, उन पर सहकारिता की शर्त नहीं लदेगी। हाँ, वे लोग जमीन पाने पर खुद मिलकर तय करें या गाँव के अधिकतर लोग तय करें और वे भी उसमें शरीक हो जायँ, तो वह अलग बात है।"

राजेश्वरराव भावनावान् थे। विनोबा ने उनकी कमजोरी को ठीक

पहचाना था। उन्होंने भी निरपेक्ष भाव से अधिक-से-अधिक देने का निर्णय किया और पचास के बदले सवा सौ एकड़ भूमि दी। फिर उन्होंने अपना दुःख प्रकट किया कि पहले उनके मकान में ठहरने की बात थी, परंतु कार्यकर्ताओं ने वक्त पर वह प्रबंध मंजूर नहीं किया। दोपहर उनके घर हो आने की प्रार्थना उन्होंने की, तो विनोबा ने मंजूर कर लिया। उनका मकान देखा। घरवालों से सबसे मिले। वृद्धा माता ने भी भक्ति-भाव से विनोबा का स्वागत किया।

वे स्वयं इतना बड़ा मकान अपने लिए नहीं रखना चाहते थे। इसलिए मकान के भावी उपयोग के बारे में भी बातें हुईं। किसी अच्छे सार्वजनिक काम के लिए उसका उपयोग करने की योजना बन जाय, तो उसमें उन्होंने भी संतोष प्रकट किया।

सभा पहले बाहर ही होनेवाली थी। लेकिन राजेश्वरराव की इच्छानुसार विनोबाजी ने उनके मकान के आँगन में ही सभा का आयोजन करवाया। आँगन बहुत बड़ा था। मुख्य दरवाजा पूरा खोल दिया गया। आज पहली बार ही वह इस तरह खुला था। और पहला ही मौका था कि गाँव के गरीब लोग, हरिजन आदि ने उस मकान में कदम रखा। कई लोगों को तो भीतर आने की हिम्मत नहीं होती थी। उन्हें समझा-समझाकर लाया गया। घर की स्त्रियाँ कभी इस तरह सर्वसाधारण समाज के साथ इसके पहले बैठी नहीं थीं। आज ही पहली बार गाँव की अन्य स्त्रियों के साथ बैठने का मौका उन्हें मिला। घर और घर के लोगों की कोई पूर्व पुण्याई ही आज जाग उठी थी।

नारद की परंपरा

इस मकान में विनोबाजी का आना, राजेश्वरराव को ऐसी प्रतिष्ठा देना और फिर उन्हींके मकान में सभा का आयोजन करवाना, कुछ कार्यकर्ताओं को यह सारा बिल्कुल पसंद नहीं था। प्रवचन के लिए विनोबा को यह सब सामग्री मिल ही चुकी थी। उन्होंने समझाना शुरू किया : "हम लोग

एक श्रीमान् के घर में उतरे हैं। तो लोग पूछते हैं कि यह कहाँ तक उचित है। इस तरह का सवाल आता है, तो मुझे अच्छा लगता है; इसलिए नहीं कि प्रश्न में कुछ बुद्धि है। लेकिन इस तरह का प्रश्न उठता है, तो स्पष्टीकरण करने का मौका मिल जाता है। जब यह सवाल मेरे कान तक आया, तो मैंने उनसे पूछा कि श्रीमान् के घर में हवा जाती है क्या ? तो जवाब मिला, हाँ, जाती है। तो फिर मैंने पूछा कि वहाँ सूर्यकिरणें जाती हैं क्या ? तो जवाब मिला, हाँ, वे भी जाती हैं। तो मैंने कहा, जहाँ सूर्य-किरण जाते हैं, जहाँ हवा जाने के लिए इनकार नहीं करती है, वहाँ मैं क्यों नहीं जाऊँ ? जो सूर्य का काम है, जो हवा का काम है, वही मेरा काम है। अस्वच्छ हवा को साफ करना, अंधकार को प्रकाश में लाना, यह काम तो देवताएँ करती हैं, लेकिन जहाँ हवा जाने की हिम्मत नहीं करती और सूर्यकिरण जहाँ नहीं पहुँचते हैं, वहाँ भी मैं जाने की हिम्मत करूँगा। किसी पहाड़ की गुफा में मेरा संदेश पहुँचाने की जरूरत पड़ी, तो यद्यपि वहाँ हवा और सूर्य की किरणें नहीं जाती हैं, फिर भी मैं वहाँ जाऊँगा। वहाँ के लोगों को अपनी बात समझाने के लिए उस गुफा में जाऊँगा। हम लोग घूमनेवाले हैं। इस बात में हमारे परम गुरु नारदमुनि हैं। वे सब जगह पहुँचते थे। वे आज के प्रोपेगंडिस्ट के जैसे नहीं थे। हमें तो नारदमुनि की तरह हर जगह पहुँचना है, जहाँ कि हमारे पहुँचने से थोड़ा भी लाभ होता है। लोग कहते हैं कि श्रीमानों के घर आपके ठहरने से लोगों के मन में गलतफहमियाँ फैलती हैं। तो मैं कहता हूँ कि प्रजा को यह भी शिक्षण मुझे देना है और इसलिए भी हम घूम रहे हैं। हम तो जहाँ मौका मिला, वहाँ गये। यह नहीं कि श्रीमानों के घर में ही गये। शुरू में दो-चार दफा श्रीमानों के घर में रहने का मौका मिला था, तो उससे हमें खुशी ही हुई थी।

गरीबों की एक और जाति

"हमारे हिन्दुस्तान में मैं देखता हूँ कि कहीं भी यह जाति का विचार

आ ही जाता है—सामाजिक क्षेत्र में, राजकीय क्षेत्र में, धार्मिक क्षेत्र में, सेवा के क्षेत्र में भी। मैं सियासी विचारवाला नहीं हूँ। मैं तो सेवक हूँ। फिर भी राजकारण क्या है, समाजशास्त्र क्या है, इसका निरन्तर अध्ययन करता हूँ। इस तरह हम तो जीवन की हरएक समस्या को सोचते हैं। हमारे लिए सारा जीवन मिलकर एक चीज है। उसमें चेतन जीव का, जड़ सृष्टि का और परमेश्वर का भी समावेश होता है। तो सब कुछ देख करके हम इस नतीजे पर आये हैं कि कांग्रेसवाले, सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट कोई भी जातीयता से बाहर नहीं जाते। मुसलमान लोग कहते हैं, हमको एक देश चाहिए। हम अपना अलग पाकिस्तान बनाना चाहते हैं। भाषावाले कहते हैं, हमारी भाषा का अलग प्रांत चाहिए, हमारी रोटी अलग पकनी चाहिए। तो यह जाति बनाने का विचार हमारे दिमाग के अन्दर बैठ गया है। ब्राह्मणों ने मांसाहार छोड़ा, शाकाहार स्वीकारा। यह तो उन्होंने बहुत अच्छा काम किया, लेकिन उसके साथ-साथ अपनी एक स्वतन्त्र जाति बना ली। फलाने के घर का नहीं खायेंगे, फलाने के साथ बेटी-व्यवहार नहीं करेंगे। तो, आजकल गरीब लोग भी अपना पक्ष, अपनी एक जाति बनाना चाहते हैं। वे श्रीमान् हैं, उसके यहाँ खाना नहीं खायेंगे, उसके घर जाना नहीं चाहेंगे।

हम तो नारायण को पहचानते हैं

"लेकिन अग्नि को अगर आप कहेंगे कि तुम्हें चंदन ही जलाना चाहिए, लाश को नहीं जलाना चाहिए, तो वह कबूल नहीं करेगा। वह तो कहेगा कि मैं चंदन को भी खाक बनाऊँगा और लाश को भी खाक बनाऊँगा। मेरे लिए स्पृश्य-अस्पृश्य, यह भेद नहीं है। मेरे पास जो आता है, वह खाक हो जाता है। तो, अग्नि का जैसा विचार है, वैसा ही सेवक का विचार होना चाहिए। अहिंसक सेवक हरएक स्थान में अपने को देखता है। तो मुझे जब पूछते हैं कि आज आप किस घर में ठहरे हो, तो मैं कहता हूँ, नारायण के घर में ठहरा हूँ। नारायण लक्ष्मी के

साथ भी रहते हैं और लक्ष्मी को छोड़कर भी रहते हैं। जब वे लक्ष्मी को छोड़कर रहते हैं, तब वे दरिद्रनारायण कहलाते हैं और जब लक्ष्मी के साथ रहते हैं, तब श्रीमन्नारायण कहलाते हैं। तो हम नारायण को ही पहचानते हैं, क्योंकि हम भक्त हैं और भक्त के लिए दुनिया में नारायण के सिवा कोई नहीं है।

सोचने का गलत ढंग

"तो इस तरह यदि हम श्रीमान् के घर उतरते हैं, तो उसे अपना रूप देने के लिए उतरते हैं, उसका रूप लेने के लिए नहीं। अगर दीपक अन्धकार में प्रवेश करता है, तो अन्धकार को अपना रूप देता है। अन्धकार में प्रवेश करने के लिए जो डरते हैं, उनके पास प्रकाश नहीं होता।

"लेकिन हम श्रीमानों के घर ठहरते हैं इतना ही आक्षेप हम पर नहीं है। और भी एक आक्षेप है। ये लोग कहते हैं कि आप श्रीमानों के पास से जमीन लेते हैं, तो उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती है। इस विचार में सोचने का ढंग ही ठीक नहीं है। ऐसे लोगों को तर्कशास्त्र के अध्ययन के लिए स्कूल में भेजना चाहिए। श्रीमान् लोग बुरा काम करते हैं, तो अच्छा नहीं लगता और अच्छा काम करते हैं, तो भी अच्छा नहीं लगता। तो आप चाहते हैं क्या कि वे बुरा काम भी न करें और अच्छा भी न करें? अगर वह अच्छा काम करता है और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती है, तो बिगड़ा क्या? यदि किसी शराबी ने हमको दान दे दिया और हमने वह लोगों में जाहिर किया, तो क्या उतने से उसकी शराबखोरी का मंडन होगा? शराबखोरी के बावजूद भी उसको अच्छा काम करने की प्रेरणा हुई, तो हम तो उसको समझायेंगे कि तुम जब दान के लिए प्रवृत्त हुए हो, तो शराब छोड़ने की भी कोशिश करो। हमें तो सारासार विवेक लोगों को समझाना है। आखिर सब लोगों में प्रेम-भाव प्रकट करना है। दुनिया के सारे गरीब नीतिमान् हैं, ऐसा नहीं कह सकते। श्रीमान्-गरीब, दोनों में दोष हो सकते हैं, गुण हो सकते हैं। यह भी नहीं कि एक मनुष्य कायम के लिए बुरा

ही रहेगा। जो मनुष्य बुरा था, वह आगे भी बुरा ही रहेगा, ऐसा मानना सत्य पर, परमेश्वर पर अविश्वास प्रकट करना है। हम मानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य सुधरने के लिए लायक है और इसीलिए हम घूमते हैं। नहीं तो हम आश्रम में बैठे रहते। हमको यह लगता कि जो बुरा है, वह बुरा ही रहेगा, तो हमको यहाँ आने की जरूरत ही क्या थी? फिर मैं इन कम्युनिस्टों के उपद्रवों को शांत करने के लिए क्यों आता? फिर तो मुझे आश्रम में रहकर तपश्चर्या ही करनी चाहिए थी या कम्युनिस्ट बनना चाहिए था। कम्युनिस्टों का मत है कि श्रीमानों को खतम किये बगैर देहातों का उद्धार नहीं होगा। लेकिन यदि श्रीमानों का भी कोई वर्ग होता, तो कुछ बात सोचते। हमने देखा कि तंगड़पल्ली में दोनों भाई श्रीमान् होते हुए भी आपस में यादवों की तरह लड़ते थे।

यादवों की पुनरावृत्ति

"यहाँ इस मुल्क में घूमने के बाद मैं इस नतीजे पर आया हूँ कि यहाँ यादवों का फिर से नाटक हो रहा है। यादवों के दो लक्षण सुप्रसिद्ध हैं। एक शराब पीना और दूसरा आपस में लड़ना। ये दोनों लक्षण इस तेलंगाना में मौजूद हैं। हम हरएक गाँव की जानकारी हासिल करते हैं। तो हम यह नहीं पूछते कि गाँव में शराब पीनेवाले कितने हैं। लेकिन यह पूछते हैं कि न पीनेवाले कितने हैं। पहले पीनेवालों की संख्या पूछते थे। लेकिन यहाँ पर हमने देखा कि शराब पीने का रिवाज ही है। शराब यहाँ गङ्गाजल के समान हो गयी है। तब से हम हर गाँव में पूछते हैं कि गङ्गा जल को न पीनेवाला भी यहाँ कोई है?

"शराब पीनेवालों में क्लासेस भी नहीं हैं। श्रीमान्-गरीब, दोनों एक हो गये हैं। शराब ने क्लास वार को खतम कर दिया है। तो, इस तरह से जहाँ शराब पीते हैं, आपस में लड़ते हैं, वहाँ हम किस तरह से काम कर सकते हैं, यह सोचने की बात है।

स्वच्छ जीवन की प्रेरणा

"मेरा तो निश्चय हो गया है कि यहाँ पर सब लोगों को स्वच्छ जीवन सिखाना और प्रेमभाव सिखाना, यही यहाँ के सारे वातावरण के लिए औषध है। इस दृष्टि से यहाँ काम शुरू किया और देखता हूँ कि उसका असर भी अच्छा हो रहा है।

"आज जिन भाई के घर ठहरे हैं, उनके साथ खूब बातें कीं। उनका इतिहास भी सुन लिया। उनका इतना बड़ा मकान निकम्मा पड़ा है कि उसका क्या उपयोग करेंगे, पूछा। उनको कुछ सूझता नहीं है। उनको कुछ सूचनाएँ दीं और कहा, आपके दान से मुझे संतोष नहीं है। आपके जीवन-परिवर्तन से मुझे संतोष होगा। फिर मैंने उनको कहा कि आप वर्धा आ जाओ और वहाँ क्या-क्या चलता है, देखो। मैं नहीं कह सकता कि इसका परिणाम क्या होगा।

परमेश्वर का खेल

"लेकिन आज हम जीवन का एक रहस्य बताना चाहते हैं। इस दुनिया का कोई भी मनुष्य कोई काम कर रहा है, ऐसा हम नहीं मानते। हम मानते हैं कि परमेश्वर ही सबको नचा रहा है। हमको सद्बुद्धि हुई, तो हम नहीं मानते कि वह हमारी है। हम मानते हैं कि वही सद्बुद्धि देता है और नाटक करवाता है। तो परमेश्वर जैसी प्रेरणा देगा, वैसा वह भाई भी करेंगे। लोग कहते हैं कि विनोबा यहाँ आ गये और सब वातावरण बदल दिया। लेकिन एक क्षण के लिए भी हम ऐसा नहीं मानते। भगवान् वातावरण बदल रहा है। तुलसीदासजी ने कहा है, ये सारे काठ के पुतले हैं और शतरंज का खेल खेल रहे हैं। शतरंज के खेल में जो हाथी-घोड़ा-ऊँट होते हैं, वह सब लकड़ी के ही होते हैं। सिर्फ एक लकड़ी लेकर तरह-तरह की चीजें बनायीं और उसको लेकर खेलनेवाला खेलता है। जब से यह दृष्टि हमको मिली, तब से हम बादशाह सरीखे रहते हैं, हमको दुःख

का खयाल भी नहीं होता। जहाँ दुःख होता है तब और जहाँ सुख होता है तब ऐसा मानते हैं कि यह परमेश्वर का खेल हो रहा है।

हमारी श्रद्धा

"लोग हमारे पास आकर कहते हैं कि ये कांग्रेसवाले और ये कम्युनिस्टवाले और श्रीमान् लोग ऐसा करते हैं, वैसा करते हैं। तो हम सब सुनते हैं और हँसते हैं। हम कहते हैं, कुछ नहीं हो रहा है। समुद्र पर लहरें आती हैं, जाती हैं, लेकिन उसका समुद्र को कुछ नहीं होता। हम इस मुल्क में आये, फिर भी हमको यह नहीं लगा कि हम खतरे में जा रहे हैं। सारी दुनिया में खतरा कहीं है ही नहीं। जिधर देखो, भगवान् के रूप दीखते हैं। और यह हमारी श्रद्धा है, इस वास्ते लोग दान देते हैं। हम उनसे माँगते हैं, तो वे 'ना' नहीं कहते हैं। भक्त माँगेगा, तो भगवान् इनकार कैसे करेगा ?

"भाइयो, मेरे जीवन का यह रहस्य मैंने आपको कह दिया। तो मैं आज श्रीमन्नारायण के घर में ठहरा हूँ। कल दरिद्रनारायण के घर ठहर सकता हूँ और परसों मुझे कम्युनिस्ट के घर ठहरना पड़ा, तो वहाँ भी ठहरनेवाला हूँ।

मेरी माँग

"कम्युनिस्टों के बड़े-बड़े नेता हैदराबाद जेल में हैं। वहाँ उनको मिलने के लिए जेल में गया था। दो घण्टे चर्चा की। वे लोग खूब जानते थे कि उनके और मेरे विचार में जमीन-आसमान का अन्तर है, लेकिन दोनों के बीच में सगे भाई-भाई के समान बातें हुईं। मेरा विश्वास है कि आप एक-दूसरे पर प्यार करेंगे, तो ये सारी काल्पनिक समस्याएँ हल हो जायँगी। आज मैं जमीन माँग रहा हूँ, वह किसलिए ? यह सारा गोरख-धन्धा मुझे क्यों चाहिए ? मुझे भगवान् का बुलावा आयेगा, तो यह नहीं कहूँगा कि तैयारी के लिए १० मिनट दे दो। मैं तुरन्त जाऊँगा। मेरे पास ऐसी कोई इस्टेट नहीं कि जिसके लिए मैं १० मिनट माँग लूँ।

जमीन लेने-देने की यह सारी झंझट क्यों कर रहा हूँ? यह सारा प्रेम-भाव बढ़ाने के लिए, एक निशानी के तौर पर कर रहा हूँ। इसकी खूबी लोग समझेंगे, तो हजार हाथों से देने लगेंगे। आज तो जिसके पास हजार एकड़ जमीन है, वह दस एकड़ देता है। तो मैं कहता हूँ कि तेरा काम है कि जितनी जमीन तेरे पास है, वह सारी-की-सारी गरीबों को दे दे, और खुद गरीब बन जा। जैसे परमेश्वर की भक्ति करते-करते आखिर परमेश्वर हो जाते हैं, वैसे ही गरीबों की भक्ति करते हैं, तो गरीब होना ही चाहिए। यह मेरी माँग है, तिस पर भी लोग जो देते हैं, उतने पर संतुष्ट होता हूँ। कहता हूँ, जो दिया, सो दिया।

कर्ण का व्रत

"तो भाइयो, इस गाँव में भेदभाव की भाषा छोड़ दो और जो कोई माँगेगा, उसको देना ही है, ऐसा समझो। महाभारत में कर्ण के व्रत का वर्णन है। उस कर्णव्रत के समान व्रत ले लो। वैसा व्रत लेंगे, तो आप खोयेंगे नहीं, बल्कि सहस्र गुना पायेंगे। जो सुखी लोग हैं, उनका धर्म है कि वे दूसरों को सुखी बनायें। वेद-नारायण की आज्ञा है कि "**शतहस्त समाहर सहस्र हस्त संकिर**"—सौ हाथों से लेना, हजार हाथों से देना। तो लेने में सौ हाथ होने चाहिए और देने में हजार हाथ होने चाहिए। जैसे मेघ समुद्र से लेता है, तो मीठा करके फिर भेज देता है। वैसे ही श्रीमानों का, बुद्धिमानों का काम है कि जितना वे गरीबों से लेते हैं, उससे अधिक और पवित्र बनाकर उनको वापस दे दें।"

● ● ●

कालात्मा की पुकार : ४४ :

गविचिराला (वरंगल)

२८, २९-५-'५१

प्रातःकाल पड़ोस के एक गाँव पर्वतगिरी के प्रार्थना-मंदिर में थोड़ी देर रुककर चलने का प्रोग्राम विनोबाजी ने मंजूर कर लिया था। उस गाँव के लोग सबेरे ही निवासस्थान पर पहुँच गये और यहाँ से भजन गाते-गाते अपने गाँव ले गये। गले में अंबरीश, अरविंद, हनुमान, क़बीर वगैरों के नाम के पट्टे लगाये हुए थे। आरती, पुष्पमाला तथा अनेकविध भाव-भरा स्वागत और भजन-कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। फिर लोगों ने नौ एकड़ का दान-पत्र देकर विनोबा को बिदा किया।

रास्ते में एक कोंकापाक नाम का गाँव मिला। पूरा बेचिराग था। रजाकारों की ओर से बीस हत्याएँ हुई थीं।

गविचिराला पहुँचे, तो मालूम हुआ कि गाँव के प्रमुख व्यक्ति रामचन्द्र राव कम्युनिस्टों से डरकर हनमकोंडा रहते हैं। उनके मकान में करीब बीस हजार का अनाज था, जो कम्युनिस्टों ने लोगों में तकसीम कर दिया था।

गाँव छोटा था और वरंगल से बहुत दूर नहीं था। फिर भी गाँव-वालों ने बताया कि अनेक बरसों के बाद आज यहाँ कोई नेता आये हैं। न कभी कोई आता है, न गाँववालों के सुख-दुःख की खबर ही लेता है। विनोबाजी की आगमनी की खबर से सारे गाँव में आज अद्भुत उत्साह था। गाँव के वृद्ध लोगों से विनोबाजी ने विशेष रूप से और देर तक बातें कीं।

गविचिराले से वरंगल जाते हुए रास्ते में स्तंभंपल्ली का विद्यालय

देखा। वरंगल की सीमा में पहुँचे। राजधानी का स्थान होने से वरंगल में काकतीय साम्राज्य के पुराने अवशेष खूब देखने को मिलते हैं। किले का कुछ हिस्सा गिर गया है, तो शेष गिरा दिया गया है। बड़े-बड़े विशाल स्तंभ, उन पर खुदी हुई कलाकृतियाँ, पाँच विशाल द्वार, भीतर की बस्ती, शिवजी का मंदिर आदि सब इस छिन्न-विच्छिन्न साम्राज्य की याद दिलाते हैं। विनोबाजी ने बहुत दिलचस्पी से इन सबका निरीक्षण किया।

वरंगल जेल के कम्युनिस्ट भाइयों के बीच

आज यहाँ भी जेल में कम्युनिस्ट मित्रों से मिलने जाना था। १० बजे विनोबाजी जेल के द्वार पर पहुँच गये। उन लोगों की इच्छानुसार उनके पाँच नुमाइंदों से बातें हुईं। विनोबाजी ने अपनी यात्रा का उद्देश्य, रास्ते के अनुभव, इस समस्या की ओर देखने का उनका दृष्टिकोण, साम्यवादियों से उनकी अपेक्षाएँ, हैदराबाद और नलगुंडा जेल की मुलाकातें आदि सब बताकर एक बुनियादी सवाल पूछा कि "इस समय बाहर उनकी पार्टी की ओर से और पार्टी के नाम पर जो हत्या-पद्धति चल रही है, वह क्या उन्हें पसंद है? क्या आप लोगों की इस कार्यवाही के साथ सहानुभूति है?"

उन लोगों ने हँसकर जवाब दिया कि "यदि कम्युनिस्ट-पार्टी के काम के साथ कम्युनिस्ट ही सहानुभूति नहीं रखेंगे, तो फिर कौन रखेगा?" फिर उन लोगों ने विनोबा से शिकायत की कि "आप इन जागीरदारों को फिर से गाँवों में बसा रहे हैं, जहाँ से हम लोगों ने उन्हें निकाल बाहर किया था।" जागीरदारों के प्रति उन्होंने काफी असंतोष—मन का सारा जहर—प्रकट किया। विनोबा से कहा: "आप जहाँ भी जाते हैं, केवल हमारे बारे में ही बोलते हैं। पुलिस जनता पर कितना जुल्म कर रही है। उनके लिए आप कुछ नहीं बोलते।"

जाहिर है कि उन्हें ठीक रिपोर्ट नहीं मिलती थी। विनोबा ने तो जगह-जगह पुलिस के लिए कहा था, गाँवों में पुलिस न रहे, ऐसी कोशिश

की थी। कई अत्याचारी थानेदारों व सब इन्स्पेक्टरों को विनोबाजी की रिपोर्ट के आधार पर सरकार ने नौकरी से रुखसत भी किया था। लेकिन पुलिस से संबंधित विनोबा की टीकावाला मजमून काटकर ही शायद अखबार इन्हें मिलते हों। फिर अखबारों में विनोबाजी के भाषणों की रिपोर्ट भी पूरी निकलती जो नहीं थी।

कम्युनिस्टों को सरकार से मुख्य शिकायत यह थी कि कहीं कुछ भी होता है, तो सरकार कम्युनिस्टों को बदनाम करती है और गोलियाँ चला देती है। इसलिए हमें जंगल-जंगल, पहाड़-पहाड़ भटकना पड़ता है। कम्युनिस्टों ने स्वीकार किया कि उनके द्वारा भी खून और कत्ल काफी हुए हैं—"परंतु हम जो करते हैं, अपने बाल-बच्चों की इज्जत-आबरू बचाने के लिए, गरीबों को शोषकों से नजात दिलाने के लिए करते हैं। सरकार अपना रवैया बदले, तो हम भी अपना रवैया बदलने को तैयार हैं। सरकार स्टेनगन का प्रयोग करती है, तो हम उसके बिना कैसे काम करें ?'

लेकिन विनोबा ने प्रारंभ में जो मूलभूत सवाल उनसे पूछा था, उसका जवाब उन्होंने आखिर तक नहीं दिया। बिदा लेते समय पुनः सभी बहुत अच्छी तरह से मिले। कुछ स्त्रियाँ भी जेल में थीं। उनमें से कइयों ने कहा कि "हमारा कोई कसूर नहीं है। हम यदि इन्हें घर पर खाना नहीं खिलाती हैं, तो शूट करने की धमकी देते हैं। हमें तो बेगुनाह ही जेल में रखा है।"

परिवर्तन इसी तरह होगा

प्रार्थना-सभा का आज का भाषण ऐतिहासिक हुआ। विनोबाजी ने मानव-समाज के विकास की पार्श्वभूमि में कम्युनिस्ट-आंदोलन के बारे में अपनी प्रतिक्रिया बतायी कि यहाँ की खून-खराबी की घटनाओं के बारे में मुझे जानकारी मिलती रही, परंतु घबराहट कभी नहीं हुई; क्योंकि मानव-जीवन में जब-जब नवीन संस्कृति का निर्माण हुआ है, संघर्ष भी हुआ ही

है। रक्त की धारा भी बही है, इसलिए हमें शांति से सोचना चाहिए—शांतिमय उपाय खोजना चाहिए।

विनोबाजी ने बताया कि उनकी पदयात्रा उस शांतिमय उपाय की खोज का ही एक महत्वपूर्ण साधन है। भू-दान के बारे में उन्होंने स्पष्ट कहा कि यद्यपि सद्भावना से जो कुछ मिलता है, मैं ले रहा हूँ; परंतु जो मैं चाहता हूँ वह सर्वस्व-दान की बात है—जैसा पोतना ने कहा है—"**तल्लि दंडलु भंगि धर्मवत्सल तनु दीनुल गाव चिंतिन चुवाडू**"—माता-पिता की तरह खुद भूखा रहकर बच्चों को खिलाने की बात है यह। वह शक्ति, वह प्रेम मैं आपसे प्रकट करना चाहता हूँ।

जमींदारों व श्रीमानों को वापस गाँवों में प्रतिष्ठा देने की कम्युनिस्ट राजबंदियों की शंका का जिक्र करते हुए कहा: "मुझे उन लोगों से बहस नहीं करनी थी। लेकिन अगर यह बात सही है कि हरएक के हृदय में परमेश्वर विराजमान हैं और हमारे श्वास-उच्छ्वास का नियमन वही करता है और सारी प्रेरणा वही देता है, तो मेरा विश्वास है कि परिवर्तन जरूर हो सकता है। अगर कालात्मा खड़ा है और कालात्मा परिवर्तन करना चाहता है, तो परिवर्तन होने ही वाला है, मनुष्य चाहे या न चाहे।" प्रवाह का दृष्टांत दिया कि "जैसे तैरने की शक्ति से हमें मदद मिलती है, वैसे प्रवाह से भी मिलती है। हृदय-परिवर्तन के लिए भी कालप्रवाह मददगार होता है। आज तो सबकी भूमि तपी हुई है। ऐसी तपी हुई भूमि पर प्रेम के दो बूँद छिड़काने का काम अगर भगवान् मुझसे करवाना चाहता है, तो मैं खुशी से कर रहा हूँ।......अगर क्रांति हो जाती है, श्रीमानों को अगर विचार जँचता है, तो उनके हृदय में संघर्ष शुरू हो जायगा, परमेश्वर उन्हें सद्बुद्धि देगा, वे अन्याय छोड़ देंगे। परिवर्तन इसी तरह हुआ करते हैं।"

वर्धा से तार आया कि दादीजी—जमनालालजी की वृद्धा माताजी—बहुत बीमार हैं। फलतः मदालसा बहन को आज वर्धा के लिए रवाना

होना पड़ा। पदयात्रा में वे वर्धा से साथ थीं। तेलंगाना में तो उनकी बहुत मदद रही। जहाँ भी सम्भव हो, स्त्रियों की सभा का आयोजन तो वे करतीं ही, परन्तु विनोबाजी के पीछे गाँव-गाँव में भू-दान का काम चालू रखनेवाले कार्यकर्ताओं की खोज करना, उनसे सम्पर्क कायम करना आदि काम भी वे बराबर करती रहतीं। हरिजन, आदिवासी, लम्बाडे आदि लोगों के जीवन में वे विशेष रस लिया करतीं। लम्बाडे लोगों की कन्याओं पर मुग्ध रहतीं कि इन्हें वर्धा ले जाकर महिलाश्रम में शिक्षण दिया जाय। जा रही थीं वह कुछ ही दिनों के लिए, परन्तु उनकी अनुपस्थिति सहयात्रियों को खटकनेवाली थी। ● ● ●

सोशलिस्ट मित्रों के बीच (१) : ४५ :

यल्कातूर्ति

३०-५-'५१

नया जिला, लम्बी मंजिल। पंद्रह मील और कच्ची सड़क। रास्तेभर बादलों की छाया। बीच में रुकने का रिवाज नहीं। परन्तु भीमावरम् के लोगों ने रोकना चाहा, तो रुक गये—"सब दानों में श्रेष्ठ दान" भू-दान का तत्त्व समझाया—गरीबों के लिए छह एकड़ पाकर आगे बढ़े।

यल्कातूर्ति करीमनगर जिले का हरिजन-प्रधान गाँव है। पाँच सौ जन-संख्या केवल हरिजनों की है। कार्यक्षेत्र समाजवादियों का है, जिन्होंने विनोबाजी के प्रवेश के साथ ही जिले का भू-दान का काम सहज भाव से सँभाल लिया है—बिना किसी पूर्व योजना के।

पड़ाव पर पहुँचते ही रहे-सहे सभी कार्यकर्ता जमा हो गये। तरुणाई का उत्साह और जानने की लालसा—कुछ प्रश्न भी उन्होंने किये। पहले अशांति के कारणों की चर्चा हुई, तो विनोबाजी ने कहा : "कम्युनिस्ट तो निमित्तमात्र बने हैं। इस गाँव में पाँच सौ हरिजन हैं। अगर अम्बेड़कर यहाँ होते, तो वे भी बगावत पैदा कर सकते थे।"

प्रश्न : "यहाँ हरिजनों को काफी तकलीफ है और कौलदारों को भी। टेनेन्सी कानून बहुत प्रतिकूल है।"

विनोबा : "तो, सरकार तो आप लोगों के हाथ में है—चार-छह माह का सवाल है—फिर आप जिन्हें भेजना चाहें, भेज सकेंगे और फिर शिकायत भी नहीं कर सकेंगे।"

प्रश्न : "लोगों को चुनाव की जानकारी नहीं है।"

विनोबा : "देना आप लोगों का काम है।"

श्न : "इस गवर्नमेंट के कारण भी अशांति बहुत है।"

विनोबा : "हम आजकल बहुत गुलाम हो गये हैं। हर बात में गवर्नमेंट को याद करते हैं। मानो हमें कुछ करना ही नहीं है।"

सेटलमेंट या अनसेटलमेंट

फिर उन नौजवानों को सोचने के लिए कुछ मसाला मिले और सोचने की दृष्टि भी मिले, शायद इसी खयाल से खुद विनोबा ने ही एक सवाल उनके सामने रखा :

"क्या आप लोग किसानों को लगान में वृद्धि करने के लिए कहने को तैयार हैं?"

ज० : "यह कैसे हो सकता है?"

विनोबा : "यही जवाब मुझे सारे सोशलिस्ट देते हैं। लेकिन आप लोग सोचते नहीं कि चालीस बरस पहले जो एक रुपया या आठ आना फी एकड़ लगान तय हुआ, वही आज कायम रखकर, आप कोई भी हुकूमत, बिना डेफिसिट के कैसे चला सकते हैं? चाहे वह सरकार फिर किसी भी पक्ष की हो। और मान लीजिये कि वही लगान रुपये में नहीं, पर वस्तु में होता—फी एकड़ चार सेर जवारी—तो आज सरकारी खजाने की हालत क्या होती? क्या फिर सरकार आज की तरह गरीब रह जाती? तो यह सेटलमेंट है या अनसेटलमेंट है, जो चालीस साल से एक ही चला आ रहा है? अनाज में लगान तय हो, तो 'लेवी' वसूल करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। फिर तो 'देवी' ही आपको मिलती। अब आपको भी चुनाव लड़ना है। इसलिए जाहिर है कि आपके मुँह से भी ज्यादा लगान की बात नहीं निकलेगी। और सरकार को अगर गरीब नहीं रखना है, तो लगान तो बढ़ाना ही होगा।"

अमृत-निधि

भूमिवान् भी मिलने आये। रोज की तरह उनसे भी बातें हुईं। नये

इलाके में प्रवेश था। इसलिए विस्तार से पुनः सारा समझाया। फिर भूमिसम्बन्धी अंक उनके सामने रखे, जो इस प्रकार थे :

एकड़	एकड़	भूमिवान्	
२०० से	६०० तक	१	७०
६० से	२०० तक	—	
५० से	६० तक	३	
४० से	५० तक	१०	
२० से	४० तक	५६	
१ से	२० तक	१८०	
		कुल २५०	

अंकों के आधार पर पुनः चर्चा शुरू हुई :

"अब इन करीब ढाई सौ भूमिवानों में बीस एकड़ से कमवाले ही १८० लोग हैं। २० से ऊपरवाले सत्तर हैं। और मैं तो कुल ढाई सौ के पास से माँगता हूँ। सुदामा के मुट्ठीभर तंदुल से भी भगवान् खुश होते हैं। तो कमवाले कम दें, पर देना सबको है।"

जमीन के बँटवारे की सारी योजना भी समझायी। गाँव-समिति की भी बात बतायी, जो एक ट्रस्टी की तरह काम करेगी और लायक आदमियों में जमीन का बँटवारा करेगी। उस निधि को आप बढ़ा सकते हैं। शादी-ब्याह के प्रसंगों पर, पुत्र-जन्मोत्सव के अवसर पर और अगर कोई मृत्यु हुई, तो उसके निमित्त भी। सारांश, हर्ष-शोक, दोनों प्रसंगों पर आप और नया दान देंगे, तो आहिस्ता-आहिस्ता निधि बढ़ती ही जायगी। और इस तरह नयी जमीन उन जरूरतमंदों के काम आयेगी, जिन्हें अब तक न मिली हो। परन्तु मान लीजिये कि निधि में बढ़ती नहीं हुई, तो भी घटने का तो सवाल ही नहीं है। जमीन तो अमृत-निधि है।"

पचास फी सदी मार्क

गाँव में कुल जमीन चार हजार एकड़ थी। विनोबा ने कहा : "फिलहाल आप लोग दो सौ एकड़ भी जमा कर लें, तो एक उदाहरण होगा। शहरों

में मैं अधिक-से-अधिक भूमि की अपेक्षा रखता हूँ, परंतु देहातों में लोग अधिक-से-अधिक कितने देते हैं, यह देखता हूँ। आपका गाँव तो सोशलिस्टों का गाँव है—सोशलिस्ट कार्यकर्ता भी काफी संख्या में यहाँ हैं। ढाई सौ लोग देने की क्षमता रखते हैं। तो अब देखना है कि आप लोग कितने लोगों से दान दिलवाते हैं। सोशलिस्टों का नाम मैंने इसीलिए लिया कि वे दानपत्र अधिक संख्या में दिलवा सकते हैं। जो बड़े लोग हैं, वे तो देने ही वाले हैं। उनसे जमीन लेने की जिम्मेवारी मैं सोशलिस्ट मित्रों पर नहीं डालता हूँ। ढाई सौ में से जो एक सौ अस्सी हैं—बीस एकड़ से कमवाले—उनसे सोशलिस्ट लोग साठ दान-पत्र भी ला सकें, तो मैं पचास फी सदी मार्क उन्हें दूँगा। और आप जानते हैं कि तैंतीस फी सदी से कम में तो कोई कामयाब भी नहीं होता।"

सोशलिस्ट मित्र तो सभा में थे ही। एक प्रश्न उन्होंने भी पूछ लिया : "विनोबाजी ! आपने यह सब समझाया, वह तो ठीक है। परन्तु ये पढ़े-लिखे लोग ही इस बात को अधिक समझ सकते हैं। गरीब अनपढ़ तो कम ही समझते हैं।"

"हमारा अनुभव तो उल्टा है"—विनोबा ने मुस्कराकर जवाब दिया।

प्रार्थना का समय हो चुका था, इसलिए सभी लोग सीधे प्रार्थना में पहुँचे। प्रारम्भ में गत डेढ़ माह की यात्राक्रम का थोड़े में सार बताकर फिर अपने काम के बारे में समझाते हुए विनोबा ने कहा :

हम जातिभेद नहीं मानते

"आज कुछ लोग जाति-पाँति का विचार नहीं रखते हैं, लेकिन वे दूसरे वर्गों की कल्पना करते हैं। वे कहते हैं कि गरीबों का और श्रीमानों का अलग-अलग वर्ग है और ये दो जातियों के हित एक-दूसरे के विरुद्ध हैं। तो, यह भी एक तरह का जाति-भेद हुआ। इस तरह के किसी जाति-भेद को हम नहीं मानते। हम हरएक को मनुष्य के नाते पहचानते हैं। कोई मनुष्य कुछ अधिक भला होता है, कोई उतना भला नहीं होता, यह

हम देखते हैं। फिर भी हम मानते हैं कि जो मनुष्य आज अच्छा नहीं दीखता, वह कल अच्छा होनेवाला है। क्योंकि हरएक में सद्भावना के बीज भगवान् ने बोये हैं। और परिस्थिति अनुकूल होती है, तो किसीके सद्भावना के बीज जल्दी अंकुरित हो जाते हैं, किसीको परिस्थिति अनुकूल नहीं होती है, तो सद्भावना के बीज देरी से अंकुरित होते हैं।"

अपना अनुभव बताते हुए कहा :

"आज तक के जीवन में हमने एक भी मनुष्य ऐसा नहीं पाया कि जिसमें सद्भावना न हो।"

सद्भावना को जाग्रत करने का रहस्य भी बताया : "गुणों के द्वार से मनुष्य के हृदय में प्रवेश पाओ। किसीका विरोध किये बिना काम किये जाओ।"

मूल्यांकन

जो कुछ काम पिछले एक माह में हुआ था, उसके संबंध में अपना दृष्टिकोण बताते हुए कहा :

"लोग कहते हैं, आपको ८ हजार एकड़ जमीन मिल गयी, इससे क्या हुआ ? इससे झगड़े का सवाल थोड़े ही हल हुआ। हम जानते हैं कि ८ हजार एकड़ नहीं, ८ लाख एकड़ जमीन मिलने से भी सवाल हल होनेवाला नहीं है। लेकिन हम तो हरएक के हृदय में प्रवेश करना चाहते हैं। तो हम हमारा काम इतना ही समझते हैं कि सबके हृदय में जाग्रति पैदा करें। इस तरह हमने लोगों में प्रचार किया, उनको कुछ चीजें समझायीं। वे हमारी बात समझे हैं या नहीं समझे हैं, इसका हमको सबूत चाहिए, तो इस तरह सबूत के तौर पर हम जमीन दान माँगते हैं। अगर वे विचार समझे हैं और प्रेम से जमीन देते हैं, तो इसका अर्थ यह हुआ कि काम प्रेम से ही हुआ, न कि जमीन से। यह एक तरीका है, मूल्यांकन करने का। ऐसा हिसाब नहीं करते कि ६ हफ्ते घूमा और आठ हजार एकड़ जमीन कमायी। हम तो यह हिसाब करते हैं कि हमने

प्रवास में कितने सज्जनों के हृदय में प्रवेश पाया। एक दीपक से ५० दीपक जलते हैं, तो हम देखते हैं कि कितने दीपक सुलग गये हैं। इसलिए अगर ऐसे कार्यकर्ता तैयार होते हैं कि जिनके हृदय में प्रेम-भावना पैदा हुई है, जिनके हृदय में परमेश्वर का भाव है, जो सेवा करना चाहते हैं, तो हम समझेंगे कि हमारी यात्रा सफल हुई, हमारा काम हुआ। अगर ऐसे कार्यकर्ता, सज्जन नहीं तैयार हुए हैं, तो ८ हजार एकड़ क्या, ८ लाख एकड़ जमीन मिली, तो भी वह मैं सफलता नहीं समझता। हम तो सज्जनों का संघ स्थापन करना चाहते हैं।"

हमारे काम की कसौटी

श्री लक्ष्मी बहन की मिसाल देकर उन्होंने कहा : "छह हफ्ते से वह हमारे साथ है। रोज हमारे भाषणों का अनुवाद करती है। लेकिन अनुवाद का हमें महत्व नहीं। हम देखते हैं कि लक्ष्मीबाई एक सज्जन बाई तैयार हो रही है। इस तरह के सज्जन अगर १०-२० तैयार हुए, तो हम सफल हुए, ऐसा समझेंगे। हमारे काम की हम यही कसौटी समझते हैं। बाहर से देखेंगे, तो गरीबों को जमीन बाँट रहे हैं और हमारी मनशा भी है कि यह जमीन का मसला हल होना ही चाहिए। लेकिन इस समस्या को हम कठिन समस्या नहीं मानते। सज्जन-संघ की स्थापना करना यह बड़ी समस्या है। जो यहाँ पर कठिन काम है, वह हमने हाथ में लिया है। उसके साथ-साथ यह समस्या भी हल होगी, ऐसा हम मानते हैं।"

दो आवश्यक व्रत

फिर 'संग्रह-वृत्ति' के संबंध में समझाते हुए कहा : "जैसे चोरी पाप है, यह ध्यान में आया है; वैसे ही ज्यादा जमीन रखना पाप है, यह ध्यान में नहीं आया है। कोई कहते हैं, हमारे पास जो दस हजार एकड़ जमीन है, वह हमने सेवा का काम किया, इसलिए हमें मिली है। मैं मानता हूँ कि लोगों ने सेवा की होगी, इस वास्ते उन्हें जमीन मिली होगी। जमीन मिली, यह ठीक है; लेकिन रखी काहे के लिए है ? मैं यह नहीं

कहता कि जो जमीन मिली है, उसमें उस पानेवाले की गलती है। लेकिन उसने अपने पास रखी है, यह उसका पाप है। अगर यह भावना ध्यान में आयी कि अधिक संग्रह रखना पाप है, तो समाज में इज्जतवाले लोग अधिक जमीन नहीं रखेंगे। आप देखेंगे कि ऐसी भावना समाज में आज नहीं है। जब यह भावना नहीं है, तो जो लोग अपने पास संग्रह रखते हैं, उनको दोष नहीं दे सकते। आज इस तरह का लोकमत नहीं है कि संग्रह भी पाप समझा जाय। यह भावना पैदा करना कानून का नहीं, सज्जनों का काम है और वह मैं कर रहा हूँ। आप लोग भूमि देंगे, तो उसका मतलब भी आप समझ लीजिये। मतलब यह है कि गरीबों के बारे में सोचना हरएक का फर्ज है। मैं मानता हूँ और जानता हूँ कि इस कर्तव्य के भान के अभाव में ही हिन्दुस्तान में असंतोष फैला है। एक बड़ी लड़ाई योरोप में हो गयी, दूसरी की तैयारी चल रही है। ये सारी लड़ाइयाँ, ये सारी बातें किसलिए? इसलिए कि कुछ लोग काम करते हैं और बाकी बिना काम किये लाभ उठाना चाहते हैं, अपने पास संग्रह करना चाहते हैं। ये सारे महायुद्ध तभी खतम होंगे, जब सारे लोग समझेंगे कि हमें संग्रह अधिक नहीं करना चाहिए।

"और अगर संग्रह को कम करना है, तो शरीर-परिश्रम के बिना वह संभव नहीं है। तो एक है, शरीर-परिश्रम का व्रत और दूसरा है, अपरिग्रह का व्रत। ये दो व्रत समाज में चलें, तो हमारी प्रगति हो सकती है। इसके लिए भावना निर्माण होनी चाहिए और यह भावना निर्माण करने का काम मेरा चल रहा है। इस काम में परमेश्वर ने जो थोड़ा यश दिया है, वह मैं उसीको समर्पण करता हूँ। मुझे जय-पराजय नहीं चाहिए। मैं जो काम करता हूँ, उससे मुझे आनन्द है। लोग मेरी आवाज न सुनकर कुछ दान नहीं देते, तो भी मुझे उतना ही आनन्द होगा, जितना आज होता है। सब लोग मेरी हँसी करते और कहते कि पैदल घूम तो रहा है, लेकिन बनता-बनाता नहीं है, तो भी मैं आनन्द से नाचता कि मैं

अपना काम ठीक तरह से कर रहा हूँ। जब समय अनुकूल होता है, तो लोग किसीका सुनते हैं, समय अनुकूल नहीं होता, तो नहीं सुनते।

पद्धति का महत्त्व

"लोग सुनें, न सुनें, उस पर मनुष्य के काम का आधार नहीं है। मनुष्य के काम की योग्यता तो उसके काम करने की पद्धति पर अवलंबित है। मेरा विश्वास है कि इस काम में लोग योग दें या न दें, लेकिन सब लोगों में प्रेमभाव बढ़ाने का यह काम है, इस वास्ते यह काम सही है। इस वास्ते सही नहीं कि लोग जमीन दे रहे हैं। लेकिन इसलिए सही है कि वह सही ही है।

"अपने विचार मैंने आपके सामने रख दिये। इस गाँव में सोशलिस्ट काफी तादाद में हैं। ये विचार मैंने खास उनके लिए बताये हैं। वे बहुत अच्छी भावना रखते हैं। समाज में परिवर्तन हो, सुख की वृद्धि हो, सब तरफ आनन्द हो, ऐसा वे चाहते हैं। लेकिन इच्छा अच्छी होते हुए भी काम किस ढंग से किया जाय, यह वे नहीं जानते।

"अब मेरा व्याख्यान खतम होता है। अब थोड़ी देर भगवान् का स्मरण करेंगे। कल सुबह ५ बजे दूसरे गाँव के लिए निकलेंगे। उसके पहले जितनी भूमि की वर्षा कर सकते हों, उतनी कीजिये।"

विनोबाजी का आवाहन हुआ और एक भाई खड़ा हुआ। हाथ जोड़कर उसने कुछ कहना चाहा। सबका ध्यान उधर गया। उसके मुँह से बहुत नम्रता से शब्द निकले : 'एक सौ पचीस एकड़ मेरी ओर से लिख लीजिये !!!'

लक्ष्मी अम्मा दाता के पास पहुँच गयी। बोली : 'अपनी ओर से सवा सौ दिये, तो अपनी सहधर्मिणी की ओर से भी तो कुछ देना चाहिए न ?'

दस एकड़ का दान-पत्र लक्ष्मी अम्मा की इच्छानुसार भी भर दिया।

दूसरे एक भाई ने एक एकड़ देना चाहा। जमीन तरी की थी।

अम्मा ने उस भाई से भी कहा : 'घर में जो स्त्रियाँ हों—माता-पत्नी,

भगिनी-पुत्री, किसीके भी नाम से दीजियेगा। स्त्रियों की ओर से भी दान मिलना चाहिए।'

एक एकड़ तरी का और एक दान-पत्र उसने भी लिख दिया।

सोशलिस्ट मित्रों ने कहा : 'दूसरों से माँगने के पहले हमें खुद अपना दान-पत्र भरना चाहिए।'

'ठीक ही तो है।'

उनमें से भी चार भाइयों ने दान-पत्र भर दिये। श्री बाबूराव ने, जो इस जिले की पदयात्रा का संयोजन भी कर रहे हैं, अपनी जमीन का चौथा हिस्सा दिया।

● ● ●

सोशलिस्ट मित्रों के बीच (२) : ४६ :

हुजूराबाद
३१-५-'५१

सर्टिफिकेट बताओ

मंजिल रोज के हिसाब से कम थी। केवल आठ मील। आकाश में काली घटाएँ खूब छा गयी थीं। बूँदें भी थोड़ी देर बरस गयीं, सुखद स्पर्श दे गयीं। रास्ते में सोशलिस्ट मित्रों के साथ अच्छी चर्चा हुई। शरीर-परिश्रम के बारे में विनोबाजी ने बताया : "अगर मेरा चले, तो मैं समाज-व्यवस्था भी ऐसी ही बनाऊँ कि चार घंटे सबको उत्पादक परिश्रम करना पड़े। चाहे वह बढ़ई हो, चाहे प्रोफेसर। आज तो लोग व्यायाम और वायु-सेवन के लिए घूमने जायँगे, परन्तु अपनी डाक नौकर के जरिये ही डलवायेंगे। सौ-सौ बार उठेंगे-बैठेंगे; लेकिन चक्की नहीं चलायेंगे। तो, मेरी व्यवस्था में मैं आप लोगों से सर्टिफिकेट बताने को कहूँगा कि आपने चार घंटा खेती में काम किया है।"

फिर शहरी जीवन की चर्चा निकली, तो उन्होंने कहा :

"आज शहरवालों का जीवन कितना हास्यास्पद है। डेअरीवाला रोज गाय का दूध बोतल से दे जाता है और मिट्टी की गाय बनाकर बच्चों की जिज्ञासा पूरी करनी पड़ती है। जीवनभर आटे की रोटी खाते हैं; लेकिन पता नहीं होता कि गेहूँ क्या है—कहाँ पैदा होता है और कैसे पैदा होता है।"

सर्वस्व-दान

फिर दान के प्रमाण के सम्बन्ध में पूछा गया कि किसी बड़े जमींदार से, जिसके पास दस हजार एकड़ जमीन हो, अधिक-से-अधिक कितने दान की अपेक्षा रखी जाय? विनोबाजी ने फौरन कहा : "सर्वस्व-दान देकर फकीर

बने। इससे कम क्या अपेक्षा हो सकती है ? परन्तु जमीन रखनी ही हो, तो पचास एकड़ अपने लिए रख ले और शेष ९९५० अपने भूमिहीन भाइयों में तकसीम करने के लिए निकाले। अगर श्रीमान् लोग ऐसा करें, तो देश में क्रांति हो जायगी। ऐसे आदमी को लोग पहले तो पागलखाने में भेजना चाहेंगे; परंतु फिर जब समझ जायँगे, तो उसकी सूझ-बूझ की सराहना भी करेंगे।"

सफेद बाजार

अर्थशास्त्र की बातें भी निकलीं। वस्तुओं की दर, मुनाफा आदि पर बहस हुई। विनोबा ने पूछा : "कोई आदमी अपने कंबल का चार रुपया माँगता हो, तो आप कम तो नहीं देंगे, लेकिन क्या ज्यादा देने को तैयार होंगे ?"

किसीके मुँह से 'हाँ' का जवाब नहीं निकला।

"आप लोग बोलेंगे : 'अजीब मनुष्य है यह।' लेकिन मैंने चार रुपये माँगने पर कंबलवाले को छह रुपया दिया है, क्योंकि उसकी माँग ही गलत थी। बाजार में ही उसका अर्थशास्त्र का वर्ग मैंने लिया। कितनी मेहनत से तरकारियाँ पैदा होती हैं और उनकी खरीद में सौदा चलता रहता है। यह सफेद बाजार हमारे राष्ट्र को निश्चय ही अनीति की राह पर ले जा रहा है।"

संगठन और क्रांति

दो रोज से सोशलिस्ट मित्र विनोबा के निकट परिचय में आ रहे थे। विनोबा के विचारों का आकर्षण भी उनमें काफी दिखाई दे रहा था। लेकिन पार्टी का मोह था। विनोबा के पास तो न पार्टी, न संस्था और न संगठन। बिना संगठन के काम भी कैसे बढ़ेगा ? इसलिए उन्होंने पूछा :

"आप अपनी एक पार्टी क्यों नहीं बनाते ? बिना पार्टी या संगठन के आज कोई काम संभव नहीं दीखता।"

विनोबा को हँसी आये बिना नहीं रही। उन्होंने पूछा : "पार्टी शब्द कैसे बना है, मालूम है ? अगर मैं भी पार्टी बनाकर अपने को दूसरों की तरह एक पार्ट में याने हिस्से में या टुकड़े में सीमित कर लूँ, तो आज मुझे जो सबकी शक्तियों का लाभ मिलता है, वह नहीं मिलेगा। फिर आप लोगों के ध्यान में एक बात अभी तक आयी नहीं दीखती है कि सर्वोदय तो सबकी उन्नति चाहता है। यह काम वह अपनी अलग पार्टी बनाकर कैसे कर सकेगा ? उसे तो 'होल' याने 'पूर्ण' या 'साबित' ही रहना चाहिए। पार्टी तो टुकड़े करती है। हम टुकड़े नहीं करना चाहते। हम तो टुकड़ों को जोड़नेवाले हैं। ये जितनी पार्टियाँ हैं, वे सब एक रोज सर्वोदय में आकर मिलनेवाली हैं, उसमें विलीन होनेवाली हैं।"

सोशलिस्ट मित्रों का समाधान नहीं हुआ। वे कहने लगे : "आपका कहना ठीक है। फिर भी कुछ-न-कुछ संगठन तो चाहिए ही। कृपालानीजी भी गांधी-विचारवाले हैं, पर वे भी संगठन को मानते हैं। स्वयं गांधीजी ने भी तो कांग्रेस के जरिये काम किया। संगठन के बिना कैसे होगा विनोबाजी ?"

विनोबा ने कहा : "गांधीजी का जमाना दूसरा था। उस समय अंग्रेजों से मुकाबला था। तो, कांग्रेस के झंडे के नीचे सभी एक हो गये थे। लेकिन स्वराज्य के बाद गांधीजी ने भी कांग्रेस को विलीन कर उसे केवल सेवा-प्रधान लोक-सेवक-संघ में परिवर्तित हो जाने की सलाह दी थी। कृपालानीजी संगठन में विश्वास करते हैं; क्योंकि वे सत्ता में विश्वास करते हैं। हमारे यहाँ ये प्रयोग बहुत हो चुके हैं। मुहम्मद, रामदास, नानक, सबने संगठन किये, सत्ता का आधार लिया; परंतु नतीजे क्या आये ? मतभेद हुए, झगड़े बढ़े। आखिर वे संगठन तितर-बितर हो गये। फिर यह भी आप लोगों के ध्यान में नहीं आता कि क्रांति कभी सत्ता के जरिये नहीं होती। क्रांति तो सत्ता के बाहर रहकर ही होती है। बुद्ध ने क्रांति की, तो राज्य सँभालकर नहीं, राज्य का परित्याग करके ही की।"

संस्कृति और सौंदर्य

संस्कृति की चर्चा भी निकल पड़ी।

विनोबा ने कहा : "हम लोगों को न संस्कृति का खयाल है, न सौंदर्य का। हमारी रुचि का स्तर कितना गिर गया है। परसों हम एक गाँव में ठहरे थे। मकान क्या था, एक जेल ही थी, यद्यपि भीतर से सुंदर था। परंतु इर्द-गिर्द, चारों तरफ भीषण कुरूपता का दर्शन हो, तो उस बीच सुंदरता भी शोभा नहीं देती। गरीबी के बीच वैभव भीषण प्रतीत होता है। सभ्यता और संस्कृति का लक्षण यही है कि जिन लोगों के बीच हम रहते हैं, उनके जीवन के साथ हमारी एकरूपता हो। वरना सौंदर्य भी 'अग्ली' (कुरूप) दिखाई देने लगेगा।"

गलत हाथों में अधिकार

प्रश्न : "रजाकारों के जमाने में लोग बहुत परेशान थे। फिर 'पुलिस-एक्शन' हुआ, तो थोड़े दिन लगा कि बड़ा अच्छा हुआ। लेकिन रजाकारों की जगह जिस पुलिस ने ली, उससे भी लोग कुछ तंग-से आ रहे हैं। लोगों को ऐसा नहीं लगता कि बहुत फर्क हुआ।"

विनोबा : "हाँ, ये पुलिस हमारे आज के संरक्षक समझे जाते हैं। संरक्षक और सेवक, दोनों याने ये हमारे हनुमान् हैं। चालीस इंच छाती, हाथ में बंदूक और चाहे जिसको गोली मार देने का अधिकार ! न ज्ञान, न चरित्र, न सेवा-भाव ! जो अधिकार सत्त्वगुणी लोगों के हाथों में होने चाहिए, वे तमोगुणी लोगों के हाथों में दे दिये गये हैं।"

पड़ाव नजदीक आ रहा था।

चर्चा को समेटते हुए विनोबाजी बोले : "कितनी दर्दनाक हालत है। पैगंबर और ऋषि-मुनि आज के अपने इन अनुयायियों को देखकर क्या कहेंगे ? इसलिए आज हमें सबके हृदय का प्रेम, सत्य, दयाभाव प्रकट कराना और उसके लिए हम मानव के हृदय में प्रवेश करना चाहते हैं।"

● ● ●

वामन के तीन कदम : ४७

जम्मिकुंठा
१-६-'५१

नये ऋतु का सूचक नया मास और उसका भी नया दिवस ! बादलों से घिरा आसमान ! हवा में नमी ! बूँदें बरसने लगीं, तो गाँव भी आ गया। मंदिर में निवास था। दिनभर मंदिर के अनेकविध पूजन-समारोह और आरतियों के मुक्त निनाद में ही विनोबा का कार्यक्रम चलता रहा।

रोज की तरह भूमिवान् तथा कार्यकर्ता मिलने आये। आज शुरू में एक गीत भी गाया गया—"**भारत हमारा देश है।**" फिर कार्रवाई शुरू हुई। जब से तेलंगाना की यात्रा शुरू हुई, भूमिवानों की यह सभा बराबर जारी है और रोज उनके निमित्त कोई-न-कोई नया विचार मिलता रहता है। आज मानव-जीवन के कुछ अत्यंत उपयोगी और अत्यंत महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर विनोबाजी ने प्रकाश डाला।

स्वयं परमेश्वर भी खुश हुए बिना नहीं रहेगा

विनोबा ने समझाया : "केवल जमीन लेना हमारा काम नहीं है। हम तो सज्जनता का प्रचार करना चाहते हैं। आज निरपेक्ष सेवा की भावना कम है। चाहे आप सोशलिस्टों में जायँ, चाहे कांग्रेसियों में, निरपेक्ष-निर्हेतुक सेवा करनेवाले बहुत कम दिखाई देंगे। जेल जाकर आते हैं, तो उसका भी पुरस्कार चाहते हैं। जनता के लिए अपना वित्त और चित्त सारा दे देना बहुत कम पाया जाता है। दस-पाँच गाँवों में कोई एकआध ही ऐसा व्यक्ति मिलता है। इंद्रपद की लालसा रखनेवाले ही बहुत मिलते हैं।"

फिर जीवन की क्षणभंगुरता को समझाते हुए कहा : "अब हमारी

ही हालत देखिये ! हम वर्धा जा रहे हैं। लेकिन कौन कह सकता है कि हम वर्धा पहुँच ही जायँगे ? संभव है, हम कल का सवेरा भी न देख सकें। संभव है, इधर ही कहीं समाधि बनानी पड़े। इसलिए हमने यह भूमि माँगने का काम शुरू किया है। इसे केवल चित्त-शुद्धि का काम समझकर हम कर रहे हैं। इसलिए आप जमीन कितनी देते हैं, यह मद्दे-नजर नहीं है। पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयं, जो जितना दे, हम स्वीकार कर लेते हैं। कल हमें सवा तीन सौ एकड़ भूमि मिली। ज्यादा मिलने से खुश नहीं होना है, कम मिलने से नाराज नहीं होना है। यही हमारी कसौटी है। हमारे काम का यशापयश जमीन की तादाद पर नहीं, हमारे हृदय की हर्षशोक रहितता पर निर्भर है। आपकी भी कसौटी इसीमें है कि आप जो कुछ दें, समझ-बूझकर दें और निरहंकार होकर दें। हम आपसे माँगने आये हैं—हमने अपने को वामन की भूमिका में रखकर आपको चक्रवर्ती बलि राजा का पद प्रदान किया है। आप जो जमीन देंगे, वह आपके गाँव के उन गरीब भाइयों को मिलेगी, जिनके पास न जमीन है, न जीविकोपार्जन के अन्य कोई साधन ही हैं। तब उसे लगेगा कि मेरे गाँववाले मेरी फिक्र करते हैं। उसे लगेगा कि यह दुनिया भी रहने के काबिल है और तब वह गीत भी गा सकेगा कि **'भारत हमारा देश है।'** जब आप लोग या आपके गाँव की कमेटी अपने गाँव में जाकर पूछेगी कि जमीन किसे नहीं है, तो वे लोग समझेंगे, कोई नया युग आया है। उस रोज उन्हें स्वराज्य का अनुभव होगा। ऐसे पन्द्रह अगस्त के रोज हर साल आप रोशनी जलायें, झंडे फहरायें, गीत गायें; लेकिन बेजमीन गरीब को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं, उससे उसे कोई लाभ नहीं। लेकिन जब उसे जमीन मिलेगी और वह जानेगा कि उसीके गाँव के भूमिवान् ने दी है, बिना माँगे उसे मिली है तथा देनेवाला उसकी खोज करता हुआ उसके पास पहुँचा है, तो न सिर्फ वह खुश होगा, स्वयं परमेश्वर भी खुश हुए बिना नहीं रहेगा।"

सारी चर्चा उस मंदिर में ही हो रही थी। एकादशी के निमित्त कल दान करनेवाले श्री राजेश्वरराव ने आज भी कुछ दान दिया और अपनी मोटर भेजकर अपने दूसरे रिश्तेदारों को बुलाया। उनसे भी जमीन दिलवायी और खुद भी दी। विनोबा ने कहा : "नये हाथियों को घेरने के लिए पुराने पालतू हाथी ही भेजे जाते हैं। राजेश्वररावजी अब दरिद्रनारायण के लिए पालतू हाथी का काम कर रहे हैं, जो नये-नये दाताओं को ला रहे हैं।" फिर आज जो दान उन्होंने दिया था, उस बारे में विनोबाजी ने सस्मित पूछा :

"आज भूमि किस निमित्त से दी?"

"आज द्वादशी है और आप इस मंदिर में ठहरे जो हैं।"

अब लक्ष्मी बहन से नहीं रहा गया। बहनों की हिमायत लेकर उन्होंने कहा : "मैं रोज देखती हूँ, आप अकेले ही सारा पुण्य बटोरते जा रहे हैं। क्या घर में मेरी बहनों को एकादशी-द्वादशी नहीं होती? न उनको आप साथ ही लाते हैं, न उनके नाम से दान ही देते हैं। और एक नया दान-पत्र भरना होगा उनकी ओर से।"

उस दाता ने पचीस एकड़ का एक और दानपत्र अपने घर की स्त्रियों की ओर से भर दिया।

● ● ●

दोरा आ रहा है : ४८ :

पोतकापल्ली, कोलनूर
२,३-६-'५१

दोनों रोज फासला कम ही था। रेलवे लाइन से होकर गुजरना था। बूँद-बूँद वर्षा हो रही थी, इसलिए काली मिट्टी पाँव से लिपटती जाती थी। पोतकापल्ली से कोलनूर जाते हुए रास्ते में एक छोटे-से गाँव से गुजरना था। एक नाई अपना डफ सेंक रहा था। बाबा जैसे ही सामने से निकले, वह घबराता हुआ आया और पूछने लगा कि क्या महाराज निकल गये? 'अभी-अभी चले जा रहे हैं' सुनते ही उसका चेहरा एकदम फीका पड़ गया। मालूम हुआ कि लोग बहुत देरी से बाबा का इन्तजार कर रहे थे। समय का ठीक अंदाज नहीं था कि कब गुजरेंगे। वे अभी नाई से यह कहकर भीतर गये थे कि डफ की आवाज सुनते ही हम दौड़ आयेंगे। इधर उसकी उलझन बढ़ रही थी, उधर विनोबा तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे। बात की बात में लोग एक-एक करके दौड़ने लगे। शुरू में थोड़े लोग विनोबा के पास पहुँच पाये, फिर तो सबने उन्हें घेर ही लिया। रुकने के लिए आग्रह करने लगे, पर बाबा चलते ही जा रहे थे। लेकिन छोटे छोटे बच्चों और स्त्रियों को दौड़ता देख आखिर वे रुक ही गये। पड़ाव पर आने की सूचना दी और फिर आगे बढ़े। इतने में गाँववालों ने विनय की: "बाबाजी, दोरा आ रहा है, हमारा दोरा आ रहा है। वह दौड़ नहीं सकता, आप दया करके थोड़ा और रुकिये।"

विनोबा ने पीछे देखा, तो एक स्थूलकाय वृद्ध दौड़ने की कोशिश कर रहा है; लेकिन शरीर उसे इजाजत नहीं दे रहा है। विनोबा फिर रुक गये। दोरा ने पहुँचते-पहुँचते पाँच मिनट लगा दिये। दस-बारह

फुट दूर पर अपनी पग-रखी छोड़ी। नजदीक आकर बहुत विनम्र भाव से चरण छुये और ऊपर देखा-न-देखा कि विनोबा ने सवाल कर दिया : "कितनी जमीन है?" दोरा का तो हाँफना भी बंद नहीं हुआ था, पेशी की उसे कल्पना भी नहीं थी। जवाब देना जरूरी था। उसके मुख से सहज भाव से निकल गया : "सवा सौ एकड़।" उसका कहना पूरा हुआ कि वामन ने दोरा के सामने हाथ बढ़ाकर पूछ ही लिया : "फिर गरीब के लिए क्या देते हो?"

दोरा क्या जवाब देता है? हाँ कहता है या ना? सबकी निगाहें दोरा पर गड़ गयीं। उसने पहले से तो कुछ भी नहीं सोचा था, लेकिन हाथ जोड़कर तत्काल कह दिया : "पाँच एकड़।"

दोरा के भीतर से कौन बोला? एक क्षण पहले दोरा को भी पता नहीं था कि उसे कुछ देना होगा। किसीने उसे आकर समझाया भी नहीं था। कोई महापुरुष इधर से गुजर रहे हैं, इसलिए दोरा और उसका सारा गाँव दर्शन करने जुटा था। लेकिन जो दर्शन दोरा के कारण सबको मिला, वह विशेष दर्शन था। यह दर्शन ठौर-ठौर मिलता ही जा रहा है। विनोबा जमीन माँगने निकले हैं या ध्रुव की तरह सबको भगवान् के दर्शन कराने निकले हैं? ● ● ●

आवाहन

: ४९ :

पदोपल्ली
४-६-'५१

सोलह हजार की बस्ती, पर देहातों में जो उत्साह नजर आता है, वह यहाँ नहीं है। कुछ तो प्रचार की कमी है, क्योंकि कार्यकर्ताओं की ही कमी है। जो हैं दो-चार, वे मात्र सोशलिस्ट हैं। उनकी शक्ति की मर्यादा है। प्रभाव की भी मर्यादा है। शहरों में तो उनका अभी प्रभाव जम ही नहीं पाया है।

कम्युनिस्टों का आंदोलन इधर विशेष हुआ नहीं है, फिर भी डकैती और खून-खराबी से जिला अछूता नहीं है।

नलगुंडा और वरंगल की तरह यहाँ के श्रीमानों को कम्युनिस्टों का इतना भय नहीं कि गाँव छोड़कर जाना पड़े। फिर भी आज चंद जिम्मेदार और साधनवान् लोग गाँव से बाहर हैं कि कहीं भू-दान में जमीन देनी न पड़े।

"ना तो नहीं कहते हैं न ? भाग जाने का अर्थ ही है कि आज नहीं तो कल देंगे।" विनोबा ने हम लोगों के लिए भाष्य किया।

चंद लोगों की अनुपस्थिति के कारण भूमिवानों की सभा का नित्य-क्रम टला नहीं। जमींदार और पट्टेदार, दोनों आये। कार्यकर्ता भी काफी संख्या में थे।

मालिक का हक

हैदराबाद प्रदेश की यात्रा भी अब जल्दी खतम होने को थी। विनोबाजी ने इसलिए कुछ अधिक विस्तार से समझाना उचित समझा :

"हम देख रहे हैं कि स्वराज्य के बाद लोगों में सेवा-वृत्ति कम हो

रही है। भोग-वृत्ति बढ़ रही है। जो कुछ आंदोलन दिखाई देता है, वह भी इस मकसद के लिए कि हुकूमत किन हाथों में हो। हुकूमत है, तो अपने ही हाथों में। फिर भी चूँकि चुनाव सामने आ रहे हैं, कशमकश इस बात के लिए है कि कौन चुना जाय—सत्ता किसे सौंपी जाय। नौकर किसे बनाया जाय कि भरोसे से काम कर सके। बस, आजकल लोगों में सारा आंदोलन इसीलिए हो रहा है। इसमें गलत कुछ नहीं है, मालिक को हक है कि वह अपनी पसंदगी का नौकर चुने।

अकरण, विकरण, सुकरण

"काम बहुत महत्त्व का है और मुश्किल भी है। हर कोई आपसे आकर कहेगा कि उसने और उसके पक्ष ने क्या-क्या किया। दूसरों ने क्या-क्या बुराइयाँ कीं, यह भी बताई जायँगी। इस तरह दूसरों के बारे में तो कुछ अकरण, कुछ विकरण, दोनों का जिक्र करेंगे। यह भी बता देंगे कि दूसरों के द्वारा सुकरण या योग्यकरण तो कुछ हुआ ही नहीं। हाँ, जिस पक्ष की सरकार होगी, वह पक्ष अपनी सरकार की बढ़िया तस्वीर लोगों के सामने रख देगा। लेकिन इस सारे आंदोलन का हेतु सत्ता-ग्रहण और सत्ता-संरक्षण ही है।

"इसमें शक नहीं कि जिनके हाथ में सत्ता है, वे चाहें तो बहुत कुछ कर सकते हैं। परंतु जहाँ एक बार हम सत्ता में जाकर बैठते हैं, तो एक पार्टी के 'डिसिप्लिन' में जाकर बैठते हैं। फिर हमारी परिस्थिति और हमारी इच्छाएँ, दोनों में खाई पड़ना शुरू होता है। हमारे काम की गति कुछ बढ़ सकती है। कुछ अधिक बन आने का भी आभास हो सकता है। हमारे पहले जो लोग थे, उनसे जो गलतियाँ होती थीं, वे ही गलतियाँ हमसे शायद न हों; लेकिन दूसरी और नयी-नयी गलतियाँ होती हैं। डेमाक्रेसी में यह सारा होता रहता है और देश की जो समस्याएँ हैं, वे अछूती ही रह जाती हैं।

चुनावों का शाप

"हिंदुस्तान की समस्या याने सिर्फ शहरों की ही समस्या नहीं है। हमारी समस्या तो हमारे देहातों की समस्या है। इन चुनावों के कारण लाभ तो शायद न मालूम क्या होगा, वह तो भविष्य बतायेगा। लेकिन जो नुकसान होनेवाला है, वह मेरे सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आज ही देश में झगड़े कम नहीं हैं। उन सबमें चुनाव के कारण एक नया झगड़ा शुरू होनेवाला है। अपने-अपने पक्ष का राग अलापनेवाले जब देहातों में पहुँचेंगे, तो देहात का अंग-अंग इतना छिन्न-विच्छिन्न हो जायगा, पक्ष-भेद हर देहात में इतने बढ़ेंगे कि फिर वहाँ कोई सार्वजनिक सेवा का काम होने की संभावना न रहेगी।

सत्ता की लड़ाई

"हमने अनेक गाँवों में देखा है कि वहाँ कोई सेवक तो होता है, परंतु वह किसी-न-किसी पक्ष का होता है। उसको कोई सहकार्य न मिले और सेवा का मौका ही न मिले, ऐसी कोशिश दूसरे सब पक्षवालों से इसलिए होती रहती है कि कहीं उस सेवा के जरिये उसका प्रभाव न बढ़ जाय। सेवा से गाँव का लाभ होगा, यह तो ठीक है। पर बड़ी भारी हानि यह होगी कि हमारे खिलाफ पक्षवाले का प्रभाव बढ़ जायगा। हम इसे कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं! तो, अब यह आपस की कौरव-पांडवों के बीच की लड़ाई इस देश में शुरू हो गयी है। स्वराज्य की लड़ाई अंग्रेजों के मुकाबले थी; इसलिए उसका ढंग दूसरा था। आज सत्ता की लड़ाई है। अपने-अपने वीरों को तैयार किया जा रहा है। फिर कुछ लोग सत्ता में चले जायँगे। और जो नहीं जा पायेंगे, उनके दिलों में मत्सर शुरू होगा। फिर दूसरी प्रक्रिया शुरू होगी—दोष देखने और उन्हें जाहिर कर उनके बारे में सतत टीका करते रहने की।

"हिन्दुस्तान का दुःख, जो असीम है और जिसे मिटाने की हमने गांधीजी के नेतृत्व में कोशिश की, उसके मिटने की कोई उम्मीद नहीं

दीख रही है। दुःख न मिटेगा, तो असंतोष बना रहेगा, बढ़ता रहेगा। सत्ताकांक्षी पक्ष उस असंतोष से लाभ उठाते रहेंगे। इस तरह एक पार्टी सत्ता में आयेगी, तो दूसरी पार्टी सत्ता से अलग होगी—पार्टियाँ आयेंगी और जायँगी, लेकिन लोगों के दुःख दूर होंगे।

आत्म-शुद्धि का प्रयोग

"मुझे यह सब आप लोगों के सामने इसलिए कहना था कि गांधीजी ने स्वराज्य की लड़ाई के साथ भी अनेक रचनात्मक आंदोलन जोड़ दिये थे। जब कि उनके पास कोई सत्ता नहीं थी, तब भी उन्होंने दीर्घदृष्टि से अनेक काम हमारे सामने रखे, हमसे करवाये। आत्म-शुद्धि का एक सामूहिक प्रयोग ही उन्होंने हमसे करवाया।

"लेकिन अब हमारे कुछ लोग सोचते हैं कि अब तो स्वराज्य आ गया, अब इस कार्यक्रम की क्या जरूरत है, खादी की क्या जरूरत है, ग्रामोद्योगों की क्या जरूरत है? अब तो सभी विद्यालय राष्ट्रीय विद्यालय हैं, अलग से नयी तालीम की क्या जरूरत है? अब तो मिलें बढ़नी चाहिए। अस्पृश्यता-निवारण की तो जरूरत ही नहीं, क्योंकि उसका तो कानून ही बन गया है। सारांश, किसी बात की तीव्रता नहीं रही। जो कुछ कार्यक्रम गांधीजी ने हमें बताया और हमसे करवाया, उसकी या तो अब जरूरत ही नहीं या जरूरत है, तो सरकार उसे कर ही रही है। हमारे लिए करने का कुछ रहता ही नहीं, सिवा इसके कि हम चुनाव लड़ें और सरकार को चुन दें।"

विनोबा के शब्दों में निराशा नहीं थी, परंतु वेदना जरूर थी। यद्यपि प्रकट चिंतन चल रहा था, चिंता भी जाहिर थी। वे किंचित् रुके और पुनः प्रवाह शुरू हुआ:

"मैं चाहता हूँ कि आप लोग गंभीरता से इन समस्याओं पर सोचें। लोकशक्ति से ही सरकार शक्तिशाली बनती है। लेकिन जो लोग सरकार

की शक्ति से शक्तिशाली बनना चाहते हैं, वे उल्टा सोच रहे हैं। वे खुद भी कमजोर बनेंगे और सरकार को भी कमजोर बनायेंगे।

नेता और नौकर

"एक बात और है। आप लोग नेतृत्व के लिए भी सरकार की ओर देखते हैं, यह गलत है। नेता जब सरकार में चला जाता है, तब वह नौकर बन जाता है–नेता नहीं रहता। सरकार में जाते ही आपका 'मँडेट' उस पर लागू होता है, वह आपके हुक्म के बाहर नहीं जा सकता। आपकी इच्छा के विरुद्ध आपसे शराब छोड़ने के लिए नहीं कह सकता। लेकिन जो सरकार में जाता नहीं, बाहर रहकर काम करता है, उस पर कोई पाबंदी नहीं कि लोग शराब-पसंद हैं, तो उनके मन की ही बात हो। वह सुधारक है—नेता है, आपके बीच रहकर काम करता है। आपको अपने साथ आगे-आगे लेता ही जाता है। स्वराज्य के अंदर क्रांति के काम सरकार में जाकर हम नहीं कर सकते, यह रहस्य आपको समझ लेना चाहिए। आक्रमण से आपकी रक्षा करने के लिए वे मिलिटरी बढ़ा सकेंगे। दंगा-फिसाद बंद करने के लिए वे ज्यादा पुलिस रख सकेंगे, लेकिन आक्रमण और दंगा-फिसाद के कारणों को वे दूर नहीं कर सकेंगे; क्योंकि सरकार तो लोकानुयायी होती है। लोगों को आगे ले जाने का, उनमें क्रांतिकारी परिवर्तन करने का प्रयत्न अगर वह करेगी, तो उसे गद्दी से नीचे उतरना होगा।"

अनेक उदाहरण देकर विनोबा ने सरकार की मर्यादित शक्ति का विश्लेषण किया और अंत में कहा :

युवकों का आवाहन

"आप लोगों को—शहरवालों को लगता होगा कि अब स्वराज्य के बाद करने के लिए कुछ रहता नहीं। लेकिन ऐसा नहीं है। मैंने परिस्थिति आपके सामने रख दी है। अब आपको सोचना चाहिए। तेलंगाना का यह क्षेत्र सेवा के लिए बड़ा अच्छा है। सेवक को सेवा के क्षेत्र में अगर खतरों का

मुकाबला करना पड़ता है, तो उसकी सेवा और भी तेजस्वी हो उठती है। ऐसे खतरे के स्थान इस प्रदेश में हैं। इसलिए अगर नौजवान लोग सेवा के लिए आगे आना चाहें, तो उनके लिए स्वर्णसंधि है। कम्युनिस्टों में मैंने देखा कि पढ़े-लिखे नौजवान कितने उत्साह से आगे आते हैं। लेकिन मुझे अपनी दो माह की यात्रा में तो मुश्किल से दस-बारह सेवक मिले हैं। मैं आशा करता हूँ, इसके पहले कि मैं हैदराबाद की सरहद छोड़ूँ, और कुछ नौजवान जरूर मुझे मिलेंगे।"

फिर अपने काम के बारे में भी कहा :

बगावत का झंडा

"जैसा कि आपने अखबारों में पढ़ा, यह सही है कि मैं अपनी ओर से ही यहाँ आया हूँ, किसी संस्था आदि की ओर से नहीं आया हूँ। आप लोगों से मुझे इतना ही कहना है कि जो समस्या तेलंगाना के दो जिलों में है, वह और जगह नहीं है—ऐसा न समझें। जहाँ-जहाँ भी आप विषमता कायम रखेंगे, वहाँ-वहाँ उन दोनों जिलों में जो कुछ हुआ, उसकी पुनरावृत्ति के लिए गुंजाइश देंगे। फिर अगर वहाँ ये कम्युनिस्ट प्रकट न होंगे, तो और कोई प्रकट होंगे। जहाँ चार हजार की बस्ती में आठ-आठ सौ हरिजन भूमिहीन रहते हों, जहाँ गंदी और टूटी-फूटी झोपड़ियों के बीच महल खड़े हों, जहाँ भुखमरी और भिखमंगों के बीच मिष्टान्न भोजन चलता हो, वहाँ उस विषमता के खिलाफ बगावत का झंडा कोई-न-कोई फहराये बगैर नहीं रहेगा।

पुनः नेतृत्व सँभालिये

"मुझे भी पता नहीं था कि कोई रास्ता मुझे तेलंगाना की समस्या हल करने का मिलेगा। पर भगवान् ने रास्ता दिखाया और मेरे शब्दों में शक्ति भर दी। आप लोग देशमुख, जमींदार, सभी यहाँ हैं। आप लोगों ने अब तक अपने लोगों के बीच नेतृत्व किया है। आज आप देखते हैं कि आपके प्रति लोगों के क्या भाव हैं। पर मैं आपसे एक कदम, पहला

कदम, उठवाना चाहता हूँ। आप अपने गरीब भाइयों के लिए जमीन का हिस्सा दीजिये और उनकी सेवा में लग जाइये। भगवान् चाहेगा, तो आपका नेतृत्व पुनः बना रहेगा। आप अपने भाइयों के विश्वास-पात्र बन सकेंगे।

एक एकड़वाला भी जमींदार

"और मैं कह देना चाहता हूँ कि मैं जमींदारों में छोटे-बड़े का भेद नहीं करता, यद्यपि सहूलियत के लिए मुझे वैसी भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। मेरी दृष्टि में तो जिसके पास एक एकड़ भी जमीन है, वह जमींदार ही है। क्योंकि जमीन एक ऐसी चीज है, जिस पर किसी एक का हक नहीं है–सबका है। इसलिए आज तो जिनके पास कुछ भी जमीन है, वे सब एक पक्ष में हैं–'है' वालों के और जिनके पास 'नहीं' है, वे दूसरे पक्ष में हैं—'नहीं' वालों के। मैं इन 'नहीं' वालों के लिए आप सबसे, जो 'है' वाले हैं, माँगने आया हूँ। मैं एक हवा पैदा करना चाहता हूँ। विचार-क्रांति चाहता हूँ। इसलिए आज शाम तक दरिद्रनारायण की थैली आप भर दीजिए और इस संदेश को सबके पास पहुँचाइये।"

इसके बाद एक-एक ने आकर दान देना शुरू किया और करीब साढ़े तीन सौ एकड़ जमीन का दान ऐलान हुआ। ● ● ●

कैसी धर्म-शून्यता   : ५० :

इसमपेठ
५-६-'५१

चौदह मील की मंजिल ! जंगल और पहाड़ का रास्ता ! किंतु न नलगुंडा के जंगलों की तरह छटा हुआ वीरान जंगल और न पहाड़ ही वहाँ की तरह वृक्षहीन ! घना सुन्दर जंगल और वैसे ही घने सुन्दर पहाड़ ! सारा इतना घना कि कहीं-कहीं बिना प्रकाश के रास्ते का दिखाई देना भी असंभव ! अरुणोदय की लालिमा ने लताओं की जालियों में से निखरना शुरू किया है। हर किरण में होड़ हो रही है कि कौन पहले इस अनोखे यात्री के चरण छूता है। सूर्यलोक के उन निवासियों के पास पृथ्वी पर स्वर्ग उतारनेवाले इस जादूगर की कहानी कबकी पहुँच चुकी थी और प्रतिदिन बिना-नागा बड़े सबेरे उसका यात्रापथ आलोकित करके इस महान् यज्ञ में अपना सहयोग देने का काम उन्होंने स्वेच्छा से अपनी ओर ले लिया था। दुःखी, पीड़ित धरती की आर्तता को दूर करके उसके कण-कण को स्वतंत्रता का अनुभव करानेवाले इस वामन के चरण-युगल उन्हें इसलिए भी प्यारे थे कि वे ही इस अनोखी क्रांति के वाहक थे, आधारस्तंभ थे। बिना उनकी सहायता के विनोबा के द्वारा लोकमानस को इस नये धर्म की दीक्षा भी कैसे मिल पाती ?

वातावरण की उस नयनमनोहरता में पास के एक सरोवर ने तो चार चाँद ही लगा दिये। वहीं एक शिला पर बैठकर सबेरे का कलेवा करके विनोबा ने उस समानधर्मी साम्ययोगी सरोवर का उचित गौरव भी कर लिया।

प्रकृति का वह ऐश्वर्य कम्युनिस्ट मित्रों का स्मरण दिलाये बगैर कैसे

रहता ? कारण ऐसे ही स्थान हैं, जहाँ हमारे ये भाई अपने को सुरक्षित पाते हैं, शेरों और अन्य हिंस्र पशुओं के बावजूद ! करीमनगर जिले को उन्होंने विशेष छूआ नहीं था। परंतु यहाँ भी आठ-दस आदमियों की एक टोली है, जिसने इर्द-गिर्द की जनता को त्राहि-त्राहि कर रखा है और उस टोली का संपर्क कम्युनिस्टों के साथ है। पुलिस ने उन सबको गिरफ्तार किया है, पर अब भी दो फरार हैं।

हैदराबाद से चलते समय सरकार ने चाहा था कि सुरक्षितता की दृष्टि से कुछ हथियारबंद पुलिस साथ रहें, तो अच्छा। लेकिन विनोबा ने ऐसे किसी प्रकार के प्रबंध के लिए साफ इनकार कर दिया था। इसलिए पिछले दोनों जिलों में भी रक्षकों का जो दर्शन नहीं दिखाई दिया, वह यहाँ उपस्थित देखकर आश्चर्य हुआ। जंगलों में दोनों ओर तथा आगे और पीछे हथियारबंद पुलिस चल रही थी। अर्थात् ही इतने फासले पर कि विनोबा का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट न होने पाये। अब जैसे ही उजियाला होने लगा, वे लोग एक-एक करके पीछे खिसकने लगे। मालूम हुआ कि यहाँ कम्युनिस्टों का, डाकुओं का और हिंस्र पशुओं का, ऐसा त्रिविध भय होने के कारण विनोबा की पूर्व-इजाजत के बिना ही और उनकी नाराजी की जोखिम उठाकर भी इस आज की ही मंजिल-भर के लिए यह खास प्रबंध किया गया था और वह भी मात्र सबेरा होने तक के लिए।

पहाड़ से मैदान में उतरे, तो ६ बज गये थे। सिवा छिटपुट पेड़ों और पौधों के कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। थोड़ी दूरी पर झाड़ियों में कुछ झोपड़ियाँ दिखाई दीं। मालूम हुआ कि यही पड़ाव का स्थान है। अगवानी में लोग आज तक के किसी भी पड़ाव से कम आये थे। पर जितने भी आये, मानो अपनी सारी हार्दिकता और भक्ति-भावना को आँखों की अँजली में भर लाये थे। वे फूल, वे पत्ते और वह दीपक, श्रीफल आदि तो प्रतीक मात्र थे।

डाकुओं की पिपासा

ग्राम-प्रदक्षिणा ने सारा रहस्य खोल दिया। २८ मार्च की याने बिलकुल ताजी घटना बतायी गयी कि नौ आदमी आये, सिवैया के मकान को घेरा, बंदूक की आवाज की, तो सिवैया जो मकान पर सो रहा था, पास के पोट्टयाल नामक गाँव में भग गया। स्त्री-बच्चों ने जंगल की शरण ली। भोजैय्या पर गोली चलायी, तो कुएँ में कूदकर उसने अपनी प्राण-रक्षा की। मल्लैय्या के घर को घेर लिया गया। उसे बाँध डाला, बहुत पीटा, उससे रुपयों की माँग की और वे वसूल भी किये। कुल बीस मकान जला दिये गये, जिनमें मजदूरों के ग्यारह थे। चालीस हजार के करीब नुकसान हुआ। मूँगफली, चना, जवारी, सारा भस्म कर दिया गया। अवशेष आज भी गवाह दे रहे हैं। साढ़े पाँच बजे शाम से साढ़े तीन बजे सबेरे तक में सारा काम तमाम हुआ। एक व्यक्ति को प्राणों से भी हाथ धोना पड़ा।

यह सब क्रोध क्या इसी गाँव पर बरसा ? तो मालूम हुआ कि आस-पास के भी कुछ गाँवों को इस पिपासा का शिकार होना पड़ा। जिस दिन ऊपर की घटना हुई, उसी रात को नजदीक के और दो गाँवों को भी ऐसा ही सब भुगतना पड़ा। पास के एक पोट्टनूर गाँव में तो ६०-७० हजार का नुकसान किया गया। यहाँ एक कारण यह भी था कि एक बार इन डाकुओं की गिरफ्तारी हुई और मुकदमा चला, तो गाँववालों ने गवाह देने का जुर्म किया था।

इतना दुःख बरसा था। आधे से अधिक लोग गाँव में नहीं थे। किसीका आतिथ्य करने या किसीके सामने अपना दुखड़ा रोने का भी अर्थ था, उसकी सजा पाने के लिए तैयार रहना। ऐसी सारी भीषण परिस्थिति में भी भारतीयता यहाँ अपने सारे वैभव और वैशिष्ट्य के साथ उपस्थित थी। हर मकान सुन्दर लिपा-पुता था। दीवारों पर तरह-तरह की चित्रकारी की थी—रास्ते और आँगन सारे छिड़कावा देकर

स्वच्छ किये गये थे। अपनी आत्यंतिक पीड़ा को भूलकर भी ग्रामवासियों ने सारा वातावरण मंगलमय बनाने की कोशिश की थी।

गाँव में प्रवेश हुआ, तब से रात के दस बजे तक दरखास्तें जारी रहीं और शेष के लिए किसी भाई को पीछे छोड़ जाने का प्रबन्ध करना पड़ा।

इतना दुःख जहाँ हो, वहाँ सांत्वना और मार्गदर्शन के सिवा और क्या हो सकता था। लेकिन वहाँ भी विनोबाजी ने भू-दान माँगा और पाया भी।

गलत तरीका

प्रार्थना के समय तक इर्द-गिर्द देहातों से अनेक लोग जमते गये। आज प्रार्थना में भी मानो करुण रस बार-बार उमड़ आ रहा था। शुरू में विनोबाजी ने गाँव की परिस्थिति के बारे में सहानुभूति के उद्‌गार प्रकट किये। फिर कम्युनिस्टों के बारे में कहा :

"आज भी उन लोगों को मैं समझाना चाहता हूँ कि जो तरीका उन्होंने अख्तियार किया है, वह बिलकुल गलत है। इस तरह खून-खराबी और लोगों को तकलीफ देने से वे गरीबों की सेवा न कर सकेंगे। यह तो मैं इसलिए कहता हूँ कि वे दावा करते हैं कि हम गरीबों की सेवा करना चाहते हैं। दो-तीन साल हुए, यहाँ उन्होंने खून खराबियाँ कीं; लेकिन गरीबों की कुछ सेवा नहीं कर पाये। बल्कि सारे लोग उनसे तंग आये हैं और उनको भी पहाड़ों में छिपे रहना पड़ता है।"

जिस टोली ने इस गाँव में आतंक छाया था, उसके बारे में विनोबा ने कहा : "यह जो ८-१० लोगों की टोली घूम रही है, उनके कानों तक हमारी यह बात पहुँचे, तो हम उनसे कहना चाहते हैं कि यह उनका मार्ग गलत है, वे इसे छोड़ दें। अगर वे किसी तरह हमें मिलते, तो हम उनको यह बात जरूर समझा देते। हम तो उनके साथ प्रेम का संबंध रखते हैं और दूसरों के साथ भी प्रेम का संबंध रखते हैं। क्योंकि हम महसूस करते हैं कि वे गुमराह हुए हैं, उन्होंने गलत रास्ता पकड़ा है, फिर भी वे हमारे ही हैं।"

सह वीर्यं करवावहै

फिर ग्रामवासियों को शस्त्रों का आधार छोड़कर निर्भय बनने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा :

"आखिर यह भी सोचना चाहिए कि डर किस बात का है ? मरने का डर ? अगर गाँव में कोई पिस्तौल लेकर आता है और सारे लोग डरते हैं, तो यह भयानक वस्तु है। लोगों को आपस-आपस में सहकार करना चाहिए। अगर सारे लोग मौके पर इकट्ठे होते हैं, तो गाँव को बचा सकते हैं। इस गाँव में कुछ नहीं, तो भी २०० लोग हैं। अगर वे हिम्मत रखते और एक-दूसरे को हिम्मत देते, तो जो कुछ दुर्घटना हुई, वह न हो पाती। मैं यह भी जानता हूँ कि ये जो लोग घूमते हैं, वे आप लोगों के घर में ही कभी-कभी आकर रहते हैं। क्योंकि अगर कोई घर उनके लिए नहीं है, तो वे टिक कहाँ सकते हैं ? वे गाँव में आते हैं, तो डर के मारे लोग उनको घर में रखते हैं। इस तरह लोग डरपोक बनते हैं, तो उनको ये लोग और भी डराते हैं। मैंने तो यह भी सुना कि एक गाँव में एक कम्युनिस्ट आया, तो उसको देखने के लिए लोग भी आये थे। उसने उन लोगों के सामने एक मनुष्य को मार डाला। वह दृश्य सारे लोग भयभीत होकर देखते ही रहे। अगर उस वक्त सभी लोग उस पर एकदम हमला करते, तो वह १-२ लोगों को मारता, लेकिन आखिर पकड़ा ही जाता। हमारे सामने एक निर्दोष मनुष्य की हत्या होती है और हम डरपोक होकर देखते रहते हैं, यह तो बिल्कुल धर्मशून्यता है। ऐसे मौके पर तो अपनी जान खतरे में डालकर भी उसको बचाना हमारा कर्तव्य है। अगर हम प्राण के लिए डरते हैं, तो वह तो जाता ही है, टिकता नहीं है। तो, इस वास्ते आप लोग डर छोड़ें और कोई प्रसंग आयेगा, तो निडर होकर सामना करना सीखें।"

● ● ●

रुक्मिणी की भक्ति चाहिए : ५१ :

सेवाश्रम : मंचेरिश्राल
६-६-'५१

करीमनगर जिला आज खतम हो रहा है, आदिलाबाद में प्रवेश हो रहा है। वर्धा से आते हुए भी प्रवेश आदिलाबाद में से ही हुआ था, अब लौटते समय भी आदिलाबाद की ही सीमा में से गुजरना है। जिले के विस्तार की कल्पना इससे आ सकती है।

आज की यात्रा में शुरू में जंगल था, फिर दुतर्फा पहाड़ी, फिर दोनों तरफ खूब घने पेड़ और अंत में गोदावरी का सात फर्लांग विस्तृत पात्र। किनारे पर बड़ी-बड़ी चट्टानें और खूब बालू—बीचोबीच आर्षवाणी की तरह नित्यनूतनता का संदेशवाहक सरिता-नीर। दाहिनी श्रोर लंबा-चौड़ा रेलवे का पुल। दो वर्ष पहले जब दक्षिण-भारत की यात्रा करके विनोबाजी सेवाश्रम की स्थापना के लिए यहाँ आये थे, इसी पुल से गाड़ी गुजरी थी। विनोबाजी के डिब्बे में दक्षिण-भारत के लोगों द्वारा अत्यंत भक्तिभाव से भेंट किये गये अनेक सुन्दर मानपत्र और अन्य सभी उपहार रखे हुए थे। पुल के बीचोबीच गाड़ी आयी और विनोबा ने वे सारे मानपत्र तथा अन्य महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ, जो एक साथ रखी हुई थीं, गोदा-माता को समर्पित कर दीं। साथ में श्री अच्युत भाई थे, पर वे देखते ही रह गये। विनोबा के लिए यह कोई नयी घटना नहीं थी। बहुत पहले ही वे अग्निनारायण को अपने प्रमाण-पत्र समर्पित कर चुके थे और गंगामाई की गोद में अपनी कितनी ही कलाकृतियाँ बहा चुके थे। साथियों को भी संग्रह की हवा न लग जाय, इसलिए अपने बस का सब कुछ करने का अनुग्रह ही था वह कि वे मान-पत्र आदि सारी चीजें

नदी को भेंट कर दी गयी थीं। वे चीजें राष्ट्र की संपत्ति थीं। दक्षिण-भारत की भावना की वह अनमोल निधि थी। इस तरह उसको नष्ट न करना चाहिए था, ऐसा आज भी लोग कहते हैं। परंतु समर्पण के लिए अनमोल निधि ही विनोबा योग्य समझते हैं।

करीमनगर जिले के लोगों ने विनोबा को प्रणाम किया; विनोबाजी ने उन्हें बिदा दी और किनारे से ही लौट जाने का आदेश दिया। मंचेरिआल के कुछ लोग इधर आ ही पहुँचे थे—अगवानी के लिए वर्धा से श्री वल्लभस्वामी तथा श्री राधाकृष्णजी बजाज भी आये थे। काफिला नदी को पार किये बढ़ता गया। सामने उस पार आगमन का उत्साह था और पीछे इस पार थी बिछोह की कष्टानुभूति। साथ में दोनों जिले के भक्तजन थे। नदी के पात्र में दोनों ऐसे लगते थे कि मानो अपनी दोनों गोद में माता ने बालकों को उठा लिया हो।

किनारे पहुँचते-पहुँचते बूँदें बरसने लगीं। तेलंगाना की सफल यात्रा के उपलक्ष्य में मानो आकाश से वृष्टि ही हो रही थी। शंखभेरियाँ बजने लगीं। अन्य अनेक वाद्य बारी-बारी से अपना-अपना स्वर पूरी सहृदयता से सुनाने लगे। पताकाएँ ऊँची-ऊँची फहराने लगीं। जयजयकार की दुंदुभि से सारा वातावरण गूँज उठा। भगीरथ के दर्शनों के लिए जनता उमड़ पड़ी।

भिखारियों से आश्रम नहीं चलते

आश्रम में ऋषियों की परंपरा के अनुकूल स्वागत-समारोह संपन्न हुआ, स्वामी सीताराम शास्त्री जो उपस्थित थे। आश्रम की स्थापना के समय से आश्रम के साथ उनका संपर्क और सहयोग रहा है। चंद युवक हैं, जिन्होंने आश्रम को अपना जीवन अर्पण कर दिया है। एक ट्रस्टी मंडल है, जो आश्रम के संचालन में सहायता करता है। ट्रस्टियों को शिकायत है कि आश्रम का काम संतोषजनक नहीं चल रहा है, क्योंकि आश्रम में लोग बहुत कम हैं। चहल-पहल नजर नहीं आती। एक भाई

ने तो यहाँ तक सुझा दिया कि मंचेरिआल में भिखारी लोग बहुत ज्यादा प्रमाण में हैं, उनमें से कुछ चुने हुए लोगों को आश्रम में क्यों न लिया जाय ?

ट्रस्टी महोदय का विचार सुनकर विनोबा को आश्चर्य हुआ। संचालकों के विचार की सफाई होना आवश्यक था, इसलिए उन्होंने कहा :

"भिखारियों से आश्रम नहीं चला करते। आश्रम का काम संतोषजनक ढंग से तो तब चलेगा, जब आप अपने बच्चों को यहाँ भेजेंगे। वर्धा में हमने आश्रम की स्थापना की, तो जमनालालजी ने अपने लड़के-लड़कियों को वहाँ दाखिल कराया। यह राधाकृष्ण भी वहाँ था। आठ-आठ घंटे इन लोगों ने शरीर-परिश्रम का काम किया। आज राधाकृष्ण ग्रामसेवा-मंडल जैसी संस्था का संचालक है। यह मैंने दृष्टांत के तौर पर बताया। भिखारियों को भेजना हो, तो मेरे साथ भेज दो। मैं घूमता रहता हूँ, वे भी मेरे साथ घूमेंगे। आश्रम को तो स्वावलम्बी बनाना है। कांचन-मुक्ति का प्रयोग यहाँ करना है। क्या ऐसे प्रयोग भिखारियों से हुआ करते हैं ?"

आश्रमों के लिए दो पर्याय

विनोबा ने आश्रमवासियों से कहा : 'निपाणी' रहकर यहाँ का कोई काम नहीं होगा। पानी के लिए पवनार की तरह कुँआ खुदना चाहिए। विनोबा ने आश्रमवालों के सामने दो पर्याय रखे—"एक तो शरीर-परिश्रम द्वारा आश्रम में कांचनमुक्त स्वावलंबी जीवन का दर्शन प्रकट करना या फिर गाँव को सेवा की इकाई मानकर पाठशाला, दवाखाना, ग्राम-सफाई वगैरह कार्यक्रम अपनाना। दूसरे प्रकार में सरकारी मदद भी ली जा सकती है, परंतु पहला प्रकार स्वावलंबन का है, जैसे परंधाम आश्रम का है। वित्तच्छेद करने की हिम्मत हो, तो यह प्रयोग कर देखो। परिश्रम की आदत अभी जैसी चाहिए, वैसी नहीं है। परंतु अगर आप लोग आज आधा

घंटा परिश्रम करते हैं, तो कल से रोजाना एक मिनट भी बढ़ायें, तो एक वर्ष के भीतर-भीतर किसी भी किसान की बराबरी से काम कर सकेंगे।"

आश्रमवासियों को शुरू से ही कांचन-मोचनी की उपासना का आकर्षण था। **'एक साधे सब सधे'** ऐसी उनकी निष्ठा थी। इसलिए वही कार्यक्रम उन्होंने अपनाया।

दादीजी

सबेरे से इतनी देर चुपचाप बैठी मदालसा बहन ने सजल नेत्रों से प्रणाम किया। वे वर्धा से लौट आयी थीं। दादीजी अब नहीं रहीं। मदालसा बहन के पहुँचने के बाद दूसरे ही रोज वैशाखी एकादशी को सायंकाल चार बजे उनका देहावसान हुआ था। ठीक नौ वर्ष पहले इसी बेला में और एकादशी के दिन ही उन्होंने अपने प्यारे पुत्र जमनालालजी को बिदा किया था।

जमनालालजी अक्सर कहते, अगर मुझमें कोई धार्मिकता, दयाभाव, सौजन्य, उदारता और स्नेहभाव है, तो वह सब मेरी माँ की देन है। रोज सबेरे वे तीन बजे उठकर माँ के पास बैठ जाते। वह तपस्विनी उन्हें रोज अच्छे-अच्छे भजन सुनातीं। मृत्यु के पहले-पहले तक वे कातती रहीं। वस्त्रपूर्णा की तरह उनके सूत का कपड़ा तैयार होता। जिस दिन गयीं, उस दिन भी नियम से प्रार्थना-भजन तो किया ही था।

एक गुजराती कवि ने लिखा है :

जननी जण तो भक्त जण का दाता का शूर।
नहि तो रह जै बांझणी माँ गुमाविश नूर॥

श्री किशोरलाल भाई ने ठीक ही लिखा है कि श्री जमनालालजी जैसे भक्त, दाता और शूर, तीनों गुणों को धारण करनेवाले पुत्र को जन्म देकर दादीजी ने उपर्युक्त आदर्श सार्थक किया है।

मदालसा बहन से दादीजी की मृत्यु का सारा हाल सुनकर विनोबा

मौन-समाधि में लीन हो गये। दादीजी को भारतीय आत्मा की वह मौन श्रद्धांजलि ही थी।

तेलंगाना से बिदाई

सभा के लिए शहर में जाना था। आयोजन बिदाई की सभा का ही था, यद्यपि प्रत्यक्ष बिदाई में अभी देरी थी, क्योंकि अभी दो-चार पड़ाव और भी इस जिले में बाकी थे। समारोह का आयोजन पूरे उत्साह से किया गया था। लक्ष्मी बहन का हृदय आज न मालूम कैसी और कितनी भावनाओं से ओत-प्रोत था। उनसे कुछ कहते ही नहीं बनता था। विनोबा के पास आकर बैठीं, तो विनोबा ने स्नेहपूर्ण भाव से पूछा: "कहो लक्ष्मी बहन, क्या कहना चाहती हो?"

"आपको हमारी प्रार्थना माननी होगी।"—लक्ष्मी बहन ने बड़ी मुश्किल से जवाब दिया।

"क्या है प्रार्थना?"

"आज तुला-दान का प्रबंध है। तुला में आपको बैठना होगा।"

लक्ष्मी बहन की भावना तो विनोबा समझ सकते थे। परंतु ऐसे अनेक प्रलोभनों को वे अब तक कई बार सफलतापूर्वक इनकार कर चुके थे। उनका खयाल था कि लक्ष्मी बहन को समझाना कठिन न होगा, क्योंकि अत्यधिक भावुक होने पर भी वह विवेकी भी है। परंतु लक्ष्मी बहन का बालहठ बना रहा। विनोबा की इनकारी के बावजूद वे यह आशा लेकर सभा-स्थान पर गयीं कि उन्हें किसी-न-किसी तरह मनवा लेंगे।

सभा-स्थान पर पहुँचते ही विशाल जनसमुदाय ने उत्थानपूर्वक समादर किया। बिदाई की भावना और विजयोत्सव के संकेतों से सारा वातावरण अभिभूत नजर आया। मंच को न जाने कितने भिन्न-भिन्न तरीके से सजाया गया था। लक्ष्मी बहन की कला-निपुणता ने साधनों के अभाव में भी बड़ा सुसंस्कृत और सुन्दर दर्शन उपस्थित किया था। पूरा मंच कदली-स्तंभों और आम्र-पल्लवों से सुशोभित था। सामने मिट्टी के

और ताम्र, लोह आदि विविध धातुओं के कलश, फिर जगमगाती दीवटें और ऊपर शीशे की छत में इन सबका प्रतिबिंब। चारों ओर विविध रंग की गूँथी और जुड़ी हुई सूत की लच्छियाँ भी ऐसी मनोहर प्रतीत हो रही थीं, मानो 'ॐ' तत्त्व में विश्व-हृदय ही पिरोकर रखा गया हो।

विनोबा ने जैसे ही मंच पर आसन ग्रहण किया और जनता को अपने युगल हाथों से वंदन करना चाहा कि ठीक उसी समय ऊपर से फूलों की वर्षा हुई और सामने लोगों ने पुनः एक बार करतल-ध्वनि से अपने नेता का अभिवादन किया। 'महात्मा गांधी की जय' से वातावरण गूँज उठा। वास्तव में यह गांधी की और गांधी के विचार की ही जय थी, जिसे न सिर्फ राष्ट्र की जनता, किंतु स्वयं राष्ट्रपिता भी अपने अव्यक्त व्यक्तित्व से निहार रहे थे।

इसके पहले कि विनोबाजी उपस्थित जनता से कुछ कहते, कुछ समारोह होना बाकी था। स्वामी सीताराम ने वेद-मंत्रों का पाठ किया। चंदन, तिलक, माला, आरती आदि के बाद शुरू में मितभाषी, मधुर-स्वभाव, धीरगंभीर, निष्ठावान् कोदंड रेड्डी बोलने के लिए खड़े हुए। उन्होंने अब तक की प्राप्त भूमि के अंक बताये। रोज यही काम उनके जिम्मे था। लोगों की दरखास्तें सुनने तथा उनके बारे में विनोबाजी का निर्णय प्राप्त करने में उन्होंने बहुत बड़ा योग दिया था। हैदराबाद के भूदान-कार्य का भावी आधार उनके व्यक्तित्व में प्रकट होता था। बैठने से वे पहले कुछ बोलना चाहते थे। मन बिछोह की भावनाओं के कारण कुछ भारी था। कितना बड़ा काम हो गया। काम तो हुआ ही, पर सत्संग कितना हुआ। यह सारा ईश्वरीय अनुग्रह था। कृतज्ञता के भावों से कोदंड रेड्डी का हृदय ओतप्रोत था। आखिर वाणी के बजाय नेत्रों ने ही मदद दी। कोदंड रेड्डी ने प्रणाम किया और आसन ग्रहण किया।

फिर श्री केशवरावजी उठे। गत सात सप्ताह से पदयात्रा के कारण

केशवरावजी ने अपने घर-बार या अन्य सार्वजनिक काम से मुक्ति-सी ही पा रखी थी। भूमि प्राप्त करने, यात्रा का संयोजन करने, कार्यकर्ताओं को जुटाने आदि का अनेकविध काम उन्होंने किया था। सबसे विशेष बात यह थी कि प्रायः रोज घूमते वक्त वे पोतना के भागवत से उत्तमोत्तम काव्य विनोबा को सुनाते रहते थे। न जाने उन्हें कहाँ से इतना सारा याद हो आता था। विनोबाजी की पदयात्रा के कारण वातावरण और व्यक्तियों में जो परिवर्तन हुआ, उसके वे साक्षी थे। इसके पहले के रजाकारों तथा कम्युनिस्टों के आन्दोलनों को भी वे देख चुके थे। निराशा से आशा और तिमिर में से ज्योति की ओर ले जानेवाले इस भूदान-आंदोलन और उसके प्रणेता के प्रति श्रद्धा-भक्ति समर्पण करके तथा भविष्य में भी इसी काम को करने की प्रतिज्ञा जाहिर करके प्रणामसहित उन्होंने भी अपना वक्तव्य समाप्त किया।

अब श्री लक्ष्मी बहन की बारी थी। विनोबा के सामने बालिका की तरह उनका हृदय अभिभूत हो उठता था। यात्रा में उन्होंने संत की और उनके सहयात्रियों की सेवा तथा चिंता में कोई कसर नहीं रखी थी। पड़ाव पर पहुँचने तक वे आगे-आगे रास्ते के गाँवों को जगाती हुई चलतीं कि कहीं संत के दर्शनों से लोग वंचित न रह जायँ। पड़ाव पर पहुँचते ही पाकशाला में पहुँचकर अन्नपूर्णा की तरह सबके खाने-पीने का समुचित प्रबंध करतीं। सभी प्रकार की सभाओं और मुलाकातों में स्वयं उपस्थित रहकर जब भी आवश्यकता हो, अनुवाद का काम अत्यंत नम्रता से एक विद्यार्थी की तरह किये जातीं, सीखने की दृष्टि से सब करतीं। वे जगह-जगह बहनों की सभाओं का संयोजन करतीं, उनमें खुद अव्यक्त रहकर सहयात्रियों के व्याख्यानों का आयोजन करतीं। रात को दस-ग्यारह भी बज जाते, परंतु जब तक सब खा न लें, खुद न खातीं। सबेरे निकलने के पहले भी माँ की तरह सबकी चिंता करतीं, सोनेवालों को प्यार-दुलार से जगातीं, किसीको चूड़ा-चबेने का, तो किसीको

दूध-दही का कलेवा कराकर निकलतीं या फिर सौगात साथ ले चलतीं। फिर वह बीच-बीच में उत्तर-रामचरित या शाकुंतल आदि में से कोई श्लोक या श्लोकार्ध के निमित्त कुछ प्रश्न विनोबा से पूछ लेतीं, जिसके उत्तर से सभी को श्रवण-भक्ति का लाभ मिलता। विनोबा के बालजीवन की एक-एक बात उन्होंने विनोबा के मुख से बड़ी चतुराई से और भक्तिभाव से सुनी। वे अपने को धन्य समझतीं कि ऐसे महापुरुष का सत्संग पाया। अब तक की सारी आकांक्षाएँ पूरी करने के लिए ही मानो उन्होंने आज तुला का संयोजन किया था और विनोबाजी को आज वे तुला में बैठा देखना चाहती ही थीं। लेकिन दोपहर की चर्चा के बाद हिम्मत न हुई कि फिर से खुद प्रस्ताव करें। इसलिए वह काम तो उन्होंने स्वामी सीताराम पर सौंपा। यात्रीदल के हर व्यक्ति के बारे में अपने प्रेमोद्गार प्रकट करके जिनके कारण यह सब संभव हुआ, उनके चरणों में भी कुछ निवेदन करना चाहती थीं। लेकिन तब उनकी सारी भक्ति-गंगा इतनी उमड़ आयी कि केवल चरण छूकर उन्हें बैठ जाना पड़ा। फिर श्री महादेवी ताई ने भी सभी सहयात्रियों की ओर से हैदराबादवालों को हार्दिक धन्यवाद दिये। उनके थोड़े शब्दों में भी सबके हृदय के उद्गार ठीक प्रतिध्वनित हो रहे थे।

तुलादान का आग्रह

अब स्वामी सीताराम उठे। उन्होंने विनोबा से प्रार्थना की कि तुला में बैठने की कृपा करें। उन्होंने अपनी सारी बुद्धि-शक्ति से समझाने की कोशिश की। धर्मग्रंथों के आधार दिये। कृष्ण का दृष्टांत दिया और प्रार्थना की कि तुलादान स्वीकार हो। स्वामीजी के निवेदन पर विनोबा मंच के सामने आये। तालियाँ गूँज उठीं। लोगों ने समझा कि अब जरूर तुला में बैठेंगे। तुला के एक पलड़े में सूत की जो विशाल राशि थी, वह भी लोगों को इस समय विशेष रूप से सुशोभित दिखाई देने लगी। लक्ष्मी बहन ने तुला सँभाली। अब विनोबाजी उसमें बैठेंगे, इस

आशा से सभी उनकी ओर एकाग्र देखने लगे। विनोबा ने मंच के सामने आकर बोलना शुरू किया :

अनुसरण चरित्र का नहीं, भक्ति का !

"स्वामी सीताराम ने मुझे आप लोगों की ओर से तुला में बैठने के लिए कहा है। आप सबके प्रेम का मैं किन शब्दों में वर्णन करूँ ? मैं उसे अनुभव कर रहा हूँ। स्वामी सीताराम ने कृष्ण भगवान् का जिक्र किया कि उन्होंने भी अपनी तुला करवायी थी।......लेकिन रुक्मिणी देवी ने तो एक तुलसी-दल......" भावनाओं का वेग इतना अधिक हुआ कि विनोबा फिर आगे न बोल सके। कंठ रुँध गया, आँखों से सरिता बह निकली। उसी भावावस्था में विनोबा कितनी ही देर खड़े रहे। सारी जनता भी उस पावन भाव-स्पर्श से पुनीत स्पंदित हो उठी। वह उनको उसी गंभीरता से एकाग्र मन से निहारती रही। सारा वातावरण एक अभूतपूर्व भक्तिरस से ओतप्रोत हो उठा! कितनी ही देर बाद फिर, जब बोलने का बल अनुभव किया, तो पुनः उस प्रशांत गंभीर वातावरण में उनकी वाणी प्रस्फुटित होने लगी :......"हमें भगवान् के चरित्र का अनुसरण करना न चाहिए। हमें तो रुक्मिणी की भक्ति का अनुसरण करना चाहिए। फिर यह देह तो नष्ट ही होनेवाली है। जो चीज जानेवाली है, उसको महत्त्व देना ठीक नहीं......।"

उपस्थित जनों की भावनाओं का वर्णन करना कठिन है। सभी के नयनों में भक्ति-गंगा साकार हो उठी। सूत की तुला न होकर भी हो ही गयी। सारा सूत विनोबाजी को अर्पण किया गया। प्रार्थना हुई। प्रार्थनोत्तर भाषण में विनोबा ने तेलंगाना की जनता को, दाताओं को, सरकार को, सभी को धन्यवाद दिये। कार्यकर्ताओं के लिए खास तौर से कहा :

"आपको मैं धन्यवाद तो क्या दूँ ? आशीर्वाद देता हूँ कि खूब काम करो। जैसा प्रेम हम पर किया है, वैसा सब पर करो।"

एक और जबर्दस्त वार

दिनभर के इस मुद-मंगलमय और उत्साह-भरे प्रेरक समारोह को शाम को आयी एक खबर ने मानो विषाक्त कर दिया।

सोने से पहले खबर मिली कि नलगुंडा के जिस सज्जन ने भू-दान में सौ एकड़ भूमि दी थी और जो अब तक अपने गाँव नहीं जा पाया था, विनोबा के भाषण से प्रेरणा पाकर अपने लड़के को साथ लेकर अपने गाँव गया था। कम्युनिस्टों ने उस लड़के को इसलिए मार डाला कि उसने अब तक उनका साथ देने से इनकार किया और अब भी साथ देना नहीं चाहता था।

विनोबा को इस खबर से बहुत ही दुःख हुआ। ऐसे कई घाव उन्होंने इस यात्रा में अब तक अनुभव किये थे। तेलंगाना-यात्रा की समाप्ति पर यह खबर मानो एक और जबर्दस्त वार ही था, जो कम्युनिस्टों ने अपने कार्य पर अपने हाथों कर लिया था। ● ● ●

अहिंसा को ट्रायल दीजिये : ५२ :

मंचेरियल
७,८-६-'५१

नया रूप—नयी प्रेरणा

आज मृग नक्षत्र का महान् पर्व !

सारे देश के लिए अनेक आशाओं तथा आकांक्षाओं का क्षण !

सदा-सर्वदा केवल ईश्वरीय अनुग्रह पर अवलंबित रहनेवाले किसान के लिए तो सुतराम् अद्वितीय महान् पर्व है।

और उनके लिए, जो आज तक भूमाता की सेवा तो करते रहे, किंतु जिन्हें अपनी कहने के लिए एक इंच भी भूमि नहीं—भूमि के एक कण पर भी जिनका प्यार या सेवा का स्वामित्व नहीं—उनके लिए भी ! उनके लिए तो एक नये युग का संदेश—प्रकाश की एक नयी ज्योति है। उनके उजड़े खँडहरों को हरा-भरा करने का एक नया आश्वासन है। उनके दिलों में दीपावली की आकांक्षा जगानेवाला पावन क्षण है !

सात जून !

पैंतीस वर्ष पहले इसी समय भारत की एक महान् तपोभूमि गुर्जर-प्रदेश में प्रेम और करुणा का संगम हुआ था।

मछंदर और गोरख की भेट हुई थी।

बापू और विनोबा की प्रथम मुलाकात हुई थी।

बापू के उस उत्तराधिकारी को पता भी न था कि पैंतीस वर्ष बाद मुझे बापू के अपूर्ण काम को लेकर, अहिंसा का संदेश गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचाना होगा और उसके लिए भूदान की गंगा का अवतरण भी होगा।

बापू के महानिर्वाण के तीन वर्ष बाद, जब कि चारों ओर अँधेरा छाया-सा दीखता था, इस देश में वामनावतार का चमत्कार हुआ।

तीन वर्ष तीन घटिकाओं की तरह प्रतीत होने लगे हैं। नया रूप और नयी प्रेरणा लेकर मानो बापू ही पुनः हमारे बीच अवतरित हुए हैं।

भाषावार प्रांत-रचना

प्रातःकाल नित्य की भाँति आज विनोबाजी घूमने नहीं निकले। आज ६ बजे से हैदराबाद के कार्यकर्ताओं के प्रथम भूदान-सम्मेलन का आयोजन था। सात-साढ़े सात बजा होगा। विनोबा की गंभीर मुद्रा पर गहरा चिंतन प्रकट हो रहा था। चारपाई पर विनोबा विश्राम करते-से दिखाई दे रहे थे, परंतु हृदय में पैंतीस वर्ष पूर्व की पावन स्मृतियाँ जाग उठी हों, तो आश्चर्य नहीं।

इतने में स्वामी सीताराम आये। उन्हें वक्त दिया गया था।

आज उन्हींकी अध्यक्षता में सम्मेलन होनेवाला था।

पर इस समय तो वे कुछ महत्त्व की बातचीत करने आये थे। बापू की अनुपस्थिति में बापू के उत्तराधिकारी से सलाह-मशविरा करने आये थे। स्वतंत्र आंध्र-प्रांत के निर्माण के प्रश्न पर प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के साथ उनका पत्र-व्यवहार शुरू था। विनोबा को वे पत्र दिखाने और उनसे परामर्श करने आये थे।

यदि एक निश्चित तिथि तक आंध्र-प्रांत का निर्माण न हो सका, तो आमरण अनशन की बात उन पत्रों में थी। सरहदी जिलों के बारे में 'प्लेबिसीट' का सुझाव था। प्रांत न बनने की सूरत में, संस्कृति और भाषा को पहुँचनेवाले नुकसान की दलीलें थीं। स्वामीजी चाहते थे कि अपने इस आयोजन में विनोबा का आशीर्वाद और सहयोग प्राप्त हो।

किसी गहराई में से वृत्तियों को हठात् बाहर लाने का प्रयत्न करके विनोबा ने बोलना शुरू किया :

"दिल्लीवालों की भूमिका भी हमें समझनी चाहिए। मैं नहीं मानता कि वे स्वतंत्र आंध्र-प्रांत करने के बारे में उदासीन हैं या स्वतंत्र प्रांत नहीं चाहते। परंतु उनकी भी दिक्कतें हो सकती हैं। आंध्र का निर्णय हुआ,

तो फिर कर्नाटक का भी होना चाहिए। कर्नाटक आज पाँच हिस्सों में विभाजित है, इसलिए उसकी कोई बात बन नहीं पाती। इस तरह दिल्लीवालों की दिक्कत बढ़ती जाती और नये-नये मसले पेश होते जाते हैं। इसलिए वे कहते हैं, ठहर जाओ; नहीं तो हमारे देश में पाकिस्तानी मनोवृत्ति निर्माण होगी। दिल्लीवालों के सामने दूसरे मसले भी हैं। कम्युनिस्टों का सवाल है, कश्मीर का सवाल है, पाकिस्तान का सवाल है। मैं खुद भाषावार प्रांत-रचना के पक्ष में हूँ, क्योंकि मैं मानता हूँ कि जनता का कारोबार जनता की भाषा में चलना चाहिए। परंतु जब हम कोई कदम उठाते हैं, तो देश की परिस्थिति और शासकों की दिक्कत, सबका खयाल करना जरूरी है।"

फिर उपवास के बारे में चर्चा हुई :

उपवास का अनौचित्य

"अब आपने उपवास करने की बात अपने पत्र में लिखी है। उपवास के लिए सबकी सहानुभूति होनी चाहिए। हम और आप, दोनों गांधीजी के अनुयायी हैं। दोनों एक विचार के हैं। लेकिन मुझे भी यदि आपके उपवास की बात न जँचती हो और मेरे जैसे आदमी को भी आप अपने उपवास का औचित्य न समझा सके, तो क्या लाभ? फिर अगर उपवास करने की आवश्यकता हो, तो आप ही क्यों करें? क्या इसलिए कि आप आंध्र के हैं? उपवास जरूरी हो, तो आप-हम, सभी क्यों न करें? इसलिए मेरा खयाल है कि आपको उपवास का विचार छोड़ देना चाहिए।"

सरहदी जिलों के बारे में

फिर सरहदी जिलों के 'प्लेबिसिट' के बारे में भी चर्चा हुई। विनोबा ने कहा : "प्लेबिसिट के मैं बिलकुल खिलाफ हूँ। सरहदी जिलों के बारे में विवाद नहीं होना चाहिए। वे किसी भी प्रांत में रहें, तो उसके बारे में असंतोष न होना चाहिए। प्लेबिसिट चाहे जैसा 'हैंडल' किया

जाता है, उसमें बहुत खराबी है। इसलिए सरहदी जिलों के बारे में तटस्थता होनी चाहिए कि वे कहीं भी रखे जायँ। भाषा के नुकसान की बात गलत है। सरहद के लोग दोनों भाषाएँ जानते हैं। भाषा को नुकसान तब पहुँचता है, जब उस भाषा में लिखनेवाले अच्छे नहीं होते। जब तक तेलुगु में पोतना और महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर पड़े हैं, तब तक इन भाषाओं का कोई नुकसान नहीं होनेवाला है और न इन्हें कोई नुकसान पहुँचा ही सकता है।"

विनोबा ने अन्त में कहा :

"चुनावों के पहले तो आपको यह उपवास किसी भी हालत में नहीं करना चाहिए।"

शास्त्रीजी : "शायद चुनाव अभी न हों।"

विनोबा : "मैं नहीं मानता। दिसंबर-जनवरी में नहीं, तो मार्च में होंगे। नये बजट के पहले चुनाव हो जायँगे। चुनाव के बाद आपको सोचने का मौका मिलेगा। तब तक आपको मौन रहना चाहिए। फिर उपवास का कदम उठाने के पहले आपको जवाहरलालजी से मिलना चाहिए। उनकी भूमिका भी समझ लेनी चाहिए।"

शास्त्रीजी : "आप इतना तो मानते हैं न कि आन्ध्र-प्रांत अलग होना चाहिए ?"

विनोबा : "मानने का सवाल ही नहीं है। सभी मानते हैं कि आंध्र का प्रांत अलग होना चाहिए। लेकिन मैं एक बात और आपसे कह देना चाहता हूँ। दो भाषाओं का एक प्रांत रहे या बने, तो भी मुझे कोई हर्ज नजर नहीं आता। उदाहरणार्थ महाराष्ट्र और गुजरात को लीजिये। ये दोनों एकत्र क्यों न रहे ? व्यवस्था के लिए चाहें, तो इनके अलग-अलग हिस्से रखे जा सकते हैं। फिर आज अगर बापू होते, तो कर्नाटक और आन्ध्र, दोनों से कहते कि जाओ, दोनों मिलकर निर्णय कर

आओ। लेकिन आज तो हमें ये सब काम 'सेंटर' से करवाने हैं और उनकी स्थिति ऐसी है कि अभी हम आग्रह नहीं कर सकते।"

स्वामीजी चाहते थे कि उपवास के बारे में विनोबाजी किंचित् भी अनुकूलता प्रकट करें। परंतु विनोबा आखिर तक पूर्ण असहमति ही जाहिर करते रहे।

भावी संयोजन

सम्मेलन की कार्रवाई शुरू हो, इसके पहले हैदराबाद के भावी कार्य की दृष्टि से कुछ योजना के बारे में विचार-विनिमय करना जरूरी था। एक समिति के निर्माण के बारे में विनोबाजी गत दो-तीन दिनों से सोच रहे थे। एक नतीजे पर भी पहुँचे थे। हैदराबाद के सार्वजनिक जीवन से वे अब पूरी तरह परिचित हो चुके थे। यह उनकी हैदराबाद की तीसरी यात्रा थी। कार्यकर्ताओं तथा नेताओं से भी उनका अच्छा परिचय हो गया था। पुलिस-यात्रा के बाद जब वे यहाँ शांति कायम करने आये थे, तब की कमेटियों के कामों का उन्हें अनुभव था। यह काम तो इतना महान् था कि इसके संयोजन में पूर्ण सावधानता की जरूरत थी। समिति का पक्षभेदों के प्रभाव से सुरक्षित रहना आवश्यक था, इतना ही नहीं; भिन्न-भिन्न पक्षवालों से कुशलतापूर्वक काम ले सकने की क्षमता भी उसमें होना जरूरी था। इन सभी दृष्टियों से विनोबाजी ने सम्मेलन के पहले ही कार्यकर्ताओं से कुछ महत्त्वपूर्ण चर्चा कर ली।

भूदान-कार्यकर्ता सम्मेलन

ठीक ६ बजे सम्मेलन की कार्रवाई शुरू हुई। स्वामी सीताराम ने सम्मेलन के सभापति का स्थान ग्रहण किया। अपने प्रास्ताविक भाषण में उन्होंने सम्मेलन का उद्देश्य समझाया तथा गत दो माह में तेलंगाना में भू-दान की जो अभूतपूर्व घटना घटी, उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिये तथा तेलंगाना के कार्यकर्ताओं को अपनी जिम्मेवारी का भान कराया।

सम्मेलन में जिले-जिले के कार्यकर्ता आये थे। नेतागण भी आये थे। उपस्थिति अच्छी थी।

शुरू में कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने विचार तथा अनुभव प्रकट किये। सबको तीन-तीन मिनट का समय दिया गया था। फिर विनोबाजी ने बोलना शुरू किया। शिवरामपल्ली-सम्मेलन का स्मरण ताजा हो गया। अभी-अभी तो वहाँ विनोबाजी ने तेलंगाना-यात्रा का संकल्प जाहिर किया था। शांति-सैनिक को हैदराबाद से बिदा हुए अभी सात सप्ताह भी नहीं हुए थे कि तेलंगाना की प्रयोगशाला में अहिंसा का शोधन हो गया। अहिंसा की शक्ति का साक्षात्कार हुआ। एक प्रभावकारी पद्धति, प्रक्रिया हाथ आयी, जिसके जरिये आर्थिक, सामाजिक मसले सुलझाये जा सकें।

विनोबाजी की वाणी से प्रयोगकारी की नम्रता, सैनिक की सतर्कता और भक्त की दृढ़ता निखर रही थी।

प्रारंभ में उन्होंने वर्धा से अब तक की यात्रा का स्थूल लेखा बताया। फिर अपनी यात्रा का उद्देश्य समझाते हुए कहा :

"मन में तो ऐसा था कि खतरे के मुल्क में जा रहे हैं, अगर इस खतरे का कोई उपाय मिल गया, तो अच्छा है। और अगर इस खतरे का खुद को ही अनुभव आया, तो भी अच्छा है, क्योंकि उसमें से शांतिमय उपाय सहज ही सूझ सकेगा। ऐसा कुछ मन में सोचा था। किंतु परमेश्वर की कृपा हुई और सारा वातावरण ही बदल गया।"

बुद्धिहीनता की पराकाष्ठा

कम्युनिस्टों की हिंसा-प्रणाली के बारे में उन्होंने असंदिग्ध शब्दों में कहा : "वयस्क मत धकार के बाद भी हिंसक तरीके का परित्याग न करना एक ऐसी गलती है, जिसे कोई भी प्रजा और प्रजा की सरकार बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

जो बा अपनी बुद्धि को भी न जँचती हों और जो देश-हितविरोधी

हों, 'डिसिप्लिन' और 'लायल्टी' के नाम पर उनसे चिपके रहने की कम्युनिस्टों की मनोवृत्ति को विनोबाजी ने बुद्धिहीनता की पराकाष्ठा बताया।

समिति-निर्वाचन का अहिंसक तरीका

भू-दान में जो नौ हजार एकड़ जमीन मिली थी, उसकी भावी व्यवस्था के बारे में उन्होंने कहा :

"इसके बारे में मुझे बहुत ज्यादा चिंता नहीं है। एक कमेटी मुकर्रर की जाय और वह ये जमीनें गरीबों के पास पहुँचा दे। इसी तरह और भी जमीनें माँगने का अधिकार उस समिति को दिया जाय। इस वास्ते एक समिति मुकर्रर करने का विचार कई दिनों से मेरे मन में आता रहा। कई नाम मेरे सामने आये। दूसरों ने सुझाये। मैं भी सोचता गया तो बड़े लोगों के—जो लोग सरकार में हैं उनके और जो जनता के साथ अच्छा संपर्क रखते हैं, उनके—नाम मेरे मन में आये। दूसरे सज्जनों के भी नाम आये। हमारे सर्वोदयवालों के भी नाम मन में आये। इस तरह कई नाम आये। लेकिन आखिर हमने सोचा कि अहिंसा का जो सीधा तरीका है, वही हमें अपनाना चाहिए। तो, एक दिन मेरे मन में आया कि जो लोग विशेष ज्यादा वजन नहीं रखते, ऐसों के नाम उसमें होने चाहिए और बाकी जितने पुराने लोग हैं, उनकी मदद हमें चाहिए। मान लीजिये कि समिति में दस-पाँच नाम हमने रख लिये, तो वे दस-पाँच लोग ही काम करनेवाले हैं, ऐसी बात नहीं है। इस काम में तो सारे-के-सारे शामिल होने चाहिए। यह जो समिति बनेगी, वह लोगों से जमीनें लेने और उनको गरीबों में बाँटने का काम याने मजदूरी का काम करेगी। जो मुश्किलें आयेंगी या समस्याएँ निर्माण होंगी, उन्हें मेरे सामने रखेगी। इस तरह की मजदूरी का काम जहाँ करना है, वहाँ ऐसी समिति उन्हीं लोगों की बनायी जाय, जिनका लोगों में खास वजन नहीं है, लेकिन जो काम करनेवाले हैं।

"सोचते-सोचते मुझे लगा कि जो लोग मेरे साथ रहे हैं और जिन्होंने

मेरा काम करने का ढंग देखा है, ऐसे लोग चुनने चाहिए। सोचने पर तीन नाम मेरे सामने आये और मैंने उनको चुन लिया। एक तो आपकी यह लक्ष्मीबाई है, जो बहुत दिनों से तेलंगाना में आपका काम करती आयी हैं और जिनसे हमने भी काम लिया है। दूसरे, हमारे नलगोंडा के केशवराव, जिन्होंने हमारा काम करने का सारा ढंग साथ रहकर बारीकी से देख लिया है और तीसरे हैं, आपके ये कोदंडराव। और भी दो-चार थे, लेकिन हमें तीन बस हुए। ज्यादा की आवश्यकता नहीं लगी। ये तीनों लोग हमारी तरफ से जो जमीनें मिली हैं, उनको गरीबों के पास पहुँचाने और ज्यादा जमीन माँगने का भी काम करेंगे। अर्थात् जो जमीन देनेवाले और दिलानेवाले हैं, ऐसे सब लोग उनके साथ मुलाकात कर लेंगे। हमने इस समिति को कह दिया है कि हमारी इच्छा यह है कि ये जमीनें सीधे गरीबों के पास पहुँचें।"

मैं गहि न गरीबी

भूमिदान में सारी जमीन विनोबाजी के नाम पर ही मिल रही है। इस बारे में अपनी भावना प्रकट करते हुए उन्होंने कहा : "मैंने कोई व्यक्तिगत दान तो लिया नहीं है। हो सकता है कि हमारे नाम से दान देने की प्रेरणा लोगों को हुई हो। उसका उपयोग करना हो, तो करें। मुझे उसकी परवाह नहीं, क्योंकि मेरी दृष्टि से वह शून्य है। यह सारा काम गरीबों के लिए है। आज तक हमने उनका नमक खाया, परन्तु अभी तक उनको दिया कुछ नहीं। इसलिए अत्यंत अनुतापमुक्त चित्त से यह काम हम कर रहे हैं। किसी प्रकार की उपकार की भावना तो हमारे मन में है ही नहीं। हाँ, सदमा जरूर है कि हम अब तक पूरी तरह गरीब न हो पाये। "**नाथ गरीब निवाज मैं गहि न गरीबी**"—भगवान् तो गरीब की ही रक्षा करते हैं। मैं पूरी तरह से गरीब नहीं बना, तो मेरी रक्षा भगवान् कैसे करेंगे?"

मेरा नाम गरीबों का ही नाम है

बोलते-बोलते कृतज्ञता और वेदना, दोनों गंगा-यमुना की तरह बह निकलीं। बहुत देर तक विनोबा कुछ भी न बोल सके।

"ठीक यही प्रार्थना मैं करता हूँ"—विनोबाजी ने सारी शक्ति एकत्र कर पुनः बोलने का प्रयत्न किया : "लेकिन मुझे इस बात का सदमा है कि बावजूद अखंड कोशिश के मैं अभी तक परिपूर्ण गरीब नहीं हो सका। तो, परमेश्वर मुझे क्षमा करे, इतना ही भाव मेरे मन में है। हम जो काम कर रहे हैं, उसमें गरीबों पर कोई उपकार नहीं हो रहा है। बल्कि हमें जो पश्चात्ताप हो रहा है, उसका यह प्रकाशन-मात्र है। इसलिए मेरे नाम का उपयोग करना जरूरी हो, तो मुझे कोई हर्ज नहीं है, वह गरीबों का ही नाम है।"

हिंसा के बारे में शंका तो लाइये !

भूदान से होनेवाले अनेकविध लाभों का और उसके अन्यान्य पहलुओं का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा : "इससे सबसे बड़ा लाभ तो यही होगा कि अहिंसा की शक्ति बढ़ेगी। बार-बार नाकामयाबी मिलते हुए भी लोग हजारों साल से कितने श्रद्धापूर्वक हिंसा के प्रयोग करते ही चले आ रहे हैं। मैं कहता हूँ, अब इस मूढ़-श्रद्धा को छोड़कर अपने मन में हिंसा के बारे में जरा शंका तो लाइये ! इतने रोज हिंसा को 'ट्रायल' दिया, अब अहिंसा को भी तो एक बार 'ट्रायल' दो। फिर अगर परिणाम नहीं आता, तो सोचो कि अहिंसा के प्रयोग में कहाँ कमजोरी रह गयी है। इस तरह अहिंसा के विकास में कुछ समय दिया जाय, तो उससे दुनिया का कुछ बिगड़नेवाला नहीं है। इतना ही होगा कि हजारों साल हिंसा के प्रयोग में दिये, तो सौ-पचास साल अहिंसा के प्रयोग में भी दिये। लेकिन ऐसा प्रयोग करने की सोचें, तो संभव है, उसमें से कुछ ऐसे नतीजे निकलें, जिनकी दुनिया को आज अत्यंत आवश्यकता है। इसीलिए दुनिया की आँखें आज इस काम की तरफ लगी हैं। अगर

यह प्रयोग सिद्ध हुआ, तो दुनिया को एक बड़ी शक्ति और बड़ी राहत भी मिल सकती है। इसलिए इसे ट्रायल देना है। इसके लिए सारे लोग इसमें जुट जायँ, ऐसी आप सबसे मेरी माँग है।"

भारी सहारा

रचनात्मक कार्यकर्ताओं से विनोबा ने खास तौर से कहा : "जो भाई समझने की शक्ति रखते हों, उन्हें मैं समझाना चाहूँगा कि इस वक्त केवल खादी-काम या हरिजन-सेवा काफी नहीं है। जहाँ कठिन मसले पड़े हों, वहाँ उन्हींके हल करने में सब लोगों की अक्ल लगनी चाहिए। आज इस इलाके में ऐसी हालत है कि अगर रचनात्मक काम करनेवाले जगह-जगह पाँच-पाँच, दस-दस मील पर पड़े हों, तो जनता को उन सबसे बड़ा सहारा मिलेगा। अवश्य ही आज पुलिस है, परंतु उसका सहारा कोई ऐसा सहारा नहीं, जिससे जनता का उत्थान होनेवाला हो। सहारा तो ऐसा होना चाहिए, जिससे आश्वासन मिले। जनता को लगे कि और कुछ नहीं, तो हमारा एक भाई वहाँ बैठा है। इस तरह पाँच-पाँच, सात-सात मील पर हमारे कार्यकर्ता बैठ जायँ, तो वह एक भारी बात होगी।"

ग्यारह बजे बैठक समाप्त हुई, तो मिलनेवालों का ताँता बँधा रहा। 'हिंदुस्तान टाइम्स' के संवाददाता श्री कलहन पिछले कुछ दिनों से हमारे साथ थे। वे आज दिल्ली लौट रहे थे। भूदान-यज्ञ-समिति की नियुक्ति में विनोबाजी ने जो दृष्टि रखी थी, वह उन्हें बहुत पसंद आयी। उसकी प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा : "आप ही ऐसा मौलिक ढंग अपना सकते हैं—कमेटियों की नियुक्ति करने का।"

लिपि-सुधार

उन्हें लिपि-सुधार में भी दिलचस्पी थी। विनोबाजी की लोक-नागरी लिपि के बारे में उन्होंने खुद विनोबाजी से ही समझ लिया था। "यदि लोकनागरी चलाते हैं, तो आज जो किताबें देवनागरी में छपी

हुई मौजूद हैं, वे रद्द हो जायँगी।"—उनकी इस शंका का जवाब देते हुए विनोबाजी ने कहा : "यह दलील तो लिपि-सुधार के ही खिलाफ है, न सिर्फ लोकनागरी के। अगर वर्तमान लिपि में कोई सुधार ही नहीं करना हो, तो अलग बात है। फिर हम टर्की का समर्थन नहीं कर सकते, जब कि उसने लिपि पूरी ही बदल दी। कुछ दिन दो लिपियाँ चलेंगी। धीरे-धीरे नयी लिपि चल पड़ेगी, पुराना साहित्य भी धीरे-धीरे नयी लिपि में आने लगेगा। फिर पढ़ने लायक कुछ साहित्य यदि नयी लिपि में न हो, पुरानी लिपि में ही हो, तो जो लोग उस साहित्य को पढ़ना चाहेंगे, वे पुरानी लिपि भी जान लेंगे। इसमें कोई विशेष दिक्कत न आयेगी। अगर हमें अपने देशवासियों को कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक शिक्षित करना है, तो वर्तमान लिपि में कुछ सुधार किये बिना गति नहीं है।"

दोपहर पुनः सम्मेलन शुरू हुआ। कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेता तथा कार्यकर्ताओं के भाषण हुए। कांग्रेस के एक जिम्मेदार नेता ने आक्षेप किया कि विनोबाजी जहाँ-जहाँ गये, वहाँ उनके जाने के बाद पुलिस ने गिरफ्तारियाँ कीं, क्योंकि उन लोगों ने पुलिस की शिकायतें विनोबाजी से की थीं। एक दूसरे कार्यकर्ता ने भी इसको दोहराया। इससे सभा में कुछ सनसनी भी मची और लोगों ने सोचा कि विनोबाजी इस बारे में जरूर कुछ कहेंगे। विनोबा यद्यपि गंभीर नजर आये, कुछ नहीं बोले। सबेरे उन्होंने जिस भूदान-समिति का जिक्र किया था, उसके बारे में पुनः थोड़ा स्पष्टीकरण किया।

गधा-समिति

"हमारी यह समिति गधा-समिति है। याने इन लोगों को गधे की तरह काम करना है—हमारे हुक्म पर अमल करना है। ये वे लोग हैं, जिनका जनता पर कोई खास प्रभाव नहीं है। ये कार्यकर्ता हैं, गत दो माह से हमारे साथ घूम रहे हैं। हमने इन्हें देखा-परखा है, हमारी कार्य-प्रणाली से ये वाकिफ हो चुके हैं। इसलिए हमने इन्हीं लोगों को चुना है। ये

शून्य हैं; परंतु सबका सहयोग मिलेगा और सबके अंक एक-एक करके भी इन शून्यों के पीछे लगते जायँगे, तो इनका मूल्य अनगिनत बढ़ जायगा।"

समिति के सदस्यों के जो तीन नाम सबेरे विनोबाजी ने जाहिर किये थे, उनके चुनाव के पीछे की विनोबाजी की जो नाविन्यपूर्ण कल्पना थी, वह सबको बहुत अच्छी मालूम हुई। श्री रंगा रेड्डी गारू तथा स्वामी रामानंद तीर्थ, दोनों ने अपने भाषणों द्वारा इस समिति का समर्थन किया। एक मित्र ने कहा कि इन दोनों नेताओं ने समिति का समर्थन किया है, तो इन शून्यों की कीमत ग्यारह हजार तो आज ही हो गयी है। दूसरे एक मित्र ने कहा कि ये दोनों दो ही नहीं हैं। इसलिए इन शून्यों की कीमत तो विनोबाजी कहते हैं, वैसे सचमुच ही अत्यधिक है।

कार्यकर्ताओं की गैरजिम्मेदारी

कल के भाषणों में जो गिरफ्तारियों का उल्लेख था, उसके बारे में जाँच करने पर मालूम हुआ कि विनोबाजी के जाने के बाद कुछ जगह गिरफ्तारियाँ जरूर हुई हैं, परंतु उनका विनोबाजी की यात्रा से कोई संबंध नहीं। मसलन वाविळापल्ली में विनोबाजी रामराव पटवारी नामक एक व्यक्ति के यहाँ ठहरे थे। विनोबाजी के जाने के चार रोज बाद वह शख्स गिरफ्तार कर लिया गया था। विनोबाजी तो इसलिए उसके यहाँ ठहरे कि रजाकारों के जमाने में उसे काफी सहना पड़ा, ऐसा उन्हें बताया गया। यह भी बताया गया कि कम्युनिस्टों ने भी उसे एक बार गिरफ्तार कर लिया था, लेकिन फिर छोड़ दिया, यद्यपि उन्होंने भी परेशान बहुत किया। अब पुलिस का कहना है कि रामराव के बारे में उन्हें शंका थी ही कि वह भीतर से कम्युनिस्टों से मिला हुआ है। वे उसकी जाँच कर रहे थे। उनको सबूत मिला कि वह आज भी कम्युनिस्टों के लिए पैसे जमा रखता है, उनको भेजता भी है, उनके साथ उसका संपर्क है। अगर विनोबाजी उसके यहाँ न ठहरते, तो भी वह गिरफ्तार होता। पुलिस उसके वारंट का इन्तजार कर रही थी।

पुलिस का यह बयान भी ठीक था, क्योंकि विनोबा जब रामराव के यहाँ थे, तभी उसकी हरकतें शंकास्पद थीं। उसके काम में गड़बड़ी नजर आती थी और शराब वगैरह का भी वह शिकार था।

इसी तरह दूसरी गिरफ्तारियों के बारे में भी जाँच हुई, तो मालूम हुआ कि कल भाषणों में जिम्मेवार लोगों ने सरकार पर जो आरोप किये, वे ठीक नहीं हैं।

विनोबा को इस प्रकार के गैरजिम्मेवारीपूर्ण बयान से काफी दुःख हुआ। उन्होंने संबद्ध व्यक्तियों से पूछा कि "बिना तहकीकात किये सरकार पर सार्वजनिक रूप से जिम्मेवार लोग ऐसा आक्षेप करें, यह कैसे शोभा देता है? फिर ये बातें तो हमसे संबंध रखती थीं, हमें बतानी चाहिए थीं। हम खुद उसकी जाँच करवाते, जैसी कि अभी करवायी है। सरकार ने हमारे साथ बहुत अच्छा सलूक रखा है। पुलिस के जिन-जिन लोगों की हमने शिकायत की है, उन्हें उसने फौरन नौकरी से हटा दिया है। सरकार के बारे में इस तरह गलतफहमी पैदा करना गैरजिम्मेवारी का लक्षण है।"

इसलिए आज सबेरे जब सभा की कार्रवाई शुरू हुई, तो प्रारंभ में विनोबाजी ने इसी बारे में जिक्र किया। उन्होंने कहा :

"कल आप लोगों के सामने एक बात कुछ जिम्मेवार लोगों की ओर से रखी गयी थी कि तेलंगाना की हमारी यात्रा के दरमियान हम जहाँ-जहाँ ठहरे, वहाँ से जाने के बाद वहाँ पुलिस की ओर से जुल्म हुए। यद्यपि वह बात गंभीर थी, हम कल इस बारे में कुछ नहीं बोले। बाद में हमने तहकीकात की, तो मालूम हुआ कि इस बारे में आक्षेप करनेवालों की काफी गलतफहमी है। अगर वास्तव में ऐसी कोई घटना हुई हो, तो आप हमें बतायें, उसका इलाज हो सकता है। मैं कहना चाहता हूँ कि जो शिकायत आपके सामने आयी, वह गलत है।"

कार्यकर्ता के लिए त्रिविध मर्यादाएँ

आज की सभा में चर्चा के लिए विषय रखा गया था कि हैदराबाद में कार्यकर्ताओं की जो कमी है, उसकी पूर्ति कैसे की जाय ?

अनेक कार्यकर्ताओं ने इस चर्चा में हिस्सा लिया और अपने-अपने विचार रखे।

चर्चा का समारोप करते हुए विनोबाजी ने कहा :

"नये कार्यकर्ता जुटाने के संबंध में तो मैं बाद में कहूँगा, परंतु एक बात की ओर आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ, जिसका जिक्र कल वल्लभस्वामी ने अपने व्याख्यान में किया था। वह है, कार्यकर्ताओं में परस्पर प्यार का होना। दूध में जैसे शक्कर मिल जाती है, वैसे ही हमें अपना स्वाद छोड़कर एक-दूसरे में घुल-मिल जाना चाहिए। फिर हम चंद ही क्यों न हों, अपने विचार को दुनिया में फैला सकेंगे। हमें समत्व-बुद्धि से सोचने की आदत डालनी चाहिए। हर चीज को वकील के नाते नहीं, न्यायाधीश के नाते देखना चाहिए। सत्य की खूबी यह है कि वह हमेशा बीचोबीच रहता है, इसलिए समत्वपूर्वक ही काम करना चाहिए। तीसरी बात यह कि किसीका दोष बताना हो, तो पीछे नहीं, सामने, रूबरू, बताना चाहिए। गुणों का ही चिंतन करना चाहिए। यह मर्यादा हम पालन करें, तो हमारा अपना भी दोष-निराकरण और गुण-संवर्धन होगा।

गुणाधारिता

"कायकर्ताओं को अपने सामने एक और दृष्टि रखनी चाहिए। मैं इंग्लैंड की मिसाल देकर समझाऊँ। उन लोगों ने युद्ध-देवता की उपासना मान्य कर ली और चर्चिल को नेता मान लिया। अब देखिये कि उस समय जितनी भी अलग-अलग प्रकार की शक्तियाँ थीं, उन सबका उपयोग देश के लिए किया गया। सर सैम्युअल होअर को स्पेन भेजा गया। सर स्टैफर्ड क्रिप्स को रूस भेजा गया। आखिर रूस युद्ध में

शरीक हुआ और यश भी मिला। कहने का मतलब यह कि हमारे विचारों के अनुकूल न होते हुए भी अगर हमारे पास कुछ गुणवान् लोग हैं, तो उनके गुणों का उपयोग करने की योजना-शक्ति हममें होनी चाहिए। यह ठीक है कि कार्यकर्ताओं में परिभ्रमण की शक्ति चाहिए और जिसमें वह शक्ति हो, उससे भ्रमण का कार्य भी लेना चाहिए। परंतु जिसमें वह शक्ति न हो और वह एक स्थान पर बैठकर काम कर सकता है, तो उससे उसी तरह का काम लेने की हमारी वृत्ति और योजना होनी चाहिए। इस तरह हमें एक-दूसरे की कमियों को जान लेना और उन कमियों के बावजूद गुणों के आधार पर काम करना चाहिए। ऐसी वृत्ति रखें, तो यहाँ जितने लोग उपस्थित हैं, वे सब-के-सब कार्यकर्ता बन जायँगे। इसके विपरीत अगर हम काम की एक, दो, तीन, चार, पाँच शर्तें लगाते रहेंगे, तो हमें कार्यकर्ता मिल ही न पायेंगे। तो, मनुष्य से किस तरह काम लिया जा सकता है, इसकी दृष्टि मैं आपको दे रहा हूँ। जो भी व्यक्ति हमें मिले, उसे हम भगवान् समझें, यह हमारी संस्कृति की विशेषता है। दोष तो गुणों की छाया हैं। गुणों के सहारे ही वे रह सकते हैं। उनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं है। हमें वस्तु की मूल पहचान हो, तो उसका उपयोग भी सूझेगा। हर व्यक्ति को हम हरिरूप समझें, तो ये सारे वर्ग खतम हो जायेंगे और हर कोई आपको अपना कार्यकर्ता भाई ही नजर आयेगा।"

आश्रय नहीं, मदद

फिर सरकारी मदद लेने, न लेने के संबंध में चर्चा हुई। एक भाई ने कहा कि "अगर सरकारी मदद लेते हैं, तो तेजोहानि होती है और बिना मदद के काम करते हैं, तो कुछ होता नहीं।" जवाब में बाबा ने समझाया कि "सरकार की मदद लेने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन सरकार का आश्रय नहीं लेना चाहिए। और मदद न मिले, तो भी हमारा काम रुकना न चाहिए, चालू रहना चाहिए।" चश्मे (सोते) की

मिसाल देकर उन्होंने समझाया कि "बरसात हुई, तो चश्मे में पानी बढ़ जायगा और न हुई, तो भी चश्मा बहता ही रहेगा। हमारे काम का भी ऐसा ही होना चाहिए।"

नित्य बनाम नैमित्तिक कर्तव्य

कार्यकर्ताओं के मन में आया कि विनोबाजी हमारे बीच इतने रोज रहे, एक अद्भुत परिवर्तन हमारे मुल्क में आ गया। अब वे जा रहे हैं, तो उनके पीछे हमें अपने को किसी संकल्प में बाँध लेना चाहिए। विनोबाजी से पूछा, तो उन्होंने कहा : "और संकल्प क्या हो सकता है, सिवा इसके कि सब लोग भू-दान-यज्ञ में जुट जाने का निश्चय करें।" कार्यकर्ताओं ने तो १२ फरवरी के लिए सूत्रांजलि-संग्रह की बात सोची थी। साथ-ही-साथ जगह-जगह कताई-मंडल, प्रार्थना-मंडल आदि स्थापन करने की भी कल्पना कर रखी थी। कंपोस्ट खाद, प्रौढ़-शिक्षा आदि का भी कार्यक्रम बनाया था। विनोबा ने यह सब सुनकर कहा :

"बड़े सबेरे उठना, दैनिक प्रार्थना, कताई-यज्ञ आदि काम तो नित्य-कर्तव्यों में से हैं ही, उनके लिए अलग से संकल्प क्या करना है ? संकल्प करना हो, तो यही करो कि भू-दान-यज्ञ में पूरी मदद देनी है। सीधी बात यह है कि पुरानी बातों का या आगे होनेवाली बातों का चिंतन करते रहने के बजाय अभी आज जिस काम की आवश्यकता है, उसी ओर ध्यान जाना चाहिए। आग लगी हो, तो बुझाने का काम ही मुख्य हो सकता है।"

हैदराबाद में एक वर्ष में एक लाख एकड़ भूमि जमा करने का संकल्प-पत्र तैयार हुआ। सबने खड़े रहकर, विनोबा की उपस्थिति में गंभीरतापूर्वक संकल्प ग्रहण किया। नेताओं ने उठकर आश्वासन दिया कि वे संकल्प-पूर्ति में पूरी मदद देंगे। श्री मुरली मनोहररावजी ने तथा श्री रंगा रेड्डीजी ने क्रमशः एक हजार तथा एक सौ एकड़ का दान देकर संकल्प-पूर्ति के काम को चालना दी। दो दिन में कुल दो हजार एकड़ जमीन प्राप्त हुई। सम्मेलन से सबको बड़ी प्रेरणा मिली। ● ● ●

भारत की विशेषता : ५३ :

बेलमपल्ली
१-६-'५१

तीन दिन गोदा-तट पर मुकाम कर पुनः यात्रा-क्रम शुरू हुआ। बहुत से साथी लौटे--कोई हैदराबाद, तो कोई वर्धा।

आज मंजिल पंद्रह मील की थी। अब वर्धा शीघ्र पहुँचना था—बारिश के पहले, इसलिए मंजिलें भी लंबी-लंबी रखी गयी थीं। विनोबा बालाघाट की पहाड़ी से गुजर रहे थे। यह बालाघाट मध्य-प्रदेश का बालाघाट नहीं है। वह तो 'बाला' याने वास्तव में 'ऊँचा' ही है, परंतु यह तो बिलकुल 'बाल' याने 'छोटा' ही है। सड़क के दोनों ओर पूरब-पच्छिम साग का विशाल जंगल दिखाई दे रहा है। आकाश बादलों से घिरा रहता है। छह बजे एक खेत में बैठकर विनोबा ने सबेरे का कलेवा किया। मौसम का असर था कि दही भी पत्थर की तरह जमा था।

पड़ाव पर पहुँचने में काफी देर हो गयी थी। कोलियारी के सैकड़ों मजदूरों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया। आदिलाबाद जिला और मजदूरों का केंद्र था, इसलिए खयाल था कि यहाँ शिकायतें शायद न आयें। लेकिन पहुँचने के समय से शिकायतों का आना शुरू हुआ और शाम को सभा के समय तक वे आती रहीं। शिकायतों से मालूम हुआ कि गरीब किसानों और मजदूरों पर गिरदावरों का काफी रोब रहता है। तहसीलदार के मातहत होते हुए भी वे तहसीलदार से अधिक अधिकार चलाते हैं और यह सब करते हुए वे कानून के बारे में बिलकुल ही बेखबर रहते हैं।

मजदूर-यूनियन की ओर से मंत्री ने विनोबाजी को मानपत्र दिया,

जिसमें प्रार्थना की गयी थी कि भू-दान-यज्ञ में यहाँ जो जमीन मिले, वह खदान की नौकरी से निवृत्त होनेवाले मजदूरों में तकसीम की जाय।

रास्ते में मंदामरी गाँव पड़ता था। वहाँ के एक भूमिवान् मित्र श्री माधवराव दो-तीन रोज से सपरिवार साथ थे। आज उन्होंने चुपचाप ढाई सौ एकड़ का दान-पत्र दिया और प्रणाम कर चले गये। उनकी नम्रता और सद्भावना का सब पर असर हुआ। शाम की सभा में, जिसमें कम-से-कम दस हजार मजदूर होंगे, विनोबाजी ने और बातों के साथ-साथ इस घटना का भी जिक्र किया।

रात को भू-दान-यज्ञ-समिति के नियमोपनियम का मसविदा बना। तकसीम के नियमों के बारे में भी चर्चा हुई। जमीन का हस्तांतरण होने में रजिस्ट्री का खर्च न आये, जमीन जिनको दी जाय, उनके हाथ से वह कम-से-कम दस साल तो भी निकलने न पाये आदि शर्तों के बारे में सरकार से रूबरू मिलकर बातें करना तय पाया। बिना स्टॉम्प-ड्यूटी के जमीन का हस्तांतरण करने की बात सरकार मान लेगी, ऐसा विश्वास तो विनोबाजी को था ही। परंतु काम बिलकुल नया था। संभव है, कोई दिक्कत आये, इसलिए विनोबाजी ने अपना दृष्टिकोण भी समझा दिया :

"मुझे आशा है कि इस काम के लिए सरकार रजिस्ट्रेशन फीस और स्टॉम्प-ड्यूटी छोड़ देगी। उससे उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। हम चाहते भी हैं कि उसकी प्रतिष्ठा बढ़े। किंतु यदि इसमें सरकार को कोई संकोच या दिक्कत हो, तो हमें वैसा मालूम होना चाहिए, ताकि हम जनता से वह कह सकें। हम तो रजिस्ट्रेशन के लिए आवश्यक चंदा भी जमा कर सकते हैं, परंतु वह हमें नहीं करना है। यदि सरकार आवश्यक सुविधा न दे सकेगी, तो हम दाताओं से ही कह देंगे कि हमारे ये नियम हैं। इनको खयाल में रखते हुए तुम्हें जिन भूमिहीनों को जमीन देने की इच्छा हो, तुम खुद ही दे दो। सरकार को समझना चाहिए कि उसका कितना बड़ा काम इस भू-दान-यज्ञ से हो गया है। भू-दान-यज्ञ में जो जमीन मिल

रही है और मिलेगी, उसका मुआवजा अगर सरकार को देना पड़े, तो कितनी बड़ी रकम होगी। बिना मुआवजे के जमीन का इतना बड़ा मसला हल हो रहा है, तो उसे भी यदि इसकी तकसीम में कुछ खर्च बर्दाश्त करना पड़े, तो करना चाहिए।"

तकसीम के बारे में उन्होंने कहा : "भू-दान-यज्ञ में मिली जमीन की तकसीम का काम हमें जनसेवकों के जरिये ही करवाना होगा। यह बोझ हम सरकार पर नहीं डाल सकते। लोगों को भी उससे संतोष न होगा, क्योंकि लोगों ने जमीन भू-दान-यज्ञ में दी है, न कि सरकार को। मुझे तो लोगों की श्रद्धा देखकर आश्चर्य होता है ! दान-पत्र में साफ लिखा है कि गरीबों के लिए विनोबा जैसा उचित समझें, इस्तेमाल करें। लोग मन में बिना किसी प्रकार की शंका किये हजारों एकड़ का दान दिये जा रहे हैं, यह मैं भारत की विशेषता मानता हूँ।"

रेबना

१०-६-'५१

मुसाफिरी अब पंद्रह मील रही। कभी-कभी कड़ी धूप भी तपती है। सिर पर बादल या बारिश लेकर ही चलना पड़ता है।

पड़ाव रेबना के खादी-केन्द्र में ही था, जहाँ श्री गोसावीजी बहुत निष्ठा के साथ पिछले बारह वर्षों से खादी का काम कर रहे हैं। सारा वातावरण आश्रम की याद दिलानेवाला था। विनोबाजी के लिए स्वतंत्र कुटिया खड़ी की गयी थी, औरों का प्रबन्ध भी झोपड़ियों में ही था। स्वच्छता आदर्श थी। दोपहर में सामूहिक कताई का कार्यक्रम अच्छा प्रभावकारी रहा। अनेक स्त्री-पुरुषों ने कताई में हिस्सा लिया और विनोबा को दरिद्रनारायण के लिए गुंडियाँ भी बहुत भेंट की गयीं। सारा दर्शन बहुत अच्छा रहा। नलगुंडा और वरंगल जिले में तो कम्युनिस्ट-आंदोलन की आँच में यहाँ के कताई-बुनाई के पुराने उद्योग को भी नामशेष-सा कर दिया था। रेबना में पुनः यह खादी-कार्य का दर्शन हुआ। आँखों को तो संतोष हुआ, पर सशंक मन अब पूछ बैठता है कि यह काम भी कब तक चल पायेगा ? क्या यहाँ जमीन की भूख नहीं है ? क्या आसपास के गाँवों में भूमिहीनों को भूमि मिल गयी है, जो यह खादी-कार्य यहाँ इतनी शांति के साथ चल पा रहा है ?

गाँववालों की सभा में विनोबाजी ने तेलंगाना की इस भूमि-समस्या की ओर सबका ध्यान आकृष्ट कराते हुए कार्यकर्ताओं को भी आगाह किया कि "वे अपना काम करते हुए भूमिहीनों के लिए जमीन-प्राप्ति की बात को नजर से ओझल न होने दें।"

अक्सर खादी-केन्द्रों में यही होता है कि कातनेवालों के बदन पर खादी कम ही पायी जाती है। रेबना इस नियम का अपवाद नहीं था। लेकिन इस खयाल से कि गाँव में कुछ लोग तो निष्ठावान् कातनेवाले और खादी पहननेवाले निर्माण हो ही गये होंगे, विनोबाजी ने जानकारी प्राप्त की, तो मालूम हुआ कि श्री गोसावींजी तथा उनके कुछ साथियों के अतिरिक्त कताई या खादी की निष्ठा गाँववालों में अभी तक निर्माण नहीं हो पायी। वे इस काम को अन्य उद्योगों की तरह एक उद्योग के रूप में ही देखते हैं। उनके जीवन को अभी तक खादी ने स्पर्श नहीं किया है। कार्यकर्ताओं में भी सब-के-सब निष्ठावान् कातनेवाले नहीं थे और न खादी का व्रत ही सबका था। कारण पूछने पर सबने समय का अभाव ही बताया। इस गफलत और गलतफहमी से उबारने के लिए विनोबाजी ने किशोरलालभाई मशरूवाला की मिसाल देकर समझाया :

"श्री किशोरलालभाई सतत दमे की बीमारी से परेशान रहते हैं। कमजोर इतने हैं कि उनको देखने से कोई विश्वास के साथ नहीं कह सकता कि उनकी काया में कल तक भी प्राण रह सकेंगे। फिर भी वे रोज बराबर कम-से-कम आध घंटा तो कात ही लेते हैं। रोज उनकी १ लटी होती है याने बरस की ३६० लटी, ९० गुंडियाँ। इतने दुर्बल व्यक्ति से भी सालाना एक सौ अस्सी घंटे का उत्पादक परिश्रम मिला––देश में अठारह गज कपड़े का उत्पादन बढ़ा और देश की आमदनी में सत्रह रुपये वार्षिक की वृद्धि हुई। यह मैंने कम-से-कम हिसाब बताया—एक ऐसे व्यक्ति के जीवन का, जिससे हमें बहुत प्रेरणा मिलती है।" ● ● ●

सफेदपोशों की शिकायतें : ५५ :

आसफाबाद

११-६-'५१

रोजाना देहातों के गरीब किसान या खेतिहर मजदूर अपने जमींदारों या बड़े किसानों के जुल्मों के खिलाफ शिकायतें लेकर आते हैं और विनोबाजी दो-दो, तीन-तीन, चार-चार घंटे उनके बीच बैठकर उनके फैसले करवाते हैं। वे सबको संतोष देकर लौटाते हैं। लेकिन आज की शिकायतों का रूप दूसरा था। आज भी शिकायतों का ढेर था; लेकिन शिकायत करनेवाले आसफाबाद के सफेदपोश थे, जिनमें ज्यादातर वकील-वर्ग ही था। खास शिकायतें ये ही थीं कि पुलिस-ऐक्शन के बाद पुरानी स्थिति बदलेगी, ऐसी आशा थी; लेकिन कोई खास परिवर्तन अब तक नहीं हुआ। सारे वे ही पुराने अधिकारी हैं। भेद-नीति से काम लेते हैं। कभी कम्युनिस्टों को अपनाते हैं, तो कभी कांग्रेसियों को। बेचारी प्रजा पीसी जाती है। कम्युनिस्ट प्रजा के असंतोष से लाभ उठाकर लोगों से जाहिरा तौर पर लेवी न देने के लिए कहते हैं। आप सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करायें।

शिकायतों की सत्यता के बारे में शंका न करते हुए विनोबा ने उन लोगों को अपना दृष्टिकोण समझाने की कोशिश की। उन्होंने कहा :

"आप लोग तो जानते ही हैं कि अब आपको वोट का अधिकार मिला है। योग्य आदमियों का चुनाव करना अब आपके हाथ में है। अधिकारी पुराने हैं याने मुसलमान ही हैं, ऐसा आपका कहना है। लेकिन हिंदू अधिकारी व्यवहार अच्छा ही करेगा, क्या ऐसा आश्वासन आपके पास है? देखना यही चाहिए कि आदमी अच्छा हो। आखिर जिसके

हाथ में सत्ता होती है, वही शिकार खेल सकता है। आपको जो तकलीफें हैं, उनके बारे में आप ऐसी हवा में ही बातें करें, इसका कोई मूल्य नहीं है। अगर आपकी शिकायतें जायज हैं, तो सबूत के साथ पेश कीजिये और उसके परिणामों को भुगतने की तैयारी रखिये। ताकत इसी तरह बढ़ती है, लोगों का विश्वास भी प्राप्त होता है और फिर लोगों में प्रतिष्ठा भी बढ़ती है।"

विनोबा ने कहा : "खैर! यह बताइये कि आप लोग गरीबों के लिए कुछ जमीन देंगे या नहीं?"

जवाब : "गुजर-बसर हो सके, इतनी ही तो है। क्या दें और कैसे दें?"

विनोबा : "यह एक यज्ञ शुरू हुआ है, जिसमें हरएक को, जिसके पास जमीन है, अपना हविर्भाग देना चाहिए। मुझे तो एक एकड़वाले से भी एक गुंठा मिला है। संकेत के तौर पर ही सही, थोड़ी-थोड़ी जमीन तो आप लोग दे ही सकते हैं। उससे भावना निर्माण होती है। आप लोग वकालतपेशा हैं और जमीनें भी रखते हैं, तो थोड़ी जमीन देनी ही चाहिए न?"

प्रश्न : "आप इधर फिर कब पधारियेगा?"

अपने लिए कुछ नहीं चाहिए

इतने में एक बहन अपने लड़के को लेकर आयी। वह प्रणाम कर चुपचाप बैठ गयी। मालूम हुआ कि कुछ दान देना चाहती है। विनोबा ने पूछा :

"कितनी जमीन है?"

"चालीस एकड़।"

"घर में कौन-कौन हैं?"

"मैं और यह लड़का।"

"कितना देना चाहती हैं?"

"मुझे अपने लिए तो कुछ चाहिए नहीं। आप अपना एक हिस्सा ले लीजिये और दूसरा प्रसादस्वरूप इस बच्चे को दे दीजिये।"

क्या इन सफेदपोशों को त्याग और सद्भावना का दर्शन कराने के लिए ही भगवान् ने इस बहन को इस समय यहाँ पदार्पण करने की प्रेरणा दी थी ?

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः

विनोबाजी जहाँ बैठे थे, सामने ही पुलिस का थाना था। एकाएक उधर लोगों की भीड़ नजर आयी। बात की बात में सैकड़ों लोग जमा हो गये। मालूम हुआ कि कुद्दू पटेल की लाश लायी गयी है। कुद्दू पटेल गोंड था। पास ही के गुंडीगुडम् गाँव का साकिन। बहादुर था वह ! अकेले ९० से अधिक शेरों का शिकार कर चुका था। दुनिया की खबरों से कुछ वाकिफ था। गोंडों में काम भी करता था। पहले ही रोज उसने लोगों को बताया था कि कल विनोबाजी आसफाबाद आ रहे हैं, वहाँ सबको चलना है।

उसने रात को चलने की सब तैयारी कर ली थी। एक मित्र से जरूरी काम से मिलने जा रहा था। घर से बाहर निकला ही था कि एक गोंड कम्युनिस्ट ने गोली से मार डाला। कुद्दू पटेल की हत्या भू-दान-यज्ञ के प्रति कम्युनिस्टों के रोष का प्रदर्शन भी हो सकता था, जिसे वे विनोबाजी के हैदराबाद छोड़कर जाने से पहले उन पर जतलाना चाहते हों। मंचेरियाल में भी उस रोज नलगुंडा के उस लड़के की हत्या किये जाने की खबर आयी ही थी। आज फिर यह घटना घटी। कम्युनिस्टों ने तो अपने प्रभाव और शक्ति का प्रदर्शन करने के खयाल से ही यह सब किया होगा। परंतु उनको कौन समझाये कि यह '**विनाशकाले विपरीतबुद्धिः**' ही है।

● ● ●

दान अच्छी जमीन का ही : ५६ :

बाँकड़ी

१२-६-'५१

शाम की उस घटना का घाव लेकर विनोबा अगले पड़ाव बाँकड़ी पर पहुँचे ही थे कि केशवरावजी गाँव के एक सीधे-सादे गोंड किसान को विनोबाजी से मिलने ले आये। विनोबाजी ने उसे भी भूदान का विषय समझाया और अंत में पूछ लिया : "कुछ जमीन वगैरह रखते हो ?"

"जी !"

"कितनी ?"

"साठ एकड़।"

"गरीब के लिए कुछ देना चाहोगे ?"

"जी !"

"कितनी ?"

"कितनी देनी चाहिए ?"

"कितने लोग हैं घर में ?"

"तीन भाइयों का परिवार है।"

"चौथा हिस्सा गरीब के लिए दे सकोगे ?"

"ठीक है, पंद्रह एकड़ लिख लीजियेगा।"

"जमीन कैसी है ?"

"यह पंद्रह एकड़ अच्छी । अभी जोतकर तैयार की है, बोनी के लिए । बाकी सब परती है। लेकिन दान तो अच्छी जमीन का ही देना चाहिए न ? यह जुता हुआ नंबर आप लिख लीजिये। मैं अपने लिए और जोत लूँगा। गरीब कहाँ से जोतेगा ?"

क्षणभर में उस मूर्ति ने सबको अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। विनोबा की आँखों में करुणा साकार हो उठी। प्रेम और उदारता का कैसा अद्भुत दर्शन था! थोड़ी देर कमरे में बिलकुल स्तब्धता छा गयी। फिर विनोबाजी ने केशवरावजी की ओर देखकर कहा : "इस जमीन का बँटवारा भी क्यों न कर दिया जाय?"

"बहुत अच्छा होगा।"

"आप हो आइये।"

कल उधर उन वकीलों की उदासीनता और काहिली को मानवता ने उस प्रेम-मूर्ति माता के रूप में चुनौती दी थी और आज इधर कम्युनिस्टों के हिंसाकांड को इस महान् चक्रवर्ती बलिराजा के त्याग ने हतप्रभ कर दिया। वास्तव में इन घटनाओं में सिर्फ कम्युनिस्ट-समस्या का ही जवाब नहीं, संसार की सभी समस्याओं का हल छिपा नजर आता है।

● ● ●

कृष्ण का व्रत

: ५७ :

देवड़ा
१३-६-'५१

सह्याद्रि की कतारें शुरू हो गयी हैं। रास्ते के दोनों ओर घना ऊँचा साग-वन दिखाई दे रहा है। सड़क लाल मिट्टी से छायी हुई है। काफिला चला जा रहा है। एक सहयात्री ने अपने मन की शंका दूर करने के खयाल से पूछा : "जापान की तरह गाँव-गाँव और घर-घर में बिजली का उपयोग क्यों न करना चाहिए ? सारे यंत्र बिजली के द्वारा क्यों न चलें ? सारे ग्रामोद्योग भी बिजली द्वारा ही क्यों न चलें ?"

विनोबा : "अब एक और सवाल पूछ लीजिये कि जापान की तरह गुलाम भी क्यों न रहना चाहिए ? फिर अंग्रेजों को इससे ज्यादा और कोई खुशी नहीं हो सकती। बात यह है कि हम लोगों की समझ में अब तक यह नहीं आ रहा है कि रेल पाँव की बराबरी नहीं कर सकती। हमारी अपनी जो समस्याएँ हैं, उनका हल भी हमें अपने तरीके से खोजना चाहिए। हमारे यहाँ जनसंख्या बढ़ रही है, पर आराजी तो नहीं बढ़ती। पहले आराजी ज्यादा थी और जनसंख्या कम। फिर भी लोग खेती करके कपड़ा बना लेते और बाहर के मुल्कों को भेजते थे। अब आराजी कम है, खेती के लिए उतना समय नहीं देना पड़ता, फिर भी अब पहले की तरह काम क्यों नहीं करते ? इसीलिए कि लोग आलसी बन गये हैं। मैं बिजली या यंत्र के खिलाफ नहीं। फिर भी यंत्र-शक्ति के उपयोग की मर्यादा रहनी चाहिए। पहले जन-शक्ति का पूरा उपयोग कर लेना चाहिए। ऐसा क्यों नहीं होता कि सौ मील के भीतर माल रेल से नहीं, बैलगाड़ियों से ही आया-जाया करेगा ? आज हम देखते हैं कि तीन-तीन माह तक

चरखे स्टेशन पर पड़े रहते हैं, उनके लिए वैगनें नहीं मिलतीं, जब कि इस बीच वे बैलगाड़ियों से कई बार पहुँच जाते। सड़कें तो पहले भी थीं और आज भी हैं। पहले बैलगाड़ियों का उपयोग होता था और आज नहीं होता है।

"आखिर यह गति बढ़ाने की इतनी तीव्रता क्यों है ? गति बढ़ाने पर उत्पादन बढ़ेगा। फिर मंडियों की खोज होगी। जापान की निगाहें चीन और आस्ट्रेलिया पर हैं, पर उनसे अब कुछ बन नहीं पाता। भारत भी वैसी ही लाचारी महसूस करेगा। इसलिए गति बढ़ाने की चिंता फजूल है। पहले स्वावलंबन, ग्रामोद्योग आदि बातों की फिक्र करनी चाहिए या फिर स्वराज्य गँवाने की तैयारी करनी चाहिए।"

गोंडों के बीच

गाँव दूर से दिखाई दे रहा था। स्वागत करनेवालों में गोंड स्त्री-पुरुष ही अधिक थे। पड़ाव का सारा प्रबंध उन्हींके सिपुर्द था। पंढरीनाथ गोंड, जो इस तहसील के प्रथम और एकमात्र सत्याग्रही थे, खुद सारा प्रबंध देख रहे थे। गोंडों के खाने-पीने और रहन-सहन के रस्मोरिवाज स्वतंत्र और पुराने ढंग के होते हुए भी पद-यात्रियों के लिए सारा आवश्यक प्रबंध बहुत सुंदर और आतिथ्यपूर्ण किया था।

राजुरा और आसफाबाद तहसीलों की दो लाख की बस्ती में गोंड करीब पचीस हजार तो होंगे ही। इनके बारे में शिकायत यह है कि वे एक जगह टिककर नहीं रहते। हाथ से ही खेती करते हैं। पास में एक छोटी कुदाल रखते हैं, जिससे जमीन पर लकीरें घसीटकर तिल और जौ आदि छिड़क देते हैं। अक्सर पाँच आदमी का परिवार होता है, जो सबका-सब खेती में जुटा रहता है। दो एकड़ में दो खंडी अनाज पैदा कर लेते हैं। गर्मी में अक्सर गुलमोहा, तेंदू, टेंबरा और चिरंजी खाकर रहते हैं। जमीकंद पर भी गुजर कर लेते हैं। सन्नागड्डा, नल्लागड्डा, तेल्लागड्डा आदि इनके प्रिय कंद हैं। सात वक्त उबालकर, छिलका निकालकर एक

रोज नदी या तालाब में भिगोये रखकर फिर खाते हैं। कम उबाले कंद खाने से बेहोशी और बिना उबाले खा जायँ, तो मृत्यु, यह इन कंदों की प्रकृति है।

सामाजिक रीति-रिवाज अभी तक पुराने ही चलते आ रहे हैं। स्त्रियों में चोली पहनने का रिवाज नहीं है। वे सारे शरीर पर खूब चित्र-विचित्र नक्काशी कर लेती हैं। स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक प्रभावी रहती हैं। शादी-ब्याह में शराब और बकरा, दोनों खूब चलते हैं। एक जमाने में गोंडों का अपना राज्य था। आज भी कुछ लोग उसका सपना देखते हैं और स्वतंत्र राज्य कायम करने की कोशिशें करते रहते हैं। लोग भी उनके बहकावे में आ जाते हैं। ऐसी ही कोशिश करनसिंह नामक एक गोंड ने की थी और सरकार से उसका झगड़ा भी काफी चलता रहा। कम्युनिस्टों से उसका संपर्क था, ऐसा भी बताया गया। कुद्दू पटेल की हत्या में उसका भी हाथ होना चाहिए, ऐसी शंका लोगों ने प्रकट की।

भर-भरकर दो—भर-भरकर पाओ

आज की प्रार्थना-सभा में गोंड लोग ही ज्यादा थे। विनोबा का प्रवचन भी उन्हींको ध्यान में रखकर हुआ :

"परमेश्वर अनेक अवतार लेता है। आज उसने दरिद्रनारायण का अवतार लिया है।"—विनोबा ने बोलना शुरू किया।—"लोग मुझसे पूछते हैं कि इस कलियुग में क्या कोई जमीन देगा ? मैं कहता हूँ, देता है या नहीं, देख लो। जो जमीनें हमें मिली हैं, वे पिस्तौल से तो नहीं मिलीं। गये, समझाया और पायी। हम लोगों के पास जाते नहीं; उनके भीतर भगवान् है, उसे जगाते नहीं, तो जमीन मिले कैसे ?

"परसों एक गाँव में कम्युनिस्टों ने एक गोंड को मार डाला। उनका कहना है कि यहाँ गोंडों का राज्य है। पहले बादशाह के बेटे को बादशाह का तख्त मिलता था। लेकिन आज तो हरएक का राज्य है। इसलिए जवाहरलालजी के बेटे को जवाहरलालजी का तख्त

नहीं मिलेगा। गोंडों में फूट के बीज बोये जा रहे हैं। यह सही है कि किसी जमाने में यहाँ गोंडों का राज्य था। पर अब किसी एक का राज्य नहीं हो सकता। अब लोकसत्ता है, सबका राज्य है। तुम अपने में से अच्छे लोगों का चुनाव करो, तो तुम्हारा ही राज्य होगा।

"इसलिए मैं कम्युनिस्टों से कहता हूँ कि मेरी तरह प्रेम से माँगो, प्रेम से समझाओ। खुलेआम माँगो, खुलेआम समझाओ। मैं बार-बार समझाने को तैयार हूँ। मेरे पास सिर्फ ज्ञान ही है, जो मैं दे सकता हूँ। आपको कृष्ण और अर्जुन की कहानी मालूम है न? दुर्योधन ने सारी सेना माँगी और अर्जुन ने सिर्फ कृष्ण को माँग लिया। कृष्ण ने उसके सामने प्रस्ताव ही वैसा रखा था, या तो सेना ले लो या मुझे। अर्जुन ने कृष्ण को ही पसंद किया। मैंने भी कृष्ण का ही व्रत लिया है। मुझे हाथ में कुछ लेना नहीं है। सलाह की चार बातें कहना मात्र है। इसलिए सबसे मेरा कहना है कि भाइयो, दो, भर-भरकर दो और भर-भरकर पाओ।"

क्या दरख्त भी सेंदी पीकर खड़े हैं?

शाम को विनोबाजी घूमने निकले, तो रास्ते में दो-चार लोग मिले, जो सेंदी पीकर नशे में चूर थे। विनोबा को देखा, तो डर गये। पाँव पकड़ लिया, क्षमा माँगने लगे। विनोबा ने प्यार से हरएक को एक-एक चपत लगायी और धमकाया भी कि "आइन्दा मत पीना।" पियक्कड़ों ने पुनः प्रणाम किया और चंपत हुए।

"यहाँ सेंदी इतनी ज्यादा है कि लगता है, दरख्त भी सेंदी पीकर ही खड़े हैं।"––विनोबा ने अपना दुःखभरा निरीक्षण सुनाया।

कोई जाति-भेद निर्माण नहीं करना चाहते

चाँदा से एक कार्यकर्ता २६ मील साइकिल की सवारी से मिलने आये। कहने लगे: "चाँदा में जहाँ आपके ठहरने का प्रबन्ध किया गया है, वहाँ मत ठहरिये। वे आजकल नगराध्यक्ष हैं। उनके हाथों बड़ा अन्याय हो रहा है।" उन्होंने यह भी शंका प्रकट की कि वे और उनके

साथी विनोबा से मिलने के लिए शायद उनके घर न जा सकेंगे। इसीलिए उन्होंने विनोबा को अपने यहाँ ठहरने का आग्रह भी किया।

विनोबा ने कल्लड़ा का दृष्टांत दिया और शांतिपूर्वक समझाया कि "हम ऐसा कोई जाति-भेद निर्माण नहीं कर सकते। क्या आप सज्जन हैं और वे दुर्जन हैं? क्या वह नहीं कहेगा कि आपने मुझे पूछा भी नहीं और मेरे यहाँ का निवास रद्द कर दिया?

"फिर आप जानते हैं, मैं किसीके घर तो खाता नहीं हूँ। परमात्मा का खाता हूँ। जहाँ भी योजना की गयी हो, ठहर जाऊँगा। सूरज सबके यहाँ पहुँचता है। प्रकाश देना उसका काम है। नारद सबके यहाँ जाता था या नहीं? बस, हम भी सबके यहाँ जायँगे। आपको भी वहाँ आना चाहिए, जहाँ मैं ठहरनेवाला हूँ। आपको अपनी बातें बतानी चाहिए–लिखकर देना चाहिए, सामने बातें हो जायँगी। मैं वहाँ ठहरा हूँ, इसलिए अगर वहाँ कोई न आये, तो मैं खुश हूँ। रोज तो सभा आदि का कर्मयोग होता ही है, उस रोज ध्यानयोग हो जायगा। मुझे कम लोगों में रहने और उनसे बोलने की आदत है। पवनार में मैं बड़ी-बड़ी तकरीरें करता हूँ, परंतु सुननेवाले कितने होते हैं? १०-२० आश्रमवासी। तो, लोग अगर न आयेंगे, तो मुझे अफसोस न होगा।

"कल्लड़ा में मुझे लोगों ने ऐसा ही कहा था। वहाँ हमने व्याख्यान में यही विषय रखा। उस जमींदार ने मुझे ढाई सौ एकड़ जमीन दी। ८-१० रोज वे हमारे साथ रहे। दूसरे लोगों से भी जमीन दिलवायी। हमने देखा कि आखिर वह हमारा भक्त बन गया। कितने ही लोगों में ऐसा परिवर्तन हो गया है।"

प्रथम भूमि-वितरण

इधर विनोबाजी घूमकर लौट रहे थे, उधर से केशवरावजी भी आते दिखाई दिये। केशवरावजी को देखकर सहयात्री भी जमा हो गये। उस गोंडवाली १२ एकड़ जमीन के वितरण का हाल जानने को सभी उत्सुक थे।

केशवरावजी ने विनोबा को प्रणाम किया। हमेशा ही करते हैं, पर आज के प्रणाम में कृतकृत्यता की अनुभूति थी। विशेष आनन्द से केशवराव का रोम-रोम हर्षित था। हर शब्द उनके अभिभूत हृदय का परिचायक था। कहने लगे : "तीन हरिजन परिवारों में उस भूमि का वितरण कर दिया गया है। भूमिहीनों को यकीन नहीं हो रहा था कि क्या मामला है। लगता था, स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं! किसीने ऐसा कभी सुना-देखा नहीं था। लेकिन भूदान से यह सब हुआ! गाँव में, गाँव के इर्द-गिर्द, चारों ओर आश्चर्य की एक लहर-सी चल पड़ी है। दाता और आदाता, दोनों ने अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन का अनुभव किया।" बोलते-बोलते केशवरावजी की आँखें भी बोल उठीं। नये युग की झाँकी पाकर लौटे थे। प्राप्ति का सुख तो पिछले दो माह से सतत अनुभव किया ही था, किंतु वितरण का यह एक विशेष आनंद था। भूमि-वितरण का यह प्रयोग और प्रसंग संसार में अपने ढंग का शायद पहला ही हो। ● ● ●

ईश्वर की प्रयोगशाला : ५८ :

राजुरा
१४-६-'५१

हैदराबाद राज्य का आखिरी पड़ाव। स्वागत-समिति के अध्यक्ष आर० एस० एस० के विचारों के बताये गये। पर गाँववालों में कुल मिलाकर आपस में प्रेम दिखाई दिया। अगवानी में लोग एक मील तक लेने आये। उनमें खूब भक्तिभावना प्रकट हो रही थी। एक कारण यह भी था कि श्री अंबादास भाई सूर्यवंशी ने यहाँ पहले से गीताई का काफी प्रचार कर रखा था। अंबादासजी वैसे काम तो सेगाँव में करते थे—विद्यालय में शिक्षक थे, भावुक, त्यागी और प्रज्ञावान् भी। यह सारा इलाका उनका कार्यक्षेत्र ही था। यहाँ उनके कारण 'सेवक' तथा 'सर्वोदय' के कुछ ग्राहक भी हैं। यहाँ गीता-प्रवचन आदि विनोबा-साहित्य चाव से पढ़ा जाता है। प्रातःकाल विनोबा के आगमन के बाद तुरंत ही तीस रुपये से अधिक का साहित्य बिक गया।

बच्चों के बीच

प्रातःकाल के भाषण में विनोबा ने श्रीमान् और गरीब की व्याख्या करते हुए अपने हाथ दिखाकर कहा : "ये देखो गरीब !" फिर सिर दिखाकर कहा : "यह देखो श्रीमान् !" फिर उन्होंने पूछा : "क्या दोनों में विरोध है ? इसलिए जिसके पास जमीन है, वह उसे उसके लिए दे, जिसके पास नहीं है।"

सामने की कतार में बच्चे बैठे थे। उनसे ही बातचीत शुरू हुई। "बताओ बच्चो, पंढरपुर की यात्रा कौन करें ? क्या श्रीमान् ही करें और गरीब न करें ?"

"सब करें।"

"सूर्य किसके घर प्रवेश करें? श्रीमान् के घर करें और गरीब के घर में न करें?"

"सबके घर में करें।"

"पानी कौन पीये? क्या श्रीमान् ही पीये और गरीब न पीये?"

"सब पीयें।"

"तो, अब एक बात और बताओ! गरीबों को जमीन मिलनी चाहिए या नहीं, तुम्हारी क्या राय है?"

"मिलनी चाहिए।"—एक स्वर से सबने जवाब दिया।

"तो, जाओ, अपने माता-पिता से कहो कि विनोबा की झोली में जमीन डालो। उनसे कहो कि चाहे हमें मत दो, परंतु दरिद्रनारायण के लिए दो।"

जय-विजय की बिदाई

केशवराव और कोदंड रेड्डी, दोनों विनोबाजी से बिदा माँगने आये। गत दो मास की सारी स्मृतियाँ पुनः ताजी हो उठीं। अब तक के राजनैतिक कशमकश के जीवन से भिन्न जीवन की अनुभूति करानेवाले परमहितकारी संत के चरणों का बिछोह था। दोनों असमंजस में थे कि कर्तव्यवश ही लौटना है, वरना जी तो नहीं चाहता। विनोबा का भी हृदय भर आया। आगे की जिम्मेवारी निबाहने के लिए संत के आशीर्वाद का संबल लेकर जय-विजय बिदा हुए।

गरीब लोगों की दरख्वास्तें आज भी काफी आयीं। कोर्ट भी हुआ। इसलिए इन दोनों का अभाव आज और भी तीव्र महसूस हुआ।

बीच बाजार में सभा

जहाँ विनोबा का निवास था, सामने ही सभा के योग्य बड़ा मैदान रहा। परंतु सभा गाँव में बाजार के बीचोबीच रखी गयी थी। धूल-मिट्टी, कीचड़, कूड़ा-करकट, सभी वहाँ था। सभा का स्थान देखकर विनोबा ने

कहा : "यहाँ हमारे दिल को प्रसन्नता नहीं लग रही है।" और वे लौटकर उसी मैदान में पहुँच गये। सारा जन-समुदाय भी उनके पीछे हो लिया। लड़के फुट-बॉल खेल रहे थे। विनोबा को देखकर उन्होंने खेल बंद कर दिया। उत्तर दिशा की ओर मुँह करके विनोबा खड़े हो गये और प्रार्थना शुरू कर दी। फिर ४५ मिनट तक स्फूर्ति-गंगा बहती रही। प्रेम-योग का निरूपण हुआ।

नर करनी करे, तो नारायण हो जाय !

"एक नवीन युग का आरंभ हुआ है। वामन का अवतार हुआ है, जो बलिराजा के पास दान माँग रहा है। दरिद्रनारायण की झोली बहुत बड़ी है, लेकिन काम बहुत आसान है। इसके लिए इंद्रिय-निग्रह, वेदाभ्यास, तपश्चर्या, उल्टे लटकना, पानी में खड़े रहना आदि किसी प्रकार के कठिन प्रयोगों की आवश्यकता नहीं। न छोड़ो अन्न और न छोड़ो धाम। सहज धर्म का पालन करो। दान किये जाओ और नाम जपते जाओ।"

मनुष्य-जन्म का वैशिष्ट्य समझाते हुए उन्होंने पशु और मनुष्य का फर्क बताया :

"पशु की अपनी मर्यादा है। वह न अधिक पाप कर सकता है, न पुण्य ही। पर मनुष्य का तो ऐसा है कि 'नर करनी करे, तो नर का नारायण हो जाय।' इसलिए मनुष्य याने ईश्वर की प्रयोगशाला है। प्रयोग किये जाओ। बुरे कर्म करोगे, तो बुरे फल पाओगे। अच्छे कार्य करोगे, तो अच्छे फल पाओगे।"

हाथ दिये कर दान रे

देने की प्रेरणा करते हुए उन्होंने कहा :

"आज सब लूटना जानते हैं, देना नहीं जानते। लोगों को देने का अभ्यास ही नहीं है। वह (अभ्यास) करना होगा। आखिर ये हाथ किसलिए दिये गये हैं? मारने के लिए नहीं। गधा अपने पैरों से

मारता है। मनुष्य हाथों से मारता है। दोनों में क्या फर्क हुआ? **"हाथ दिये कर दान रे।"** भाइयो, हाथ इसीलिए दिये हैं कि खूब दान करो। तो, अब आप दीजिये। जो कोई देगा, मैं स्वीकार करूँगा।"

एक वृद्ध भाई ने शुरू में आध एकड़ जमीन दी। दूसरे एक भाई आये—गरीब किसान। फटे कपड़े! एक कागज दिया। कागज में लिखा था, 'महाराज, मेरी सोलह एकड़ जमीन आपको अर्पण!' फिर एक तीसरे भाई को अम्बादासजी ले आये। उसने सात एकड़ का दान-पत्र भर दिया। और एक भाई आये। देरी से आये। सभा में उपस्थित नहीं थे, परंतु सुन रखा था। उन्होंने पचास एकड़ का दान दिया। और भी लोगों ने दिया। पचहत्तर से अधिक एकड़ जमीन हुई।

और अंत में एक युवक आये। अपनी ओर से और अपने भाई की ओर से उन्होंने पाँच सौ पचीस एकड़ का दानपत्र भर दिया तथा अपने-आपको इस भू-दान-कार्य के लिए समर्पित भी कर दिया। अनुभव और दीक्षा पाने की दृष्टि से उन्होंने वर्धा तक की यात्रा में साथ रहने की इच्छा प्रकट की, जिसे विनोबा ने सहर्ष मंजूर भी कर लिया। हैदराबाद-यात्रा की समाप्ति पर गोपालरावजी के दान का यह एक शुभ शकुन ही हुआ। हृदय-परिवर्तन की क्रांतिकारी कीमिया का पुनः एक बार साक्षात्कार हुआ!

● ● ●

जागतिक प्रश्न : ५६ :

बल्लारपुर
१६-६-'५१

"रमारमण गोविंदो हरि" के रूप में तेलंगाना-यात्रा की स्मृति लेकर कृतकार्य विनोबा ने नित्य की तरह ठीक पाँच बजे कूच कर दिया। वरदा नदी में उस पार मध्यप्रदेश के मित्र प्रतीक्षा कर रहे थे। पीछे बहुत बड़ा जन-समुदाय बिदा करने आया था। सामनेवाले लोगों ने, जैसे ही भगीरथ को नदी की बालू में उतरते देखा, शंख, सनई, उद्घोष और जयजयकार द्वारा आंतरिक आनंदानुभूति प्रकट करना शुरू किया।

नदी में प्रवेश किया—जंघा बराबर पानी! कहीं बालू, तो कहीं कीचड़! कहीं गहरा, कहीं कम! कहीं ठंढा, कहीं गरम! कहीं खिंचाव, कहीं स्थिरता! वरदा आगे गोदावरी में विलीन होकर समुद्र में मिलती है। मानो वह व्यक्तिगत जीवन को समष्टि में विलीन करके अनंत में जाकर मिलने की प्रेरणा ही दे रही है।

दादा की श्रद्धा

विनोबा ने जैसे ही पानी के बाहर बालू में कदम रखा, सर्वप्रथम दादा (आचार्य धर्माधिकारी) ने प्रणाम किया। दादा का सारा हृदय मानो बाहर उमड़ आना चाहता था। क्रांतिकारी तत्त्ववेत्ता और प्रतिभावान् भाष्यकार का मिलन था वह! उन थोड़े-से क्षणों में भी अपने स्वभावानुसार दादा ने मार्मिक वचनों, अर्थपूर्ण उत्प्रेक्षाओं तथा विनोद और संकेतभरे वाक्प्रयोगों के साथ विनोबा का मानो अनेकविध गौरव ही कर लिया : "विनोबा, आप यह सब चमत्कार करके न खुद चैन लेंगे, न हम लोगों को चैन लेने देंगे। लेकिन आपने

बड़ा उपकार किया, हम सबको उबार लिया। नहीं तो बापू के बाद हम गांधीवाले कहींके न रहते । बाकी सारा श्रेय तो उन कम्युनिस्टों को है कि आपको उधर घसीट ले गये।"

विनोबा के गंभीर चेहरे पर मुस्कराहट छा गयी। पर दादा को जवाब क्या देते ? एक ही शब्द कहा : "कुछ रास्ता मिला दीखता है।"

लेकिन और भी मिलनेवाले लोग थे। पुराने अनेक मित्र आये थे। सर्वश्री खुशालचन्द खजांची, छगनलालजी, शंकररावजी वेले, सभी थे। महिलाश्रम से श्री विजया थत्ते पद-यात्रा में शरीक होने आयी थीं। इनके भाई राम थत्ते तो मंचेरियाल से ही साथ थे। विनोबा ने सबका प्रणाम स्वीकार किया और सबको नम्रभाव से वंदना की। कलेवे का समय हो गया था। बालू में बैठकर कलेवा किया। इतने में प्रांताध्यक्ष श्री कन्नमवार तथा अन्य मित्र लोग भी आये। मध्यप्रदेश की ओर से पहला स्वागत था वह! पूरे समारोह से सारा आयोजन किया गया था। स्वयंसेवक, पताकाएँ, जुलूस और जनता, जिसमें विशेष-कर बल्लारपुर की खानों में काम करनेवाले मजदूर थे! स्वागत में सभी उत्साह से शरीक थे।

प्रांताध्यक्ष का आश्वासन

डेरे पर पहुँचने पर प्रांत की ओर से स्वागत करते हुए श्री कन्नमवारजी ने कहा :

"आज का दिवस महान् सौभाग्य का है। एक हजार मील की पदयात्रा कर विनोबाजी लौटे हैं। उन्होंने हमें निराशा में आशा का मार्ग दिखाया। देहलीवाले भी विस्मित हैं कि विनोबाजी ने अँधेरे में उजाला कर दिया, शांतिमय क्रांति का मार्ग बताकर देश में पुनः एक बार आत्मविश्वास निर्माण कर दिया। पंडित जवाहरलालजी से लेकर छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता के मन में एक प्रकार की निराशा छा गयी थी। विनोबा ने ऐसे समय तेलंगाना में एक ऐसा चमत्कार

किया कि सारे देश की आँखें आशा से उनकी ओर लग गयीं। हम उनका हृदय से स्वागत करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि मध्यप्रदेश की जनता भी उनके आवाहन पर तैयार रहेगी।"

प्रार्थना-सभा का प्रबंध किले में था, जो आज भी गोंड-राज्य के गौरवपूर्ण अतीत की झाँकी दे रहा था। प्रारम्भ में विनोबाजी ने पद-यात्रा की पार्श्वभूमि बतायी कि किन परिस्थितियों में उन्हें शिवरामपल्ली-सम्मेलन में जाना पड़ा।

विचार लंबे अरसे से चल रहा था

फिर उन्होंने अपनी गत दो माह की यात्रा के सिलसिले में कहा : "अब आगे चुनाव आनेवाले हैं। चुनाव के पहले कहीं भी अशांति रहना देश के लिए ठीक नहीं है। इसलिए तेलंगाना के इलाके में हो आने की इच्छा थी। परंतु यह कोई पता नहीं था कि वहाँ कहाँ जाना होगा, किससे मिलना होगा, कहाँ ठहरना होगा और क्या कहना या करना होगा। फिर लौटकर भी आना होगा या नहीं, इसलिए वर्धा से चलते समय लक्ष्मीनारायण-मंदिर की उस सभा में मैंने कहा था कि अब आगे कब मिलना होगा, नहीं कह सकते। हो सकता है कि यह भेंट आखिरी ही साबित हो, क्योंकि कम्युनिस्टों के मुल्क में जाना था। विचार यद्यपि लंबे अरसे से चल रहा था--वह पक रहा था, इसलिए मैंने प्रकट नहीं किया।"

शब्द-शक्ति और परमेश्वर की कृपा

इसके बाद हैदराबाद-जेल में कम्युनिस्टों के साथ की मुलाकात, रामनवमी की शाम की ऐतिहासिक प्रार्थना, तेलंगाना-प्रवेश, पोचमपल्ली तक का अनुभव, पोचमपल्ली का पहला दान आदि सारा विस्तार से समझाकर आगे जिस तरह काम किया, जैसी जमीन माँगी और जैसी मिली, उन सबके संबंध में उन्होंने अपनी भावना प्रकट की :

"मेरे पास जितनी भी शब्द-शक्ति है, सबका मैंने प्रयोग किया।

अपने जीवनभर की सारी शक्ति मैंने वहाँ लगा दी। लेकिन केवल शब्द-शक्ति का प्रयोग करने से काम नहीं चलता। परमेश्वर की कृपा के बिना शब्दों में ताकत नहीं आती। फिर भी मैंने देखा कि जिस प्रभु ने शब्द-शक्ति दी, उसीने उन शब्दों में ताकत भी भर दी।

दाता ही प्रचारक बने

"आप लोग जानते हैं कि मैं कोई आंदोलन-प्रवर्तक नहीं हूँ। मेरी वृत्ति में ही नहीं है कि किसी भी तरह कुछ-न-कुछ काम होना ही चाहिए। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि बिना समझे लोग कुछ न करें। इसलिए मैं उन्हें बराबर कहता कि विचार समझने पर भी यदि आप भूमि न देंगे, तो मुझे खुशी होगी। लेकिन बिना विचार समझे देंगे, तो दुःख जरूर होगा। होना यही चाहिए कि जिसने मुझे जमीन दी, उसने इसीलिए दी कि उसे विचार मंजूर है, इसीलिए फिर वह खुद मेरा प्रचारक बन जाय।

"और हुआ भी ऐसा ही। बहुत बार ऐसा हुआ कि जिन्होंने दान दिया, वे मेरे साथ अगले पड़ावों पर आये। एक प्रचारक-मंडल ही मेरा बन गया। वहाँ अनंतहस्तेन काम हुआ। यह नहीं होता, अगर परमेश्वर की कृपा इसमें न होती।

"मैंने जो दान का विचार समझाया, वह कोई एक बार थोड़ा-सा देने का विचार नहीं था। मैंने कहा कि भविष्य में मेरी भी जरूरत न होनी चाहिए। आप लोग खुद ही देना शुरू कर दो। और मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि जिनको दुर्जन समझा गया था, वे सज्जन साबित हुए—न सिर्फ हमारी नजरों में, न सिर्फ औरों की नजरों में, खुद उनकी अपनी नजरों में भी। इस तरह लोगों के दिलों से भय दूर हुआ।

पद्धति का महत्त्व

"भू-दान में जमीन कितनी मिली, यह हिसाब महत्त्व का नहीं है। मैं गणितज्ञ हूँ, परंतु मेरी निगाह में भी दान का महत्त्व नहीं है। महत्त्व उस पद्धति का है, जिसके जरिये यह दान मिला—जिसके आधार से दान

मिला और जिसके आधार से अब वितरण भी किया जा रहा है तथा किया जायगा, दोनों पद्धतियों को समझने की जरूरत है। यह पद्धति ही महत्त्व की वस्तु है।"

वास्तविक लब्धि

इसके बाद विनोबाजी ने वितरण-पद्धति, भू-दान-समिति के सदस्यों के चुनाव के पीछे की अपनी दृष्टि, उन लोगों की पक्ष-निरपेक्ष-शून्यत्व की भूमिका आदि सब समझाकर आगे कहा :

"गीता-माता ने हमें समझा रखा है कि आसक्ति मत रखना। कर्मयोग के लिए अनासक्ति की आवश्यकता होती है। कर्म का फल मिलना चाहिए और शीघ्र मिलना चाहिए, यह वृत्ति गलत है। हमें इस दृष्टि से इस आंदोलन की ओर देखना ही नहीं चाहिए। यही देखना चाहिए कि लोग अहिंसात्मक रास्ते की खोज में थे, चाहते थे कि निराशा की परिस्थिति न रहे। इसलिए गांधीजी ने एक रास्ता हमें बताया था। तेलंगाना में उस रास्ते का, उस विचार का साक्षात्कार हमें हुआ है। यही लब्धि है, इसीको हमें देखना चाहिए।

ममत्व छोड़ें

"जमीन तो मैंने एक संकेत के तौर पर माँगी है। हेतु यही है कि हर कोई दे, जिसके पास जो चीज है, वही दे। हवा और पानी की तरह भूमि सबके लिए है, यह विचार सब समझें। देने की आदत डालें। ममत्व छोड़ें और निर्ममत्व का अनुभव करें। उपकार की भावना न रखें। ममत्व का भार कम करने की दृष्टि रखें।"

और फिर अंत में उन्होंने कहा :

जागतिक समस्या

"यह जरूरी नहीं है कि पहले कम्युनिस्टों द्वारा खूब हानि हो और फिर जमीन भू-दान में मिले। इसलिए जिस-जिसके पास जमीन है, वे दें। यह न समझें कि यह समस्या वरदा नदी के उस पार की है।

आप जानते हैं कि मेरा तो एक परमेश्वर पर ही पूरा आधार है। तो क्या मैं परमेश्वर से कम्युनिज्म के प्रचार की प्रार्थना करूँ, जिससे यह भू-दान सफल हो सके? यह गलत होगा। तो, आप लोग समझिये कि यह प्रश्न केवल तेलंगाना का नहीं, केवल मध्य-प्रदेश या भारत देश का नहीं, यह जागतिक प्रश्न है। क्या आप नहीं जानते कि जापान की हालत क्या है? कितनी कम भूमि में वे गुजर-बसर कर रहे हैं? रहने के लिए भी उनके पास पर्याप्त भूमि नहीं है। क्या उन्हें बाहर भूमि न मिलनी चाहिए? इसलिए आप इस विचार को समझिये। मुझे विश्वास है कि एक बार आप विचार समझ जायँगे, तो मुझे भगवान् भर-भरकर देगा—अनंत हाथों से देगा। और जब भगवान् अनंत हाथों देने लगता है, तो मनुष्य दो हाथों कितना ले सकता है!"

● ● ●

सबको सन्मति दे भगवान् ! : ६० :

चाँदा
१६-६'-५१

जिले का मुख्य स्थान था और वर्धा तक की मंजिल में यही बड़ा मुकाम था। रास्तेभर बिसापुर, नांदगाँव, बाबूपेठ आदि सभी गाँवों में बहुत भाव-भरा स्वागत हुआ। एक गाँव की सीमा से दूसरे गाँव की सीमा तक गाँव-गाँव की कीर्तन-मंडलियाँ पहुँचाने आतीं और इस तरह बल्लारपुर से चाँदा तक रास्तेभर ज्ञानदेव, तुकाराम का उद्घोष गूँजता रहा। शहर में कम-से-कम पंद्रह स्थानों पर तो भिन्न-भिन्न प्रकार के द्वार सजाये ही गये थे। जनता हजारों की संख्या में उमड़ पड़ी थी।

भूदान में सभी समस्याओं का हल

दिनभर कार्यक्रम बहुत भरा हुआ रहा। कताई-मंडल, मजदूरों के प्रतिनिधि, भूमिवान्, नागरिक-जन, मेहतरों के प्रतिनिधि तथा वर्धा और पवनार का परिवार भी आ पहुँचा था, जिनमें गौतम और माला जैसे वानर-सेना के सदस्य भी थे।

शहर के प्रमुख नागरिकों के सामने बोलते हुए विनोबाजी ने तेलंगाना की सारी परिस्थिति का हूबहू चित्र तो उपस्थित कर ही दिया, विविध प्रकार से मिले दान का भी जिक्र किया। लेकिन जमीन के बारे में वृत्ति उदासीन रखी। नम्रता से सिर्फ इतना ही कहा कि "वहाँ मैंने काफी शक्ति लगायी। लेकिन अब तो मैं लौट रहा हूँ। नदी बहती जा रही है, जिसे लाभ उठाना हो, उठाये। जिनकी जमीनें हैदराबाद राज्य में हों, वे तो जरूर दें ही। एक बार जब असंतोष निर्माण हो जाता है, तो उसके लिए कम्युनिज्म की जरूरत नहीं होती। हरिजन-हरिजनेतर, ब्राह्मण-

ब्राह्मणेतर, किसी रूप में झगड़ा शुरू हो सकता है। मैं चाहता हूँ कि ये सारे झगड़े समाप्त हो जायँ। भू-दान में मुझे इस समस्या का हल दीखता है। अब आप लोग सोचें।"

स्वराज्य के संरक्षक बनो

शाम की प्रार्थना का प्रबंध हाईस्कूल के आँगन में था। सभा में जनता हजारों की तादाद में आयी थी। हर व्यक्ति के बैठने का उत्तम प्रबंध था। डेढ़ फुट चौड़ी और साधारणतः पचास फुट लंबी आसनवजा दरियाँ दो-दो फुट के अंतर से बिछा दी गयी थीं। एक के पीछे एक, सब लोग सीधी कतार में बड़ी तरतीब से ध्यानस्थ बैठे थे। ऐसी बा-तरतीब सभाएँ बहुत कम देखने में आती हैं। विनोबा ने इस दर्शन का गौरव करते हुए कहा: "यह शक्ति हमारे हर देहात में मौजूद है, परंतु उनको दृष्टि देनी चाहिए। आज तो हमारे देहात पक्षभेदों के कारण तहस-नहस हो रहे हैं। चुनावों के कारण यह सब हो रहा है। गाँवों की एकता पर ही हमारे देश की सुरक्षा निर्भर है।"

अंत में उन्होंने कहा: "भाइयो, अशांति के कारणों को दूर करो। एकता कायम करो और स्वराज्य के संरक्षक बनो।"

मेहतरों का आवाहन!

देवड़ा में जो भाई विनोबाजी से कहने आये थे कि वे नगराध्यक्ष के यहाँ न ठहरें, वे दोपहर में यहाँ भी विनोबाजी से मेहतरों का एक प्रतिनिधि-मंडल लेकर मिले। मेहतरों ने वेतन-वृद्धि के लिए हड़ताल आदि के मार्ग का अवलंबन लिया था। उसमें वे कामयाब नहीं हुए, तो उनके एक नेता ने उपवास शुरू किया था। विनोबा ने कहा: "उपवास नहीं करना चाहिए।" माँगों के बारे में उन्होंने कहा: "आपकी माँगें भले ही पूरी हो जायँ, लेकिन उससे आपका मसला हल नहीं होता। मैं जगजीवनरामजी की राय से सहमत हूँ कि यह भंगी-काम मनुष्यों के करने का है ही नहीं। सफाई की ऐसी योजना बनायी जा सकती है कि उसमें आज की तरह

गंदगी न रहे और हर कोई वह काम सहज कर सके। हमने इस संबंध में काफी और सफल प्रयोग किये हैं। परंतु आपको आज उन सबसे कोई मतलब नहीं। आज तो मैं यही कहना चाहता हूँ कि अगर आप चाहें, तो आपमें से जिन-जिनको जमीन पर परिश्रम कर उदर-निर्वाह करने की इच्छा हो, उन्हें जमीन मिल सकती है। आप इस काम से मुक्त हो सकते हैं।"

कैसा दुर्भाग्य !

परंतु ये लोग जमीन लेने को तैयार नहीं हुए। विनोबा को इससे दुःख भी हुआ और आश्चर्य भी। जाहिर है कि जमीन जोतना मेहनत का काम है। मेहतर के काम में वैसी मेहनत की आवश्यकता नहीं। सवेरे आधा दिन काम करना पर्याप्त होता है। उसमें भी अधिकतर काम स्त्रियाँ सँभाल लेती हैं। विनोबा ने कई बार कहा है कि इस तरह मेहतर भी अपनी स्त्रियों का शोषण ही करते हैं। जमीन के प्रति मेहतरों की जो उदासीनता है, वह भी उनकी श्रमविषयक अरुचि का ही परिचायक है।

ऊपर श्री जगजीवनरामजी की राय का जिक्र आया है। देहली की एक सभा में अपने हरिजन-भाइयों से उन्होंने कहा था कि तुम यह काम छोड़ दो। इस काम का प्रबंध क्या होगा, इसकी चिंता मत करो। जो गंदगी करेगा, वह खुद उसको दूर करने की चिंता करेगा। तुम तो आज ही इस काम को छोड़ दो, क्योंकि यह काम मनुष्यों के करने का है ही नहीं। उन्होंने यह भी कहा था कि देखते नहीं कि हर काम में—यहाँ तक कि चमड़े के काम में भी—होड़ शुरू है और ब्राह्मण तक की सब जातियों के लोग उसमें दाखिल हो रहे हैं। परंतु मेहतर के काम में न कोई होड़ है, न कोई दूसरा इसे करने को तैयार है। यह काम है ही ऐसा कि वह इन्सान के करने लायक ही नहीं है। एक आदमी का मैला दूसरा आदमी अपने सिर पर ढोये, यह काम कोई मनुष्यता का लक्षण है ?

जगजीवनरामजी के उस भाषण की सराहना विनोबाजी जगह-जगह

करते हैं। जगजीवनरामजी ने तो मेहतर भाइयों से कहा था कि "इस काम से भूखों मर जाना बेहतर है।" परंतु विनोबा ने तो भू-दान द्वारा उनको जीविकोपार्जन का स्थायी साधन भी मुहैया कर दिया है। फिर भी कैसा दुर्भाग्य है कि हमारे मेहतर भाइयों के दिलों में उनके वर्तमान शोषित, अपमानित, अमानुषिक जीवन के प्रति विद्रोह की भावना नहीं जाग उठती और वे भूमि-माता की सेवा द्वारा स्वतंत्र, स्वावलंबी, स्वाभिमानी जीवन बिताना पसंद नहीं करते।

कम्युनिस्टों द्वारा तेलंगाना में हुए अत्याचारों के घाव से हरिजन भाइयों की इस उदासीनता का घाव कम नहीं था।

सबको सन्मति दे भगवान्!

● ● ●

जाके प्रिय न राम-वैदेही : ६१ :

तादाप्ठी
१७-६-'५१

चरखा-संघ के एक कार्यकर्ता मिलने आये। विनोबा के साथ उनका बहुत पुराना संपर्क था। एम० ए० होने के बाद वे गत बीस वर्षों से चरखा-संघ की सेवा करते आ रहे थे। परंतु अब संघ छोड़कर प्रशिक्षण (बी० टी०) के लिए जाना चाहते थे। बच्चों की पढ़ाई की भी चिंता थी। शायद घर में गृहिणी से जैसा साथ मिलना चाहिए था, नहीं मिल पा रहा था। निर्णय नहीं कर पा रहे थे। अपनी कठिनाइयाँ विनोबा के सामने रखकर उन्होंने मार्ग-दर्शन चाहा, तो विनोबा ने डूबते को सहारा देते हुए कहा :

"मीराबाई के सामने भी ऐसा ही धर्म-संकट उपस्थित था, तो तुलसीदासजी से पुछवाया। जवाब में गुसाँईजी ने लिख भेजा : **जाके प्रिय न राम-वैदेही, तजिये ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही !**"

अब तक का क्रांतिकारी जीवन-क्रम छोड़कर पुनः बी० टी० वगैरह करने की उनकी इच्छा की ओर इशारा करके विनोबा ने कहा :

"गृहस्थ जब वानप्रस्थ होता है, तो वह उचित ही है। परंतु वानप्रस्थ अगर पुनः गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है, तो वह आरूढ़-पतित होता है। शास्त्र में उसके लिए कोई प्रायश्चित्त ही नहीं है। जाहिर ही है कि चढ़ते समय चाहे धीरे-धीरे चढ़ो, लेकिन चढ़ने पर नीचे गिरोगे, तो उतनी ही गहरी खाई में जाकर पड़ोगे, जितनी ऊँचाई पर चढ़ चुके थे।"

माया बड़ी अपार है

प्रश्न : "लेकिन चरखा-संघ में रहकर 'मास-कांटेक्ट' नहीं सधता।"

विनोबा : "मास-कांटेक्ट का अर्थ यह नहीं कि 'मासेस' के साथ सतत घर्षण होते ही रहना चाहिए। कारोबारी और खटपट के काम करने से बड़े प्रमाण में राग, द्वेष, मत्सर निर्माण होते हैं। इससे उल्टे मर्यादा में सहज सधने जैसी सेवा करने में प्रेम संपादन होते रहता है। चरखा-संघ से मास-कांटेक्ट सधता नहीं, यह गलत खयाल है। संघ न रहेगा, तब उसका महत्त्व समझ में आयेगा। वह तो एक क्रांतिकारी काम है। आज जब कि चारों ओर मिलें खड़ी हैं, अगर एक भाई को भी हम चरखा सिखाते हैं, तो लंका-नगरी में विभीषण खड़ा कर देते हैं। फिर चरखा-संघ में वैज्ञानिक और शास्त्रीय शिक्षण की भी पूरी गुंजाइश है। उसकी जरूरत भी है। रोमेल के बारे में कहा जाता था कि जहाँ रोमेल, वहाँ विजय। जहाँ कृष्ण और अर्जुन, वहाँ विजय हम कहते हैं न—ठीक उसी प्रकार। लेकिन अमेरिकन पत्रकार उसे देखने गये, तो वह टैंक-दुरुस्ती में व्यस्त नजर आया। यह था उसकी विजय का रहस्य। चरखा-संघ का काम अत्यंत महत्त्व का काम है। दुर्भाग्य से चरखा-संघ के कुछ जिम्मेवार कार्यकर्ता भी मानते हैं कि यह काम निरर्थक है। हमारा कहना है कि उन लोगों की विचारधारा गलत है। प्रत्यक्ष क्रांति करनेवाले की अपेक्षा क्रान्तिकारी को भोजन करानेवाले कम क्रांतिकारी नहीं हैं। जो लोग रात-बिरात कम्युनिस्टों को भोजन कराते तथा रक्षण देते हैं, उनका स्थान कम्युनिस्ट आंदोलन में किसी कम्युनिस्ट से कम नहीं है। वे लोग भी उतने ही कम्युनिस्ट हैं। कम्युनिस्ट संघटन के महत्त्वपूर्ण अवयव हैं। सतत काम करनेवाले लोगों में से कुछ लोग अगर आरामतलब हो गये, तो उनमें तेज प्रकट करने के लिए और कुछ अधिक तेजस्वी लोगों को उसमें प्रवेश करना चाहिए। इतने रोज चरखा-संघ में काम कर आज आप बी० टी० करके किसी विद्यालय में शिक्षक की नौकरी करना चाहते हैं, इसका अर्थ यही है कि यह माया बड़ी अपार है, इसे पार करना बड़ा कठिन है।"

नर-देह का क्या भरोसा ?

फिर विनोबा ने अपने स्नेही गोपाळरावजी काळे का दृष्टांत दिया : "गोपाळराव हमारे बालमित्र ! वकालत का इम्तहान देने ही वाले थे। पिताजी ने खर्चा भी खूब किया था। छह साल वकालत करके फिर देश-सेवा में आनेवाले थे। मैंने कहा, ये इधर के छह साल मुझे दे दो। कौन जानता है, नर-देह का कब क्या होता है। उन्होंने फौरन चीन्ह लिया कि यह मोह है और छोड़ दी परीक्षा !

दृष्टिकोणवालों की जिम्मेवारी

"पंडितजी ने मुझे पूछा था कि सर्वोदय-समाज का सदस्य कौन हो सकता है ? क्या उसके लिए अहिंसा की पूर्णनिष्ठा आवश्यक है ? मैंने कहा, एक फौजी सिपाही भी सर्वोदय-समाज का सदस्य हो सकता है। अर्जुन हो सकता है, क्योंकि जैसे ही कृष्ण का हुक्म होगा कि छोड़ो, वह लड़ाई छोड़ देगा। जिन्हें एक दृष्टिकोण है, 'आउट-लुक' है, वे लोग अगर रचनात्मक काम छोड़कर जाने लगेंगे, तो सारे भारत में जो रचना इस काम के द्वारा हुई है, वह तितर-बितर हो जायगी। हमारी यात्रा में हमने अनुभव किया कि राजनैतिक काम करनेवाले तो अपने-अपने कामों में मशगूल रहे, लेकिन रचनात्मक काम करनेवालों ने और सर्वोदयवालों ने ही हमें मदद की।"

ज्ञान-पिपासा

विनोबा ने उनकी ज्ञान पिपासा के संबंध में कहा : "तुमने एम० ए० पास किया है, इसलिए अब और नया ज्ञान पाने का रहा नहीं, ऐसा नहीं है। मैंने जेल के पाँच बरसों में जितना ज्ञान प्राप्त किया, उतना पिछले पचीस वर्षों में नहीं किया था। और मैं पाँच वर्षों में जितना प्राप्त कर सका, उतना दूसरा तो शायद पाँच जन्मों में भी न पा सके। तो, ज्ञान-साधना तो सतत चलती रहनी चाहिए। लेकिन उसके लिए कॉलेज का द्वार खटखटाने की या बी० टी० की परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं है।"

● ● ●



सैकड़ों बालक कतार में खड़े थे। विनोबाजी आये तो बालगोपाल उनके साथ हो लिये। विनोबा ने उनका हाथ पकड़ लिया और फिर विनोबा और बालगोपाल सभी दौड़ने लगे।



वरंगल के ऐतिहासिक किले का निरीक्षण करते हुए

उत्पादन का व्रत क्यों नहीं लेते ? : ६२ :

भांदक
१८-६-'५१

रास्ते में रुकने का कार्यक्रम नहीं था, परंतु कीर्तन-मंडलियों ने ऐसा लुभा लिया कि विनोबा को रुकना पड़ा। कलेवे का समय भी हो गया था। एक डाक-बँगले में कलेवा समाप्त हुआ; फिर बाहर आकर देखते हैं कि सारे गाँववाले बड़ी शांति से बैठे हैं। सामने बाल-गोपाल नजर आये, तो विनोबाजी ने बातचीत शुरू कर दी। एक बालक से पूछा :

"क्या काम करते हो ?"

"गौएँ चराता हूँ।"

दूसरे से : "तुम ?"

"वही।"

तीसरे से : "और तुम ?"

"वही।"

जी; हाँ, करेंगे

फिर बच्चों से सवाल पूछना शुरू किया :

"बच्चो, तुम जानते हो हिन्दुस्तान में जो कपड़ा बनता है, वह फी आदमी कितना गज आता है ?"

बच्चे : "कितना गज ?"

विनोबा (मुस्कराकर) : "अच्छा ! देखो, मैं तुम्हें बताता हूँ। अभी जो बड़ी लड़ाई हुई दुनिया में, उसके पहले सत्रह गज़ तैयार होता था। लेकिन अब आजकल तो सिर्फ बारह गज ही होता है। इसलिए मैं गाँव-गाँव के लोगों से कहता हूँ कि थोड़ा-थोड़ा सूत अगर हर कोई कातेगा, तो देश की लक्ष्मी बढ़ेगी। बताओ, तुम लोगों की क्या राय है ?"

बच्चे (एक साथ) : "जी हाँ, ठीक है।"

विनोबा : "केवल 'जी हाँ, ठीक है' कहने से काम नहीं चलता। "जी हाँ, करेंगे' कहना चाहिए।"

बच्चे : "क्या करना होगा ?"

विनोबा : "कातना होगा।"

तलवारों से तकुए

और उन्होंने बच्चों को संत एकनाथ का एक गीत सिखा दिया :

माझ्या रहाटाकडे कां पाहा ना !
तुमची तलवार कां मोडा ना ?
त्यांच्या चातिच कां बनवा ना !

—"मेरे चर्खे की ओर क्यों नहीं देखते ? आप लोग अपनी तलवारें अब तोड़ क्यों नहीं डालते ? उनसे (मेरे चर्खे के लिए) तकुए क्यों नहीं बनाते ?"

फिर उन्होंने उसे बच्चों से बार-बार गवाया। बच्चे तो निमित्त बने, सारे समाज ने गीत को अपना लिया। फिर बिदा लेते हुए विनोबाजी ने कहा :

"गांधीजी का यही कहना था। गरदन काटने का काम करनेवाली इन तलवारों को तोड़कर उनके तकुए ही बनाने चाहिए।"

पदयात्रा

करीब साढ़े आठ बजे तक भांदक पहुँचे। जैनियों का तीर्थ-स्थान है। धर्मगुरुओं को प्राप्त होनेवाले सम्मान के साथ और अत्यंत सांस्कृतिक वातावरण में विनोबाजी का आगमन हुआ। लोगों का उत्साह देखा, तो बातचीत शुरू की :

"आप जानते हैं कि हम लोग लंबी पदयात्रा करके आ रहे हैं। अपने देश के लिए यह कोई नयी चीज नहीं है। यह जैनियों का तीर्थ-स्थान है। यहाँ तो पदयात्री कुछ अधिक भी निकल आ सकते हैं।"

बच्चे तो सम्मुख थे ही। पूछा :

"अच्छा, आप लोगों में दस मील से अधिक जिन्होंने प्रवास किया हो, वे अपना हाथ ऊँचा करें।" बच्चों में तो कोई था नहीं। "कोई नहीं ? देखो, हमारे साथ यह वानर-सेना घूम रही है–यह मृदुला, माला, गौतम ! इन्होंने सैकड़ों मील की यात्रा कर ली है। अच्छा ! सारे गाँव में से जिन्होंने दस मील से अधिक पदयात्रा की हो ?" फिर भी लोग चुप रहे। विनोबा ने निश्चित प्रश्न पूछा :

"पंद्रह मील ?"

एक हाथ उठा।

"बीस ?"

एक हाथ उठा।

"पच्चीस ?"

तीन हाथ उठे।

"तीस ?"

दो हाथ उठे।

"पचास के ऊपर ?"

"जी, मैं पंढरपुर गया हूँ पैदल।"

सहज में पदयात्रा के अनुकूल वातावरण ऐसा बन गया कि लोगों ने और खासकर युवकों ने पदयात्रा में साथ चलने की इच्छा प्रकट की। उनको निरुत्साहित न करके विनोबा ने कहा : "अच्छा, अब फिर बात करेंगे। शाम की सभा में सब लोग आना।"

बिना उत्पादन खाने का हक नहीं

दोपहर प्राथमिक विभाग के शिक्षकों से बातें हुईं। प्रान्तभर में उनकी हालत बहुत खराब है। सत्याग्रह वगैरह के बावजूद उनकी वेतन-वृद्धि नहीं हुई। कुछ हारे-से मालूम होते हैं। विनोबा के पास भी वे वेतन की शिकायत लेकर आये थे।

विनोबा ने कहा : "हाँ, शिकायत तो ठीक है। अब या तो वेतन बढ़ाना चाहिए या आमदनी का कोई दूसरा अंग बढ़ना चाहिए। मुझसे पूछा जाय, तो मैं कहूँगा कि अगर शिक्षकों के घर की स्त्रियाँ सूत कात देती हैं, तो बिना मूल्य बुनाई का प्रबंध होना चाहिए। विद्यालय को थोड़ी जमीन भी मिलनी चाहिए और कपास भी मुफ्त मिलना चाहिए। इस तरह कम-से-कम सौ रुपया सालाना तो भी आमदनी बढ़ सकती है। वेतन-वृद्धि की मुझे कोई आशा नहीं है, क्योंकि सरकार की तिजोरी में पैसा नहीं है और यह हालत सरकार की कभी सुधरनेवाली नहीं है। आज वह खुद भिखारी है—कर्जदार है, बाहर से अनाज मँगा रही है। बदले में मैंगनीज दे रही है। इसलिए हर नागरिक पर उत्पादक परिश्रम करने की जिम्मेवारी आती है। देश को जब उत्पादन की आवश्यकता है, तो बिना कुछ उत्पादन किये खाने का हक ही नहीं है। हिंदू-समाज में ऐसे तो नियम-व्रतादि बहुत हैं। फिर यह व्रत क्यों नहीं ले लेते कि जिस दिन एक घंटा कोई उत्पादक परिश्रम नहीं किया, उस रोज शाम का भोजन बंद ! जब तक देश की लक्ष्मी नहीं बढ़ती, तब तक शिक्षकों का वेतन कहाँ से बढ़ेगा ?"

शिक्षक : "किंतु जब 'पे-कमीशन' ने भी हमारे अनुकूल फैसला दिया है ?"

विनोबा : "लेकिन तिजोरी में पैसा कहाँ है ? जो कुछ थोड़ा है, वह सारा फौज पर खर्च हो रहा है। क्या आप लोग इसके लिए तैयार हैं कि आज के विद्यालयों की संख्या कम कर दी जाय ? एक काम हो सकता है। हर विद्यार्थी एक लटी सूत रोज अपने शिक्षक को भेंट दे सकता है। एक शिक्षक के पास चालीस बच्चे हों, तो रोज की दस गुंडियाँ होंगी। महीने की तीन सौ गुंडियाँ हो जाती हैं। बहरहाल उत्पादन के बिना कोई रास्ता नहीं है। आप लोगों का कहना ठीक है कि कम-से-कम भेट भरने के लिए तो भी पर्याप्त चाहिए। लेकिन मान लीजिये कि आप ही

सरकार हैं, तब क्या कीजियेगा ? कितना दे पायेंगे ? इसलिए बिना उत्पादन के कोई चारा नहीं है। मैं तो ऐसा कोई विद्यालय शुरू ही नहीं करूँगा, जहाँ शिक्षक और छात्र उत्पादक परिश्रम न करते हों।"

अब तक विनोबा शिक्षकों को उद्देश्य कर बोल रहे थे। अब उन्होंने शिक्षण की दृष्टि से कहा : "ऐसे मुझे आजकल की शिक्षण-पद्धति से बिलकुल संतोष नहीं है। वहाँ बच्चों को कोई ज्ञान नहीं मिलता। जहाँ न उत्पादन हो, न शिक्षण, उन विद्यालयों को रखकर क्या करना है ? मैं तो बच्चों से कहूँगा, छोड़ो ये विद्यालय। जिस देश में उत्पादन नहीं, वह देश उन्नति कर ही नहीं सकता।"

जीवन-वेतन

शिक्षकों को संतोष नहीं हुआ। एक भाई ने कहा :

"लेकिन क्या जीवन-वेतन भी नहीं मिलना चाहिए ?"

"जीवन-वेतन पहले किसे मिलना चाहिए ? आपको या मेहतर को ? मान लो, सरकार कहे कि 'आप लोगों की आवश्यकता देश को उतनी नहीं है, जितनी मेहतरों की है। शिक्षण की जिम्मेवारी गाँववालों की है। वे सँभालें शिक्षकों को!' तब आपका क्या कहना है ? और मैं आजकल देखता हूँ कि शिक्षक अलग-अलग व्यवसाय भी काफी करने लगे हैं। उससे बच्चों का नुकसान होता है। इससे तो बेहतर है कि वे विद्यालय बंद कर दिये जायँ और नयी पद्धति के विद्यालय चलाये जायँ। मैंने यह कई बार कहा है और करके भी दिखाया है।"

सरकारी कुर्सी

फिर उन्होंने सरकार के बारे में कहा :

"आप लोग सरकार की बात करते हैं। परंतु वह कुर्सी ही ऐसी है कि वहाँ जाते ही दूसरा ही दीखने लगता है। फिर वहाँ जाकर भी देश में परिवर्तन करने के लिए दर्शन और जनमत का बल चाहिए। मान लीजिये कि कल सरकार घोषणा कर दे कि 'पुराने विद्यालय हम बन्द करते हैं।

नये विद्यालय शुरू होते हैं, तब तक छह माह के लिए सभी शिक्षक देश के लिए शरीर-परिश्रम करने अर्थात् मजदूरी करने आ जायँ।' तो, काम तो जरूर होता, लेकिन ऐसी हिम्मत कौन करे ? मान लीजिये, मैं ऐलान करूँ कि मेरा यह प्रोग्राम है और चुनाव के लिए खड़ा रहूँ, तो आप लोग मुझे चुनेंगे ? आप कहेंगे : 'आप बहुत अच्छे हैं। हम आपको नमस्कार करते हैं, परंतु चुनाव में आपको मत नहीं देंगे।'

"इसलिए जब तक देश का उत्पादन नहीं बढ़ता, तब तक वहाँ कोई भी क्यों न रहे, कुछ नहीं कर सकता। फिर चाहे वहाँ जवाहरलालजी रहें या जयप्रकाशजी या कृपालानीजी। जो वहाँ जायगा, उसकी शिकायत अनिवार्य है।"

यंत्र-युग

इतनी सब चर्चा होने पर भी एक शिक्षक महोदय उनसे पूछ ही बैठे :

"विनोबा, आप हमें इस यंत्र-युग में भी कातने के लिए और हाथ से काम करने के लिए कहते हैं। इसमें देर भी लगती है और लोगों को यंत्रों का आकर्षण भी बहुत है। फिर यंत्र जब तेजी से काम कर सकते हैं, तो यह धीरे-धीरे काम करने की बात का आप आग्रह क्यों करते हैं ?"

"ऐसा है"—विनोबाजी ने प्रेमपूर्वक समझाया—"कतई काम न करने से धीरे-धीरे काम करना अच्छा है या बुरा ? इतनी रेलगाड़ियाँ चलती हैं, हवाई जहाज चलते हैं, लेकिन गत तीन माह में वे मुझे कोई भी जबरन अपने भीतर बैठा नहीं सके। कपड़े की मिलें इतनी चल रही हैं, उनके बावजूद हमारे बदन पर हाथ का कता-बुना कपड़ा है। भाइयो, आप लोगों ने रोटी की माँग की और बदले में मैंने ज्ञान दिया, तो उससे पेट नहीं भरेगा। ज्ञान कैसा ही महान् क्यों न हो, रोटी की पूर्ति नहीं कर सकता। इन यंत्रों से हमारी बेकारी का सवाल दूर नहीं हो सकता।"

एक जैन भाई इतनी देर बड़ी शांति से सारा सुन रहे थे। वे दूध पीने के खिलाफ थे। लेकिन उन्होंने प्रश्न और ढंग से पूछा :

"विनोबाजी, दूध भी मांस ही है; लेकिन लोग दूध बराबर पीते हैं। तो इससे अच्छा तो यही है कि वे मांस खायें। आपको इस संबंध में कुछ कहना चाहिए।"

"अरे भाई, मैं क्या कहूँ ? मुझे तो गो-माता ने ही सँभाला है। उसीकी कृपा है कि यह देह कुछ काम कर सकता है। लेकिन देखो, हम माता का दूध पीते हैं, लेकिन क्या माता का मांस खा सकते हैं ? ऐसे ही गो-दूध का समझो। अच्छा, अब समाप्तम्।"

गाँवों में ग्रामराज्य कायम हो : ६३ :

चंदनखेड़ा
१९-६-'५१

साथी का आग्रह

मंजिल ऐसे ही चौदह-पंद्रह मील की थी। एक भक्त रात को आये—जसराज गोठी ! दुःखी हुए कि विनोबा उनके गाँव से नहीं गुजर रहे हैं। पुराने परिचित थे। जेल के साथी थे। डेढ़-दो मील का चक्कर पड़ता था। फिर भी विनोबा ने मंजूर कर लिया। विनोबा से तो कोई क्या कह सकता था, परंतु जसराजजी पर सभी लोग मन-ही-मन काफी बिगड़ रहे थे।

रातभर बारिश बहुत जोरों की हुई। इसलिए वानर-सेना को सड़कवाले रास्ते से आगे भेज देने का हुक्म हुआ। पदयात्रा का रास्ता कच्ची सड़क से था, और वर्षा से उसमें कीचड़ भी हो गया था। वैसे ही सोलह मील चले।

जसराजजी ने सारा गाँव जुटाया था। खुद जमीन दी, औरों से भी दिलवायी। दरिद्रनारायण के लिए बीस एकड़ भू-दान मिला। खड़े-खड़े सैकड़ों 'गीताई' बिक गयीं। अब तो जसराजजी सभीको बड़े प्यारे लगने लगे।

रास्ते में एक गाँववालों ने ग्यारह रुपये भेंट किये। रुपयों का क्या करते ? ग्यारह रुपयों की गीताई की पुस्तकें गाँववालों को दे दीं।

नदी-पार चंदनखेड़ा था। लोग उस पार प्रतीक्षा कर रहे थे। पास में ही अगस्त-आंदोलन में प्रसिद्धिप्राप्त चिमूर है, भंसालीजी के उपवासों के कारण जो दुनिया में मशहूर हो चुका है। सैकड़ों युवक चिमूर से भी आये थे। वहाँ से बैंड भी आया था। इस पार विनोबाजी को

देखते ही उस पार नदी में उत्साह की बाढ़ आ गयी। विनोबा कब उस पार पहुँचते हैं, ऐसा कर दिया लोगों ने।

दरिद्रनारायण का पेट बड़ा है

यहाँ 'माता कस्तूरबा ट्रस्ट' द्वारा एक केंद्र का संचालन किया जा रहा है। श्रीमती ताराबहन मशरूवाला मार्गदर्शन करती हैं। दो रोज से एक शिविर का भी आयोजन कर रखा था। आज समाप्ति थी। पाँच हजार से अधिक जनसमूह सबेरे से ही जुट चुका था। बहुत-से लोग तो परिचित ही थे। विनोबा ने थोड़े में यात्रा की पार्श्वभूमि समझायी और कहा : "पिछले दो माह में करीब बारह हजार एकड़ भूमि मिली, याने रोजाना दो सौ एकड़। लोग समझ रहे हैं कि युग बदल गया। अब वरदा नदी पार करके परंधाम लौट रहे हैं। यहाँ भूमि पाने का उद्देश्य तो नहीं था, फिर भी हर पड़ाव पर लोग देते आ रहे हैं और आप लोग भी दे सकते हैं। हमारी भूख तो थोड़ी है, परंतु दरिद्रनारायण का पेट बहुत बड़ा है। उसे जितनी भी जमीन आप दें, दे सकते हैं, बशर्ते कि आप प्रेम-भावना से दें—उपकार की भावना से नहीं।"

या घर या सरकार

आशीर्वाद पाने के लिए शिविरार्थी आये। विनोबा ने उनसे कहा :

"किसी-न-किसी निमित्त से लोगों में जाग्रति होती रहनी चाहिए। शिविरों के निमित्त जाग्रति अच्छी होती है। आजकल सार्वजनिक जीवन रहा नहीं—या तो घर है अथवा सरकार। सफाई सरकार करे, दवा सरकार दिलाये, इन्साफ सरकार कराये। जो कुछ गाँव के लिए जरूरी है, सब सरकार करे। हम केवल घर की चिंता करें। सरकार रहेगी नागपुर और जिले में रहे तो चाँदा में। उससे गाँवों का काम नहीं चलेगा। किसी कारण-विशेष से सरकार की सहायता लेना अलग बात है। मानो 'कॉलरा' हो गया, तो सरकार की मदद ले सकते हैं। परंतु नित्य की बीमारियों में भी सरकारी सहायता की अपेक्षा करना गलत है। गाँव का

प्रबंध प्रायः सारे गाँववाले ही कर लें, तो अनुभव भी बढ़ेगा। घर में डी० सी० की सत्ता हम चलने देते हैं क्या? पति-पत्नी में झगड़ा होता है, तो समझाने के लिए डी० सी० आते हैं? फिर गाँव के झगड़े जिले की कचहरियों में क्यों जायँ? गाँव में सज्जन लोग हैं, उनसे फैसला करवा लें। कानून तो नहीं है कि बच्चे माँ की बात मानें, पर हम सब मानते ही हैं। वैसे ही गाँववाले गाँव के बुजुर्गों का मानें, तो ग्रामराज्य का अनुभव आयेगा। स्वराज्य आकर अब पाँच बरस हो गये, अभी तक गाँववालों को उसका अनुभव नहीं हो रहा है। मैं चाहता हूँ कि गाँव में ग्रामराज्य का अनुभव हो।"

● ● ●

गीताई की कथा : ६४ :

शेगाँव

२०-६-'५१

विनोबा सबेरे से विशेष प्रसन्न नजर आ रहे थे। एक भक्त के गाँव जाना था—अम्बादास सूर्यवंशी के। शेगाँव खास और शेगाँव बुदरुक, दो हिस्से हैं गाँव के। गाँव पास आते ही वे बोले : "अरे, यह शेगाँव है न ? गांधीजी भी शेगाँव में रहते थे। बाद में वह 'सेवाग्राम' हुआ।"

आर्षवाणी

'शेगाँव खास' पर एक विद्यालय की नयी इमारत का उद्‌घाटन करना था। सोचा था कि वहीं नाश्ता करेंगे। परन्तु गाँव अभी पौन मील दूर था और नाश्ते का समय तो हो गया था। तौलियाँ बिछाकर नाश्ते की तैयारी की गयी। परंतु स्थान प्रसन्न नहीं था, इसलिए विनोबा बैठे नहीं। आग्रह किया गया, फिर भी नहीं बैठे। ताई ने दही का बरतन हाथ में दे दिया कि अब तो बैठेंगे, पर खड़े-खड़े ही खाना शुरू हुआ। फिर अग्नि-नारायण के मंत्र से वातावरण में आर्षवाणी गूँज उठी :

"ऊर्ध्वो नः पाहि अंहसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह।
कृधी नः ऊर्ध्वान् च रथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः॥"

उन्होंने समझाया :

हे अग्नि ! खड़े रहकर अपने ज्ञान से हमें पाप से बचाओ।
सब खानेवालों को भस्म कर डालो।
हमें खड़ा करो, ताकि हम चलें, जीयें।
हमारी उपासनाएँ देवों तक पहुँचाओ।

जिज्ञासु ने पूछा :

"आपने अग्नि पर ज्ञान का आरोप किया ?"

"प्रकाशमान् जो है।"

"खानेवालों को भस्म कर डालो से क्या मतलब?"

"राक्षसादि के लिए कहा है।"

"और खड़े करो?"

"जैसे अग्नि की ज्वालाएँ खड़ी रहती हैं।"

फिर अन्त में श्लेष बताया :

"दुवः है न अंत में? उर्दू के 'दुवा' के साथ इसकी तुलना करो।"

लेप न लगे

इन दिनों परंधाम-आश्रम के बारे में विनोबा का काफी तीव्र चिंतन चलता रहा। रास्ते में कुछ बातें भी तद्विषयक हो गयीं। एक-एक काम में एक-एक आदमी प्रवीण बनना चाहिए, ऐसी विनोबा की कल्पना थी। बुनाई, बढ़ईगिरी, लुहारी, खेती, गो-सेवा, तेलघानी, निसर्गोपचार, ईंटें बनाना, कवेलू बनाना, चूने की भट्टी, प्रेस का काम, गुड़ बनाना आदि सभी काम विनोबा की कल्पना में थे और इन सबके लिए कम-से-कम एक दर्जन तज्ञों की आवश्यकता थी, जो आवश्यकता पड़ने पर किसी भी गाँव का नवनिर्माण कर सकें। जो कार्यकर्ता आज परंधाम में काम कर रहे थे, उनकी रुचि, क्षमता के बारे में चर्चा हुई, तो विनोबा ने कहा :

"हम किसीके कार्य के बारे में निर्णय नहीं कर सकते। हरएक व्यक्ति अपने संस्कार लेकर आया है। अपना पूर्व-संचित लेकर आया है। हम उसका कार्यक्रम तय करनेवाले कौन होते हैं? परंधाम में चलनेवाली प्रवृत्तियाँ और वहाँ आनेवाले पथिक, दोनों जिस बिंदु पर मिलेंगे, उस बिंदु पर जो टिकेगा, वह उस काम में लग सकता है। बाकी हमें तो किसीसे कुछ करवाना है ही नहीं।"

"काम नाहीं, काम नाहीं, तुका आहे रिकामा।"❀

❀ तुकाराम कहता है कि वह खाली है, उसे कोई काम नहीं है, कोई काम नहीं है।

इसी चर्चा के सिलसिले में विनोबाजी ने रामदास और तुकाराम की बातचीत का जिक्र किया : "नदी के इस पार रामदास है और उस पार तुकाराम। तुकाराम रामदास से पूछते हैं **'कधि बा रिकामा होशी ?'** (कब खाली होनेवाले हो—कब कार्यमुक्त होनेवाले हो ?) रामदास ने जवाब दिया : **'जधि मी निवारी कामा'** (जब मैं काम-धंधों से निवृत्त हो जाऊँगा।) रामदास को परमार्थ के सिवा तो कोई काम था ही नहीं। यद्यपि परमार्थ का काम भी वे अनायास ही खड़ा करने के पक्ष में थे, फिर भी उस समय की परिस्थिति में उन्हें लोकसम्पर्क काफी साधना पड़ता था। छत्रपति शिवाजी महाराज को तो नित्य उनका मार्गदर्शन मिलता ही था।" विनोबा ने आगे बताया कि "रामदास ने तुकाराम से भी प्रश्न किये थे। तुकाराम ने जो उत्तर दिये, उससे लगता है कि कभी उसे भी कार्य करने की लालसा रही होगी। अपने लिए तो उसे कुछ करना था ही नहीं, किन्तु सार्वजनिक दृष्टि से ही क्यों न हो, कुछ करने की प्रेरणा होती होगी। लेकिन आगे चलकर वह भी दूर हो गयी।"

फिर उन्होंने अपने बारे में बताया : "मेरा स्वभाव भी कुछ ऐसा ही है। एक तो मेरा स्वास्थ्य ऐसा नहीं कि मैं बहुत दौड़-धूप कर सकूँ। इसलिए प्रवृत्ति मेरे लिए वैसे भी ज्यादा अनुकूल नहीं है। किन्तु मनुष्य को प्रवृत्ति की चिंता करनी ही न चाहिए। जहाँ शरीर है, वहाँ कुछ-न-कुछ प्रवृत्ति तो रहेगी ही। संन्यासी रहा, तो उसे भी देह-धर्म के लिए कुछ काम करना ही पड़ता है। काम की चिंता नहीं करनी होती। चिंता तो इसीकी करनी होती है कि कैसे काम का लेप न लगे।"

विद्यालय की इमारत का उद्घाटन हुआ। विद्यार्थी और कार्यकर्ता, हरएक अपने हाथ की गुँथी पुष्पमाला ले आया था। पचीसों मालाएँ हो गयीं। विनोबाजी एक-एक माला स्वीकार करते और छोटे-छोटे बाल-गोपालों के गले में पहनाते गये। जो बालक सबसे छोटा था, प्रारंभ उसी से किया गया। बालकृष्ण की मूर्तियाँ ही सामने विराजमान दीखने लगीं।

आज विनोबा के मंदिर में निवास था। पड़ाव पर पहुँचने पर विनोबा थोड़ा बोले भी :

"आपके गाँव में जब से ये अंबादास राव आये हैं, तब से हमारा ध्यान इस गाँव की ओर रहता है। आपने विठोबा के मंदिर में रहने की जगह दी, यह आपकी बड़ी कृपा हुई। रोज-रोज नया स्थान हमें मिलता है। नये-नये लोगों से भेट होती है। उधर हैदराबाद तो एक उद्देश्य लेकर हम गये थे। लेकिन अब तो चार दिन सहज मनोविनोद के ही हैं। कोई खास कर्तव्य नहीं रहा। लोग जो उपयोग हमारा करना चाहें, कर सकते हैं। गेहूँ का आटा तैयार है--चाहे रोटी सिकवा लें, चाहे हलुवा बनवा लें या लड्डू बँधवा लें। ऐसे तो हम कल पाँच बजे यहाँ से चलेंगे, अगर भगवान् ने चाहा तो। लेकिन नौ बजे रात तक लोगों से मिलना-जुलना हो सकता है। फिर हम ब्रह्मलोक में पहुँच जाते हैं, वह बड़ी अच्छी अवस्था है। चिंतन करके सोता हूँ, तो सबेरे लाभ होता है। फर्क पड़ता ही है। इसलिए मैं भगवान् से कहता हूँ : **'तेरी दुनिया तू सँभाल'**।"

गाँव में भोजन का प्रबंध कहीं भी और बहुत अच्छा हो सकता था। परंतु अंबादास राव की वयोवृद्धा तपस्वी माता ने कहा : "सब मेरे हाथ का भोजन करेंगे। जैसे अंबादास, वैसे वे सब। फिर विनोबा नहीं, तो उनके सहयात्रियों के पाँव तो मेरे घर लगें।" वृद्धा ने अकेली ने सहयात्रियों के लिए अन्नपूर्णा की तरह सारा प्रबंध किया। उनकी भक्ति-भावना ने उनकी कुटिया को मांगल्यधाम बना दिया था।

मातृ-प्रेरणा

शाम की प्रार्थना-सभा में विनोबाजी ने पुनः अंबादास राव का गौरव किया। उनकी नम्रता, दृढ़ निष्ठा, अध्ययनशीलता और गीताई का उनका प्रेम, इसका सहज उल्लेख करने लगे, तो उस प्रवाह में विनोबा के मुख

से गीताई की कहानी ही प्रकट हो गयी। विनोबा को 'गीताई' को लिखने की प्रेरणा कैसे हुई, कब हुई और क्यों हुई, यह सब उन्होंने बताया।

विनोबा को यह प्रेरणा उनकी माता से ही हुई। "मैं संस्कृत गीता नहीं समझ सकती, मुझे मराठी चाहिए"—माँ ने आग्रह किया।

विनोबा ने मराठी के सभी संस्करण लाकर माँ की सेवा में उपस्थित कर दिये। 'ज्ञानेश्वरी' तो घर में थी ही, लेकिन वामन पंडित, मोरोपंत आदि भी जिन-जिन साधु-सन्तों, कवियों तथा दार्शनिकों ने मराठी में गीता का पद्यानुवाद किया था, विनोबा माँ के लिए खोज लाये। लेकिन माँ की तृप्ति नहीं हुई।

"मुझे यह कुछ नहीं चाहिए, मेरे लिए तू ही लिख दे।"

"मैं?"

"हाँ, तू। तू लिख सकता है विन्या!"

यह थी माँ की भावना अपने 'विन्या' के बारे में। 'वर्ड्स्वर्थ' ने ठीक ही कहा है : 'चाइल्ड इज दि फादर आफ दि मैन!' माँ ने विनोबा को ठीक पहचान लिया था। **'जाकी रही भावना जैसी, प्रभुमूरत देखी तिन तैसी!'** सत्यकाम आत्मा की भावना ही तो थी वह!

माता के आदेश ने विनोबा के मन में गीतानुवाद का बीजारोपण किया। तब से विनोबा गीता का चिंतन-मनन करने लगे। गीता के संबंध में कोई भाष्य, कोई ग्रंथ नहीं, जो विनोबा न देख गये हों। और गीता का कोई विचार नहीं, जिसकी अनुभूति अपने जीवन में उन्होंने न ली हो। माता तो स्वर्ग सिधारी। परंतु विनोबा गीता-माता की उपासना, गीता का चिंतन-मनन सतत पचीस वर्ष अखंड करते रहे। इसी बीच उन्होंने कितनी ही कविताएँ लिखीं। लिख-लिखकर 'अग्निनारायणाय स्वाहा' कर डालीं या फिर काशी में गंगा-मैया को समर्पित कर दीं। उन्हें कविताएँ तो लिखनी नहीं थीं। 'गीताई' के लिए वह कविता लिखने का अभ्यास मात्र था। उस समय की कविताओं में से कुछ दो-चार

बच गयी हैं, याने मित्रों के हाथ लग गयी हैं, बानगी के रूप में। एक-आध तो 'विचार-पोथी' में भी प्रकाशित हुई है। उससे पता चलता है कि अग्नि-नारायण को या गंगामाई को विनोबाजी की कला-कृतियों का जो कुछ गुप्तदान मिला होगा, वह कितना महान्, कितना मूल्यवान् और कितना पावन होगा!

इधर विनोबाजी की यह साधना चल रही थी, इसी बीच एक रोज, जब वे वर्धा आ चुके थे, जमनालालजी ने भी यही माँग विनोबाजी के सामने रखी कि हमारे लिए गीता का सरल पद्यानुवाद कर दीजिये। फिर तो और मित्रों ने भी आग्रह किया। मातृऋण, मित्रों की इच्छा और पचीस वर्ष की साधना! ७ अक्तूबर १९३० के रोज गीतानुवाद प्रारंभ हुआ और ६ फरवरी १९३१ को ठीक चार माह में 'गीताई' माउली (मैया) का अवतरण हुआ।

'गीताई' समझ में आ सके, इसीलिए जेल में कुछ प्रवचन भी दिये गये, जो 'गीता-प्रवचन' नाम से प्रसिद्ध हैं।

फिर संत ज्ञानेश्वर का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा :

"गीताई में नया कुछ नहीं है—ज्ञानेश्वर महाराज ने छह सौ वर्ष पहले अपने ग्रन्थ श्री ज्ञानेश्वरी में जो कुछ कहा, वही गीता-प्रवचन में है। उनके द्वारा दिये प्रकाश में मैं उनके चरण-चिह्नों पर चलने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं तो अपने को उस महापुरुष की चरण-रज ही मानता हूँ।"

इसी सिलसिले में उन्होंने गीता के त्रिविध गुणों का भी जिक्र किया :

'सारा विषय थोड़े में'—यह गीता का पहला गुण!

'विवेचन सर्वांग है।'—यह उसका दूसरा गुण!

और 'किसी प्रकार का आग्रह नहीं'—यह उसका तीसरा गुण!

यही वजह है कि सभी पंथ के लोग उसे अपना ही ग्रंथ मानते हैं।

जैसे हर बच्चा समझता है कि माता का सबसे अधिक प्रिय पुत्र मैं ही हूँ, गीता के बारे में भी सबकी वैसी ही भावना है !"

गीता की व्यापकता और अनाग्रहता का विशेष रूप से उल्लेख कर उन्होंने कहा था : "उसके इस गुण के कारण सभी महापुरुषों ने गीता का आधार लेकर समाज को जाग्रत किया। ये लोग साधारण नहीं थे। शंकराचार्य का ही उदाहरण लीजिये ! न केवल भारत में, अपितु सारे संसार में उनकी जोड़ के दस-पाँच लोग भी न होंगे। लेकिन उन्होंने गीता का आधार लेकर ही भाष्य किया। ज्ञानदेव ने तो यहाँ तक कह दिया कि **"माझिया सत्यवादाचे तप वाचा केले बहुत कल्प"**—मेरी वाणी ने अनेक जन्म लेकर अनेक कल्प तक सत्य भाषण की तपश्चर्या की, इसीलिए गीता का स्वारस्य समझाने का भाग्य उसे प्राप्त हो सका। ज्ञानेश्वर जैसा स्वतंत्र प्रज्ञा का अनुभवी पुरुष ! लेकिन ऐसे धन्योद्‌गार उसके मुख से प्रकट हुए !"

फिर आधुनिक काल के महापुरुषों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा : "महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, अरविन्द घोष आदि लोग कोई छोटे-मोटे नहीं हैं। परंतु उन्हें भी इस ग्रन्थ से स्फूर्ति मिली और उन्होंने गीता का आधार लिया। इसका कारण यही है कि वह ग्रंथ लिखा ही ऐसी अद्‌भुत समाधि की अवस्था में गया कि उसमें कहीं आग्रह दिखाई ही नहीं पड़ता और जीवन का ग्रहण भी परिपूर्ण समत्व से हुआ है। ऐसा एकाध ही ग्रंथ राष्ट्र में निर्माण हुआ करता और उसी एक ग्रंथ पर अनेक राष्ट्रों का जीवन निर्भर रहता है।

"गीता के बारे में वही अनुभूति भारत को हुई। इसलिए मैंने भी सोचा कि इस ग्रंथ पर कुछ लिखा जाय। बचपन से ही गीता का चिंतन-मनन करने की आदत तो थी ही, घर में भी गीता का पठन होता ही था। गीता पर उपलब्ध सारी टीकाएँ पढ़ने की धुन भी थी। इस तरह तन्मयता बढ़ी और फिर गीता का अर्थ समझ लेने की दृष्टि से उस

दिशा में कदम उठाना शुरू किया। आखिर गीता मेरे लिए माँ से भी अधिक हो गयी। इसलिए मैंने उसे 'गीताई माउली' * कहा।

"गीता में हिन्दू-धर्म का सार-सर्वस्व है, और दूसरे किसी भी धर्म को बाधा न पहुँचे, ऐसी उसकी व्यापक शैली है। जिस किसीने गीता का चिंतन-मनन शुरू किया, उसे शांत और समाधानपूर्ण जीवन का अनुभव हुआ। इसलिए कार्यकर्ताओं से मेरा निवेदन है कि भाइयो! गीता का चिंतन कीजिये, जीवन को गीता का आधार रहने दीजिये।

"आप कहेंगे, 'हम कार्य-व्यस्त रहते हैं, चिन्तन-मनन कहाँ से किया जाय?' मैं कहता हूँ: आप लोग कार्य-व्यस्त रहते हैं, इसीलिए आपका चिन्तन-मनन का अधिकार है। जो बेकार हैं, उन्हें चिन्तन भी क्या सधेगा? चिंतन को दिशा की जरूरत होती है। जो सेवापरायण होता है, उसके पास सेवा की दिशा होती है। उस आधार से चिंतन अच्छा किया जा सकता है। अन्यथा दृष्टि व्यापक होती है, तर्क-वितर्क फैलते हैं, शाखाएँ फूटती हैं और ऐसा होता है, मानो मुक्ताकाश में संचार हो रहा है। इसलिए चिंतन उसीको सधता है, जो कर्मयोग में जुट गया है।"

अंत में गीता का सार थोड़े में बताते हुए तीन बातें विनोबा ने बतायीं:

"१. गीता में एक बात यह बतायी है कि दुनिया में उच्च-नीच-भेद मिथ्या है। मनुष्य की योग्यता उसकी भक्ति पर निर्भर रहती है, न कि जाति पर! भक्ति-मार्ग में जाति-भेद नहीं, अधिकार-भेद नहीं! बहुत बड़ी बात गीता में बतायी है यह!

"२. दूसरी सिखावन गीता की यह है कि जिसे जो कर्तव्य प्राप्त हुआ है, उसे वह आमरण बिना फलाकांक्षा रखे, निष्काम भावना से,

* गीता माँ।

निरंतर किये जाना चाहिए। कर्तव्य, जो हमें प्राप्त होता है, वह न छोटा होता है और न बड़ा। वह हमारी मर्यादा का ही होता है। विद्यार्थी को विद्याध्ययन का कर्तव्य प्राप्त हुआ, वही उसके लिए श्रेष्ठ है। देह-गेहादि मोह और आसक्ति का परित्याग करके विश्वमय होकर रहने का धर्म संन्यासी को मिला, तो वही उसके लिए श्रेष्ठ है। गृहस्थ को संतान की तथा अडोसी-पडोसी की सेवा का धर्म मिला, तो वही उसके लिए श्रेष्ठ ! जिसकी जो भूमिका, योग्यता, मानसिक भाव होता है, तदनुसार उसे धर्म प्राप्त हुआ करता है। उसका अनुसरण ही उसके लिए श्रेयस्कर है।

"३. गीता की तीसरी सिखावन है—चित्त-शुद्धि सतत की जाय और भिन्न-भिन्न गुणों का विकास किया जाय। यदि भीतर क्रोध है, तो क्षमा-गुण का विकास कर उसे दूर किया जाय ! कठोरता हो, तो दया का विकास किया जाय ! इस तरह एक-एक दोष दूर कर दैवी संपत्ति, सद्गुण विकसित होते जायँ, ऐसा प्रयत्न किया जाय।"

एक बार एक बहन ने विनोबा से कहा था : "आप सबके लिए बोलते हैं, सबके लिए इतना सब करते हैं, बहनों के लिए भी कुछ कहना चाहिए। उनके लिए खास तौर से कुछ करना भी चाहिए।"

विनोबा ने कहा : "मैंने बहनों के लिए 'गीताई' लिख दी है। इससे ज्यादा अच्छी चीज मैं बहनों के लिए शायद ही कोई कर सकता था।"

महाराष्ट्र के घर-घर में 'गीताई' पहुँच चुकी है। जैसे उत्तर भारत में 'रामचरितमानस' छह लाख से अधिक प्रतियाँ छप चुकी होंगी।

'गीताई' के बारे में विनोबा स्वयं क्या सोचते हैं ? देखिये : "मेरा जीवन-कार्य तो तभी समाप्त हो चुका, जब 'गीताई' का लेखन समाप्त हुआ। अब तो यह जो कुछ काम हो रहा है, सारा मुनाफे में है।"

और बापूजी ने तो 'गीताई' का जो सम्मान किया, उसे पढ़कर संसार में मराठी का मस्तक हिमालय से भी ऊँचा हो जाता है। उन्होंने लिखा : "गीताई सुनता हूँ, तो लगता है कि यह मराठी ही मूल है, संस्कृत इसका अनुवाद है।"

● ● ●

बरोरा
२१-६-'५१

कल 'गीताई' पर व्याख्यान हुआ। आज सारे रास्तेभर 'गीता' और 'गीताई' पर ही चर्चा होती रही। 'गीता' के दैनिक पठन का क्रम और उसका अनुबंध समझाते हुए जब विनोबा द्वारा बापूजी के नाम लिखे उस पत्र का जिक्र हुआ, जो 'गीताध्याय-संगति' नाम से छप भी गया है, तो विनोबा बोले : "वह तो बापूजी के नाम मेरा एक व्यक्तिगत पत्र है। यदि सार्वजनिक स्वरूप का लिखना होता, तो मैं उसे दूसरे ढंग से लिखता। उसे तो छापना ही नहीं चाहिए था।"

फिर आगे बात जारी रखते हुए वे बोले : "हाँ, उसमें साधक के लिए मार्गदर्शन है। उसके आधार पर वह गीता का अभ्यास अच्छा कर सकता है।"

गीता के विविध भाष्यों के बारे में चर्चा हुई, तो विनोबा ने कहा : "गीता का उत्तम भाष्य तो 'ज्ञानेश्वरी' ही है। ज्ञानेश्वर गीता का भक्त है। वह केवल गीता ही समझाना चाहता है। इसलिए जहाँ जो विषय आता है, उसमें वह तन्मय हो जाता है। दूसरों का ऐसा नहीं है।"

जिज्ञासु : "शंकराचार्य का?"

"आचार्य का मुख्य ग्रंथ, जिस पर उन्होंने अपना भाष्य लिखा, है—ब्रह्म-सूत्र। गीता पर तो उन्होंने इसलिए लिखा कि उन्हें कुछ व्याख्याएँ देनी थीं। व्याख्याएँ देते-देते बीच में कोई ऐसा विषय आ ही जाता है, तो उन्हें कुछ खंडन भी करना पड़ता है। बाकी वे गीता के

सामने कितने नम्र हो जाते हैं। 'शांकरभाष्य' में ऐसा नहीं है। वहाँ तो उनकी सारी कला और सारी प्रतिभा प्रकट हुई है।"

"तिलक महाराज का 'कर्मयोग-रहस्य' ?"

"कर्मयोग-रहस्य का जन्म गीता की भक्ति में से नहीं हुआ है। तिलक महाराज को अपने कुछ विचार संसार के सामने रखने थे। उन्होंने गीता के आधार से रखे, उसके लिए गीता का उपयोग किया। वे भक्त नहीं थे, ऐसा मेरा कहना नहीं है। भक्तियोग पर उन्होंने सबसे अधिक लिखा और बहुत अच्छा लिखा है। परंतु गीता-प्रतिपादन उनका मुख्य विषय नहीं था।"

"आचार्यजी ने भी संन्यास-प्रतिपादन के लिए गीता का उपयोग ही तो किया है ?"

"नहीं। संन्यास तो एक ऐसी अवस्था है, जो देहधारी के लिए असंभव है। आचार्यजी ने बताया कि 'गीता' का अन्तिम लक्ष्य संन्यास है। पर वह तो ध्रुव है। खुद आचार्यजी भी तो जीवनभर काम करते ही रहे। उस समय की रूढ़ियों के खिलाफ उन्होंने संन्यास-धर्म स्वीकार किया। फलस्वरूप माता की मृत्यु के बाद जब उस शव को श्मशान ले जाने के लिए कोई न आया, तो उसके तीन खण्ड करके खुद उसे जला आये। क्रांत-दर्शन के बिना यह नहीं हो सकता।"

प्रेरणामय तारुण्य

चर्चा चल ही रही थी कि 'कुष्ठाश्रम' आ गया, जहाँ विनोबाजी को अभी शिलान्यास करना था। वरोरा के एक युवक वकील श्री आपटेजी ने कुष्ठ-सेवा के लिए अपने-आपको परिवार-सहित समर्पित कर दिया था। उन्हींका आश्रम था यहाँ। शिलान्यास के समय कुष्ठ-सेवा का महत्त्व समझाते हुए विनोबा ने कहा :

"आप लोग देख रहे हैं कि जहाँ एक ओर लोग तरुणाई को सुखोपभोग का साधन मानते हैं, इस भाई ने अपने परिवार-सहित कुष्ठ-सेवा

के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है। वास्तव में तारुण्य ही ऐसा है, जब बहुत बड़ी प्रेरणाएँ मनुष्य को मिलती रहती हैं। उत्तम-से-उत्तम काम और बड़े-से-बड़ा त्याग करने की प्रेरणा अक्सर इसी उम्र में हुआ करती है। वर्धा में एक मनोहरजी हैं, जो गत १०-१२ वर्षों से इसी काम में तन्मय हैं। उनकी एकाकी उपासना चल रही थी। फिर मैंने एक लेख लिखा और हिन्दुस्तानभर से इस काम के लिए सेवकों की माँग की, तो दो तरुण हमें मिले—उत्तर प्रदेश के रविशंकर शर्मा और खानदेश के जोशी। कॉलेज की शिक्षा समाप्त करके ही वे आये थे। कॉलेज से भी, जहाँ सेवा-वृत्ति का अभाव होता है, ऐसे तरुण निकल आते हैं। इसका इतना ही अर्थ है कि परमेश्वर की इस समय हमारे काम पर कृपा-दृष्टि है। इसीलिए भगवान् युवकों को अरण्यवास ग्रहण करने की प्रेरणा दे रहा है। फिर यह काम भी आसान नहीं है। इसमें रोगी को रोगमुक्त और कष्ट-मुक्त करने का आत्मसंतोष तो है ही, परन्तु खुद को भी रोग होने की संभावना रहती है।"

यहाँ दान बोया जाता है

फिर इस काम को मदद देने के लिए लोगों से अपील करते हुए उन्होंने कहा :

"इस काम को सब लोगों से सब प्रकार की मदद मिलनी चाहिए। जैसे दान में दिया हुआ पैसा फेंका नहीं, बोया जाता है, क्योंकि यह काम केवल भूतदया का है। गांधीजी के मन में इस काम के लिए बहुत चिंता थी। अब गांधी-निधिवालों ने इस काम को उठाया है। पर काम इतना बड़ा है, इतना व्यापक है कि इसमें सबकी सहायता की जरूरत है। किसी एक भी दुःखी का दुःख दूर करने में क्या सुख है—इसकी अनुभूति जिन्हें हुई है, उन सबसे मेरी प्रार्थना है कि वे इस काम में मदद करें।"

बहादुर गौतम

भांदक से वानर-सेना याने गौतम बजाज आदि सब यहाँ पहुँच गये

थे। बच्चों ने घुँघची के पौधों से घुँघची के गुच्छ तोड़ने चाहे। शिलान्यास के स्थान पर उसके पौधे खूब थे और इमारत के लिए आये हुए नुकीले पत्थर भी खूब थे। एक पत्थर के सहारे गौतम भैया घुँघची तोड़ने चढ़े और पत्थर खिसक गया। चार इंच लम्बा, डेढ़ इंच गहरा जख्म हुआ। पत्थर, जमीन, कपड़े, सभी खून से तर थे। सभी चिंतित हुए। जख्म को पाँच टाँके देकर सिया गया। सारी घटना में वीर गौतम के मुँह से चूँ तक नहीं सुना। थोड़े ही रोज पहले विनोबा के साथ की चर्चा में उसने सुना था कि बिच्छू के डंक से शरीर में पीड़ा जरूर होती है। परन्तु उसके कारण रोने के बजाय मनुष्य हँस भी सकता है। गौतम भैया के हृदय पर उस श्रवण-ज्ञान का ऐसा अमिट संस्कार रहा कि इतनी बड़ी जख्म के बावजूद वह रोने के बजाय हँसने लगा। उसकी यह सहन-शक्ति देखकर सबको धीर-गंभीर जमनालालजी की याद आ गयी।

सारा प्रेम से हो

वरोरा में लोगों ने शिकायत की कि आजकल मजदूर ठीक काम नहीं करते। विनोबा ने कहा : "यह बात सही है कि मजदूर ठीक काम नहीं करते। लेकिन इसकी जिम्मेदारी हम पर ही है। हमने ही उन्हें बिगाड़ा है। हम तो बैल से भी काम ले लेते हैं न? बैल के बारे में हमें शिकायत का मौका क्यों नहीं मिलता? क्योंकि हम खुद भी उसके साथ काम करते हैं। अगर हम अपने परिवार-सहित खेती में काम करने लगें, तो मजदूर भी बराबर काम करने लगेगा। फिर यह भी सोचना चाहिए कि जब हमारे बच्चे अलसाते हैं, तो हम क्या करते हैं? जैसा व्यवहार हम उनके साथ करते हैं, वैसा मजदूरों के साथ भी करें। बच्चों को हम खाना खिलाते हैं या नहीं? तो इन्हें भी खिलायें। बच्चों पर थोड़ा नाराज भी होते हैं, वैसे प्रेम से थोड़ा इन्हें भी डाँटें। लेकिन सारा हो प्रेम से। उनमें इसी तरह धीरे-धीरे सुधार हो सकता है।" ● ● ●

धोखे में इतना, तो ज्ञानपूर्वक कितना ! : ६६ :

मांगली
२२-६-'५१

मांगली याने मांगल्यपुर । यहाँ देवतळेजी पुराने सेवक हैं । वे अगले पड़ाव पर ही लेने आ गये थे । रास्ते में कीर्तन-मंडलियों ने कबीर, तुकाराम और तुकडोजी के भजनों से मंत्रमुग्ध कर दिया । विनोबा उनके पीछे-पीछे चले जा रहे थे । मांगली जाना था, बीच में कहीं रुकने की बात नहीं थी । परंतु कीर्तन-माधुरी में मधुप की तरह सारे लीन हो गये और नादब्रह्म जिधर ले गया, उधर ही चलते गये । रास्ते से बाँयी ओर मुड़े । रास्तेभर द्वार, तोरण और पताकाएँ ! सीधे मंच पर पहुँच गये ।

वहाँ पहुँचने पर रहस्य खुल गया कि मांगली अभी दूर है, यह तो बीच का ही देहात है । विनोबा ने मुस्कराकर आसन ग्रहण किया और बातचीत शुरू कर दी :

"क्यों, गाँव में कोई झगड़ा-बखेड़ा है या नहीं ?"

"जी नहीं" —बूढ़े मुखिया ने भी मुस्कराकर ही जवाब दिया ।

"अरे ! तब तो गाँव का सारा मजा ही किरकिरा हो गया होगा ?"

"जी ! परमात्मा की कृपा है कि अब तक कोई झगड़ा नहीं है ।"

"लेकिन अब ये चुनाव जो आ रहे हैं ! फिर उनके साथ शहरवालों के झगड़े भी गाँव में आयेंगे । सावधान रहना ।"

फिजूल का टैक्स

विनोबा की लोगों के कपड़ों पर निगाह गयी । उन्होंने उसी बूढ़े मुखिया से पूछा : "क्या आपके बचपन में कपड़ा बाहर से ही आता था ?"

"बाहर से क्यों आये ? यहीं बनता था । घर-घर चरखे जो चलते थे ।"

"फिर अब क्या हो गया ? खेती तो अब पहले से कम ही करनी पड़ती है ।"

"लेकिन हम पहले इतने आलसी कहाँ थे ?"

"अब तो आटा भी बाहर से पिसकर आता होगा ।"

"घरभर के काम के लिए तो नहीं आता । परंतु जरा कोई बड़ा काम निकला कि पड़ोस के गाँववाली मिल की शरण लेनी पड़ती है ।"

"यह कुछ ठीक नहीं । गाँव के लिए कपड़ा, आटा, सब गाँव में ही होना चाहिए न ? आप सबके बदन पर यह सारा मिल का कपड़ा है । इसके निमित्त कितना रुपया बाहर जा रहा है ? फी आदमी दस रुपये भी मान लें और आप पाँच सौ आदमी भी हों, तो पाँच हजार रुपया सालाना बाहर जा रहा है । यह एक फिजूल का टैक्स ही लगा है आप पर । और बरसों से आप देते आ रहे हैं ।"

"महाराज, दस नहीं, पचीस रुपया फी आदमी खर्च आता है ।"

"तब आप ही सोचिये कि कितना भयंकर है यह सारा ?"

और शीघ्रता से रवाना हो गये । मांगली पहुँचे, तो देखते हैं कि गाँवभर की स्त्रियाँ कुंकुम-आरती लेकर उपस्थित हैं । विनोबा ने कहा : "कोई एक स्त्री तिलक करे ।" इच्छा हरएक की हुई । नतीजा यह हुआ कि एक-एक कर सबने तिलक किया, सबने आरती की । विनोबा सारी विधि चुपचाप देखते रहे । बहनों के स्नेह के आगे झुक जाना पड़ा ।

"आपका यह छोटा-सा गाँव देखकर मुझे अपने छोटे गाँव की याद आती है । **'भावबळें कैसा झालासी लहान ।'*** वैसा ही है मेरा । कुछ लोगों को सब बड़ा-ही-बड़ा पसंद आता है, पर मुझे तो सब छोटा-ही-छोटा पसंद आता है—छोटा गाँव, छोटा घर, छोटी चक्की, छोटी तकली ।"

*** भक्ति-भाव के सामने कौन छोटा नहीं बनता ?**

'रामदासाची माउली, आलशावरी गंगा आली।' * तो वह घबराया—सोचा कि डुबो देगी। लेकिन मैं डुबोने नहीं आया हूँ। हाँ, ठगने जरूर आया हूँ। अब देखता हूँ, आप लोग मेरा काम कितना करते हैं।"

कलियुग में भूदान ?

दोपहर में ग्रामवासियों के साथ काफी देर चर्चा हुई। "कलियुग में यह भू-दान कैसे चलेगा ? जमीन की आसक्ति कैसे छूटेगी ?'—लोगों ने शंकाएँ कीं।

"रूस में भी जो कुछ हुआ, कलियुग में ही हुआ। वहाँ जिसने रुकावट पैदा की, खतम कर दिया गया। मैं कहता हूँ, विवेक से करो। अगर रूस में धोखे में भी इतना सब हो सकता है, तो ज्ञानपूर्वक आप लोग करना चाहें, तो कितना ज्यादा हो सकेगा। ज्ञान से अधिक पवित्र, अधिक तेजस्वी, अधिक प्रतापी, अधिक शक्तिशाली इस दुनिया में और क्या है ? तो, आप लोग अपनी जमीन का आपस में बँटवारा कर लीजिये, प्रेम से एक परिवार की तरह रहिये।"

"चार भाई भी प्रेम से एकत्र नहीं रह पाते ?"

"क्योंकि चारों एक-दूसरे पर अधिकार जताते हैं और इसलिए अपेक्षाएँ भी रखते हैं। भाई-भाई का दृष्टांत लागू नहीं होता। आप लोग जिन्हें जमीन देंगे, वे आपके साथ प्रेमभाव से बरतेंगे। भाई-भाई की तरह झगड़ेंगे नहीं।"

● ● ●

---

* गंगा-माता, जो सन्त रामदास के लिए माता के समान है, आलसी के घर गयी।

पुरुषार्थ कीजिये   : ६७ :

नांदुरा
२३-६-'५१

बुनकरों ने शिकायत की कि बुनने के लिए सूत नहीं मिलता।

विनोबा : "सूत होगा ही नहीं, तो सरकार कहाँ से देगी ?"

"सूत का संग्रह तो खूब पड़ा है।"

"लूट लो।"

"वितरण में गड़बड़ है। सरकार का काम है कि वितरण ठीक करे।"

"तो, बदल दो सरकार को, जिससे शिकायत की गुंजाइश ही न रहे।"

"हमारा निवेदन है कि जो काम सरकार का है, वह सरकार करे।"

"याने जो सूत दुनिया में नहीं है, वह आपको लाकर दें ? देशभर में यही समस्या है। आप लोग पुरुषार्थ कीजिये। जैसे हर गाँव में अनाज पैदा होता है, सूत भी पैदा कीजिये। देश की सम्पत्ति बढ़ाइये। फिर बँटवारे का सवाल ही न रहेगा। दूसरा कोई मार्ग नहीं है।" ● ● ●

कंट्रोल और लोकमत : ६८ :

हिंगनघाट

२४-६-'५१

हिंगनघाट में वर्धा से अनेक लोग मिलने आये थे। मगनवाड़ी (वर्धा) में अभी-अभी कंट्रोल के संबंध में विचार-विनिमय करने के लिए विचारकों की सभा हुई थी। उसकी जानकारी विनोबाजी को दी गयी। इस सभा ने कोई निर्णय नहीं लिया। इसीसे जाहिर होता है कि मसला कितना पेचीदा है। विनोबा ने कहा : "आजकल राम-नाम की अपेक्षा लोगों के जीवन पर कंट्रोल अधिक हावी है।"

कंट्रोल के बारे में लोकमत लेने, न लेने के संबंध में पूछने पर विनोबा ने कहा : "यह विषय ऐसा नहीं है कि इस पर लोकमत लिया जाय। यह तो विचार का और व्यवस्था-शक्ति का विषय है। आप लोग उचित प्रबंध नहीं कर सकते या ठीक राज्य नहीं चला सकते, इसलिए क्या अब अंग्रेजों को पुनः राज्य सौंप देनेवाले हैं? हमारा सुझाव है कि महसूल अनाज में वसूल करो, मजदूरी अनाज में दो और सबको कातना सिखा दो। 'वार मेजर' की तरह ये दो बातें होंगी, तो कंट्रोल की जरूरत न रहेगी। गाँव-गाँव में सभा करके इसी विचार का आंदोलन कराना चाहिए। देहात के लोगों के बारे में मेरी श्रद्धा बढ़ गयी है। वे इस बात को तुरंत समझ सकते हैं।"

● ● ●

यश सारा प्रभु का : ६६ :

येसंबा
२५-६-'५१

सीधी सड़क से जाना था, परंतु सड़क के रास्ते का पुल ही टूट गया था; क्योंकि रात में घनघोर वर्षा हुई थी। इसलिए रेलवे-पुल पर से ही जाना पड़ा। रेलवे-चौकी के पास कलेवे की बेला हुई। विनोबाजी और सहयात्रियों को रुकते देख चौकीदार ने फौरन अपनी खटिया डाली। हाथ धोने के लिए पानी ले आया। वह अपने को धन्य-धन्य मानकर पूछने लगा कि वह और किस तरह कुछ सेवा कर सकता है।

उधर येसंबा से करीब सौ लोग भजन-कीर्तन करते चले आ रहे थे। येसंबा अभी दो मील था। विनोबा कलेवे के लिए बैठे, तो कीर्तन-मंडली ने तुकाराम का प्रसिद्ध गीत गाना शुरू किया : **'तुका बिघडला, जग बिघडले !'**—'तुकाराम बिगड़ा, तो दुनिया भी बिगड़ी।' पूरा गीत लोगों ने बड़े सुंदर ढंग से गाया। कलेवा होने पर विनोबा भी भजन में शरीक होकर गाने लगे। इस बार उन्होंने पदों का क्रम उल्टा कर दिया : **'जग बिघडले, तुका बिघडला**—'दुनिया बिगड़ी, तुकाराम भी बिगड़ा !' दुनिया से तुकाराम भिन्न नहीं है, यही शायद वे बताना चाहते थे। "लाइफ इज वन ऐंड इनडिविजिबुल" जो सबसे एकरूप हो, उसके लिए भिन्नत्व कैसा ? वह तो सबके साथ सब इंद्रियों से सदा-सर्वदा सहानुभूति अनुभव करता रहता है।

भजन चल ही रहा था कि सामने से विनोबाजी के बालमित्र, मध्य-प्रदेश के अन्नमंत्री श्री गोपाळराव काळे भी आये। दोनों का हृदय भर आया। सबने भरत-भेंट का आनंद पाया। गोपाळरावजी के लिए विनोबा

के हृदय में बहुत आदर है, यह उनके पश्चात् उनके बारे में विनोबा द्वारा समय-समय पर प्रकट किये उद्गारों से हम लोगों ने अनुभव किया ही था। 'सत्याग्रहाश्रम' के संचालन में गोपालराव, विनोबा के दाहिने हाथ थे।

पड़ाव पर पहुँचने पर मालूम हुआ कि बरसात और पुल टूट जाने के कारण लोग वाघोली आदि अलग-अलग दिशा में विनोबाजी को लिवा लाने गये थे कि जिधर से अच्छा रास्ता हो, ले आयें। थोड़ी देर में सारे लौट आये और येसंबा की उस छोटी-सी बस्ती में सैकड़ों लोगों की भक्ति-भावपूर्ण कीर्तन-ध्वनि आसमान में गूँज उठी। बरसात देख और बोनी का समय जानकर अपने प्रास्ताविक भाषण में विनोबा ने कहा :

"भगवान् का बड़ा उपकार है कि इतनी अच्छी बरसात हुई है। अब तो बोनी के लिए आप सबको खेतों में चले जाना चाहिए। यह बोनी का काम आप लोगों के अपने घर का काम नहीं है, वह तो देश का काम है।"

येसंबा में श्री रामचन्द्र पाटील के यहाँ निवास था। उनका जिक्र कर विनोबा ने कहा : "रामचन्द्रराव को परमार्थ के प्रति बहुत आकर्षण है। उनका भक्त-हृदय है। उनके कारण आज येसंबा का योग आया।"

निरन्तर निरहंकार देश-कार्य

फिर देहात के लोगों के बारे में, खास कर खेती पर काम करने-वालों के बारे में अपनी भावना प्रकट करते हुए विनोबा ने कहा : "देहात में रहनेवाले आप लोग बहुत धन्य हैं, जो निरंतर देश-सेवा का काम करते रहते हैं। हम लोग तो कभी-कभी देश-कार्य करते हैं, परन्तु आपका काम निरन्तर, अखंड चलता ही रहता है। आप पूरी तरह ईश्वर पर निर्भर रहकर काम करते हो। बरसात कम हुई, तो ईश्वर को ही याद करते हो और समय से पहले हुई, तो भी उसीका स्मरण करते हो। अच्छी हुई और समय पर हुई, तो भी उसीका उपकार मानते हो। अपनी ओर किसी

प्रकार का कर्तृत्व नहीं लेते, सतत प्रयत्न करते रहकर भी अहंकार का बोझा नहीं ढोते। आपकी तरह हम सबको भी अनुभव लेना है कि दुनिया में हमारे किये कुछ नहीं होता, परमेश्वर के किये ही सब हुआ करता है।

मेरी प्रेरणा

"किसान अधिक परिग्रह कर ही नहीं सकता। पक्षियों को उनके हिस्से का मिल जाता है। बंदर अपना हिस्सा ले लेते हैं। गाय, बैल आदि जानवर अपने हिस्से का खा लेते हैं। सरकार के हिस्से का सरकार ले लेती है। गाँव के लुहार, बढ़ई, चमार भी अपना-अपना भाग ले जाता है। परिवार को आवश्यकताभर मिल जाता है। इस तरह आप लोगों के पास संग्रह रह ही नहीं सकता। इसलिए मैं आप लोगों को गुरुमूर्ति मानता हूँ। आप लोग ही मेरी प्रेरणा हो, मेरी स्फूर्ति हो।"

गलतफहमी

किसान को अपने बारे में जो गलतफहमी है, उस संबंध में विनोबा ने कहा :

"लेकिन किसान को अपने काम के महत्त्व के बारे में ज्ञान नहीं है। वह जानता नहीं कि वही इस देश का मालिक है। आप लोग जब तक सुखी नहीं होंगे, तब तक दुनिया सुखी नहीं होगी।"

अन्त में उन्होंने आगाह किया :

"पर आप सब एक बात का आग्रह रखो। शहरों के झगड़े यहाँ देहात में मत आने दो।" अंत में उन्होंने सबको तुरंत बोनी पर निकल जाने की हिदायत देकर बिदा किया।

स्वागत-सभा के बाद रामचंद्रराव के घर में विनोबाजी ने प्रवेश किया। शबरी की कुटिया में राम का पदार्पण हुआ। बैठक में सामने ही गांधीजी की तसवीर है और दोनों ओर विनोबा की दो तसवीरें—एक

बहुत पुरानी, दुबली-पतली कायावाली और दूसरी, अभी-अभी की। दाहिनी ओर ज्ञानेश्वर तथा रामतीर्थ के चित्र !

अब विनोबा ने उनका उपासना-साहित्य देखना शुरू किया। स्वाध्याय की पुस्तकों में ज्ञानेश्वरी के अतिरिक्त गीताई, हरिपाठ, चांगदेव पासष्टी, गीता-प्रवचन आदि ग्रंथ थे और थे विनोबा के पत्र, जो समय-समय पर उन्हें विनोबा की ओर से मिलते रहे हैं। ज्ञानेश्वरी सारी-की-सारी जगह-जगह खूब चिह्नांकित है। गत ३० वर्षों से रामचंद्रराव ज्ञानेश्वरी का नित्य पारायण करते हैं। वर्ष में चार पारायण होते हैं। हर साल बरस में एक बार 'भंडारा' याने 'ग्रामभोज' होता है, जिसमें इर्द-गिर्द के गाँववाले भी शरीक होते हैं। गृहिणी बहुत दक्ष और सेवा-परायण तो है ही, लेकिन पति की इन सारी धर्म-प्रवृत्तियों में पूर्ण सहयोग देनेवाली है। दोनों का जीवन ताने और बाने की तरह एकरूप है। दोनों ने गृहस्थाश्रम को धन्य किया है।

भू-दान का श्रेय ?

येसंबा में वर्धा-तालुका के कार्यकर्ता भी आये थे। उनमें विनोबा के चिरपरिचित तथा उनके साथ के कुछ आश्रमवासी भी थे। जो कुछ आन्दोलन हुआ, उसके बारे में वे सभी पहलुओं से विचार करना चाहते थे, ताकि इस इलाके में आगे काम के लिए मार्गदर्शन मिल सके।

एक भाई ने पूछा : "क्या भू-दान-यज्ञ द्वारा विषमता का सवाल पूरी तरह से हल हो सकता है ?"

दूसरे एक भाई ने कहा : "विनोबा ने रास्ता दिखा दिया है, अब सरकार सब लोगों में भूमि का समान बँटवारा क्यों न करे ?"

एक बहुत निकट के सहकारी ने पूछा : "भू-दान-यज्ञ का श्रेय कम्युनिस्टों को है या विनोबाजी को ? अगर विनोबाजी को है, तो वे भारत के और हिस्सों में भी, जहाँ तेलंगाना जैसी परिस्थिति नहीं है, भू-दान प्राप्त करके दिखायें।"

हरएक ने अपने-अपने सुझाव दिये। विनोबा तो श्रवण-भक्ति कर रहे थे। आखिरी सवाल पर लोग कुछ बिगड़ते भी नजर आये। इतने में श्री गोपाळरावजी काले बोलने के लिए उठे। सभा में पुनः शांति हो गयी।

गोपाळराव : "भू-दान-यज्ञ के श्रेय के संबंध में चर्चा का सवाल ही नहीं उठता। इस तरह सोचने का तरीका भी गलत है। लेकिन प्रश्न निकला है, तो मैं अपना विचार बता देना चाहता हूँ। मेरे मन में कोई संदेह नहीं कि भू-दान-यज्ञ का श्रेय सारा विनोबा को ही है। यह सही है कि तेलंगाना में भूमि का सवाल एक जीवित सवाल के रूप में उपस्थित था और उसके हल करने के लिए आवश्यक ऐतिहासिक परिस्थिति भी वहाँ मौजूद थी। लेकिन उस परिस्थिति में जो हल विनोबा ने सुझाया— 'भूमि का सवाल कत्ल और कानून से नहीं, प्रेम से, अहिंसा से, ऐच्छिक दान से हल हो सकता है'—वह उनका अपना दर्शन है। यह उनकी विशेषता है और इसलिए यह श्रेय उन्हींको है।"

गोपाळरावजी सरकार के भी प्रतिनिधि थे। सरकार के संबंध में भी जिक्र हुआ ही था। तो, उस बारे में भी उन्होंने स्पष्टीकरण किया :

"सरकार इस मसले को अपने तरीके से हल कर ही रही है। परंतु उसकी अपनी मर्यादा है। उसके सामने 'कांपेन्सेशन' का सवाल है। भू-दान और सरकार के काम में कोई तुलना नहीं हो सकती।"

अन्त में उन्होंने भू-दान के बारे में पुनः कहा : "यह मैं मानता हूँ कि हमारे यहाँ तेलंगाना जैसी ऐतिहासिक परिस्थिति निर्माण नहीं हुई है। परंतु इससे भू-दान के तरीके में कोई फर्क नहीं पड़ता। भू-दान की कल्पना अत्यंत सुंदर, अत्यंत नवीन और अत्यंत क्रांतिकारी है, इसमें मुझे संदेह नहीं है।"

इस सारी चर्चा को सहयात्रियों तथा सेवकों ने भी सुना। एक सेवक ने नम्रतापूर्वक निवेदन किया : "विनोबा के सम्मुख हमें इस चर्चा के बीच

कुछ कहते संकोच होता है। लेकिन सारी पदयात्रा में साक्षी रूप से उपस्थित रहने के कारण कुछ कहना मेरा धर्म हो जाता है। परिवार के लोगों को चर्चा करने का अधिकार है और उसकी सार्वजनिक उपयोगिता भी है। श्रेयवाले प्रश्न का जवाब विनोबा की भाषा में यही है कि 'सारा श्रेय परमेश्वर का है।' हमारा कहना है कि वह परमेश्वर तेलंगाना में विनोबा के रूप में ही प्रकट हुआ। उसने उनकी वाणी में जो ताकत भर दी और उसके कारण लोगों तथा परिस्थिति में जो परिवर्तन हुआ, उसके हम साक्षी हैं। एक-एक इंच जमीन के लिए जहाँ कत्ल और मुकदमे-बाजियाँ होती हैं, वहाँ लोगों ने—जिनके बारे में किसीको उम्मीदें नहीं थीं, ऐसे लोगों ने—जमीनें दीं। हजार-हजार एकड़ जमीन दी और साथ-साथ घूमकर कार्यकर्ता की तरह काम भी किया। इधर गरीब-से-गरीब लोगों ने भी अपने एक-एक एकड़ में से एक-एक गुंठा देकर सबको त्याग की प्रेरणा दी। यह सब परमेश्वर ने करवाया, लेकिन निमित्त हमें या आपको नहीं बनाया, विनोबा को बनाया। क्योंकि इस काम के लिए उन्हींको उसने सबसे ज्यादा अधिकारी पाया। वास्तव में विनोबा के रूप में वामनावतार ही प्रकट हुआ। इस पदयात्रा के निमित्त प्रतिदिन जो एक-एक नया मौलिक विचार वे देते गये, वह इस मानव-जाति के लिए उनकी विशेष और स्थायी देन है। विनोबा के इस काम को देखकर लगता है कि बापू के बादका सारा काम भगवान् उनके जरिये ही करवाना चाहते हैं।"

विनोबा अब तक श्रवण-भक्ति कर रहे थे। इस तरह की चर्चा से थोड़ी देर उनका मनोरंजन ही हुआ होगा, क्योंकि इन बातों का लेप उन्हें नहीं होता। अब उन्होंने बोलना शुरू किया :

"बात ऐसी है कि मैं जो वर्धा से निकला, वह तो सर्वोदय-सम्मेलन के लिए। रेल, हवाई-जहाज आदि के लिए मेरा विरोध नहीं है, यह भी आप लोग जानते हैं। लेकिन पैसे की पकड़ से मनुष्य की मुक्ति कैसे हो सकती है, इसका जो प्रयोग मैं परंधाम में कर रहा था, उसी प्रयोग को

उस पदयात्रा के रूप में मैंने जारी रखा। लोक-संपर्क, देश-दर्शन, ये लाभ भी कम महत्त्व के नहीं थे। फिर लौटने का प्रश्न आया। जाहिर है कि जिस रास्ते से गया, उसी रास्ते से लौटने का सवाल ही नहीं था। और कम्युनिस्टों का इलाका देखने की कल्पना तो शुरू से थी ही मेरे मन में। मैंने उसे स्पष्ट शब्दों में जाहिर नहीं किया था, इतना ही।

"भूमि का सवाल हल हो गया, ऐसा नहीं है। हाँ, उसकी दिशा मिल गयी है, रास्ता मिल गया है। मैं तो गया था केवल अवलोकन करने के लिए। जो कुछ यश प्रकट हुआ है, वह बहुत ही बड़ा है, इसमें सन्देह नहीं। अपयश आता, तो भी मुझ पर उसका कोई असर होनेवाला नहीं था। प्रयत्न करना ही हमारा काम है।

नयी मनोवृत्ति

"जमीन का यह मसला कठिन है, इसमें शक नहीं। वहाँ तेलंगाना के कम्युनिस्टों द्वारा लोगों की हत्याएँ काफी हुई हैं, कुछ कम्युनिस्ट भी मारे गये हैं, दबाये भी गये हैं। सारांश, हिंसा से ऐसे सवाल हल नहीं होते। अब अहिंसा से वे हल हो सकते हैं या नहीं, यही देखना है। भू-दान-यज्ञ ने उस प्रयोग का रास्ता खोल दिया है। जो कुछ काम हुआ, उसका नाप जो भूमि मिली है, उससे नहीं हो सकता। उससे करना भी नहीं चाहिए। देने और त्याग करने की जो एक नयी मनोवृत्ति निर्माण हुई है, उसी पर से इसका नाप करना चाहिए। भू-दान-यज्ञ के कारण ही इस देश में इस एक नयी मनोवृत्ति का उदय हुआ है।"

फिर उन्होंने प्रस्तुत चर्चा के बारे में कहा :

जागतिक आशा

"अब तो मैं आश्रम लौट रहा हूँ। इधर की यह यात्रा निरुद्देश्य है। मित्रों से मिलना हो रहा है, यही लाभ पर्याप्त है। फिर भी जमीन मिल रही है, यह भारत की और भू-दान-यज्ञ की भी विशेषता है। बाकी इस समय यहाँ इस प्रकार की चर्चा की आवश्यकता भी नहीं थी। मेरा

जवाब तो यही है कि मैं यह भू-दान का काम लेकर वहाँ गया नहीं था। वहाँ अनेक प्रकार की घटनाएँ घटी हैं, अनेक प्रकार की कार्रवाइयाँ हुई हैं। वहाँ की परिस्थिति का निरीक्षण करते-करते और वहाँ की समस्याओं को सुलझाते-सुलझाते एक दिन यह भू-दान की कल्पना सूझ गयी। वर्धा से जाते समय भू-दान की कल्पना लेकर वहाँ की समस्या सुलझाने तो मैं गया नहीं था।

"जो परिस्थिति तेलंगाना में थी और देश में भी जो स्थिति आज है, वह केवल तेलंगाना या हिंदुस्तान की परिस्थिति नहीं है। वह तो जागतिक स्थिति है। उसीका अवलोकन करने और संभव हुआ, तो उसका उपाय खोजने मैं वहाँ गया था। उसी दृष्टि से मैं वहाँ घूमा। उससे लाभ भी बहुत हुआ है, इसमें संदेह नहीं। दुनिया के लोगों के दिलों में भी एक आशा निर्माण हुई है कि शायद इस रास्ते से कोई हल निकल जाय।

गोपाल-कलेवा

"बाकी जो सवाल अभी उपस्थित हुआ है, उसका जवाब तो हमारे परंधाम के कांचनमुक्ति के प्रयोग में है, जो मेरी पदयात्रा से पहले वहाँ चलता था, मेरी गैरहाजिरी में भी चलता रहा और जिसमें अब जाते ही मैं पुनः जुट जानेवाला हूँ। कम-से-कम भूमि में अधिक-से-अधिक पैदावार निकालने का हमारा वह प्रयोग है। उसमें से पैसे से मुक्ति और संपूर्ण स्वावलंबन सध सकता है। उसीमें से भूमि-समस्या का हल भी निकलनेवाला है। फिर मेरा प्रयोग मेरे इर्द-गिर्द के लोग, देहातवाले देख सकेंगे। फिर मैं भी उन्हें उसके बारे में कह सकूँगा। आज मैं सरकार की ओर नहीं देखता। वह मेरा तरीका ही नहीं है। मेरे तरीके से अगर पचास फीसदी यश मिला, तो भी मैं काफी समझूँगा। फिर मैं सरकार से भी कह सकूँगा कि यह प्रयोग सफल हुआ, अब इसका सारे देश के लिए

विनियोग करो। सरकार कभी गहराई में नहीं जाती और जा भी नहीं सकती। वह तो लंबाई-चौड़ाई में ही काम करती है। वह काम भी थोड़ा ही कर सकती है। जनता की शक्ति के आगे उसका कदम बढ़ नहीं सकता। सरकार तो प्रजा की सेवक है। वह जनता के लिए गुरुरूप नहीं है। जो भूमिका सेवक की है, वही उसकी है। वह जनता की सेवा ही कर सकती है, जनता को धक्का नहीं दे सकती। मेरे सामने जमीन एक से माँगकर दूसरे को देने का सवाल ही नहीं है। सब मिलकर सारी जमीन को जोतें, यही काम हमें करना है। इसीका प्रयोग हमें सिद्ध करना है। सारा 'गोपाल-कलेवा' हमें करना है।

युग तो भावनाओं का होता है

"कानून से जमीन का समान वितरण करने की बात भी यहाँ निकली। लेकिन वह कानून कौन करेगा? हैदराबाद में कानून बनाने की बात चल रही है, तो लोगों ने अपनी जमीन की व्यवस्था करना शुरू कर दिया है। मनुष्य कानून में से भाग निकलने के लिए रास्ते खोजता है और कानून का इरादा सफल नहीं होता। दंडशक्ति से काम भी कम-से-कम होता है, यद्यपि देशभर में होता है। लेकिन जो काम कानून से नहीं हो सकता, वह भू-दान से हो सकता है। मुझे इसका अनुभव इस बार अनेक गाँवों में हुआ है। एक गोंड के पास साठ एकड़ भूमि थी। पंद्रह एकड़ उसने अच्छी जोतकर तैयार की थी। वही उसने दान में दी। तीन भूमिहीन परिवारों में उसका हमने वितरण भी करवा दिया। उन भाइयों ने भी लिख दिया कि हम दस साल जमीन न बेचेंगे। उन लोगों को तो यह सारा अद्भुत ही मालूम हुआ। युग तो भावना का होता है और वह भावना ही बदलती है।

"मैं अब यहाँ जमीन माँगनेवाला नहीं हूँ। कोई दे, तो लेनेवाला जरूर हूँ। हाँ, 'समग्र ग्राम' का प्रयोग मुझे करना है और देहात-देहात में करना है। आज के देहातों को बदल देना है। यह सही है कि

देहातवालों को भी वैसी इच्छा होनी चाहिए। परंतु यह इच्छा ही तो हमें बदल देनी है। तो, आप लोग अब इस बहस में न पड़ें। मनुष्य तो निमित्तमात्र बनता है। यश तो सारा प्रभु का ही है।"

फिर उन्होंने शिवरामपल्ली के पंचविध संदेश की ओर ध्यान खींचकर कहा :

पंचविध कार्यक्रम

"हमें ये सारे काम करने हैं—गाँव-गाँव साफ-सुथरे करने हैं, शुद्ध व्यवहार करनेवाले लोग निर्माण करने हैं। जो परिश्रम नहीं करते, उन्हें उसके लिए प्रेरित करना है और जो करते हैं, उन्हें निष्ठापूर्वक करने की बात समझानी है। गाँव-गाँव में शांति-सेना के सैनिक निर्माण करने हैं। अशांति नजर आते ही उसका निवारण करना है और सबको शरीर-परिश्रम द्वारा समाज के लिए कुछ-न-कुछ देने की प्रेरणा देनी है। इसके लिए हमने सूत्रांजलि का कार्यक्रम दिया है। उससे हमें अंदाज होगा कि सर्वोदय-विचार को माननेवाले लोग कितने हैं। आप लोग इस पंचविध कार्यक्रम में जुट जाइये और वर्धा-तहसील में यह सब कर दिखाइये।"

इस तरह यात्रा की परिसमाप्ति पर वर्धा-तहसील के लिए एक सुनिश्चित कार्यक्रम ही मानो विनोबाजी ने दे दिया।

और अपने लिए भी कार्यक्रम बना लिया—'कांचन-मुक्ति' और तद्द्वारा 'समग्र ग्राम।'

यह प्रलोभन !

लेकिन विनोबा ने भू-दान के काम पर जोर क्यों नहीं दिया ? तेलंगाना की भूमि पर भू-दान-यज्ञ की देवता प्रकट हुई, उसने क्या विनोबाजी के लिए यह सहजधर्म निर्माण नहीं किया था ? क्या अब उनको सब ओर भू-दान नहीं माँगना चाहिए था ?

तेलंगाना की भूमि को भेट देना और वैसा ही प्रसंग आया, तो उसी भूमि पर अपना समर्पण भी कर देना, यह सहजधर्म तो विनोबा के

लिए निर्माण हो चुका था—हैदराबाद के लिए रवाना हुए, तभी। परंतु तेलंगाना का वह मिशन पूरा हुआ। अब जो काम तेलंगाना जाने से पहले चल रहा था और जो विनोबा की दृष्टि में भू-दान से भी अधिक महत्त्व का था, उसमें न जुटना ही सहजधर्म की उपेक्षा होती।

लेकिन विनोबा से प्रश्न पूछा गया था कि तेलंगाना से बाहर भू-दान प्राप्त करके दिखायें। यह भू-दान-यज्ञ के लिए एक प्रकार का आह्वान था। उसे न स्वीकारना विनोबा के लिए कहाँ तक उचित था?

विनोबा की दृष्टि में वह आह्वान ही गलत था। तेलंगाना की यात्रा समाप्त करके बल्लारपुर से वर्धा तक की यात्रा में भू-दान-प्राप्ति का काम बंद तो नहीं हुआ था। भूदान का आग्रह न रखते हुए भी वरदा नदी के इस पार भूदान में भूमि तो मिली ही थी। खुद तेलंगाना में भी, वरंगल और नलगुंडा में जो परिस्थिति थी, वह करीमनगर और आदिलाबाद में नहीं थी। परंतु इन दो जिलों में तो नलगुंडा-वरंगल से भी अधिक जमीन मिली।

लेकिन यह सही है कि विनोबा ने तेलंगाना के बाहर भूदान माँगने का वह आह्वान स्वीकार नहीं किया।

क्योंकि वह आह्वान नहीं था, प्रलोभन था, और जबरदस्त प्रलोभन था। विनोबा प्रलोभन के कैसे वश होते?

ईसा के सामने भी ऐसा ही प्रलोभन उपस्थित हुआ था। शैतान ने ईसा से कहा था: "अगर तुम भगवान् के बेटे होने का दावा करते हो, तो दो हुक्म इस पत्थर को कि रोटी बन जाय।"

ईसा ने कहा: "रोटी ही मनुष्य का सर्वस्व नहीं है। उसके लिए तो ईश्वर की आज्ञा ही सर्वस्व है।"

विनोबा के लिए भी भू-दान सर्वस्व नहीं है, ईश्वर की आज्ञा ही सर्वस्व है। उसकी आज्ञा होगी, तो वह भू-दान के लिए निकलने को कहेगा, उसकी आज्ञा होगी तो वह और कोई काम करायेगा।

शाम को विनोबाजी सहज ग्राम-प्रदक्षिणा के लिए निकले, तो सारे गाँव में उजियाला ही उजियाला नजर आया। द्वार-द्वार और चबूतरा-चबूतरा दियों से सजा हुआ! लिपे-पुते मार्ग, हर द्वार सजा हुआ, हर चौक पूरा हुआ! दीपोत्सव से भी अधिक आनन्द मनाया जा रहा था। मराठी में कहते ही हैं कि

संत आले घरां, तोचि दिवाळी दसरा।"

—जिस दिन पधारे संत, वही दिवाली-बसंत!

दोपहर में विद्वान् लोग भू-दान-यज्ञ के यशापयश की चर्चा करते थे। ये दीप-मालाएँ कह रही थीं "जवाब हमसे पूछिये।" ● ● ●

जिसका उसको   : ७० :

सेवाग्राम
२६-६-'५१

रफ्तार तो रोज ही तेज रहती है। पर आज की रफ्तार असाधारण थी। दौड़ रहे थे कहा जाय, तो हर्ज नहीं। खुद दौड़ते न भी दिखाई देते हों, पर साथी तो सारे दौड़कर ही साथ दे पा रहे थे—कदमों में इतनी तेजी थी। कोई जबरदस्त आकर्षण था, जो उन्हें इतनी तेज रफ्तार चला रहा था! वह और क्या आकर्षण हो सकता था—सिवा उस कुटिया के, जहाँ तीन माह पूर्व पदयात्रा का संकल्प हुआ था, जहाँ से बल और आशीर्वाद लेकर "करो और मरो" की भावना से तेलंगाना की पदयात्रा पर विनोबा निकल पड़े थे। यद्यपि सबको कहा नहीं था, पर मन में तो उनके यह था ही कि हैदराबाद से आगे तेलंगाना जाना है।

रात में मेह खूब बरस चुके थे। कच्चा रास्ता! कदम-कदम पर पैर में पाँच-पाँच सेर से कम मिट्टी नहीं चिपक रही थी। ऐसी असुविधा में यह हवा की-सी तेज रफ्तार थी विनोबा की।

छप्पन दीप

रास्ते में भानखेड़ पड़ता था, जहाँ छप्पन बहनें हाथ में दीप के नीरांजन लेकर आरती के लिए खड़ी थीं। पकवान तो छप्पन सुने थे। परंतु ये दीपक भी छप्पन थे, क्योंकि विनोबा अब अपने छप्पन बरस पूरे कर रहे हैं। पाद-प्रक्षालन, तिलक, पुष्पमाला, न जाने क्या-क्या समारोह शुरू हुआ। पाँव अधीर थे। मन तो शायद कब का कुटिया के पास पहुँच चुका था। आखिर सहा नहीं गया। सारी भीड़ को वैसी ही

छोड़ एक किनारे से विनोबा चुपचाप ऐसे आगे निकल गये कि लोग देखते ही रह गये। विनोबा का हृदय भाव-भीना था। दुपट्टे से उन्होंने अपनी आँखें पोछीं। रफ्तार और तेज हुई।

बारिश के कारण नाले बहने लग गये थे। चिकनी मिट्टी थी। कदम-कदम पर पाँव फिसलने का भय था। पगडंडियों से ही चलना था। आगे-आगे विनोबा और पीछे-पीछे जन-समुदाय। एक के पीछे एक, सहज-सुन्दर दर्शन था—रहबरी के संकेत से भरा हुआ। सामने विशाल ताल-बन था, जो तेलंगाना के प्राकृतिक सौन्दर्य की स्मृतियाँ ताजी कर रहा था।

ताल-बन को पार करते ही सामने 'तालीमी-संघ' का सारा परिवार ताल-मृदंग, एकतारा-झाँजर लिये कीर्तन कर अगवानी करता दिखाई दिया। सब उसी छोटी-सी पगडंडी पर एक-एक कर साथ हो गये। "**प्रेमगली अति सांकड़ी**", उसमें दो समाते ही कैसे? विनोबा की रफ्तार और भी तेज हो गयी। मानो बरसों के विरह के बाद मातृ-मिलन के लिए उत्सुक वत्स दौड़ रहा हो। आश्रम के द्वार पर चिमनलाल भाई, बाबाजी आदि ने आदर और मौनपूर्वक प्रणाम किया। विनोबा के हाथ प्रणाम के लिए जुड़े, उतनी देर में पाँव 'आदि-निवास' वाली कुटिया तक पहुँच गये। फिर प्रार्थना-स्थल, पीपल और कुटिया का द्वार! क्षणभर में बापू के सामने जाकर बैठ गये। हाँ, बापू के सामने ही, क्योंकि विनोबा के लिए तो वे आज भी वैसे ही थे और हैं।

कुटिया में विनोबा बहुत देर रुक न सके। बापू के रहते भी उन्होंने कभी बापू का अधिक समय नहीं लिया, तो अब कैसे लेते? शीघ्र 'आखिरी' निवास में लौट आये, जहाँ डेरा रखा गया था। यहीं से आश्रमवासियों ने दो माह पूर्व उन्हें बिदा किया था—"**सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम**" गाकर! वही गीत फिर से गाया गया। विनोबा ने तो तभी कहा था कि 'सुनेरी' नहीं, 'देखेरी मैंने'। अब तेलंगाना की यात्रा ने तो इस 'देखने'

पर मुहर भी लगा दी। इधर बहनें एक-एक चरण अलापती जातीं और उधर विनोबा की आँखों से कृतज्ञता निखरती जाती। गीत तो कब का समाप्त हुआ, पर विनोबा की मौन समाधि भंग नहीं हुई। वाग्धारा का काम नयनधाराएँ कर रही थीं।

'गुरोस्तु मौनं व्याख्यानम्…'—काफी देर तक सबको इस तरह अत्यंत शांत-गंभीर वातावरण का स्पर्श प्राप्त हुआ। आखिर सारा बल समेटकर मौन भंग करते हुए विनोबा ने कहा :

"आप सब लोगों की शुभ-कामनाएँ लेकर मैं यहाँ से रवाना हुआ था। जिस प्राणदायी बलवान् भजन से आपने मुझे बिदाई दी थी, उसी भजन से यह महान्-यात्रा यहाँ समाप्त हो रही है, इसकी मुझे बहुत खुशी है। तालीमी संघ के इन छोटे-छोटे बच्चों का और इन बहनों का मैं खास तौर से उपकार मानता हूँ, क्योंकि जो कुछ भी हुआ है, उसमें इन लोगों की सद्इच्छाओं का बहुत बड़ा हाथ है, ऐसा मेरा मानना है।"

जाजूजी, बाबूकाका (किशोरलाल भाई) जानकी, देवीजी, गोमती काकी, शांता बहन, सारा महिलाश्रम-परिवार, गोपुरी-परिवार, परंधाम परिवार, सभी से मिलना हुआ। नम्रता और तपस्या की मूर्ति, वयोवृद्ध जाजूजी की वात्सल्य भरी आँखों में विनोबा के पराक्रम ने एक नया तेज और उत्साह भर दिया था। अक्सर गंभीर रहनेवाले चेहरे पर एक दमक रही, मानो वह अहिंसा की ही दमक हो। किशोरलाल भाई से मिलकर ऐसा लग रहा था, मानो विनोबाजी अपने-आपसे ही मिल रहे हों।

"जितना विचार-साम्य मैंने किशोरलाल भाई के साथ अनुभव किया है, शायद ही उतना किसीसे और किया हो।"—विनोबा ने कई बार कहा था। बापू के बाद किशोरलाल भाई तो विनोबा के साथ मानो तद्रूप ही हो गये थे। किशोरलाल भाई ने विनोबा के निकट बैठकर जब उनकी श्रांत काया को वात्सल्य और चिंता की निगाहों से निहारा और स्वास्थ्य के संबंध में पूछ-ताछ की, तो मालूम होता था—उनके मुख से स्वयं बापू

ही पृच्छा कर रहे हैं। पास में गोमती काकी खड़ी थी, जो कभी विनोबाजी को निहारती, कभी बाबूकाका को; मानो किसी अकथनीय आनंद की अनुभूति उन्हें हो रही हो।

तेलंगाना में जो कुछ हुआ, उसके बारे में जितनी कृतकार्यता विनोबा अनुभव कर रहे थे, उससे कितनी ही अधिक किशोरलाल भाई स्वयं अनुभव कर रहे थे। मानो बापू पुनः हमारे बीच आ गये हों, ऐसा ही उन्हें लग रहा था।

साक्षात्कार

शाम को प्रार्थना के पहले, विनोबाजी की अनन्य सेविका, उनकी मानस-पुत्री, परंतु माता की तरह उनकी फिक्र करनेवाली, उनकी भूख-प्यास को अपनी भूख-प्यास की तरह अनुभव करनेवाली महादेवी बहन ने यात्रा के कुछ संस्मरण सुनाये, जिससे जाहिर होता था कि सारे यात्रा-पथ में विनोबा के लिए ताई के सुरक्षण का कितना बड़ा सहारा था।

अपने प्रवचन में विनोबा ने उनके निवेदन की ताईद करते हुए कहा :

"मेरा विश्वास इस मुसाफिरी से और भी बढ़ गया है। दुनिया में अगर किन्हीं दो शक्तियों का मुकाबला होनेवाला है, तो 'साम्यवाद' और 'सर्वोदय' विचारों में होनेवाला है। दूसरी जो शक्तियाँ दुनिया में काम करती दिखाई देती हैं, वे ज्यादा दिन टिकनेवाली नहीं हैं। 'साम्यवाद' और 'सर्वोदय' में साम्य भी बहुत है और विरोध भी उतना ही है। जमाने की माँग वही है। लेकिन हम सिर्फ उसका विचार करते रहने से या तत्संबंधी लिखते रहने या चिन्तन करते रहने से काम होनेवाला नहीं है। हमें उस विचार को सिद्ध करना होगा। बताना होगा कि कांचन-मुक्त समाज-रचना हो सकती है, सत्ता-रहित समाज बन सकता है। चाहे छोटे पैमाने पर ही क्यों न हो, हमें ऐसा नमूना दिखाना होगा। तभी हम साम्यवाद के मुकाबले में टिक सकेंगे। नहीं तो सम्भव है कि साम्यवाद ही

आ जाय। इसलिए मेरे मन में यह बात दृढ़ हो गयी है कि तेलंगाना में जो काम हुआ, उसकी बुनियाद हमारे पवनार के प्रयोग में ही है।"

फिर अपने अनुभवों का सार केवल दो शब्दों में प्रकट करते हुए उन्होंने कहा :

"अपना अनुभव किस शब्द में रखूँ, ऐसा जब मैं विचार करता हूँ, तो मुझे केवल एक ही विचार सूझता है : 'साक्षात्कार !' मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि तेलंगाना की यात्रा में मुझे ईश्वर का एक प्रकार से साक्षात्कार ही हुआ। मानव के दिल में जो भलाई है, उसका आवाहन किया जा सकता है, ऐसी श्रद्धा से मैंने काम किया और भगवान् ने वैसा ही दर्शन प्रकट किया। मैं यह भी मानता हूँ कि अगर मैं दूसरे विचार से गया होता और मानता कि मानव का दिल असूया, मत्सर, लोभ आदि विकारों से भरा है, तो मुझे दर्शन भी भगवान् ने वैसा ही दिया होता। सारांश, मेरा अनुभव है कि भगवान् कल्पतरु है। जैसी कल्पना हम करते हैं, वैसा ही रूप वह प्रकट करता है। अगर हम विश्वास रखें कि भलाई मौजूद है, बुराई नाचीज है, तो वैसा ही अनुभव आ सकता है।"

अन्त में उन्होंने कहा : "प्रवास का संकल्प यहाँ हुआ था, इसलिए यहाँ से ही होकर जाने का विचार मुझे सूझा। जो बल मैं यहाँ से लेकर गया, वह इसी स्थान पर समर्पित कर, रीता होकर कल मैं आगे बढ़ूँगा।"

संस्कृति-समन्वय

रात को श्री आशादीदी ने उत्तर-बुनियादी के छात्रों द्वारा कीर्तन का कार्यक्रम रखा था। हर भाषा का एक-एक भजन गाया गया। सबने मिलकर गाया, क्योंकि सबको सब भाषा के भजन कंठ थे। भजनों का चुनाव भी अच्छा था। स्वर-माधुर्य, अर्थ-माधुर्य, भाव-माधुर्य, त्रिविध माधुरी में विनोबा और सारा परिवार तल्लीन था। किसीको अपेक्षा नहीं थी कि विनोबा कुछ कहेंगे भी। परंतु कीर्तन की परिसमाप्ति पर प्रसादी कैसे न मिलती ? वे बोले :

"अभी यहाँ अठारह भाषा के भजन गाये गये; परन्तु चिंतन सबमें कैसा एक ही प्रकट हुआ! याने इस सत्संग के जरिये सारे संस्कारों का सम्मेलन ही हुआ। यह छोटी बात नहीं है कि सारे हिंदुस्तान के लोग अपने को एक समझें। लेकिन उससे बड़ी बात यह है कि भजनों में जो भाव गाये गये, वे जीवन में भी उतरें। जैसा मीराबाई ने गाया **'मेरे तो गिरिधर गोपाल!'** एक भगवान् के सिवा दूसरा कोई शब्द ही मुख में क्यों आये?"

फिर देशभर का अपना अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा :

"हमारे देश में सर्वत्र कीर्तन, भजन का सत्संग बहुत चलता है। अभी हैदराबाद में हमने देखा ही, उधर महाराष्ट्र में, बंगाल में और उत्कल में भी। सारांश, हर प्रांत और हर गाँव में कुछ-न-कुछ सत्संग चलता ही रहता है। उन सबके मूल में जो सद्भावना है, उसका दर्शन हमारे निज के जीवन में और हमारे विद्यालय के जीवन में भी होना चाहिए। यह सारा विश्व एक सागर है, उसमें हमारा यह विद्यालय तो एक बिंदु-मात्र है। लेकिन अगर हमारे जीवन में वह भाव उतरे, जो इन भजनों में भरा है, तो यह विद्यालय सारे विश्व का मार्ग-दर्शन कर सकता है। जहाँ सच्ची तालीम है, वहाँ सारी दुनिया आकृष्ट हो सकती है। आजकल जो बड़े-बड़े शिक्षा-शास्त्री हुए—जिन्होंने शिक्षण के संबंध में कुछ प्रयोग किये—वे चंद ही बालकों को लेकर बैठे। 'उपवर्ण' की शाला में दस-पाँच ही विद्यार्थी थे, परंतु उसने भारत को बड़े-बड़े विचारक दिये। इसलिए हम जो कुछ भी करें, पूरा करें। नानक ने जो पूरा पाने की बात कही है, वह बहुत अर्थपूर्ण है। अधूरे में निर्वीर्यता रहती है। तालीमी-संघ से हम आशा करते हैं कि यहाँ संस्कृति-समन्वय का जो प्रयोग शुरू किया गया है, वह पूर्ण होगा।"

फिर उन्होंने नयी तालीम के छात्रों के बारे में कहा :

अल्प-संतोष बनाम आत्म-संतोष

"लोगों को शंका होती है कि कहीं नयी तालीम के लड़के समाज को भारभूत तो न होंगे ? पर नयी तालीम के लड़के तो ज्ञान के सागर, विद्या के आगर होने चाहिए। ऐसे विद्यार्थी चाहे चंद ही क्यों न हों—चार ही क्यों न हों, वे सारे भारत का नूर बदल सकते हैं। कॉलेज, हाईस्कूल से भी लड़के निकलते हैं, परंतु उनका तेज दुनिया में प्रकट नहीं होता। मैं नहीं चाहता कि हमारे बच्चे अल्प-संतोषी या थोड़े ज्ञान में संतुष्ट हों, थोड़े सुख में सुख मान लें। हम अल्प-संतोष नहीं, आत्म-संतोष चाहते हैं। दुनिया की चीजों के बारे में आत्म-संतोषी कहता है कि ये तो जड़ चीजें हैं, वे मेरे पीछे आयें। मैं उनके पीछे क्यों जाऊँ ? इसलिए हमें आत्म-संतोष की ही साधना करनी है, उसे ही पाना है, उसीमें संतोष मानना है। उससे कम में संतोष नहीं मानना है। आप लोग आज उत्तर-बुनियादी करेंगे, लेकिन इससे पढ़ाई पूर्ण नहीं होती। निरंतर सेवा और निरंतर ज्ञान-प्राप्ति, यही हमारा जीवन-क्रम है।"

अहिंसा की खोज मेरा मुख्य कार्य : ७१ :

परंधाम (पवनार)
२७-६-'५१

जिसका उसको सौंपकर परंधाम के संत ने रोज की तरह पाँच बजे सेवाग्राम से भी कूच कर दिया। सारा परिवार मौन बिदाई देने लंबी दूर तक चला आ रहा था। 'आनंद-टेकड़ी' के पास से विनोबा ने सबको वापस लौटने की सूचना दी और काफिला अपनी आखिरी मंजिल के लिए आगे बढ़ा।

रास्ते में जो-जो संस्थाएँ आती थीं—महिलाश्रम, काकावाड़ी, गोसेवा-संघ, ग्राम-सेवा-मंडल आदि, उन सबके कार्यकर्ताओं ने अपनी-अपनी संस्थाओं के द्वार पर खड़े रहकर विनोबा को मौन अभिवादन किया और हर कार्यकर्ता ने अपनी श्रद्धा के प्रतीक के रूप में एक-एक गुंडी भेट की। गोपुरी में काफी कार्यकर्ता जमा हो गये थे। विनोबा थोड़ी देर वहाँ रुके और मित्रों के साथ कुछ प्रकट चिंतन भी कर लिया :

आमूलाग्र परिवर्तन

"अब भविष्य में, इस दुनिया में, केवल दो विचार-धाराओं के बीच ही टक्कर होनेवाली है। एक धारा सर्वोदय की है और दूसरी, साम्यवाद की। इनमें आपस में समझौता असंभव है। अगर हम ठीक तरीके से काम नहीं करते, तो कम्युनिज्म के आने की काफी संभावना है। इसलिए अब इतना काफी नहीं है कि हम अपने पुराने तरीकों में यहाँ-वहाँ कुछ थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर दें। काल-प्रवाह को पहचानकर हमें अपनी संस्था और उसकी कार्य-पद्धति में आमूलाग्र परिवर्तन करना होगा। इसके लिए हमें अपने को तैयार करना होगा। अन्यथा हम नामशेष हो जायेंगे। अब

केवल विचार करते रहने से काम नहीं चलेगा, प्रत्यक्ष काम में लग जाना होगा।"

उन्होंने काम के स्वरूप की अष्टविध रूपरेखा भी बतायी, जिसमें बुनियादी तालीम, श्रमिक जीवन-तादात्म्य और स्वावलंबी-साम्ययोग का विशेष रूप से उल्लेख किया।

भरत की तपस्या

करीब साढ़े आठ बजे विनोबा परंधाम पहुँचे। 'भरतराम' मंदिर में प्रवेश किया। प्रदक्षिणा करते हुए ज्ञानदेव का प्रसिद्ध भजन, "धर्म जागो निवृत्तीचा"* मुक्त-कंठ से गाते गाये। जानकीदेवीजी ने विनोबाजी के पुनरागमन के उपलक्ष्य में अपना छोटा-सा, किंतु मार्मिक भाषण किया: "यह सही है कि विनोबाजी ने तेलंगाना में एक अपूर्व चमत्कार किया है। परंतु उनकी अनुपस्थिति में आश्रमवासियों ने यहाँ भरत की तरह जो कड़ी और अज्ञात तपस्या की है, वह भी कम महत्त्व की नहीं है।"

शुभेच्छा का परिणाम

लोगों की इच्छा थी कि विनोबा भी कुछ बोलें। और वे बोले भी कि "अब बोलना समाप्त। जो कुछ थोड़ा-बहुत काम हुआ है, वह सबकी शुभेच्छा का परिणाम है। सदा उस शुभेच्छा का ही आवाहन करते रहें, तो परिणाम भी शुभ और मंगलमय आता है। जो कुछ काम हुआ है, उससे यह श्रद्धा बढ़ी ही है। अतः मंगलमय ही हमारा चिंतन हो, मंगलमय ही हमारा विचार हो और मंगलमय ही हमारा कर्म!"

सेवा की कसौटी

दोपहर में कार्यकर्ताओं की सभा में विनोबा ने आगामी कार्यक्रम का

---

* 'अब दुनिया में निवृत्तिनाथ का धर्म जगे।' निवृत्तिनाथ अर्थात् ज्ञानदेव के बड़े भाई और गुरु।

संकेत करते हुए कहा : "हमें यह समझकर काम में लग जाना चाहिए कि यहाँ कम्युनिस्ट-समस्या है। इसलिए हमें स्वावलंबी-साम्ययोग सिद्ध करना है, 'ग्राम-राज्य' याने 'राम-राज्य' कायम करना है, जो परस्पर सहकार के बिना संभव नहीं है। देहात और शहरों का समान भूमिका पर सहकार्य होना चाहिए। आज का सहकार्य असमान भूमिका पर है। कम्युनिस्ट लोग समान भूमिका पर सहकार्य करते हैं, परंतु वे समाज के दो टुकड़े कर डालते हैं। मुझे टुकड़े नहीं करने हैं और न होने देने हैं। परंतु आखिर तो ईश्वर की इच्छा ही काम आती है। वह बहुत कृपालु है। दुनिया का दुःख दूर करने के लिए अगर उसकी इच्छा एक बार दुःख बढ़ाने की होगी, तो वह बढ़ायेगा। अगर मेरी जिंदगी में यह दुःख बढ़ा, तो सेवा करते-करते मुझे उसमें खप जाना है। फिर कोई दूसरा आयेगा, वह आगे का काम करेगा।"

भू-दान-कार्य के संबंध में उन्होंने कहा :

परंधाम का प्रयोग

"जमीन का प्रश्न केवल तेलंगाना या मध्य-प्रदेश या अखिल भारत का नहीं, जागतिक प्रश्न है। यदि परंधाम में चलनेवाला साम्ययोग का प्रयोग सिद्ध होता है, तो इस समस्या का हल हमें मिल जायगा। इसलिए 'भूदान' से भी अधिक महत्त्व के इस काम में मुझे लग जाना है। तेलंगाना की यात्रा के पहले भी मेरा यह प्रयोग जारी था। तेलंगाना में जो कुछ काम हो सका, वह भी इसी प्रयोग के कारण हो सका है।"

पदयात्रा की पूर्णाहुति का प्रवचन तो सबेरे ही हो चुका था। परंतु शाम को प्रार्थना के लिए इर्द-गिर्द के देहातों से अनेक लोग आ पहुँचे थे। ऐसा लगता था कि स्वयं गंगा ही भगीरथ को देखने के लिए उमड़ आयी हो।

विनोबा ने मन-ही-मन अपनी उस लोकमाता को वंदन किया। जो संदेश उनके मुख से आज प्रकट हुआ, वह छोटा संदेश नहीं था :

साथियों की तपस्या

"आज सबेरे जानकीबाई ने मेरे मन की बात कही। हम लोग उधर गये और बहुत परिश्रम का काम किया। उसमें बहुत-सी सफलता भी मिली। उसमें सबको आनंद हुआ और वह काम संसार में प्रसिद्ध हुआ, यह बात सही है। फिर भी हमारे साथियों ने यहाँ पीछे रहकर जो कुछ अज्ञात तपस्या की, उसकी कीमत बहुत बड़ी है और उसमें अपना हिस्सा उठाने के लिए मैं आ गया हूँ। यहाँ के काम का महत्त्व मेरी बुद्धि में इतना खप गया है कि इस सारे प्रवास में ऐसा एक भी दिन नहीं आया, जब मुझे यहाँ के साथियों के काम की याद न आयी हो। मेरी वाणी में जो आत्म-विश्वास प्रकट हुआ, उसका आधार यहीं का काम है। यह बात कहने का मौका निजी चर्चा में दो-तीन बार आया और खुले दिल से मैंने उसे कहा। इस जगह जो प्रयोग हो रहा है, उसे अगर हम अच्छी तरह पूरा कर सकें, तो निःसन्देह संसार का रूप पलट जायगा और इस बात का महत्त्व जितना मुझे मान्य है, उतना ही इस बात का विचार करनेवाले दूसरे किसीको भी मान्य होगा।

जमीन की समस्या

"लोग ऐसी अपेक्षा रखते हैं कि यहाँ आने पर मैं जमीन माँगता फिरूँगा। लेकिन इस तरह की कोई सत्त्व-परीक्षा करने का मेरा विचार नहीं है। जो मैं पहले था, वही यहाँ वापस आया हूँ। बीच में वामनावतार का जो रूप प्रकट हुआ था, वह यद्यपि लुप्त नहीं हुआ है, तथापि उसका कार्य यहाँ अभी मुझे शुरू नहीं करना है। लोग जानते हैं कि यदि कोई अनायास आकर मुझे दरिद्रनारायण की सेवा के लिए जमीन दे जाय, तो वह मैं दोनों हाथों से लूँगा और दोनों हाथों से बाँट दूँगा। परन्तु वह कार्यक्रम मुझे यहाँ नहीं करना है। यहाँ जो कार्यक्रम करना है, वह उससे भी कठिन और महत्त्व का है। भूमि के बँटवारे की समस्या मुझे कभी मुश्किल नहीं मालूम हुई। यदि सरकार, जनता तथा सेवक-

वर्ग विचार करे, तो वह समस्या सहज में हल होने लायक है। उसके लिए मुझे अधिक विचार करने की जरूरत न होनी चाहिए।

मुक्त प्रयोग

"परन्तु मैं एक मार्ग का प्रयोगी हूँ। अहिंसा का शोध करना मेरा बहुत वर्षों से जीवन-कार्य है। और मेरी शुरू की हुई प्रत्येक कृति, हाथ में लिये हुए काम और छोड़े हुए काम, सब उस एक प्रयोग के ही लिए हुए और हो रहे हैं। मैं अनेक संस्थाओं का सभासद था। वह सभासदत्व मैंने छोड़ दिया। उसमें मेरी यही दृष्टि थी कि अहिंसा का शोध करने के लिए, अहिंसा का विकास करने के लिए मुझे 'मुक्त' रहना चाहिए। 'मुक्त' से मतलब 'कर्ममुक्त' या 'कार्यमुक्त' नहीं, किन्तु अलग-अलग संस्थाओं के काम-काज से मुक्त रहना है। अहिंसा के लिए संस्था बाधक है, अभी इस निर्णय पर पहुँचा नहीं हूँ। जिस दिन इस निर्णय पर पहुँचूँगा, उस दिन दूसरों से भी संस्था छोड़ने के लिए कहूँगा। मेरे बहुत-से मित्र संस्थाओं में हैं और उनका वहीं रहना उचित है, ऐसा मेरा मत है। उन संस्थाओं के द्वारा बहुत काम होना चाहिए, ऐसी मेरी अपेक्षा है। वह काम उन संस्थाओं से मुझे मिलनेवाला है, ऐसी मेरी श्रद्धा है। परंतु किसी भी प्रकार का बन्धन अथवा मर्यादा, काल्पनिक किंवा सामाजिक—मान रखने पर मुक्त प्रयोग नहीं होगा।

मुख्य कार्य अहिंसक रास्ते की खोज

"अहिंसा के पूर्ण प्रयोग के लिए तो वास्तव में देह-मुक्त ही होना चाहिए। जब तक वह स्थिति नहीं आती, तब तक देह से जितना संभव हो, अलग रहकर काम करना, संस्थाओं से अलग रहकर काम करना और पैसे से अलग रहकर काम करना, इस तरह की सारी योजना की है। बीच में यह जो प्रयोग किया, वह केवल भूमि-दान प्राप्त करने का प्रयोग नहीं था। भूमि-दान निःसन्देह बहुत बड़ी वस्तु है, परन्तु मेरे सामने मुख्य

कल्पना यह है कि हमारी सामाजिक और व्यक्तिगत, सब प्रकार की कठिनाइयों का परिहार अहिंसा से कैसे होगा, इसका शोध करूँ। यह मेरा मुख्य कार्य है और उसीके लिए मैं गया था। इसलिए मैंने वर्णन यही किया कि शान्ति-सेना खड़ी करनी चाहिए। यह जो 'टेर' मेरे चित्त ने लगायी थी, उसके अमल का एक अवसर मुझे मिला। शान्ति-सैनिक के नाते मैं गया था। यदि यह काम मैं टालता, तो उसका अर्थ यह होता कि मैंने अहिंसा और शान्ति-सेना का काम करने की अपनी प्रतिज्ञा ही तोड़ दी।

मूल प्रयोग

"अब यहाँ लौटने पर मुझे भूमि-दान-यज्ञ का काम नहीं करना है। संभव हो, तो वह हैदराबाद-राज्य में जारी रहे, ऐसी इच्छा है। परन्तु यहाँ आने पर मेरा जो मूल प्रयोग है याने प्रचलित समाज-व्यवस्था पर कुठाराघात, उसे आगे चलाना है। मेरी जो तरुण मित्र-मंडली यहाँ है, और वृद्ध होकर भी सनत्कुमार जैसे नित्य कुमार, तरुण कोटि बाबा हैं, उनकी संगति में अब मैं इस काम में बड़े आनंद से जुट जाऊँगा।

बड़ी प्रतिज्ञा

"आप देहात के लोग जमा हुए हैं, शहर के प्रेमी लोग भी आये हैं। जिनके साथ मैं जेल में रहा और जिनसे मेरी हृदय की मैत्री कायम हो गयी, ऐसे भी कुछ लोग यहाँ आये हैं। तो, मैं आप सबसे कहना चाहता हूँ कि यह जो मेरा काम है, वह आश्रम तक ही सीमित नहीं है। आश्रम में मैं दही बना रहा हूँ। यह तैयार होने पर उसे ब त-से दूध में मिलना और उसका भी दही बनाना है, ऐसी कल्पना है। पहले यह प्रयोग देहातों में बाँटना है और देहातों में उसकी सिद्धि किस मात्रा में होती है, इसका अनुभव प्राप्त करने पर फिर उसे सारे देश के सामने रखना है। इस तरह राम-राज्य स्थापित करना है। ऐसी यह बहुत बड़ी प्रतिज्ञा मन में है।

भगवान् की वाणी

"मैंने पिछले दिनों गांधीजी की पुण्यतिथि के अवसर पर कहा था कि यह 'बात' बहुत बड़ी है। लेकिन इससे छोटी बात ईश्वर मुझसे नहीं कहलवाता, इसमें मेरा कोई उपाय नहीं है। मेरी इच्छा तो बहुत छोटी बात कहने की होती है। जैसे तुकाराम महाराज ने कहा, वैसी ही मेरी मुराद है : **'भाव-बलें कैसा झालासी लहान।'** पहले के संतों के लिए तू कैसा छोटा-सा हो गया था, वैसा ही बन। मुझे छोटी-सी मूर्ति ही प्रिय है। परंतु ऐसा होने पर भी यह इतनी बड़ी बात परमेश्वर मुझसे कहलवाता है, ऐसी आज स्थिति है। तो, यह कार्य करना है और इस काम में आस-पास के हमारे देहातों में हमारे जो आदमी बैठे हुए हैं—दस-दस, बीस-बीस साल से काम कर रहे हैं, उन्हें मेरी मदद हो, ऐसी मेरी इच्छा है।

सुर-कार्य के लिए सुसज्जित हों

"इसके साथ आश्रम के जो आंतरिक कार्य हैं—अहिंसादि एकादश व्रतों के ये जो सूक्ष्म प्रयोग हैं, वे भी चलते रहेंगे और अपनी टूटी-फूटी शक्ति के सहारे उनका बोझ जितना हम उठा सकेंगे, उठा लेंगे। यह सब हम परमेश्वर के प्रसाद पर ही सौंप देते हैं। इस विषय में हमारी तीव्र इच्छा और लगन रहेगी। बाकी यह जो स्थूल कार्यक्रम रहेगा, उसे आपको, हमें, सारे-बाल-गोपालों को पूरा करना है, ऐसी हम प्रतिज्ञा करें। आज यहाँ से जाते समय मन में ऐसा निश्चय कर लें कि हम हाथ में कुदाली लेनेवाले हैं, हाथ में तकली लेनेवाले हैं, करघे पर बैठनेवाले हैं, झाड़, खपरा और फावडा लेनेवाले हैं। इन दिव्य आयुधों से हम सजनेवाले हैं, भूषित होनेवाले हैं, क्योंकि हमें सुर-कार्य करना है। जब सुर-कार्य करना होता है, तो अनेक आयुधों से विभूषित भगवान् अवतरित होते हैं। हमें सुर-कार्य करना है, इसलिए ये सब औजार लेकर हम काम करनेवाले हैं। हमें भगवान् सफलता देंगे, क्योंकि इस काम में असफलता ईश्वर को

अपेक्षित ही नहीं है। ईश्वर ही यह सब कहलवाता है और वही यह पूरा करायेगा। आइये, यही विश्वास रखकर काम करें।

आखिरी बात

"अब एक आखिरी बात है—'हम एक-दूसरे से प्रेम करें।' हमारा एक-दूसरे का एक-दूसरे पर अपार प्रेम होना चाहिए। 'दूजापन' हरगिज बाकी न रहे। मनुष्य को अपने निज से जो प्रेम होता है, वह निरुपचार होता है। याने उस प्रेम में कहीं उपचार नहीं होता, दिखावटीपन नहीं होता। वह बिल्कुल भीतर बैठा हुआ प्रेम होता है। आइये, ऐसा प्रेम हम दूसरों पर करें। इतनी एक बात हम सँभाल लें, तो और सब ईश्वर सँभाल लेगा।"

सर्वोदय तथा भूदान-साहित्य

भूदान-आरोहण	॥)
सामूहिक पद-यात्रा	।)
क्रान्ति की पुकार	≥)
पावन-प्रकाश (नाटक)	।)
गोसेवा की विचारधारा	॥)
गांधी : एक राजनैतिक अध्ययन	॥)
सामाजिक क्रान्ति और भूदान	।–)
गाँव का गोकुल	।)
ब्याज-बट्टा	।)
भूदान-दीपिका	=)
साम्ययोग का रेखाचित्र	=)
पूर्व-बुनियादी	॥)
सुन्दरपुर की पाठशाला	।॥)
सर्वोदय भजनावलि	।)
धरती के गीत	–)
भूदान-लहरी	–)
सत्संग	॥)
क्रान्ति की राह पर	१)
क्रान्ति की ओर	१)
सर्वोदय पद-यात्रा	१)
आठवाँ सर्वोदय-सम्मेलन	१)
भूदान-यज्ञ : क्या और क्यों ?	१)
राजनीति से लोकनीति की ओर	॥)
छात्रों के बीच	।–)
राज्यव्यवस्था : सर्वोदय दृष्टि से	१॥)
भूमि-क्रान्ति की महानदी	।॥)
नक्षत्रों की छाया में	१॥)
ग्रामशाला : ग्रामज्ञान	१)
मजदूरों से	=)
सामूहिक प्रार्थना	=)
भूदान-यज्ञ-गीत	–)
भूदान-गंगोत्री	२॥)
सफाई : विज्ञान और कला (प्रेस में)	
सत्याग्रही-शक्ति	।–)

[OUR ENGLISH BOOKS]

	Rs. As.
Swarajya-Shastra	1—0
Bhoodan-Yajna	1—8
Revolutionary Bhoodan-yajna	0—6
Principles and Philosophy of the Bhoodan	0—5
Voice of Vinoba	0—4
The Call of Puri-Sarvodaya-Sammelan	0—2
A Picture of Sarvodaya Social Order	0—6
Jeevan-Dan	0—2
Bhoodan as seen by the West	0—6
Bhoodan to Gramdan	0—6
Demand of the Times	0-12
Bhoodan-Yajna—the great Challenge of the Age	0—4
Progress of a Pilgrimage	3—8
M. K. Gandhi	2—0
Economy of Permanence	3—0

Ticket No.	Issue Date	Return Date	Ticket No.	Issue Date	Return Date

जो मैं चाहता हूँ, वह तो सर्वस्व-दान की बात है। जैसे कि पोतना कवि ने तेलुगु भागवत में बताया है। तल्लिदंड्रुल भंगि धर्मवत्सलतनु दीनल्ल गाव चिंतिंचु-वाड्रु धर्मवत्सलतनु। मैं माता-पिता के समान चिन्ता करने की यह उपमा आप पर लागू करना चाहता हूँ। जिस प्रेम से माता-पिता बच्चों के लिए काम करते हैं, स्वयं भूखे रहकर उन्हें खिलाते हैं, उनके लिखे सर्वस्व का त्याग करते हैं, वह शक्ति और वह प्रेम मैं आप लोगों से प्रकट कराना चाहता हूँ।

—विनोबा